टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे अंर्तगत हिंदी विषय में

विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

*** शोध विषय ***

''दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य में नारी चरित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन''

*** शोधार्थी ***

श्रीमती विनया जितेंद्र भालेराव

*** शोध निर्देशिका ***

डॉ. श्रीमती रागिनी दिलीप बाबर

श्री बालमुकुंद लोहिया संस्कृत एवं भारतीय

विद्या अध्ययन केंद्र

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ १२४२, सदाशिव पेठ, पुणे,

२०१३-१४

शोधार्थी

सौ. विनया जितेंद्र भालेराव

शोधनिर्देशिका

डॉ. सौ. रागिनी दिलीप बाबर

❊ प्रतिज्ञापत्र ❊

मैं सौ. विनया जितेंद्र भालेराव प्रतिज्ञापूर्वक निवेदन करती हूँ कि, **''दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य में नारी चरित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन''** 'विषय पर शोध प्रबंध तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के अंतर्गत हिंदी विषय की पीएच.डी हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध मेरा मौलिक प्रयास है। जहाँ तक मुझे ज्ञात है किसी विश्वविद्यालय में इस विषयपर शोधकार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध प्रबंध पर पहले कोई अन्य उपाधि या समान डिग्री, इस अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय या परीक्षा संस्था द्वारा मुझे प्रदान नहीं की गई।

शोधार्थी

स्थान-पुणे (श्रीमती विनया जितेंद्र भालेराव)

दिनांक

*** प्रमाण - पत्र ***

प्रमाणित किया जाता है कि सौ. विनया जितेंद्र भालेराव द्वारा "**दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य में नारी चरित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन**" विषय पर तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे की विद्यावाचस्पति (पीएच.डी) हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध संबंधित मौलिक शोधकार्य मेरे मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया है। मेरी जानकारी व विश्वास के अनुसार शोध प्रबंध में समाविष्ट कार्य के आधार पर कोई अन्य उपाधि या समान डिग्री, इस अथवा किसी अन्य विश्वविद्यालय या परीक्षा संस्था द्वारा शोधार्थी को प्रदान नहीं की गई।

शोध निर्देशिका

स्थान - पुणे
दिनांक -

डॉ. सौ. रागिनी दिलीप बाबर
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
डॉ. आंबेडकर कला-
वाणिज्य महाविद्यालय
येरवडा पुणे - ४११००६

* ऋणनिर्देश *

प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति में उन समस्त चिंतकों, विद्वानों, आदरणीय स्नेहीजनों एवं इष्ट मित्रों, परिवार -जनों के प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करना मैं अपना परम दायित्व मानती हूँ। मैं आभारी हूँ तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे के पीएच.डी. विभाग की जिन्होंने मुझे शोध कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

मैं नतमस्तक हूँ, उन विद्वत्जनों के प्रति जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से मैं इस शोध प्रबंध को लिखने के लिए प्रेरित हुई। सबसे प्रथम मैं मेरी माता-तुल्य शोध निर्देशिका डॉ. रागिनी दिलीप बाबर के प्रति नतमस्तक हूँ जिनके स्नेह, मार्गदर्शन, विश्वास, प्रेरणा, प्रोत्साहन के कारण वांछित अवधि में मैं अपना शोधकार्य पूर्ण कर पाई। शोध प्रबंध की रूपरेखा से लेकर समापन तक अनेक सूझ-बूझ, अगाध स्नेह तथा विश्वास से मेरा मनोबल बढ़ाती रही। विशेषत: निराशा के क्षणों मे हमेशा मेरा धैर्य बढ़ाती रही। नम्र, सहृदयी और स्नेहशील स्वभाव को शाब्दिक या लिखित रूप में व्यक्त करना मेरे सामर्थ्य से बाहर है। मेरी हर समस्या का समाधान बहुत ही सहज ढंग से करती रहीं। भविष्य में भी आपका स्नेह भरा हाथ मेरे सिर पर रहें यहीं आशा करते हुए मैं उनके प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करती हूँ।

आदरणीय श्री. दिलीप बाबर जी के प्रति भी मैं कृतज्ञ रहूँगी। जब भी मैं मार्गदर्शन हेतु आपके घर आयी हूँ, आपने बेटी की तरह मुझे प्रोत्साहन देकर कार्य पूर्ण होने का आशीर्वाद दिया। मैं आपके प्रति शतश: आभारी रहूँगी।

मैं विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीपाद भट जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मुझे शोध कार्य से संबंधित मार्गदर्शन किया और निश्चित अवधि में कार्य पूर्ण करने हेतु प्रोत्साहित किया। मेरी कठिनाई तथा शंका का उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर समाधान किया।

अपने शोध अध्ययन के इस पथ पर चलते समय मुझे मेरे शुभचिन्तकों द्वारा मार्गदर्शन तथा सहयोग मिलता था। मैं जहाँ प्रथम अध्यापन के कार्य में कार्यरत थी उस 'क्लाईन मेमोरिअल स्कूल' के मेरी सभी सहेलियों के प्रति मैं आभारी हूँ जो मुझे समय-समय पर सहयोग देती रही तथा मुझे प्रोत्साहित करती रही और मेरा मनोबल बढ़ाती रही।

मैं डॉ. तुकाराम पाटील (हिंदी विभाग प्रमुख, पुणे विश्व विद्यालय) के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे मेरे शोध कार्य संबंधित संदर्भ ग्रंथ पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के ग्रंथालय से पढ़ने की अनुमति दी।

मैं मेरे श्रद्धेय सास-ससुर, माता-पिता, भाई-भाभियों और जेठ-जेठानी के चरणों में प्रणाम निवेदित करती हूँ जिनके आशिर्वाद तथा प्रोत्साहन के कारण मेरा शोध-कार्य पूर्ण हो पाया।

पति श्री.जितेंद्र सोमेश्वर भालेराव जिन्होंने अपने काम की व्यस्तता के बावजूद हर संभव मेरा साथ देकर मेरा उत्साहवर्धन किया उनके अमूल्य योगदान को मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती। मैं मेरे बेटे अकुल के उज्वल भविष्य के लिए ईश्वर से कामना करती हूँ जिसने मेरे मनोबल को सदैव दृढ रखा और यथासमय सहयोग भी किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध पूरा करने के लिए मुझे जयकर ग्रंथालय, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा ग्रंथालय पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभागीय ग्रंथालय आदि से सहायता प्राप्त होती रही है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा ग्रंथालय के ग्रंथपाल श्री प्रदिप जोशी जी से मुझे बहुत सहायता मिली है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

'राष्ट्रवाणी' द्वैमासिक पत्रिका की प्रबंधक सौ. वंदना ठकार की मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे विविध पत्रिकाएँ पढ़ने का मौका दिया।

शोध-प्रबंध के टंकन तथा संगणक कार्य के भार से मुक्त रखने वाली सौ.सरिता भोसले तथा श्री महादेव भोसले को हृदय से धन्यवाद देना चाहती

हूँ जिनके अमूल्य सहयोग तथा परिश्रम ने प्रबंध को निर्दोष रखने का प्रयास किया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मुझे अनेक संदर्भ ग्रंथो, पत्र-पत्रिकाओं, कोशों आदि से सहायता तथा अनेक ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों, विद्वानों से अनेक रुपों में सहयोग, मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता रहा है। उन सबके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। अंत में उन समस्त सहृदयजनों की आभारी हूँ जिनकी शुभकामनाएँ मुझे सदैव प्रोत्साहित करती रही। मेरी इस कृति से यदि हिंदी विद्वानों को संतोष हुआ तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगी ।

धन्यवाद!

श्रीमती विनया जितेंद्र भालेराव

विषयानुक्रमणिका

अनुक्रम	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	ऋणनिर्देश	४-६
	विषयानुक्रमणिका	७-१२
	प्रस्तावना	१३-२०
	प्रथम अध्याय	२१-७६
	दीप्ति खंडेलवाल का परिचय	२३-२४
१.१	दीप्ति खंडेलवाल का व्यक्तित्व	२४-२५
१.१.१	जन्म एवं बाल्यकाल	२५-२७
१.१.२	महत्वपूर्ण घटनाएँ	२८-२९
१.१.३	पारिवारिक जीवन	२९-३१
१.१.४	लेखन की प्रेरणा	३१-३४
१.२	कृतित्व	३४-३५
१.२.१	दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय	३६-६७
१.२.२	कुछ कविताओं के अंश	३७-३९
१.३	कहानी संग्रहों का विवरण	४०-६९
१.३.१	कड़वे सच	४०-४३
१.३.२	वह तीसरा	४३-४७
१.३.३	धूप के अहसास	४७-५१
१.३.४	सलीब पर	५१-५६
१.३.५	दो पल की छांह	५६-५८
१.३.६	नारी मन	५८-६७
१.३.७	औरत और नाते	६७-६९

१.४	उपन्यासों का विवरण	६९-७२
१.४.१	कोहरे	६९-७०
१.४.२	प्रिया	७०-७२
१.४.३	प्रतिध्वनियाँ	७२
१.५	लघु उपन्यास 'वह तीसरा'	७३
१.६	अन्य रचनाएँ	७३-७५
	संदर्भ- प्रथम अध्याय	७५-७६
	द्वितीय अध्याय	**७७ -१४८**
	दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी का मनोविज्ञान	
२.१	मनोविज्ञान का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा तथा पृष्ठभूमि	७७-७९
२.१.१	मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि	८०-८२
२.१.२	मनोविज्ञान का स्वरूप तथा परिभाषा	८२-८५
२.१.३	मनोविश्लेषण की पृष्ठभूमि	८५-८९
२.२	दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों में नारी का मनोविज्ञान	८९-९३
२.२.१	अहम्	९३-१०७
२.२.२	काम	१०७-११८
२.२.३	भय	११८-१२८
२.३	दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासों में नारी का मनोविज्ञान	१२८
२.३.१	कोहरे	१२८-१३२
२.३.२	प्रिया	१३२-१३७

२.४	लघु उपन्यास 'वह तीसरा' के नारी का मनोविज्ञान	१३७-१३९
२.५	भारतीय पुरुषों की मानसिकता	१३९-१४०
२.५.१	दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों के पुरुष	१४०-१४३
२.५.२	दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासों के पुरुष	१४३-१४५
	संदर्भ - द्वितीय अध्याय	१४६-१४८
	तृतीय अध्याय	१४९-१८४
	दीप्ति खंडेलवाल के नारी पात्रों का अर्न्तद्वंद्व	
३.१	अर्न्तद्वंद्व का स्वरूप	१५०-१५२
३.२	द्वंद्व के मुख्य रूप	१५२-१५३
३.२.१	बाह्यद्वंद्व	१५३
३.२.१.१	सामाजिक द्वंद्व	१५३
३.२.१.२	पारिवारिक द्वंद्व	१५३-१५४
३.२.१.३	आर्थिक द्वंद्व	१५४
३.२.१.४	अस्तित्व सबन्धी द्वंद्व	१५४-१५५
३.२.१.५	राजनैतिक द्वंद्व	१५५
३.२.१.६	स्त्री-पुरुष संबंधो में द्वंद्व	१५५
३.२.२	मनोद्वंद्व	१५५
३.२.२.१	वैयक्तिक द्वंद्व	१५५-१५६
३.२.२.२	अतृप्त कामसम्बधी द्वंद्व	१५६
३.२.२.३	हीन भावना के कारण द्वंद्व	१५६
३.३	दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासों की नारी का अर्न्तद्वंद्व	१५६
३.३.१	'कोहरे' की नायिका	१५६-१६०

३.३.२	प्रिया उपन्यास की नायिका 'प्रिया'	१६०-१६२
३.४	दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों की नारी का अर्न्तद्वंद्व	१६२-१८२
	संदर्भ तृतीय अध्याय	१८३-१८४
	चतुर्थ अध्याय	**१८५-२३०**
	दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी चरित्र का सामाजिक अध्ययन	
४.१	'समाज' का अर्थ, परिभाषा	१८६-१८९
४.२	साहित्य, समाज और व्यक्ति का परस्पर संबंध	१८९-१९१
४.३	भारतीय समाज में नारी का स्थान	१९१-१९४
४.४	नारी की सामाजिक समस्याएँ (दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य से संबंधित)	१९४-२२८
४.४.१	दहेज समस्या	१९५-१९९
४.४.२	तलाक समस्या	२००-२०३
४.४.३	अनमेल ब्याह समस्या	२०३-२०६
४.४.४	पारिवारिक समस्या	२०६-२०७
४.४.५	वेश्या समस्या	२०७-२१०
४.४.६	कामकाजी नारी की समस्या	२१०-२१२
४.४.७	बलात्कारी नारी की जीवन समस्या	२१२-२१५
४.४.८	विधवा समस्या	२१५-२१७
४.४.९	मध्यवर्ग के नारी की आर्थिक समस्या	२१७ -२२०
४.४.१०	निम्नवर्ग के नारी की आर्थिक समस्या	२२०-२२१
४.४.११	नैतिक मूल्यों के पतन की समस्या	२२१-२२५

४.४.१२	भ्रष्टाचार की समस्या	२२५-२२८
	संदर्भ - चतुर्थ अध्याय	२२९-२३०
	पंचम अध्याय	२३१-२८०
	दीप्ति खंडेलवाल के रचनाओं का कथ्य एवं शिल्प	
५.१	कथ्यं एवं शिल्प का स्वरूप	२३२-२३४
५.२	दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों का कथ्य एवं शिल्प	२३७-२३८
५.२.१	कथारंभ	२३८-२४२
५.२.२	कथा विकास	२४२-२४३
५.२.३	संयोगतत्व	२४३ -२४५
५.२.४	फैंटसी	२४५ -२४७
५.३	दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों की भाषा	२४७ -२४८
५.३.१	नूतन शब्द प्रयोग	२४८ -२६३
५.४	दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों की भाषा शैली	२६३-२६५
५.४.१	वर्णनात्मक शैली	२६५
५.४.२	संवादात्मक शैली	२६५-२६६
५.४.३	आत्मकथात्मक शैली	२६६
५.४.४	काव्यात्मक शैली	२६६-२६७
५.४.५	व्यंगात्मक शैली	२६७
५.४.६	पूर्वदीप्ति शैली	२६८
५.४.७	पत्र शैली	२६८-२६९
५.४.८	विश्लेषणात्मक शैली	२६९
५.५	कहानियों के शीर्षक	२६९-२७०
५.६	कहानियों के उद्देश्य	२७०-२७१

५.७	उपन्यासों का कथ्य एवं शिल्प	२७१-२७६
५.८	उपन्यासों का उद्देश्य	२७६-२७८
	संदर्भ - पंचम अध्याय	२७९ -२८०
	षष्ठ अध्याय	**२८१ -३०० **
	उपसंहार	२८१ -२९३
•	संदर्भ ग्रंथ सूची	२९४-२९९
•	कोश	२९९
•	पत्रिकाएँ	२९९-३००

* प्रस्तावना *

कथा साहित्य के प्रति मुझे आरंभ से ही लगाव रहा है और स्त्री-लेखन मेरी रुचि का विषय रहा है। इसलिए सूक्ष्मजीवशास्त्र में स्नातक डिग्री प्राप्त करने के बावजूद मैंने हिंदी विषय में स्नातकोत्तर पदवी प्राप्त करने का फैसला किया। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा की हिंदी पंडित तथा पद्म की पदवियाँ प्राप्त करते समय मेरा हिंदी साहित्य के प्रति रुझान इतना बढ़ा कि मुझे संशोधन करने की प्रेरणा हुई। महिला कथा साहित्य पढ़ते पढ़ते दीप्ति खंडेलवाल का 'नारी मन' कथा संग्रह मेरे दिल को कुछ इस तरह छू गया कि मैंने उनके कथा साहित्य पर संशोधन करने का निर्णय लिया। पीएच.डी. उपाधि के लिए विषय चयन की समस्या सामने आई। अंततः पीएच.डी. समिति ने ''दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य में नारी चरित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन'' इस विषयपर शोधकार्य करने की अनुमति देकर शोधकार्य के लिए प्रेरित किया।

अनुसंधान का महत्त्व

किसी भी साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि आधुनिक मनोविज्ञान मानवी समस्याओं का हल ढूँढ़कर, मानव के जीवन में प्रगति और उन्नयन का महान कार्य करता है। मानव जाति के सर्वांगिण विकास की और आधुनिक मनोविज्ञान अग्रेसर है । दीप्ति खंडेलवाल उन समकालीन महिला प्रतिनिधी कहानीकारों में से एक है जिनके साहित्य में नारी की मानसिक चेतना को आंदोलित करने की क्षमता है उनके साहित्य में विविध मनोवैज्ञानिक पहलू उपलब्ध होते हैं जैसे अहम्, काम, भय, हीनता ग्रंथि, दिवा स्वप्न, इलेक्ट्रा ग्रंथि, इडिपस ग्रंथि आदि । अतः उनके साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है कि लेखिका के साहित्य के

माध्यम से उनकी कुशाग्र बुध्दिमत्ता द्वारा जो भी सुझाव मिलते है उनका उपयोग कर के नारी जीवन के तनाव, कुंठा, संत्रास, संघर्ष, अकेलेपन की भावना, हीनभावना आदि को कुछ मात्रा में दूर किया जा सकता है। उनके साहित्य से नारी को सीख लेने की आवश्यकता है ।

उसी प्रकार दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य के नारी चरित्र का सामाजिक अध्ययन इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से जनमानस को आंदोलित कर के समाज की कुरुपतोओं को उजागर किया है। उनका कथा साहित्य नारी की अनेक सामाजिक समस्याओं का दस्तावेज है जैसे अनमेल ब्याह समस्या, तलाक समस्या, वेश्या समस्या, विधवा समस्या, बलात्कारी नारी की समस्या, आर्थिक समस्या, नैतिकता की समस्या आदि। अतः लेखिकाने नारी इन समस्याओं को समाज के सामने अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है । उनके लेखन से सीख लेकर समाज सुधार की प्रेरणा भी मिलती है । नारी से संबंधित जिन समस्याओं को लेखिका ने वाणी प्रदान की है वे समस्याएँ भारतीय समाज में तीस वर्ष पहले भी थी और आज भी ज्यों कि त्यों है ।

उद्देश्य

समाज के विविध स्तर के नारी के मानसिक तथा सामाजिक व्यथा का चित्रण दीप्ति खंडेलवाल के लेखन में सूक्ष्मता से मिलता है । उन समस्याओं को अलग कर के समाज के सामने लाना स्त्री सुधार के कार्य में कुछ प्रेरणा मिल सके इसका अवलोकन करना यह मेरे अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य है ।

भारतीय समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई परिवार है और परिवार में नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है । अगर परिवार की नारी मानसिक तौर पर स्थिर रहे तो वह सारे परिवार को अच्छी तरह संभाल सकती है । परिवार के उन्नयन से समाज के प्रगति का मार्ग आसानी से खुल सकता है । अतः मेरे इस शोध कार्य से भारतीय पुरुषों का नारी के प्रति दृष्टिकोण बदले, यहीं आशा है।

आधुनिक समाज में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव तथा भारतीय संस्कृति को बनाए रखने की कसरत में आज नारी दोहरे तनाव का शिकार हो रही है । अतः नारी की इस घुटन, कुंठा, उसकी मानसिक दशा, उसकी पारिवारिक समस्या, सामाजिक समस्या, तथा मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जान लेना मैंने जरुरी समझा इसलिए मैंने यह विषय चुना है।

अनुसंधान के सर्वेक्षण

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य पर दो समीक्षाएँ लिखी गई है-

१) दीप्ति खंडेलवाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व जिसकी लेखिका फरहाना जहागिरदार है ।

२) समकालीन महिला कहानीकारों में दीप्त शलाकाः दीप्ति खंडेलवाल जिसकी लेखिका पुष्पा गुजराथी है ।

परंतु '' दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य में नारी चरित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन '' यह मेरा विषय पूर्णतः नया है, इस विषय पर कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है ।

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य पर और भी अनेक विषयों पर अनुसंधान कार्य हो सकता है जैसे कि -

१) उनके साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष पर अनुसंधान कार्य हो सकता है ।

२) उनके साहित्य के स्त्री - पुरुष के आर्थिक पक्ष पर अलग से शोधकार्य हो सकता है ।

३) दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी चेतना इस विषय पर भी शोध कार्य हो सकता है जैसे कि मुक्ति की चाह करनेवाली नारी, स्वतंत्र स्वाभिमानी नारी, वैवाहिक संबंधों के प्रति नया दृष्टिकोण रखने वाली नारी आदि ।

एक महिला होने के नाते उनका साहित्य समाज के अधिक निकट दिखायी दिया, बल्कि उनके नारी चरित्र समाज के जीते-जागते घटक दिखाई देते है। इस प्रतिभावान लेखिका ने अपनी कुशाग्र बुद्धिमत्ता से आधुनिक परिवेश में बदलती नारी की बदलती विचारधारा को सूक्ष्मता से परखा। सामाजिक, राजनीतिक रूप में आए परिवर्तनों के बावजूद भारतीय संस्कृति में नारी का पारिवारिक स्तर पर घुटनरूपी जीवन, मानसिक दबाव और जीवन में आए खालीपन तथा एकाकीपन से ग्रस्त नारियों के हिस्से में आयी जिंदगी को दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी लेखनी में उतारा है।

दीप्ति खंडेलवाल का जीवन अनेक अभिशप्तियों का कभी न सुलझने वाला एक जटिल गुंजलक था। उनका जीवन पुरुष वर्चस्ववादी समाज में शारीरिक और मानसिक व्याधियों की असहनीय यातनाओं के बीच गुजरा। फिर भी रोते रोते सारी जिंदगी बिताने के बजाय उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से हमारे समाज को बहुत कुछ दिया। उनके अंदर का रचनाकार आधुनिक होते हुए भी एक कृत्रिम आदर्श को स्वीकार करने की बजाय उन्होंने जीवन के कटु सत्य से पाठक को अवगत कराया। उनकी प्रत्येक कृति में उनके व्यक्तित्व की, विचारों की झलक प्राप्त होती है। उनके संपूर्ण साहित्य में नारी जीवन की आंतरिक मर्मज्ञता के दर्शन होते है। बदलती परिस्थितियों के कारण नारी की स्थिति में स्पष्ट रूप से परिवर्तन आया है। नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है। उसके इस रूप को लेखिका ने अपने साहित्य में उतारने की सफल चेष्टा की है।

समाज में व्यापक रूप से तथा परिवार में आंशिक रूप में नारी की स्थिति में परिवर्तन आया है। स्त्री स्वतंत्रता तथा नारी सुधार आंदोलन एवं स्त्री-शिक्षा से आयी नारी जागृती ने नारी के प्रति दृष्टिकोण में अमूलाग्र परिवर्तन आया है। परिणामत: साठोत्तरी महिला लेखिकाओं ने भी समाज में नारी की स्थिति के प्रति नवीन दृष्टि अपनाकर साहित्य रचा है।

साहित्यकार जीवन से प्रेरणा ग्रहण करता है। रचनात्मक ऊर्जा साहित्यकार की सहजात प्रवृत्ति होती है। मन की सतह से उतरकर साहित्यकार की संवेदना युगीन रचना विशेष का रूप धारण करती है। इसी तथ्य आधार पर साहित्य में मनोवैज्ञानिक चिंतन आरंभ हुआ। हमारे जीवन का विकास मनोविकारों पर आधारित है और मनोविकार का आधार मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान की स्थिति जीवन की अनेकानेक अभिव्यक्तियों में है। मनोविज्ञान और साहित्य में साधन और साध्य का संबंध है। जिसे हम जीवन कहते हैं, वह अधिकांश रूप में हमारे मनोजगत् की सूक्ष्मता का विषय है। साहित्य में मनोविज्ञान के अनेक आयाम व्यक्ति के मन को केंद्र मे रखकर प्रकट होते चले गए। , समीक्षा का साहित्य का अध्ययन और भी चिकित्सक दृष्टिकोण से होने लगा।

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य के नारी पात्र किसी न किसी अंर्तद्वंद्व से जूझते नजर आते है। उनके नारी पात्र समाज के किसी न किसी हिस्से की नारी का प्रतिनिधित्व करते नजर आते है। उनकी हर कहानी समाजाभिमुख लगती है। दीप्ति खंडेलवाल ने समाज की जिन विसंगतियों को देखा, उन्हीं को अपने पात्रों के द्वारा अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया। अपने लेखन के माध्यम से उन्होंने समाज के विविध पहलुओं को अत्यंत सूक्ष्मता से छुआ ।

दीप्ति खंडेलवाल की रचनाओं के लगभग हर नारी पात्र चाहे वह अकेली महिला हो, कामकाजी हो, अविवाहित हो या परित्यक्ता हो हर समय किसी न किसी द्वंद्व से उलझती नजर आती है। यह पात्र हम समाज में अपने आस-पास भी पाते है। उनके नारी पात्र सड़े-गले संस्कारों का तिरस्कार करती है परंतु जीवन की स्थितियों से अपना सामंजस्य न बिठा पाने के कारण मन ही मन छटपटाती है, कुंठित होती है। नारी के मन की इसी बारिकियों को लेखिका ने अपने लेखन में अभिव्यक्त किया है।

दीप्ति खंडेलवाल ने नारी-पुरुष संबंधों को लेकर अनेक कहानियाँ लिखी है। उनके मूल में यही भावना रही है कि वर्तमान समाज में रिश्तों में एक प्रकार का खोखलापन, बेगानापन आ गया है। भावनात्मक निकटता अब समाज से, परिवार से दाम्पत्य से भी दूर होती जा रही है। कहीं पर तो पति-पत्नी केवल दिखावे के लिए साथ-साथ रहते है लेकिन दाम्पत्य जीवन में अविश्वास, अनादर, अप्रामाणिकता का अवलंब करते है। समय के साथ स्त्रियों के अंदर आने वाला आत्मविश्वास उन्हे जीवन से लडने में समर्थ कर रहा है परंतु साथ ही में स्त्री में अहम् की मात्रा बढ रही है। नारी में अनैतिकता का अवलंब सहजता से हो रहा है। शिक्षा प्राप्त कर नारी अविवाहित रहकर परिवार की जिम्मेदारियों का वहन करती है, किंतु यही नारी परिवार का आर्थिक बोझ उठाने के बाद भी कहीं न कहीं अपनी अपूर्णता को लेकर मन ही मन घुल भी रही है। 'अभिशप्ता' कहानी की 'मानो' इसीप्रकार कभी न खत्म होने वाले अकेलेपन का शिकार दिखाई देती है। अपने हिस्से में आए अधिकारों को भी प्रेम की बलि चढाकर कुर्बान करती है।

दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी नारी पात्रों के द्वारा जीवन के हर पहलू को अपनाने की जल्दी में नयी पीढी के असहयोग का चित्रण लेखिका ने अपने साहित्य में किया है। जिसका परिणाम पारिवारिक विघटन के रूप में सामने आया है। नयी पीढी में बुजुर्गों के प्रति आस्था में घोर उपेक्षा का भाव आता जा रहा है, 'सलीब पर' यह कहानी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

नारी का आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी होना उसके व्यक्तित्व में मोड लाया है। जिसके कारण पति-पत्नी एवं पारिवारिक रूपों पर प्रभाव पडा है। जहाँ वह स्वाधीन हुई है वहीं वह अपने परंपरागत संस्कार एवं मानसिकता से अलग नही हो सकी है। आज की शिक्षित नारी जहाँ पढ-लिखकर आत्मनिर्भर हुई है वहाँ उसे इस आत्मनिर्भरता का मूल्य भी चुकाना पडा है। अनेक परिवारों में परिवार की बडी लडकी आर्थिक शोषण का शिकार हो रही है जहाँ

पर परिवार को पालने के लिए अविवाहित जीवन की विभिषिका को ढोने के लिए वह विवश है। विवाहित स्त्री भी नौकरी करते वक्त दोहरे शोषण का शिकार बनती है।घर परिवार तथा दफ्तर की दोहरी जिम्मेदारी निभाते वह थक जाती है। 'तपिश के बाद' कहानी में लेखिका ने इसका चित्रण किया है। इसी तरह स्त्रियों में आत्मसम्मान और स्वावलंबन के कारण, पुरुष के अहम् के कारण पारिवारिक टूटन का शिकार होना पड़ता है 'कोहरे' उपन्यास इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

समकालीन महिला कहानीकारों ने अपने साहित्य में नारी के मर्मस्पर्शी चित्रण द्वारा करुणा एवं आकर्षण की उत्पति, अधूरेपन की भावना, युगीन नारी की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि समकालीन लेखिकाओं की पंक्ति में उनका स्थान महत्वपूर्ण है। एक जागरुक महिला लेखिका होने के कारण सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में नारी के बदलते, बिगड़ते, सँवरते अनेक रुपों से वे पूर्णतया 'अभिज्ञ'है। साथ ही उनके साहित्य में भारतीय पुरुषों की मानसिकता आज भी मध्ययुगीन सामंतकालीन पुरुषों की याद दिलाती है। 'प्रिया' उपन्यास पुरुषों का नारी के प्रति नीचता का उदाहरण है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध नारी की आंतरिक द्वंद्वों से जूझती हुई भावना को लेकर लिखा गया है। शोध प्रबंध में दीप्ति खंडेलवाल के तीन उपन्यास, एक लघु उपन्यास तथा सात कहानी संग्रहों का बारिकी से अध्ययन किया है। शोध प्रबंध कुल छः अध्यायों में रुपायित है।

प्रथम अध्याय

'दीप्ति खंडेलवाल का परिचय'

इसके अंतर्गत दीप्ति खंडेलवाल के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है तथा संक्षिप्त में उनके साहित्य का विवरण किया गया है।

द्वितीय अध्याय

'दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी पात्रों का मनोविज्ञान' इसके अंतर्गत लेखिका के कहानियों तथा उपन्यासों की नारी के मनोविज्ञान पर प्रकाश डाला गया है तथा भारतीय पुरुषों की मानसिकता का विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय

'दीप्ति खंडेलवाल के नारी पात्रों का अंतद्वंद्व' इसके अंतर्गत दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य के नारी के मन के संघर्ष, द्वंद्व पर प्रकाश डाला गया है तथा आंतरिक मर्मज्ञता का स्पष्टीकरण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय -

'दीप्ति खंडेलवाल के नारी का सामाजिक अध्ययन'

इसके अंतर्गत दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में भारतीय नारी के विविध सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय -

'दीप्ति खंडेलवाल की रचनाओं का कथ्य एवं शिल्प'

इसके अंतर्गत लेखिका के साहित्य की भाषा, भाषा शैली, नूतन शब्द प्रयोग को विश्लेषित किया गया है।

षष्ठ अध्याय - उपसंहार

इसके अंतर्गत उपसंहार में संपूर्ण शोध प्रबंध का सारांश दिया गया है, तथा संदर्भसूची तथा कोश, पत्रिकाएँ दी गई है।

प्रथम अध्याय

दीप्ति खंडेलवाल का परिचय

प्रथम अध्याय

दीप्ति खंडेलवाल का परिचय

❊ प्रथम अध्याय ❊

दीप्ति खंडेलवाल का परिचय

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। संसार में यदि नारी नहीं होती, तो सभ्यता और संस्कृति ही नहीं होती। अपने विविध रूपों में नारी ने पुरुष को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है। वह समाज में पुरुष के लिए कभी जन्मदात्री, पोषणकर्ती माता के रूप में आती है, तो कभी स्नेह की भावधारा में प्रवाहित करने वाली भगिनी के रूप में लक्षित होती है। अतः समाज में नारी के माता, पत्नी, भगिनी, पुत्री, सखी, सेविका, परिचारिका, तपस्विनी आदि अनेकानेक रूप है । लेकिन इसी नारी पर भारत में सदियों से अन्याय, अत्याचार होता आ रहा है। ''प्राचीन काल से समाज ने उस पर लज्जा, मर्यादा, विनयशीलता, कोमलता, त्याग, समर्पण आदि गुण थोप दिए और दुर्बल, अबला नारी, करार दे दिया।''[१] पुरुष ने सदैव ही नारी जीवन की बागड़ौर अपनें हाथ में ही रखी। नारी भी एक व्यक्ति है, उसे भी कोई मन है, भावनाएँ है यह बात पुरुष ने कभी सोचने की आवश्यकता नहीं समझी। लेकिन नारी के बिना संसार ही अधूरा है। यह बात पुरुष भूल जाते है ।

डेढ़ सौ वर्षों के बाद अंग्रेजों से छुटकारा पाने के बाद भारतवर्ष ने स्वतंत्रता की साँसे ली। स्वतंत्रता के बाद भारत में अनेक बदलाव आए। नारी संदर्भ में पहले चुल्हा, चौका और बच्चा इन्हे सँभालते हुए औरत को घर की चौखट के बाहर जाना मना था। लेकिन ज्योतिबा फुले जैसे महान समाज सुधारकों की वजह से औरत को पढ़ने लिखने का मौका मिला। पढ़ लिखकर भी पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को उपेक्षित होना पड़ता है। शिक्षा ने नारी को अपने पैरों पर खड़ा किया, कामकाजी बनकर उसने अपने व्यक्तित्व को निखारना चाहा लेकिन पुरुष प्रधान संस्कृति को यह स्वीकार

नहीं हुआ। स्त्री की सब से बड़ी त्रासदी यह है कि, ''स्त्री अपनी भूमिका स्वयं तय नही कर पाई न परंपरा में न आधुनिकता में! उसकी भूमिका सदैव ही अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर शक्तिशाली पुरुषों द्वारा तय होती आई है।''[२]

हिंदी साहित्य में नारी समस्याओं को ध्यान में रखकर भारतेंदु युग से ही अनेक उपन्यास तथा कहानियों का लेखन हुआ है। समकालीन हिंदी साहित्य में अनेक महिला साहित्यकारों ने अपने लेखनी से नारी के प्रति समाज की मानसिकता बदलने का प्रयत्न किया। अनेक महिला कहानीकारों ने वैयक्तिक अनुभवों को सामाजिक भूमि पर लाकर खड़ा किया। इनमें मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे, ऊषा प्रियवंदा, राजी सेठ, ममता कालिया, मंजुल भगत, दीप्ति खंडेलवाल ये नाम प्रमुख है। इन लेखिकाओं ने नारी के आर्थिक स्वातंत्र्य, स्वाभिमान और स्वतंत्र विचारधारा को बनाए रखने के लिए नारी की मानसिकता का चित्रण किया है । 'दीप्ति खंडेलवाल' समकालीन हिंदी साहित्यकारों में से एक महत्वपूर्ण व्यक्तिमत्व है जिन्होंने अपने लेखन से हिंदी साहित्य में तथा पाठकों के मन में अपनी विशिष्ट जगह बना ली है।

१.१ दीप्ति खंडेलवाल का व्यक्तित्व :

दीप्ति जी सप्तम दशक की श्रेष्ठ कहानीकार है। दीप्ति खंडेलवाल के व्यक्तित्व के बारे में कहा जा सकता है - ''तमसोमा ज्योतिर्गमय' जिसका जीवन दर्शन था किन्तु वह केवल एक अगरबत्ती बनकर रह गया। उसके भीतर सूरज सी आग भी भड़क रही थी जिसे वह आलोक बनाना चाहती थी और इस आग को आलोक बनाने के प्रयास में वह जलने की शर्त भी पूरी कर रही थी।'' [३] अपने बारे में दीप्ति खुद अपनी आत्मरचना में लिखती है।

समकालीन हिंदी कथा साहित्य के जिन कुछ लेखकों ने पाठकों का ध्यान तेजी से अपनी ओर खींचा है, उनमें दीप्ति खंडेलवाल का नाम प्रमुख है। उन्होंने अपने अछूते कथ्य और संवेदनशील भाषा शिल्प के माध्यम से अपना एक विशिष्ट पाठक वर्ग तैयार किया और सदियों से प्रताड़ित उपेक्षित नारी जीवन को सशक्त अभिव्यक्ति दी हैं। इस महान लेखिका की प्रवृत्ति स्वयं को छुपाने की रही जिसके कारण उनका प्रखर साहित्यिक व्यक्तित्व अछूता ही रहा। लेकिन किसी भी साहित्यकार के साहित्यिक विश्लेषण का मूल्यांकन करने के लिए उसका समग्र जीवन परिचय प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि उसके जीवन और व्यक्तित्व के अनेक आयाम उसके साहित्य को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते है। मैंने इस प्रथम अध्याय में दीप्ति खंडेलवाल के निजी अनुभूतियों तथा जीवन पक्षों पर प्रकाश डालने का एक छोटासा प्रयत्न किया है।

१.१.१ जन्म एवं बाल्यकाल-

२१ अक्तूबर १९३० को जन्मी दीप्ति खंडेलवाल का एक और एकमात्र परिचय यही है कि वे सप्तम दशक की प्रमुख कहानी लेखिका है। उनकी कहानियों को पढ़ते हुए लगता है, मानो ''उनकी कहानियाँ एक ही महाकाव्य नारी जीवन की विडम्बनाओं के महाकाव्य के विभिन्न सर्ग हो। संपूर्ण नारी जीवन को उन्होंने एक मूर्त ट्रेजेडी के रूप में अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है उसे आधुनिक शैली शिल्प और वाणी ही है ।'' [४]

अभूतपूर्व प्रतिभा की धनी दीप्ति खंडेलवाल का जन्म आंध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद में हुआ। दीप्ति खंडेलवाल बचपन से ही बड़ी सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व वाली थी। दीप्ति बचपन में एक अबोध लड़की थी। उसका रंग खरा गोरा था। आँखे बड़ी और उज्वल थी। उसके बाल रेशमी काले थे। बचपन में उसे दो आदतें पड़ गई थी-एक अंगूठा चूसने की, दूसरी आकाश

की ओर देखने की! जब वह अंगूठा चूसते चूसते, आकाश को देखते, चलने लगती, तो गिर पड़ती थी। चोट लगती थी । चोट लगती, तो दर्द होता था। आकाश को देखने की परिणति में उसे दर्द मिलता था। वह अबोध लड़की बड़ी होकर भी चोटों और दर्द से भरपूर थी।

दीप्ति जब बहुत छोटी थी शायद एक साल की भी नही थी तब किसी धार्मिक उपलक्ष्य में उसके पिता नदी में स्थान कर रहे थे, तो उन्हो नें सोचा कि एक गोता दीप्ति को भी लगवा दे। पिता जी ने उसे एक बार डूबोकर निकाला ही था कि वह न रोई, न चीखी, बस नीली पड गई। उसके पिताजी दुखी और आश्चर्य चकित हो गए।

उन्हें समझ में नही आया कि क्यों दीप्ति नीली पड़ गई? पानी इतना भी ठंडा नही था कि एक वर्ष की बच्ची की देह नील पड़ जाए, और दीप्ति देखने में इतनी दुर्बल भी नही थी। लेकिन वह नीली पड़ गई थी। और फिर उसका नीला पड़ना चलता रहा । तीन वर्ष की आयु तक उसे सात बार चेचक निकल चुकी थी। छह वर्ष की उम्र मे उसे डिफथीरिया हुआ था। नौ वर्ष की अवस्था में वह खुनी पेचिश के कारण मरते मरते बची थी। और पंद्रह वर्ष की आयु मे वह टॉयफॉइड के आक्रमण से जो शय्या पर गिरी, तो सप्तम दशक तक नही उठ सकी। टॉयफॉयड ने उन्हे ऐसा क्षत विक्षत किया कि उसका अंग अंग पंगु सा होकर रह गया। बडी होने तक दीप्ति की पथराई देह तीन हजार से भी अधिक इंजेक्शनों से कोंत्री जा चुकी थी और अनगिनत दवा प्रयोग उसके शरीर पर हुए। लेकिन उनकी देह का नीला पड़ना रुका नही। दीप्ति जी लिखती है, ''दोष उन हवाओं का नही, जिनमें वह सांस लेती है, दोष शायद उन पंचतत्वों का था जिनसे उसका निर्माण हुआ है । और देह ही यह अस्वस्थता इतनी दीर्घ हो गई है कि अब मन भी रोगी हो उठा है । देह की यातना मन की यातना बनी जा रही है. जिस देह में उसे रहना है, वह देह उससे पग पग पर विद्रोह किए रहती है और उसका सब कुछ विरुप होकर रह

जाता है । उसकी आत्मा के रंग उसके जीवन में नही केवल इसलिए नही उतर सके की बीच में उसकी चिर अस्वस्थता की दीवार खड़ी हो गई थी । जब वह लहुलूहान है, पराजित है, आंसुओं से अधिक अपने ही रक्त से भीगी हुई है, तो भी वह इस दीवार पर अपनी कोमल दुर्बल हथेलियों से निरंतर प्रहार कर रही है और अधिक लहुलूहान हुई जा रही है। यह दीवार शायद नहीं, निश्चित रूप से उसकी नियति है और नियति से कोई जूँझ भले ही ले जीत नही सकता।''[५]

तात्पर्य यह है कि, दीप्ति बाल्यकाल में चिरुरुग्णा ही रही जिससे उनका पूरा बचपन कुंठित हो गया।

उनके पिताजी का नाम मदन गोपाल था। वे बडे कॉन्ट्रेक्टर थे। दीप्ति जी लिखती है उनके पिताश्री से मिली 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की चेतना दीप्ति के शिराओं में रक्त बन कर संघर्ष रत थी। उनके भाईंयों के नाम कृष्णस्वरूप तया श्रीपतराय था। उनके पिता जी उन्हे बचपन में कहानियाँ सुनाया करते थे। उनकी सुनाई झाँसी की रानी की कहानियाँ दीप्ति के लेखन की प्रेरणा बन गई थी। उनके पिताजी दीप्ति के चिर रूग्णावस्था से बहुत चिंतित थे।

दीप्ति खंडेलवाल की चिर रूग्णता के कारण, उनके पास न कोई उल्लेखनीय डिग्री थी न कोई स्पृहणीय पद था। उनकी सारी भौतिक स्थितियाँ उसके शरीर रूपी साथी की ही दी हुई थी। उनके मन में अपनी भौतिक स्थितियों को लेकर केवल एक तीव्र दंश था कि क्यों सारी मानसिक क्षमताओं के बावजूद वह देह की अक्षमता के कारण निरंतर लेने पर मजबूर हो गई थी कुछ दे नहीं सकी थी। उन्हे हमेशा लगता कि काश! वह एक लेखिका होने के साथ एक सफल व्यक्ति भी होती। किंतु एक दुर्बल देह में बंदी एक प्रबल मन निरंतर हारता रहा।

१.१.२ महत्त्वपूर्ण घटनाएँ :

दीप्ति के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना उनके पिताजी बताते है, कि उसके मामा का विवाह था। बारात निकल रही थी। उस बारात में रेशमी फ्रॉक पहने, मोटर मे बैठी और शायद अंगूठा चूसती वह भी थी कि दूसरी और से एक अर्थी गुजरी। शहनाइयों के स्वरों से 'राम नाम सत्य है! के बोल टकरा गए। दीप्ति के मुंह से अंगूठा निकल गया ''एक तरफ बारात जा रही है, दूसरी तरफ कोई मरकर जा रहा है, शायद यहीं जिंदगी है! ''[६] उसने साफ साफ कहा। उसकी अबोध आँखे किसी दार्शनिक बोध से फैल गई थी। पिता ने उसे खींच कर सटा लिया था। वह उसे फिर बारात दिखाने लगे थे कि दार्शनिक बोध से फैल गई उसकी आँखे अबोधत्व में सिमट जाएँ। वह डर गए थे कि इतनी छोटी लड़की ऐसी बडी बात क्यों कर रही है? वह जानते थे कि बड़ी बातें करने वाले छोटे बच्चे संसार के लिए चुनौती बन जाते है और संसार चुनौती बनने वालों के बुत पीछे बनाता है, पहले उन्हें सूली पर चढ़ाता है। शायद पिता समझ गए थे कि उनकी बेटी को भी सूली पर चढाया जाएगा। पिता का अनुमान गलत नहीं निकला, उनकी बेटी दीप्ति को सूली ही मिली।

सत्य और सुंदर की चेतना से स्पंदित रोम - रोम लिए दीप्ति का यथार्थ यह था कि वह भयानक अनिद्रा की रोगिणी थी, बीस वर्षों से सेडेटिव्स ले रही थी। नारी देह के रोग उन्हे घेरे रहे थे। उनका अंग अंग कष्टों से जकडा रहा था। घोर रक्ताल्पता के कारण जीना उनके लिए कठीन हो रहा था और वह इतना कम खा पी पाती थी कि उसे फल सूँघने वाली राजकुमारी की संज्ञा दी जा सकती थी। और सब कुछ तो झेल लेती किंतु अनिद्रा के कारण अंतहीन बनी रातें उससे काटे नहीं कटतीं थी। करवटें बदलती हुई वह तडपती रहती थी फिर कोई दिन उनसे लिए नया नहीं होता केवल वह उस निरर्थक

छटपटाहट की पुनरावृत्ती मात्र होता था जिसे जाने कब से वह झेल रही थी कि रात का सहारा लेकर खड़ा होता उसका दिन लड़खड़ाता होता था। और लड़खड़ाते दिन से गुजरकर उनकी रात और थक जाती थी। रात के सन्नाटों में शय्या पर अकेली करवटें बदलती रहती। उसकी अपनी देह ही उसका वाटरलू बन गई था। एक दुर्बल देह में बंदी एक प्रबल मन हारता रहा था। उनकी इस दशा को देखकर दीप्ति जब छोटी थी, तब उसके अंग्रेजी के ट्युटर जो उसकी उड़ान भरने की क्षमता से बहुत आशा रखते थे, कहते रह गए थे। ''सांग बर्ड ! व्हाई हैस्ट दाड ए ब्रोकन विंग''[७]

१.१.३ **पारिवारिक जीवन :** दीप्ति खंडेलवाल के पति रामकुमार खंडेलवाल थे। वे हिंदी के सुलझे हुए प्रोफेसर थे जो अनुशासनप्रिय, कलाप्रेमी तथा कोमल स्वभाव वाले थे। रामकुमार खंडेलवाल से दीप्ति का विवाह चौदह वर्ष की आयु में ही हुआ। यह विवाह उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन लाने वाला सिद्ध हुआ। उनके पति दीप्ति जी के लिए संरक्षक, सलाहकार, मित्र और प्रशंसक थे । रामकुमार जी को उनकी माताजी ने गोद लिया था। वह कट्टर रुढिवादी तथा परंपरावादी नारी थी। रामकुमार जी ने माँ के अनुसार अपने आप को बदल लिया था। वे रुढ़ियों और परंपराओं को स्वीकार चुके थे। रामकुमार सचमुच के रामायण के राम की ही तरह दयालु थे। वे पत्नी और माँ दोनों में से किसी को भी दुख नहीं पहुँचना चाहते थे। शायद इसलिए उन्होंने परंपरावादी माँ को लखनऊ में और आधुनिक पत्नी को अपने पास रखा था। अपनी पत्नी को उन्होंने आधुनिक वातावरण दिया उसकी हर इच्छा पूरी की उनके लेखन कार्य पर उन्होंने कभी बंधन नहीं लगाया । व्यावाहारिक दृष्टि से रामकुमार जी का त्याग और बलिदान सराहनीय है ।परंतु दीप्ति जी ही अपनी मानसिक तथा शारीरिक रुग्णावस्था के कारण रामकुमार जी पर शक

करती थी। परंतु एक आदर्श पति का कर्तव्य रामकुमार जी ने खूब निभाया था।

दीप्ति खंडेलवाल का पारिवारिक जीवन कुछ साधारण औरत के जीवन की तरह न था। उनके एक बेटी और एक बेटा है। उनका पहला अंश उनकी सुकुमार बेटी थी। दीप्ति जी अपनी आत्मरचना में लिखती है कि उनके बेटी ने उनकी माँ की तरह देखभाल की। छोटी सी उम्र से उनकी बेटी ने अपनी चिररुग्णा माँ को पथ्य बनाकर, रस पिलाकर, अपनी छोटी छोटी कामनाओं का त्याग कर अर्थांत अपने नन्हे से जीवन की बाजी लगाकर जीवनदान दिया। वह बेटी जब उनके सामने खड़ी होती थी तो दीप्ति की मन की आँखे छलछलाती थी। वे बेटी को अपनी माँ कहती थी।

उनकी आत्मा का दूसरा अंश एक तेज धूमधाम करने वाला बेटा था। वह बेटा एक दिन कुछ छिपाए उनके सामने आ खड़ा हुआ था। उसने उन्हें आँखे बंद करने को कहा । उन्होंने आँखे बंद की, खोली तो उसके हाथों में नन्हे हाथों से लिखी अंग्रेजी की एक कविता थी। शीर्षक था 'माई मदर' अपनी कोख से जन्मे उस बालक ने अपनी चिररुग्णा माँ पर कविता लिखी थी -

'ओह! लुक एट माई मदर
सो प्रेटी एंड फेयर
लुक एट हर डार्क ब्युटीफूल हेअर
लुक एट हर ब्राइट लवली आइज?
एज वाइड एज द ओपन स्काइ..... ''[८]

इस बेटे को दीप्ति जी अपना 'साक्षी' कहती थी। जन्म और मृत्यु के जिस फाँसले को जिंदगी कहते है, दीप्ति जी का वह फाँसला गतिहीन रहा प्रकृति से कर्मवादिनी वह नियति से अकर्मण्य होकर रह गई थी। निर्दोष

किंतु अकर्मण्यता की अपराधिनी और उम्र उसपर से नही गुजरी थी वह उम्र पर से गुजर गई थी। दीप्ति की बाहरी सज्जा साधरण होती थी किंतु भीतर की कोई सज्जा उसके व्यक्तित्व में प्रतिभासित होती सी उसे कुछ असाधारण बना जाती थी।

उनके पति रामकुमार जी पत्नी के लिए लड़ने वाले भी थे तथा लोकापवाद जैसी हलकी बातों से डरते भी थे। अधिकांश हिंदी प्रेमियों ने कई सवाल रामकुमार जी से जब पूछे तब वे निरुत्तर थे। दीप्ति जी जब फाईव्ह स्टार होटलों में जाकर लिखने लगी तब कई दिनों तक घर पर न आना, लोकापवाद के लिए बहुत बड़ा कारण बन गया। इसलिए राम को सीता का (दीप्ति का) परित्याग करना ही पड़ा। विवाह विच्छेद के बाद दीप्ति पिता के यहाँ रहने लगी। प्रकृति अस्वास्थ के कारण चार पाँच वर्ष के बाद उनका देहांत १९८९ में हो गया।

१.१.४ लेखन की प्रेरणा -

दीप्ति के पिता जी उन्हे बचपन में कहानियाँ सुनाया करते थे। दीप्ति को केवल एक ही कहानी याद रह जाती थी झाँसी के रानी की! दाँतों से घोडे की लगाम पकडे, दोनो हाथों से तलवार चलाती, रक्त से नहाती, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती, वह झाँसी की रानी उसकी आँखो में इतनी मूर्त हो उठती थी कि वह चीख पडती थी ''मैं भी झाँसी की रानी बनूँगी।''[९] दीप्ति जी ने लिखा है कि जब वह लेखिका बन चुकी थी, उनके हाथों मे तलवार नही लेखनी थी, तो उस लेखनी से वह तलवार का ही काम लेना चाहती थी। यानि वह सब काट फेकना चाहती थी जो अन्याय है, गुलामी है, गलत है। अर्थात वह सत्य को बदलते संदर्भो के व्यापक परिवेश में आंक लेना चाहती थी, फिर चाहे वह लेखन में हो चाहे जीवन में। सत्य को वह रुढ अर्थों में नही चेतना के जीवन धरातल पर सूक्ष्म और स्थूल दोनों स्तरों पर, जी लेना

चाहती थी। अपने अनेक कहानियों के अनेक पात्रों में से उन्होंने झाँसी की रानी को ही अपना आदर्श चुना। खंडित स्तरों पर चलती, बाहर से भीतर की ओर की यात्रा दीप्ति का अति त्रासद भोगा हुआ यथार्थ रहा। स्थूल स्तर पर वह निरंतर हार रही थी। सूक्ष्म स्तर पर निरंतर मर रही थी। उनका यथार्थ इतना विद्रुप था किं चेतना के स्तर पर सुंदर एक विद्रुप बनकर रह गया था। फिर उसी हार, उसी मृत्यु, उसी विद्रुप के बीच दीप्ति के लेखन ने जन्म लिया, जैसे लड़खड़ाते पैरों पर खड़े होने के अस्वीकारों के बीच एक स्वीकार मिल गया था।

'' दीप्ति की कहानियाँ उनके अपने प्रेमसंबंधी दार्शनिक चिंतन की अभिव्यक्ति हैं । इसे उन्होंने अपनी आत्मकथा में कई स्थानों पर स्पष्ट किया है। ''[१०]

अपने लेखकीय वक्तव्य में दीप्ति ने कहा है, कि आदमी कुत्ता हो सकता है, लेकिन आदमी केवल कुत्ता ही नहीं है। उनका यह कथन उनके समस्त लेखन में प्रतिध्वनित एक सूक्ष्म स्वर है। दीप्ति को आदमी से बहुत प्यार हैं। दीप्ति ने साफ साफ देखा था कि यदि देवत्व एक भ्रम है, तो प्रभुत्व भी सच नहीं। आदमी तो इन दोनों के बीच कही होता है। अपनी कहानियों में वह इसी बीच के आदमी को तलाश करती थी इस बीच के आदमी से उन्हें अत्यन्त प्यार था।

लेखन दीप्ति के सिर पर एक जुनून की तरह सवार होता था। एक ज्वार की तरह सारे बाँध तोड़कर वह निकलता था। एक आग की तरह भड़क उठता था। दीप्ति जी की हर कहानी केवल एक या दो सिटींग का परिणाम होती थी । और जब वे लिखती होती थी तब उन्हे अपना भी होश नही होता था। रचना क्षण उनके लिए आत्म विस्मृति के तत्मय क्षण होते थे ।

अपने लेखन के बारे में उनका कहना है , ''लिखते समय वह शून्य होती है कि कोई सामने आता है, कोई घटना घटती है कोई स्थिति करवट लेती है। कोई चोट लगती है, कोई दर्द होता है फिर यह 'कोई' उसके भीतर दफन मुरदों को जिंदा कर देता है..... और कोई कहानी जन्म लेती है। 'उसके भीतर मुरदों का इतना विशाल अजायबघर है कि कभी कभी जब वह अकेली उस अजायबघर में घूमती है तो चलते चलते थक जाती है, लेकिन अजायबघर है कि खत्म ही नही होता..... इस अजायबघर का दशमांश भी तो न वह देख पाई है, न दिखा पाई है। वह स्वयं भी तो इस अजायबघर में जाने कितने रूप मे दफन है।''[११]

एक लेखिका होने के बावजूद वह शारीरिक दुर्बलता, चिररुग्णावस्था से परेशान थी लेकिन उनके पति परमेश्वर उनका सतत संभाल किया। अपने पति के बारे में दीप्ति जी लिखती है कि वे अपने जीवन साथी के प्रति नत मस्तक है क्योंकि उन्होंने अपनी संभाल से दीप्ति के शरीर और प्राणों का संयोग बनाए रखा। लेखन की प्रेरणा वह अपने पति को मानती है क्योंकि यदि जीवन ही नही होता तो लेखन कहाँ होता? अतः दीप्ति का जीवन ही नही, उसका लेखन कार्य अपने पति के प्रति नत है ।

लेखन के संपूर्णता को खंडित स्तरों पर झेलती घुटन को मुक्ति देने, कुछ देर जीने, वे कभी कभी ही लिखती थी। कोई उन्हे पूछता था आप इतना अधिक कैसे लिख लेती है? उनका उत्तर होता था पता नहीं, यह सब कैसे..... क्यों? इन प्रश्नों का कोई निश्चित उत्तर उनके पास नहीं था। मुझे लगता है दीप्ति को मिली यह भगवान की ही देन थी। और भगवान की लीला को कोई कैसे जान सकता है।

अपने लेखन के बारे में कमलेश्वर जी को दीप्ति ने एक पत्र में लिखा है ''नितांत व्यक्तिगत संदर्भो में मेरा व्यक्ति बहुत थका, बहुत लड़खड़ाया

हुआ है और मेरा लेखक थकी, निस्पंद होती उंगलियों में लेखनी थामे भीतर और बाहर के विरोधों से जूझ रहा है..... ऐसे में किसी रचना का स्वीकार जैसे उस अस्तित्व का स्वीकार बन जाता है, जो मृत्यु के दम घोट क्षणों में सांस के लिए संघर्ष कर रहा हो..... मेरा लेखन मेरे लिए ऐसी ही सांसे है..... लिखती हूँ कि इन दमघोट क्षणों में कुछ सांसे और ले सकू.....कुछ देर और जी सकू..... और बस''[१२] दीप्ति को लेखन की प्रेरणा उनके त्रासदीपूर्ण जीवन से ही मिली है ।

उनका जीवन अनेक अभिशप्तियों का कभी न सुलझाने वाला एक जटिल विषय था । कुछ अभिशप्तियाँ उन्होंने अपने जीवन में स्वयं ओढ़ी थी तो बहुत ज्यादा नियति ने उनके जीवन को शापग्रस्त बना दिया था । उनकी विडंबनापूर्ण जीवनयात्रा १९३० से प्रारंभ होकर १९८९ तक अनेक संघार्षों तथा शारीरिक एवं मानसिक रोगों से जूझती हुई घिसटती रही। वे लिखती है - '' श्रेय उस वज्र मुष्टि को जिसने मेरी उँगलियों को कसकर प्रतिध्वनियाँ कागज पर उतरवा ली वरना मेरी उँगलियों से कलम छूट चुकी थी।''[१३]

बॉयरन तथा चंडीदास का प्रभाव उनके लेखन पर दिखाई देता है ।

१.२ कृतित्व :-

दीप्ति खंडेलवाल का व्यक्तित्व समझ लेने के बाद यह स्पष्ट होता है कि उनका लेखिका होना और कुछ नही बल्कि भगवान की ही देन है क्योंकि सभी असाधारण परिस्थितियों में लेखन करना किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए मुश्कील ही नही नामुमकीन है जिसे दीप्ति खंडेलवाल ने अपने लेखन से सिद्ध किया है। अपने शारीरिक अस्वस्थता और चिररुग्णता के रहते उम्र की चालीस वर्ष के पश्चात ही दीप्ति का कागज पर कलम से लिख पाना सन ७० के आसपास ही हो सका । अतः दीप्ति का रचनाकाल सन १९७० से १९८५ तक है। दीप्ति का मूल स्वर कवि का था। यह कवि वर्षों दीप्ति

की चेतना को झंकृत करता रहा। उनके काव्य के विषय होते थे प्रेम और सौदंर्य एवं प्रकृति और दर्शन । एक समय था कि उनकी कविताएँ प्रकाशित हुई थी, सराही भी गई थी, किन्तु जीवन की उठापटक ने उनकी लेखनी को कल्पना के कोमल आकाश से उतारकर यथार्थ की कांटों भरी धरती पर ला खड़ा कर दिया। ''अब कविता दीप्ति को एकदम छद्म लगती है। प्रेम और सौंदर्य के अर्थ उसके निकट बदल गए है प्रेम और सौंदर्य के स्थान पर जब यथार्थ का कटु और कुरुप उसके रुबरु खड़ा हो गया तो उसने घबराकर आँखे नहीं बंद की उस रुबरु खड़े यथार्थ को भी अपना लिया फिर वह प्रेम और सौंदर्य के कैनवस पर कटु और कुरुप के चित्र खींचने लगी ।''[१४]

'सलीब पर' इस कहानी संग्रह में लिखी अपनी आत्मरचना में दीप्ति ने लिखा है, ''वह केवल दो सौ के लगभग कविताएँ और साठ के लगभग कहानियाँ लिख सकी है। कविताएँ दराज में बंद हैं कहानियाँ लगभग सभी प्रकाशित हो चुकी है अब वह चाहे भी तो कविता नहीं लिख पाती, कहानियाँ न चाहने पर भी लिखती चली जाती है शायद इसलिए कि जिंदगी कविता नहीं होती, कहानी होती है। अपने कथाकार रुप से दीप्ति को बहुत मोह है शायद इसलिए कि यह रुप उसकी जख़्म खाती जिजीविषा का एकमात्र प्रमाण है।''''[१५]

निष्कर्षत : यह कहा जा सकता है कि अपनी दर्द भरी जिंदगी को रोते रोते ढोना दीप्ति को मंजूर नहीं था। कुछ करने की इच्छा उनके मन में तीव्रता से होती थी। इसलिए वह लिख पाती थी ।

१.२.१ दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य का संक्षिप्त परिचय :-

- कविताएँ २०० से अधिक अप्रकाशित
- कहानी संग्रह
- कड़वे सच - प्रथम संस्करण १९७५
- वह तीसरा - प्रथम संस्करण १९७६
- धूप के अहसास - प्रथम संस्करण १९७६
- सलीब पर - प्रथम संस्करण १९७७
- दो पल की छांह - प्रथम संस्करण १९७८
- नारी मन - प्रथम संस्करण १९७९
- औरत और नाते - प्रथम संस्करण १९७९
- उपन्यास
- कोहरे - प्रथम संस्करण १९७७
- प्रिया - प्रथम संस्करण १९७८
- प्रतिध्वनियाँ - प्रथम संस्करण १९७४
- लघु उपन्यास वह तीसरा - प्रथम संस्करण १९७९
- अन्य रचनाएँ
- लेख - मनु की नियति क्या है ?
- संस्मरण - शहरे आबाद, हैदराबाद!
- काव्यात्मक संवाद - एक आधुनिक तोता मैना संवाद

१.२.२ कुछ कविताओं के अंश

दीप्ति की कविताएँ अप्रकाशित ही रही लेकिन उनकी अनेक कहानियों में कहीं

कहीं पर उनका कवि स्वर उजागर हुआ सा प्रतीत होता है।

''जलते दीपक से मत पूछो

है रात अभी कितनी बाकी

भीड़ घिरी रहती लेकिन

हर जलना होता एकाकी।''[१६]

''भगवान दो घड़ी, जरा इन्सान बन के देख,

दुनिया में चार दिन जरा मेहमान बन के देख।''[१७]

''धूप भी उदास है.... छांह भी उदास है

दूर-दूर तक आज राह भी उदास है ।''[१८]

''चितवन से आत्मा, तक फैले ये प्रसार...

कांटों भरी धरती से रंगो-भरे-आकाश तक...,

और इनमें भटकते ये मनमृग, शेखर, पुष्पा-इंद्रनाथ''[१९]

''आकाश!

चांद-तारों, का आकाश!

बदलते रंगों का आकाश!

उज्वल नीलिमा में हसता आकाश!

बंधनहीन, खुला आकाश''[२०]

''अनजान सफर, अंधी राहें, मंजिल का पता मालूम नहीं!
आँखों में चांद सितारे हैं, दुनिया का पता मालूम नहीं! ''[२१]

दीप्ति खंडेलवाल द्वारा कुछ कविताएँ प्राप्त हो सकी है । वे इस प्रकार है

१. शूल चुभते रहे

शस्य धरती मिली, नील अंबर मिला ।
चाँद तारे मिले, सौ सहारे मिले ।
किंतु ! जो भी मिला, मोल देना पड़ा
कोश सर्वस्व का तोल देना पड़ा
एक पल तृप्ति का, कुलुष शत प्यास के ।
दौर चलते रहें, घूँट भरते रहें ।

२. हर निमिष भार है, सांस हर बोझ है ।
आँसूओं की कथा पर अभी रोष है ।
नील नभ के सपन छल गए मुझे ।
एक तीखी जलन दे गए मुझे ।
खंडहरों की कथा पर अभी शेष है ।
आँधियों में उलझ पंख भूले है दिशा
तीव्र होती गयी फिर निराशा तृषा ।
शूल तो शूल । हर! फूल तक चुभ गया
हास में यदि छुआ, तो भी सपन बन गया
हर खुशी लुट गयी हर हँसी छूट गयी ।
चिर व्यथा की कथा पर अभी शेष है ।
किंतु क्या हार स्वीकार होगी मुझे?

हार कैसी ? न जब तक उसे मान लूँ
जानती हूँ, बढ़ा आ रहा है , अंत है
अंत की तो कथा अभी शेष है ।

३. सावन

आज बरस लो जी भर सावन ।
फिर यह दिन आए न आए ।
फिर पुरवैया बहे न बहे ।
इसी प्यासी भू से मत पूछो ।
कितनी दाह भरी है तन में ।
एक बूँद की आकुल व्याकुल
कितनी चाह भरी है मन में ।

४. गा ले फाग सखी

गा ले फाग सखी ।
बही बयार बसंती ।
गा ले फाग सखी ।
फागुन की ऋतु बैरागी जी ।
धरती ने ली, अंगड़ाई सी ।
तेरे कमल कपोलों पर सखी ।
लाज भरी अरुणाई सी ।
इस अरुणाई से भर ले री ।
मन का भाग सुहाग सखी ।

१.३ कहानी संग्रहों का विवरण

दीप्ति खंडेलवाल ने लगभग ७ कहानी संग्रह लिखे। इनके माध्यम से लेखिका ने अपने आप को एक श्रेष्ठ कहानीकार साबित कर दिया। उनके विवरण इसप्रकार है-

१.३.१ कड़वे सच :- पराग प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित दीप्ति खंडेलवाल के 'कड़वे सच' इस कहानी संग्रह का प्रथम संस्करण १९७५ में हुआ। 'कड़वे सच' के आत्मपरिचय में दीप्ति ने लिखा है - ''जलना दीप्ति की नियति रही है, आग को आलोक बनाना उसकी प्रकृति और दोनों का द्वन्द्व उसकी जिंदगी और भीड़ के बीच एकाकीपन के विद्रूप को झेलती वह स्वयं से कहा करती है - ''भीड़ घिरी रहती लेकिन हर जलना होता एकाकी....' यह कवि स्वर दीप्ति का ही है। यथार्थ की निर्मम चोटों से गीत चीख बन गए। दीप्ति की कहानियाँ इन्हीं चीखों की प्रतिध्वनियाँ हैं और, दीप्ति स्वयं भी एक 'कड़वा सच' है ।''[२२]

कड़वे सच इस कहानीसंग्रह मे संकलित कहानियाँ है (१) क्षितिज (२) मूल्य (३) शेष - अशेष (४) एक पारो - पुरवैया (५) परिणति (६) देह की सीता (७) युद्धरत (८) ये भी कोई गीत है (९) जिजीविषा (१०) विषपायी (११) कटु - सत्य । 'कड़वे सच' कहानी संग्रह की कहानियों का संक्षिप्त में कथासार इसप्रकार है -

१) क्षितीज :- क्षितीज यह दीप्ति खंडेलवाल की कहानी 'कहानी' मासिक द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत कहानियों में से एक है। कहानी की नायिका और नायक दोनों का प्रेमविवाह होते हुए भी 'अहं' भाव के कारण एक दूसरे से पास होकर भी वे दोनों मानसिक रूप से एक दूसरे से बहुत दूर है। नायिका मनोविज्ञान की लेक्चरर है तो नायक अंग्रेजी में पीएच.डी। नायिका बड़ी भावुक है और नायक प्रैक्टिकल किस्म का इन्सान है। दोनों में

अहंकार है यहीं कहानी का कड़वा सच है। दीप्ति ने इसमें दंपति की चिर ट्रेजेडी को अपने समकालीन 'अंदाजे बया' मे कह दिया है।

२)मूल्य :- इस कहानी में दीप्ति ने एक गरीब बाप को वर्णित किया है जो संस्कृत पढ़ाते है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने लाठियाँ खाई तीन मास की कैद काटी थी। उन्हे लगता था कि उन्होंने अपनी मातृभूमि की मिट्टी का मूल्य चुका दिया। अपने जीवन का मूल्य सिद्ध कर दिया। लेकिन बदलते समय के साथ संबंध और मूल्य भी बदल जाते है। वे पिता होकर अपने पितृत्व को श्राप देते है उनका अपना ही बेटा मूल्यों ही के संदर्भ में उनकी निरर्थकता बार बार सिद्ध करता है। इसलिए अपने लड़के की मृत्यु की खबर सुनकर भी उनकी आँखों में आँसू नहीं आतें।

३)शेष - अशेष :- इस कहानी का नायक मनु अपने से दस साल बड़ी शची से प्रेम करता है हाला कि वह शादी शुदा है। शची का अतीत यह है कि जब वह चौदह साल की थी तब रञ्जन नामक एक मवाली लड़के ने उसपर बलात्कार किया लेकिन वह उसी को अपना सबकुछ मानने लगती है। रञ्जन उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं होता। बाद में गाँव के चौधरी के घर से शची के लिए रिश्ता आता है लेकिन सुहागरात के ही दिन चौधरी उसे पलंग से फर्श पर पटक देता है। चौधरी से ही पेट में लाथ मारने के कारण शची जब माँ नहीं बन पाती तो चौधरी खानदान उसे घर से बाहर निकाल देता है। शची शहर आकर पढ़ाई कर अपने पैरों पर खड़ी होती है लेकिन उसका स्त्री-पुरुष के रिश्ते पर से विश्वास उठ जाता है। इसलिए मनु के साथ के रिश्ते को कोई नाम नहीं देना चाहती। अंत में वह अकेली बीमारी की वजह से तड़पकर मर जाती है।

४)एक पारो पुरवैया :- नायिका सुधा पढ़ी-लिखी लेक्चरर होने के बावजूद अपने पति के गणिती स्वभाव के कारण वह नहीं पा सकती जो हर नारी मन पुरुष से चाहता है। और उसका ध्यान अपने पहले प्रेमी अमित और दूर के

देवर विजू में लग जाता है। मानसिक अशांति के कारण उसे दौरे पड़ने लगते है।

५)परिणति :- कहानी का नायक महेंद्र गरीबी के कारण इतना परेशान हो जाता है कि वह अपने दोस्त को भी जल्दी पहचान नहीं पाता। आर्थिक स्थिति के कारण प्रेम विवाह के बावजूद पति-पत्नी के रिश्ते में कठोरता आती है। घर की जिम्मेदारियों से वह बहुत तंग आ चुका है। यह एक मध्यमवर्ग के संत्रास की कहानी है।

६)देह की सीता :- कहानी की नायिका डॉ. शालिनी ने तेरह वर्ष की उम्र मे ही अपने पापा से, ''शारीरिक नैकट्य के रोमांटिक क्षणों को शरीर के ही स्तर पर स्वीकारने का पाठ अनजाने ही पढ़ लिया था।''[२३] बड़ी होकर भी पर पुरुष से अनैतिक संबंधों को वह सहज स्वीकार करती है। उसके पति रंजीत को शालिनी के अछूतेपन का कोई आग्रह नहीं था। पति-पत्नी एक दूसरे के व्यक्तिगत सुखों को 'माइन्ड' न करना वे हाय कल्चर्ड सोसायटी के 'कल्चर्ड एटीड्यूड' मानते थे। लेकिन एक रेप केस में आयी अनपढ़ नवब्याही लड़की के नैतिकता के बारे में विचार सुनकर वह बेचैन होती है। उस लड़की के शब्द डॉ. शालिनी के कानों में न जाने क्यों गूँजते रहते हैं। वह उसे 'नॉनसेन्स कहकर टालना चाहती है।

७)युद्धरत :- यह एक मध्यवर्गीय संत्रास और कुंठा की कहानी है। कहानी का नायक मिस्टर व्यास आर्थिक स्थिति के कारण बहुत त्रस्त है। हाइस्कूल में टीचर की नौकरी करता है। केवल तीस वर्ष की आयु में लगभग गंजा हो गया है। भूख का अहसास उसे कमजोर बना देता है। हररोज की जिंदगी जीने के लिए आवश्यक वस्तुओं को जुटाने में उसे युद्ध करना पड़ता है।

८)ये भी कोई गीत है :- कहानी की नैरेटर एक कवयित्री है। उसके पति राजेश एक बिझनसमैन है। बहुत ही प्रैक्टिकल है अपनी पत्नी की भावनाओं

को नहीं समझते। दूसरी तरफ शेखर-पुष्पा ये दंपति है । यहाँ शेखर अपने पहले प्यार प्रभा को नहीं भूल पाता और पत्नी पुष्पा के प्रति कर्तव्यशीलता दिखाकर उसे पूरा समर्पित नहीं हो पाता। तीसरी ओर दीपाली-इंद्रनाथ दंपति है जिन्हे नैरेटर की माँ रति-अनंग की जोड़ी कहती है लेकिन वास्तव में इंद्रनाथ दीपाली से नाराज है बाद में वे आत्महत्या करते है।

९)जिजीविषा :- बेरोजगारी, गरीबी की वजह से बदलते इन्सानियत के चेहरे, इसमे दिखाई देते है। मजबूरी से जगन को अपनी बेटी की दवाई के लिए सिर्फ दो रुपए के लिए अपने दोस्त के सामने हाथ फैलाने पड़ते है। पेट की भूख, कपड़ों की हालत, किराया न देने पाने की मजबूरी इन सब का वर्णन लेखिका ने हूबहू किया है।

१०)विषपायी :- बचपन से एक मध्यवर्गीय लड़के के मन में माँ का जो रूप था प्रत्यक्ष में उसे उसके विपरित सब अनुभव करने को मिला। अपनी माँ से प्यार के बजाय उसे हमेशा नासपीटे, कमबख्त जैसी गालियाँ ही सुनने को मिलती है। बड़ा होने पर उसे मेडिकल कॉलेज में ॲडमिशन मिलती है लेकिन 'होमोसेक्युएलिटी' का शिकार बनना पड़ता है। उसपर रैगिंग होती है। वह इस सदमे से बाहर निकल ही नहीं पाता अैर नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या कर लेता है।

११)कटु सत्य :- पढ़ने लिखने के बावजूद बेरोजगारी की समस्याएँ लेखिका ने तीन चेहरों के माध्यम से तीन सच इस कहानी में वर्णित किए है। तथा एक लेखक सुवीर का वर्णन किया है। सुवीर आर्थिक विपन्नता के कारण बीमारी का शिकार होकर मर जाता है। आर्थिक कमजोरी को दर्शाती यह कहानी है।

१.३.२ वह तीसरा :- 'वह तीसरा' कहानी संग्रह का प्रथम संस्करण सन १९७६ में हुआ। इसमें दस बड़ी लंबी कहानियाँ है। (१)संधीपत्र (२)जमीन (३) मोह (४) प्रेत (५) कोई जमीन नहीं (६) कायर (७) भूख (८) नाटक, (९)

झोंका (१०) वह आदि। इन कहानियों का संक्षिप्त में सार इस प्रकार है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन हेतु यह कहानीसंग्रह महत्त्वपूर्ण है।

१)संधि पत्र :- सोमा और रोहित स्वतंत्र विचारों वाले आधुनिक पति-पत्नी हैं। फिर भी रोहित को सोमा का अत्यधिक मेकअप करना खटकता है। उसने सोमा को उसकी पूरी आजादी के साथ स्वीकार किया था वह खुद भी आजाद विचारों एवं वर्तन का है। ऑफिस के मिस रूबी के साथ उसने कई शामें बिताई है फिर भी सोमा के अपने बॉस के साथ पिक्चर जाना रोहित को खटकता है उनमें झगड़ा होता है। सोमा घर से चली जाती है। रोहित गुस्सा तो होता है लेकिन रात को दो बजे सोमा के लौटने पर वह उसे स्वीकार भी करता है।

२)जमीन :- कहानी की नायिका अपने साथ मजदूरी करने वाले की बीवी फूला से तुलना करती है। फूला का पति उसे पैसे कमाने के लिए नौकरी करने को भेजने के लिए तैयार नही जब कि हाय कल्चर्ड सोसायटी से होने के बावजूद नायिका के पति टेंडर पास करवाने के लिए उसे दूसरे आदमी के साथ डांस करने के लिए कहते है।

३)मोह :- सुदीप - सविता का प्यारा सा संसार है जिसमें कोई कमी नहीं है। सविता के पास खुद की एम.ए. की डीग्री, प्यार करनेवाला पति, तीन बच्चे सबकुछ तो है फिर भी सविता को मोह होता है, आशीष का जो खुद एक शरीफ घर का है और उनकी शची खुबसूरत पत्नी भी है क्योंकि आशीष सविता की दिलखुलास तारिफ करते है। सुदीप का तारिफ करने का तरीका अलग है। अनेक बार सोचने पर सविता को समझ में नहीं आता है कि सबकुछ होने के बावजूद यह कैसा मोह उसके मन को घेरे हुआ है जब कि एक भारतीय कुलवधू को किसी परपुरुष के विचार मन में लाने को भी पाप समझा जाता है।

४)प्रेत :- अविनाश और नीलिमा का ब्याह हुआ। अविनाश की माँ पुराने रीति रिवाजों वाली 'आर्थोडाक्स' है, जब कि नीलिमा पढ़ी-लिखी है। बी.ए. पास, म्यूजिक का डिप्लोमा तथा होमसाइन्स की ट्रेनिंग भी उसने ली है। सास के बर्ताव के कारण नीलिमा का वहाँ दम घूटने लगता है। नीलिमा अपने ढंग से घर को सजाना सँवारना चाहती है लेकिन सासू माँ के आगे वह सबकुछ निरर्थक था और अविनाश की दृष्टि माँ जी दृष्टि के परे कुछ भी देखने को गलती समझती थी। माँ के बोलने पर अविनाश नीलिमा को थप्पड भी देता है। नीलिमा को लगता है जैसे वह प्रेतों से घिर गई हो, नीलिमा को दौरा पड़ जाता है।

५) कोई जमीन नहीं - इस, कहानी में दीप्ति जी ने मध्यमवर्ग के आम आदमी के आर्थिक विवंचना की त्रासदी का वर्णन किया है । स्वरूप मिश्रा एक मामूली टीचर है । वह जिस गली में रहता है, वहाँ घर-बाहर सभी जगह बदबू और बच्चों की हुल्लड रहती है। स्वरूप अपने इस जीवन से तंग आया है । लेकिन बच्चों की जिम्मेदारी का उसे अहसास है । रोज वही दाल रोटी खाकर वह तंग आता है । आटा, दांल चावल जुटाने में ही उसका जीवन निकल जाता है ।

६) कायर - इस कहानी की नैरेटर एक बहन है । उसका भाई अच्छा पढ़ा लिखा पीएच.डी. किया हुआ है लेकिन घर में अपनी माँ के कारण अपनी पत्नी के प्रति अन्याय करता दिखाई देता है । अपने पति के बर्ताव से नैरेटर की भाभी अपना मानसिक स्वास्थ्य धीरे धीरे खोने लगती है । वह अपने आपको किसी निर्जिव वस्तु की तरह समझने लगती है । परंतु अपनी पत्नी की इस हालत का नैरेटर के भाई पर कोई असर नहीं पड़ता ।

७. भूख - निम्नवर्ग की आर्थिक परिस्थिति का वर्णन दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है । इस कहानी की नायिका रधिया है । रधिया का पति बिरजू एक मामूली नोकरी करता था । मलेरिया की बीमारी ने उसे ऐसा

दबोचा था कि उसके प्राण संकट में आ गए थे । नोकरी छूटे छः महीने हो चुके थे । घर में जो कुछ था रधिया ने बेचकर बिरजू के दवा और दूध में खर्च कर दिया । अपने पति को मरते हुए वह नहीं देख सकती थी । इस लिए वह मजबूरन अपने शरीर का सौदा करती है गरीबी का वर्णन बड़ी मार्मिकता से दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है।

८. नाटक - इस कहानी में शारीरिक अस्वस्थता के कारण दांपत्य जीवन में आने वाले कड़वाहट का वर्णन दीप्ति जी ने बड़ी खूबी से किया है। कहानी की नायिका घुटनों के दर्द के कारण परेशान है। इस दर्द के कारण उसे अपनी लेक्चररशिप भी छोड़नी पड़ी। उसके पति उसकी देखभाल अपना कर्तव्य समझकर बड़ी अच्छी तरह से निभाते है लेकिन उसमें प्यार का भावना नायिका को कम लगने लगती है। ''शायद वह कर्तव्य को भी प्यार बनाना चाहती है और शायद उसके साथी ने प्यार को भी कर्तव्य बना दिया है उसे सारा जीवन नाटक की तरह लगने लगता है।''[२४]

९.झोंका - इस कहानी में प्रतिभा और सुधीर इन दोनों कें रिश्ते में कुछ ठहरावसा - प्रतिभा को लगता है। सुधीर का अस्तित्व उसे दलदल सा लगता है तो स्वयं का अस्तित्व एक शून्य सा लगता है। हालाकि प्रतिभा सुधीर की हर इच्छाएँ मन से पूरी करती है। दोनों में अहम की मात्रा है जिस कारण छोटी छोटी बातों पर उनमें टकराहट होंती रहती है। प्यार के क्षणों को प्रतिभा ने हवा के झोंकों की उपमा दी है।

१०. वह - कहानी का नैरेटर और उसकी पत्नी नीलम दोनों में अनबन होती रहती है। नीलम अपनी जवानी कायम रखने के लिए बच्चा नहीं चाहती, वह नैरेटर को ताने देती हैं । नैरेटर भी कहता है कि वह कोई सती सावित्री नहीं है । उसके मन मे अपने माँ पिताजी की बात आती है कि वे दोनों भी हमेशा झगड़ते रहते थे लेकिन शरीरसुख के लिए बाद में फिर एक हो जाते है ।

सेक्स के प्रति पुरुष की मानसिकता का वर्णन दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है।

१.३.३ धूप के अहसास :- धूप के अहसास का प्रथम संस्करण १९७६ में प्रकाशित हुआ। धूप के अहसास कहानी संग्रह के आत्मकथा में दीप्ति जी ने लिखा है - मानवीय संवेदनाओ के अति व्यापक धरातल पर हर भोगा हुआ यथार्थ स्थूल स्तर पर उसका हो न हो, संवेदना के, चेतना के स्तर पर उसका इतना अपना होता है कि उनकी कहानियों पर मिला सर्वाधिक साधुवाद यही है - 'कहीं ये आप स्वयं ही तो नही!' किसी भी मानवीय स्थिति से, किसी भी दर्द से उसका तादाम्य इतना गहरा है कि यह तादाम्य किसी भी कहानी उसका, स्वयं का भोगा हुआ यथार्थ बना जाता है। यें रुप, ये कोण, उसके अपने व्यक्तिगत जीवन के ही हो - ऐसा कहाँ आवश्यक है? मृत्यु को जानने के लिए मरना जरुरी नहीं होता। दीप्ति जी लेखकीय मान्यता है - संवेदनाओं की तादाम्य में (लेखक और पाठक के बीच) परिणति जितनी तीव्र और व्यापक होगी, रचना उतनी ही सार्थक होगी। वस्तु की प्रामाणिकता और शिल्प सौष्ठव को यही 'तादाम्य' जीवन्ता, व्यापकता और अर्थ देता है।''[२५]

दीप्ति का मानना है कि कहानी में युग, मानवता अथवा स्वयं के प्रति कोई प्रतिश्रुति होनी चाहिए - सत्य की कोई प्रतिध्वनि, सौंदर्य की कोई प्रतिच्छवि या चेतना का कोई संघर्ष अनिवार्य है। प्रयोग के लिए प्रयोग में उनका विश्वास नहीं है। प्रयोग कला के लिए और कला जीवन के लिए, उनका विश्वास भी है और प्रयास भी है। धूप के अहसास इस कहानीं संग्रह में बारह कहानियाँ है (१) जहर (२) देह से परे (३) कोलाहल (४) मरती हुई गौरेया (५) अस्वीकार (६) हव्वा (७) एक और कब्र (८) रीतते हुए (९) आत्मघात (१०) एक और सीता (११) निर्बंध (१२) धूप के अहसास ।

इन कहानियों का संक्षिप्त में सार' इस प्रकार है-

१)जहर :- यह मध्यवर्ग के आर्थिक समस्या की कहानी है। हरिहर बाबू आर्थिक समस्या के शिकार है। उन्हे दो बेटियाँ और एक बेटा है। बेटा अमर तपेदिक से मर जाता है। बेटे के मरने पर माँ कहती है कि बेटियों में से एक कोई मर जाती तो छातिपर से एक पत्थर कम होता लेकिन उसका लाख रूपए का बेटा मर गया। आर्थिक स्थिति बेटा-बेटी में भेदभाव करने को मजबूर कर देती है। माया मरना नहीं जीना चाहती थी लेकिन माँ बाप को वह जैसे बोझ बन गयी थी। शादीब्याह में पिता को कर्जे के बोझ तले दबाने के बजाय वह मजबूरन दूसरी बिरादरी के लड़के के साथ भाग जाती है। हरिहर बाबू को जीवन जहर की तरह लगता है। अपनी जिम्मेदारी ठीक से न निभा पाने का दर्द हरिहर बाबू सहन नहीं कर सकते। बुढ़ापे में शराब पीते है। मानो जिंदगी का जहर ही पी आए थे।

२)देह से परे :- टूटते दांपत्य - जीवन का चित्र वर्णित किया है। कहानी का नायक राजन है उसे माधुरी से प्यार हो जाता है। उन दोनों की शादी होती है। माधुरी दो बच्चों की माँ बन जाती है। राजन शरीर को ही सबकुछ मानता है इसलिए उसे माधुरी से घृणा होने लगती है। माधुरी अपने रिश्ते को बचाने की कोशिश करती है लेकिन राजन का 'अहम्' था कि माधुरी को बच्चों के साथ घर छोड़ जाने पर मजबूर करता है। जब वह नैनीताल जाता है तब दूसरी स्त्री दर्शना राजन के जिंदगी में आती है तब उसकी तेजस्वी आँखे, उसका वह वाक्य, 'लाइट बूझा दो आसानी होगी? ''[२६] राजन को मानो समझाती है कि देह से भी बढ़कर कुछ होता है, यह शरीर तो नश्वर है आत्मा, प्यार अमर रहता है तब उसे अपने प्यार अर्थात माधुरी की याद आती है। उसके मन में माधुरी को वापस लेकर आने के विचार आते हैं।

३)कोलाहल :- इस कहानी में लेखिका ने आज के युवा वर्ग का चित्रण किया है। उनके मन में जो होता है वे उन्हें पाने की कोशिश में जुटे रहते है फिर वह चाहे सही हो या गलत और भविष्य में अपने अधिकारों का गलत प्रयोग भी कर सकते हैं।

४)मरती हुई गौरेया :- नैरेटर के ऑफिस में एक कुरुप, बदरंग लड़की काम करती थी। उसके चेहरे पर न कोई भाव थे न वह खुश दिखाई देती थी न कभी उदास दिखाई देती थी लेकिन नौकरी छूट जानेपर उसने सिर्फ यह कहा कि, नौकरी छूटने की बात वह अपनी माँ को कैसे बताएगी। नैरेटर को लगा जैसा मरती हुई गौरेया ने पहली बार अपने पंख फड़फड़ाए।

५)अस्वीकार :- इस कहानी में, सोमेश डॉक्टर है, दिखने में साँवले, छोटी आँखोवाले है। उनकी पत्नी माधवी बहुत ही सुंदर है। पत्नी के अतिसुंदरता के कारण पति सोमेश में हीनता की भावना है। वह अपनी सुंदर पत्नी को मन से कभी स्वीकार नहीं कर पाते। बेटी अर्चना से सोमेश बहुत प्यार करते है। अर्चना माधवी की ही तरह सुंदर है। कभी पति के स्वीकार के लिए माधवी का मन बावला हो उठता है। किसी निरर्थकता को भूलने के लिए माधवी संगीत का अभ्यास करती है संगीत में वह सफल भी होती है परंतु उसकी इस सफलता को भी सोमेश खुले मन से स्वीकार नहीं कर पाते। माधवी भी सोमेश के अर्चना के प्रति प्यार के सुख को स्वीकार नही कर पाती। पति पत्नी होकर भी कुंठा के कारण प्यार के लिए तटस्थता दिखाई देती है।

६)आत्मघात :- यह एक तलाकशुदा औरत की कहानी है जो तलाक होने के बावजूद अपने पति पुरुष को भुला नहीं पाती । हॉस्टेल में पत्थर की तरह जीवन जीती है। कुछ साल उदासी भरी जिंदगी जीने के बाद मृणालिनी अपने खूबसूरत देह के लिए जीना चाहती है। मॉडेलिंग करती है। कंपनी के मालिक के लड़के से शारीरिक संबंध रखती है, फिर भी वह जी उठी है या मर गई है उसके समझ में नहीं आता।

७)हव्वा :- 'हव्वा' दीप्ति खंडेलवाल के सेक्स स्नात रचनाओं मे से एक है। बचपन मे मिस रतिलाल के मन में अपनी बहन के अनुभव से पुरुषों के लिए नफरत पैदा हुई है । वह पुरुषों से बदला लेने की भावना रखती है। बड़ी होने पर उसे एअर इंडिया में रिसेशनिस्ट की नौकरी मिलती है। अपनी पूरी जिंदगी वह पुरुषों से बदला लेन के लिए दाँव पर लगा देती है। लेकिन पुरुष से बदला लेने की चेष्टा में स्वयं बरबाद हो जाती है। अंत में उसे कैन्सर हो जाता है। लेकिन वह न पत्नी न माँ न ही औरत बन पाती है। इसका उसे अंत में अफसोस होता है।

८)एक और कब्र :- आर्थिक विवंचना मध्यवर्ग को कहीं का नहीं छोडती। इस कहानी में गुप्ता जी बढ़ती महंगाई और आर्थिक तंगी के कारण त्रस्त है। उन्हे घर में कलह सहनकर समय से समझौता करने की आदत सी हो जाती है। दूसरों की मदद करने की लाख इच्छा मन में होकर भी स्वार्थ आडे आते है। प्राचीन और नये मूल्यों की टकराहट, विचारों में बदलाव दिखाई देता है।

९)रीतते हुए : दांपत्य जीवन में गणिती स्वभाव के कारण आनेवाले तनावों का चित्रण इस कहानी में किया गया है। सुषमा-रमेश का प्रेमविवाह हुआ है। खर्च बढेंगे, उसके और रमेश के बीच की दूरियाँ भी बढ़ेगी इसलिए वे बच्चा नहीं चाहते। परंतु उनकी ही शर्त ने मानो उनके जीवन में दूरियाँ कम करने की बजाय और बढ़ा देती है। जीवन में जैसे खालीपन महसूस कर रहे है। सब कुछ पाने के बावजूद जीवन जैसे रीता यानि खाली लगते लगता है।

१०)एक और सीता : रविकांत - मधु का प्रेमविवाह हुआ। दोनों ही दिखने में बहुत अच्छे है। रविकांत की माँ पुराने रितीरिवाजों वाली थीं। लेकिन रविकांत माँ की पूजा करता है। मधु से भी रविकांत ने माँ की सेवा करने का वचन ले लिया है। सासू माँ के रोज रोज के ताने, चिखे सुन सुनकर मधु तंग आती है। प्रेगनंट होने पर मधु जब डॉक्टर को दिखाना चाहती है तब उसकी सास को लगता है कि ये फिजूल पैसे खर्च करने की बजाय किसी दाई को दिखाए।

सांसू माँ कहती है '' बहू जी दाई को पेट नाही दिखावेंगी, किसी डॉक्टरनी के पास जावेंगी । सैकडों रुपया बिगडेंगी ।''[२७] तंग आकर मधु घर छोड़ने का फैसला करती है। रविकांत झूठे अहंकार के कारण चाहते हुए भी मधू को रोक नहीं सकता। माँ की ममता उसे इसतरह जकड़ लेती है कि वह पत्नी के प्रति न्याय से पेश नहीं आ पाता। सास बहू के झगड़े के कारण एक अच्छा दांपत्य जीवन दांव पर लग जाता है, और एक सीता निर्वासित हो जाती है।

११) निर्बंध : यह कहानी महिला कहानीकारों की प्रतिनिधि कहानियों में से एक है। यहाँ नानी, माँ, पोती इन तीन पीढ़ियों के कालानुरुप आए बदलावों का चित्रण किया गया है। नानी जो अपने पति के दूसरी औरत के पास जाने की आदत से झगड़े करती है लेकिन वह चोट सह लेती है। माँ यानि कुसुम अपने पति के दूसरे औरत के संबंध को स्वीकार नहीं करती, विद्रोह करती है और पति को छोड़कर अपनी माँ के साथ रहती है। पोती यानि अनिता जो कहानी की नायिका है वह किसी की भी परवाह नहीं करती। वह थप्पड का जबाब मुक्के से देना जानती है। वह किसी भी बंधन में रहना नहीं चाहती। और अपने आपको 'अ परफेक्ट मॉड' बनाना चाहती हैं।

१२) धूप के अहसास :- मधु यथार्थवादी होने के कारण शिरिष के प्यार को स्वीकार नहीं करती और अपनी ही तरह संपन्न परिवार के अमित से शादी कर लेती है। लेकिन सारे सुखों के बाबजूद मधु के दामप्त्य जीवन में कड़वाहट है। इधर शिरिष बेकारी, बेरोजगारी, लाचारी, मजबूरी का शिकार है। अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण शिरिष अपनी पत्नी मालती का इलाज भी नहीं कर पाता है। धूप के अहसास दोनों को भी है।

१.३.४ सलीब पर :- दीप्ति खंडेलवाल के कहानीसंग्रह 'सलीब पर' का प्रथम संस्करण १९७७ में हुआ। यह कहानी संग्रह 'राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। दीप्ति जी की कहानियाँ तथा उपन्यास

नारी-जीवन की समस्याओं को आधुनिक दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं तथा नारी मन की व्यथा को बड़ी मार्मिकता से व्यक्त करते है। सलीब पर की सभी कहानियाँ चर्चिच हुई है और पाठकों द्वारा की प्रशंसित गई है। इसमें संकलित कहानियाँ है (१) आत्मरचना (२) विघटन (३) शीर्षकहीन (४) आधुनिक (५) अभिशप्ता (६) कोशिश में

(७) चार दिन और (८) स्वयंवर (९) कैद (१०) डूबने से पहले (११) बीच का आदमी (१२) सलीब पर। इन कहानियों के पात्र किसी न किसी 'सूली पर टंगे' है, अकेले जलते, अपने-अपने अंधकार से अकेले जूझते, अपने अपने हिस्से का जहर अकेले पीते, किसी न किसी 'त्रासदी' के 'सलीब पर' स्वयं चढ़े या चढ़ा दिए गए दिखाई देते हैं।

१)आत्मरचना :- में दीप्ति ने अपनी त्रासदीपूर्ण जीवन के पहलू पाठकों के सामने रखे है।

२)विघटन :- इस कहानी में दीप्ति ने बताया है कि मध्यवर्ग की यह त्रासदी है जो सुखी जीवन का सपना तो देख सकता है लेकिन उनका सपना कभी पूरा नहीं हो पाता। पढ़ाई पूरी करने के बाबजूद बेरोजगारी का शिकार होना पड़ता है। पूरी जिंदगी परिश्रम कर केवल दाल-रोटी का ही इंतजाम किसी तरह कर पाते है।

३)शीर्षकहीन :- यह एक मध्यवर्ग के सीमित आय और असीमित खर्चे के बीच में फँसे आदमी की कहानी है। इस कहानी के पात्र की तरह अनेक लोग लेखिका को दिखाई देते है इसलिए लेखिका कथा नायक को कोई शीर्षक नहीं दे पाती। इसलिए इस कहानी का शीर्षक ही 'शीर्षकहीन' है।

४)आधुनिक :- नयी पीढ़ी के अपने माता-पिता के बारे में विचार, नैतिक मूल्यों के पतन इस कहानी में वर्णित हुए है। चौधरी हरभजन का चारित्र्य इतना निश्कलंक है कि कोई उनके चारित्र्य का हनन नहीं कर सकता है। वे प्रभु राम की तरह एक पत्नी व्रता थे। उन्हे बड़ी मन्नतों के बाद एक पुत्र हुआ

था। उसका नाम था है सुधीर। लेकिन सुधीर उसके पिता की तरह नहीं था। वह विलायत से पढ़ कर आता है अपने आपको आधुनिक समझकर अपने पिता को दकयानुसी विचारों वाला कहकर हमेशा ताने कसता रहता है। यहाँ तक कि अपनी विलायती मेम के सामने अपना पिता का परिचय 'ए जस्ट ओल्ड सर्वंट' करके देता है। सुधीर की बातों से बूढ़े पिता के मन पर क्या गुजरती है इसका वर्णन दीप्ति ने बड़े अनोखे ढंग से किया है।

५)अभिशप्ता :- कुँवारेपन का अभिशाप मिले लड़की की यह कहानी है जो परिवार में सबसे बड़ी है। पिता के लकवे की बीमारी के कारण घर की सारी जिम्मेदारियाँ उसपर आ जाती है। तीनों बहनों का ब्याह उसकी वजह से हो पाता है। परिवार की 'एकमात्र अर्निंग मेंबर' होने के कारण उसे अपने प्यार को कुर्बान करना पड़ता हैं क्योंकि वह खुद सुखी होकर परिवार के बाकी सब लोगों को मँझदार में छोड़ नहीं सकती है। वह त्याग की मूरत, देवित्व का गौरव कहलाती है। लेकिन उसकी खुद की जिंदगी एक अभिशप्ता हो जाती है। वह सबकी मानो दी है लेकिन कभी न खत्म होने वाले अकेलेपन का शिकार बन जाती है।

६)कोशिश में :- करीमबख़्श जैसा आदमी जानवर की तरह जिंदगी बिताता है लेकिन वह इन्सान बनने की कोशिश में है। उसके पास पैसों का अभाव है, वह प्याज बेचकर अपना गुजारा करता है। 'व्यापार में सबकुछ जायज है' यह उसका कहना है। पेट की भूख मिटाने की कोशिश करता है। लेकिन वह भीख नहीं लेना चाहता। उसकी जानवर से बत्तर जिंदगी के लिए लेखिका ने समाज को ही दोषी ठहराया है।

७)चार दिन और :- लाला बाबू के विकलांगता का हुबहू वर्णन दीप्ति खंडेलवाल ने इस कहानी में किया है। जन्म से अंधापन, विकलांग होने के बावजूद लाला बाबू का सारा ध्यान रसोई से आने वाली महक पर रहता है। उनको हररोज भोजन देने वाली दुलारी भी उन्हे प्यारी लगती है। यहाँ तक कि

मृत्युशय्या पर होते हुए भी अच्छा भोजन खाने को मिलने की लालसा में और चार दिन जीने की उनकी इच्छा है।

८)स्वयंवर :- इस कहानी में एक प्रेम कथा वर्णित है। राधा श्रीवास्तव और मोहनलाल कॉलेज में एक दूसरे प्रेम करते है। लेकिन उनके मिलन में दीवार थी तो अमिरी और गरीबी की। शादी से पहले ही दोनों तन मन से एक हो जाने है। मोहनलाल के पिता बड़े घर के एक स्वैराचारी आदमी है और वे राधा को अपनी बहू कभी स्वीकार नहीं करेंगे यह मोहनलाल जानता है। तीन लाख रुपए दहेज लेकर उन्होंने मोहनलाल का रिश्ता पहले से ही दूसरी जगह पक्का किया है। समाज और पिता के डर से मोहनलाल और राधा एक साथ जी नहीं सकते थे। इस लिए दोनों मिलकर आत्महत्या करते है और सदा के लिए एक हो जाते है।

९) कैद :- अनूप एक बड़ा खुबसुरत लड़का है 'पोलियो' के कारण बचपन मे ही वह दोनो टाँगों के रहते हुए भी विकलांग हो गया था। सब बच्चों को साधारण जिंदगी जैसे दौड़ना, भागना, खेलना नसीब में होती है अनुप को नसीब नही होती। उसे लगता है वह कैद में है। लेकिन उसके मन में अनेक विचार आते है। जैसे कोई भयानक अपराध करता है उसे उमर-कैद दी जाती है लेकिन अनुप ने क्या अपराध किया है कि जाने किसने उसे इतना भयानक दंड दे दिया है। अपाहिज लड़के की मानसिकता को इस कहानी में उजागर किया गया है।

१०) डूबने से पहले :-

'शैला कपूर' ने अपनी सुंदरता और अपने खूबसूरत चेहरे के सम्मोहन तथा अनुपात में ढले नारी-अंगों के मोहक कोणों के बल पर प्रसिद्ध विदेशी में फर्म में नौकरी पाई है। वह सिर्फ अपने लिए जीना चाहती है। '' उसे विश्वास है कि विज्ञान के इस युग में वैज्ञानिक तरीकों से जीना चाहिए। इस

'राकेट एज' में राकेट के समान उड़ना चाहिए, न कि रूढ़िवादी परंपरागत दलदल में फँसकर, जीवन यौवन व्यर्थ कर देना चाहिए । ''[२८]

यह उसका मानना था। लेकिन तीन वर्षों के बाद ही उसे अपने आचरण पर उब आती है लेकिन उस वक्त बहुत देर हो चुकी है वह बहुत आगे निकल गयी है अब पीछे मुडने का रास्ता नहीं है। वह कैबरे डान्सर बनकर और पैसा कमाना चाहती है। हर पुरुष शैला कपूर का साथ सिर्फ चंद घंटे या चंद रातों के लिए चाहते है। अपने आचरण निर्द्वंदता से जीते जीते उसे कोई अभाव खलने लगता है।

११)बीच का आदमी :- इस कहानी में मध्यवर्गीय, परंपरावादी पिता का चरित्र अंकित किया गया है। जोशी जी जिस कोठरी में रहते थे वहाँ का वातावरण दमघोंटू था बिजली का बल मद्धिम था। उनका वक्ष इतना दुर्बल था कि एक एक पसली गिनी जा सकती थी। जोशी जी जड़-संस्कारों के गुलाम ऐसे ही रुढ़ियों में बंधे, दुर्बल, बेवकूफ पिता थे, जो बेटी की मांग में सिंदूर भरा देखने के लिए अपना खून पानी एक कर सकते थे।

दीप्ति के अनुसार यदि देवत्व एक भ्रम है, तो पशुत्व भी सच नहीं - आदमी तो इन दोनों के बीच कहीं होता है।

१२)सलीब पर :- इस कहानी में वर्णित बाबूजी जब जवान थे तब देशभक्ति की भावना ने उन्हें इतना प्रेरित किया था कि वे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना चाहते थे, जेल जाना चाहते थे, स्वतंत्रता यज्ञ में अपनी आहुति देना चाहते थे लेकिन अपनी बीबी बच्चों के प्रति उनके कर्तव्य भी नहीं छोड़ सके थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग नहीं लिया। अपने बच्चों की परवरिश में लगे रहे लेकिन किशन, बिशन और विनोद ये उनके बेटे बड़े होने पर अपना अपना हिस्सा माँगने लगे। एक दूसरे से झगड़ने लगे। हिस्सा बराबर नहीं बाँटा गया यह समझकर अपने पिता को मक्कार कहने लगे। इस प्रकार अपने

ही बेटों द्वारा किए गए अपमानों से छटपटाते बाबूजी का वर्णन लेखिका ने किया है।

इस प्रकार हम देखते है कि 'सलीब पर' कहानी संग्रह के सभी कहानियों के पात्र अपनी-अपनी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी ना किसी 'त्रासदी' के 'सलीब पर' स्वयं चढ़े या चढ़ा दिए गए।

१.३.५ दो पल की छांह :

दीप्ति खंडेवाल द्वारा लिखित इस कहानी संग्रह का १९७२ में प्रथम संस्करण हुआ। इस कहानी संग्रह में पांच लंबी कहानियाँ संकलित है। दीप्ति जी ने इन कहानियों के भिन्न-भिन्न चरित्रों के माध्यम से 'नारी-मन की अव्यक्त और दबी-घुटी पिपासा को वाणी देने का प्रयास किया है।'

इस कहानीसंग्रह में संकलित कहानियाँ इस प्रकार है -

(१) दो पल की छाँह (२) एक औरत (३) चंदा की जोत (४) देह गंध (५) कारण । इन कहानियों का कथासार इस प्रकार है -

१) दो पल की छाँह :- इस कहानी में एक युवती है जिसका एक मजनू था। मजनू तो भौंरा था जिसने अनेक लैलाओं से प्यार की कसमें खाई थी। लेकिन वह युवती सचमुच उससे प्यार कर बैठी। प्यार में जान देने के लिए भी तैयार हो गयी वह मजनू तो भौरें की तरह उड़ गया।

इसका असर उस युवति मन पर ऐसा पड़ा कि जब भी कोई आदमी दिखता तो वह युवती उसकी तरफ शक की निगाह से देखती। एन्थोंनी कुछ पल के लिए मिलता है और उसे हँसाकर चला जाता है मानो उसकी दर्द भरी जिंदगी में उसे दो पल की छाँह मिल गई हो।

२) एक अदद औरत :- सीता के पिता अपनी कम आमदनी में सीता के लिए गोविंद से अच्छा रिश्ता नहीं ढूँढ़ पाये। गोंविद शराब पिता, रात में कोठीपर जाता। लेकिन सीता पर अन्याय करता रहता। सीता की सास को पोता चाहिए था। सीता को पहली दो बेटियाँ होती है तब सास उसे धमकी देती है

अगर तीसरी बार बेटा नहीं, हुआ तो मायके भेज दी जाएगी। सीता अपनी तुलना अग्निपरिक्षा देती रामायण की सीता से करती है। सीता को विवाह के पांचवे वर्ष बेटा हो जाता है। उसे कुल मिलाकर पाँच संतान हो जाते है। अब वह अपनी तुलना दुलारी मेहतरानी से करती है, जो बारह बच्चों की माँ थी। श्याम, सीता के दूर के रिश्ते का देवर उसके जीवन में मानो दो पल की छाँह बनकर आता है लेकिन गोविंद उसपर शक कर उसे घर से निकाल देता है। बुढ़ापे में भी उसे अपने बहू-बेटियों से मानसिक सुख नहीं मिलता। करवां चौत के व्रत के समय सीता भगवान से और कुछ नहीं लेकिन पति के रूप में अपने दूर के देवर श्याम को माँगती है।

३) चंदा की जोत :- भागवती एक भारतीय स्त्री की प्रतिमा लेकर इस कहानी में आती है जो पति चाहे जैसा भी हो उसे अपना परमेश्वर मानती है, प्राण त्याग देती है लेकिन किसी दूसरे की नहीं होती। उसका पति बनवारी है जिसे नौकरी छूटने के कारण शराब की आदत लग जाती है। वह शराब के नशे मे भागवती को मारता-पिटता है और उसी की कमाई पर और शराब पिता है। शराब के नशे में उसे इस हद तक गिरा दिया है कि अपनी सुंदर कन्या को देखकर उसके मन में विचार आता है कि यही कन्या उसके बूढ़ापे मे सहारा हो जाएगी और उसके जीवन का अंधियार दूर हो जाएगा। भागवती जितनी रूपवती थी उतनी ही चंड़ी भी थी। गाँव में कोई पुरुष उस पर बुरी नजर डालने की सोच भी नहीं सकता था। श्रीकांत, डाकखाने का पोस्टमास्टर भागवती को बनवारी को छोड़कर उसके साथ रहने की सलाह देता है। श्रीकांत के मधुर शब्द भागवती को दो पल की छांह की तरह लगते है। भागवती स्वयं को दृढतासे श्रीकांत के मोहपाश से मुक्त कर अपनी बेटी के साथ आत्महत्या करती है।

४) देहगंध :- यह एक मध्यवर्गीय आदमी 'मनोहर जोशी' की कहानी है। उसके पिता उसकी माँ को बहुत पीटा करते ते लेकिन वह चुपचाप सब सहन

करती थी। वह अपने पिता से घृणा करता था। उसे अपनी माँ किसी देवी से कम नहीं लगती थी। वह अपने पिता के जल्दी मरने की कामना करता था ताकि माँ को थोड़े दिन तो सुख से रहा देख सके। वह प्रतिमा नामक लड़की से प्यार करता था लेकिन प्रतिमा अपने माँ-बाप द्वारा चुने कमाऊ लड़के से शादी करती है और मनोहर की पहचान अपने पती से दूर का भाई ऐसे करती है। मनोहर की भी शादी हो जाती है लेकिन वह अपनी पत्नी सरला को प्रेयसी का दर्जा नहीं देता पाता। कई सालों बाद जब प्रतिमा उसे मिलती है और मनोहर से अपने पति की गैरहाजरी में शरीरसुख चाहती है तो उसकी मक्कारी देखकर वह ऊब जाता है और पत्नी की ओर लौट आता है और उसे सच्चे दिल से चाहने लगता है।

५)कारण :- इसी कहानी के मिस्टर सिन्हा एक सफल डॉक्टर है उन्हे बेटा तथा दो बेटियाँ है। उनकी पत्नी, बेटा, बेटियाँ सभी, उनकी संपत्ति के पीछे पड़े है। इस बात का जब उन्हें पता चलता है तब वे अपनी विल बदलकर अपने मित्र के लिए एक चिठ्ठी छोड़कर खुदखुशी कर लेते है। इतना प्रतिष्ठित, सर्व संपन्न व्यक्ति खुदखुशी करता है यह खबर सभी जगह पहुँचती है। चिठ्ठी में अपनी मित्र घोष को मिस्टर सिन्हा अपनी पत्नी, बेटा तथा बेटियों का यथार्थ बता देते है और विल बदलकर अपनी सारी संपत्ति अनाथाश्रम को दान कर देते है।

१.३.६ नारी मन: दीप्ति खंडेलवाल द्वारा लिखित यह कहानी संग्रह यह कहानी संग्रह १९७९ में प्रथम प्रकाशित प्रकाशित हुआ। इसमें उन्नीस कहानियाँ है। नारी मन के बारे में दीप्ति ने कहा है - ''मानव मन की एक संज्ञा के अंतर्गत होने पर भी स्त्री - पुरूष अपने अपने विशेषणों में नितांत भिन्न होते है एक जैसे पंचतत्वों से निर्मित उनके शरीर भी एक जैसे नहीं होती, चेतना प्रदत्त उनके मानस भी भिन्न होते हैं। संवेदना की भूमि पर वे अलग अलग खड़े होते है स्थितियों की क्रिया एवं प्रतिक्रिया में भी। उदाहरणार्थ, मानव मन की एक

कोमलतम तथा प्रबलतम संवेदना या चेतना प्रेम होता है। अनुभूति के स्तर पर प्रेम नारी और पुरूष में एक जैसा स्पंदित हो भी ले किंतु अपनी क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं में नितांत भिन्न हो उठता है जैसे प्रेम पुरूष में अधिकार बनता है नारी में समर्पण।''[२९]

नारी मन में कहानी द्वारा लेखिका ने नारी मन के विभिन्न कोणों को चित्रित किया है। इसमें संकलित कहानियाँ है (१) बेहया (२) अपराजिता (३) अर्थ

(४) जिंदगी (५) प्यार (६) प्रेम-पत्र (७) अनारकली (८) दुल्हन (९) सती (१०) युग पुत्री (११) पार्वती एक (१२) आवर्त्त (१३) कगार पर (१४) सुख (१५) निर्वसन (१६) नाशपाश (१७) ये दूरियाँ (१८) तपिश के बाद

(१९) मासूम

१)बेहया - हमारी समाज व्यवस्था ऐसी है कि हमारे समाज में एक बदनाम हुई नारी की ओर अनेक पुरूष लोलुप नजरों से देखते है उसपर थूंकते है। स्त्रियाँ उसे बेहया कहती है। इस कहानी की चंदा लेकिन इससे वह नहीं डरती। वह उस माहौल में रहना अच्छी तरह से सीख गई है। समाज द्वारा किए अपमान से वह अपमानित नहीं होती। समाज के इस व्यवहार से वह इतनी पत्थर दिल बन जाती है कि उसके देह का इस्तेमाल वह सुख चैन से रहने के लिए करती है। उसका बेटा,''अच्छा माँ, तूही एक बार कह दे कि तू बेहया नहीं है - मैं मान लूंगा, चाहे फिर हर कोई कहता रहे ।''[३०] यह कहता है तब वह टूट जाती है।

२)अर्थ - वीरेंद्र कुमुद के जिंदगी में प्यार लेकर आया है लेकिन ज्वर पीडा से जब कुमुद फिकी पड़ जाती है तब वीरेंद्र उसे छोड़ देता है क्योंकि पुरुष बाहरी सौंदर्य पसंद करते है। निर्धनता के अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए उसके मामा उसका ब्याह एक सेठ से कराते है जो उम्र में कुमुद के पिता

समान है। वह कुमुद को खुश रखने की हर तरह से कोशिश करते है लेकिन सेठ जी जब तक जीवित थे तब तक वह मन से कभी भी उनकी नहीं बन पाती। सेठ जी के प्रेम का अर्थ वह तब समझती है जब मरने के बाद सेठ उसके लिए गाड़ी, कोठी और हर महीने तीन हजार का इंतजाम करते है।

३)अपराजिता - कृष्णकांत अमेरिका में रहता है। जूली क्रिस्टीन, सुनीता यें युवतियाँ उसके काफी निकट आयी। सुनीता से परिचय के दौरान सुनीता के बारे में उसकी यह राय रही कि ''दीज इंडिवन गर्ल्स आर जस्ट फुलिश।''[३१] सुनीता में कुछ भी असाधारण नहीं था फिर भी कृष्णकांत उसकी ओर आकर्षित हो रहा था। सुनीता जिससे प्यार करती थी वह टी.बी. से मर गया था। तब से सुनीता का चेहरा और फीका पड़ गया था। कृष्णकांत को लगता था कि वह अपराजिता है। वह सुनीता को प्रपोज करता है। शादी के एक साल के अंदर ही उन्हें लड़की होती है। कृष्णकांत खुश होकर कहता है हम उसका नाम अपराजिता रखेंगे वैसे वह नाम सुनीता का होना चाहिए था।

४)जिंदगी - पुष्पा और सत्तो बुआ जो करीबन एक ही उम्र के है, उनके जीवन की तुलना इस कहानी में है । दादी के शब्दों मे 'झोंटा' बखेरकर बंदरिया सी घुमती सत्तो किसी काम की न थी । जब कि सुघड़ता से हर काम करने वाली पुष्पा को देखकर उसका जी अच्छा हो जाता था। पुष्पा का ब्याह भी बुआ के पहले हुआ । पुष्पा का ब्याह नरेंद्र से होता है वह प्राइमरी स्कूल का मास्टर था बाद में तपेदिक रोग का शिकार बन गया था । पांच बच्चों को जन्म देकर, उनके पालन पोषण की चिंता तथा कभी न चुकने वाला कर्ज और कभी न खत्म होनेवाला खर्च इस श्रृंखला में पुष्पा जकड़ गई। इधर सत्तो अपने पुष्ट शरीर के कारण सेठ रामप्रसाद से शादी करके बड़े घर की मालकीन बन गयी। नसीब बदलते देर नहीं लगती। बुआ की कुछ मदद मिलने की आशा से पुष्पा बुआ के घर जाती है । बुआ के घर

अरहर की दाल, घी, चावल तथा नींबू के साथ खाकर एक दिन के लिए ही सही पुष्पा मानो सुख की जिंदगी जी उठी । बुआ की दी गई पुरानी साड़ियों को कब कहाँ पहनेगी यह विचार करने लगी। जीवन से बेतरह ऊबी और खीझी पुष्पा को एक दिन के लिए ही सही जिंदगी बड़ी अच्छी लग रहीं थी।

५)प्यार - सरोज और प्रथमेश का प्रेमविवाह हुआ है दोनों एक ही कॉलेज में लेक्चरर है । सरोज का दिल चाहता है शादी के वर्षगांठ के दूसरे दिन वह खुद भी घर बैठे और प्रथमेश भी उसका साथ देने घर बैठे लेकिन प्रथमेश कॉलेज चले जाते है। दोनों मे तनाव पैदा होता है। दूसरी तरफ पंडित पंडिताईन का प्यार है। सुबह पंडित जी पंडिताईन को जबान लड़ाने पर मार देते है तो शाम को पंडिताईन के लिए दवा की शीशी लात है। पंडिताईन पंडित के लिए गंडा लाती है और पंडित जी को किसी की नजर न लगे इसलिए उन्हे बाँधती है। दोनों प्यार की तुलना इस कहानी में की गई है।

६)प्रेम पत्र - लाखी और कलुआ की जोड़ी को पहली बार देखकर लोगों ने कहा जैसे बंदर के गले में मोतियों की माला हो। कलुआ काले रंग का और बेजोड़ चिड़चिड़ाहट वाला था। कानपूर के एक कारखाने में मजदूर था । लाखी कलुआ के कसाई दृष्टि में केवल गाय थी। कलुआ हमेशा लाखी को मारता पिटता रहता था। एक बार लाखी का दूर का देवर आकर उसकी तारीफ कर गया था और एक साल बाद उसका खत आया था जिसमें फिर उसने अपने भौजी की तारीफ की थी। किसी पुरुष से ऐसी तारीफ सुनकर लाखी को मानो वह प्रेम पत्र ही लगा था। पढ़ना न आनेपर भी गर्ल्स होस्टेल की लड़कियों से वह पत्र कई बार पढ चुकी थी। लाखी का पिटता कुटता जीवन कटता रहा। किंतु उसके इसी पिटे कुटे जीवन को रमेसुर के पत्र ने जैसे एक नया जन्म दे दिया ।

७)अनारकली : शिप्रा सेन और सुब्रत मुजूमदार कॉलेज में पढ़ते थे। वे एक दूसरे से प्यार कर ते थे । लेकिन उनके प्यार के बीच अमीरी गरीबी की दीवारे थीं। बी.ए. फाइनल इयर में उन्होंने अनारकली नाटक में उन्होंने सलीम-अनारकली की भूमिकाएँ की थी। वे मिल नही पाते। लेकिन बीस साल बाद शिप्रा कांग्रेस की तरफ से इलेक्शन में खड़ी होती है तब सुब्रत को अपना नाम विदड्रो करने को कहती है लेकिन सुव्रत उसकी बात नहीं मानता। शिप्रा का मन उसे गुंडों से पिटवाने का करता है तो सुब्रत को वहीं शिप्रा उसे पहले अनारकली लगती थी अब किसी बंदरिया की तरह लगती है।

८)दुल्हन : नैरेटर का नाम निरुपमा है वह बहुत सुंदर है। उनके पति देवकुमार राय प्रसिद्ध चौधरी वंश के कुलदीपक है जो हमेशा अपनी पत्नी की सुंदरता की तारीफ करते रहते है। निरुपमा को लगता है कि प्रेम और रुप का चोली दामन का साथ होता है इसलिए वे अपने रुप के प्रति और भी सावधान हो उठती है लेकिन उसका यह वहम तब टूटता है जब वे उनके धोबी इब्राहीम की द्वारा अपनी पत्नी का जिक्र सुनती है जो दिखने में बहुत बदसुरत है। शादी के बीस साल बाद भी वह अपनी बीबी को दुल्हन कहकर पुकारता है। कम आमदनी होने के बावजूद अपनी दुल्हन के लिए महँगी साड़ियाँ वह खरीदता है। दुल्हन के बीमार पड़ने पर शहर के अच्छे से अच्छे डॉक्टर को दिखाता है उसके लिए अपनी साइकिल तक बेच देता है।

९) सती : गरीब नानी की सुंदर सी नातिन थी। नानी समझती थी कि वह अपनी नातिन का ब्याह किसी राजकुमार से कराएगी। लेकिन उसी गाँव के गुंडे नागन की बुरी नजर कनका पर पड़ती है। एक दोपहर जब कनका अपनी झोपड़ी में अकेली होती है तब नागन उसको रौंद देता है। तब से कनका अपने आप को नागन की पत्नी मानने लगती है। नागन के मर

जानेपर भी हर साल नागन की बरसी को नागन की प्यारी चीजे टमाटर और दारु पंडितजी को दान करती है। नागन के मरने के पाँच वर्ष बाद वह भी मर जाती है।

१०) युगपुत्री : इस कहानी की रचना एक अच्छी विदेशी कंपनी में टायपिस्ट है। वह सज सँवरकर ऑफिस में आती है। टायपिस्ट से सैक्रटरी बनना चाहती है इसलिए वह अपने बॉस को अपना शरीर भी समर्पित करने को कतराती नहीं। घर की सारी जिम्मेदारी उसीपर है। पिता नौकरी से रिटायर्ड हुए है। माँ उसने जब नौकरी जॉईन की उस वक्त तक बच्चे पैदा करती रहती है। माँ और रचना दोनों ही एक दूसरे से आँखे मिला नहीं पाती। थके हारे रोगी पिता का रचना के नौकरी के प्रति महत्व ही रचना की महत्वाकांक्षा बन जाता है। रचना 'लेट अस एनजाय लाइफ एंड फॉरगेट द रेस्ट''[३२] की फिलासॉफी लेकर अपने जीवन से खेलने लगती है।

११) पार्वती एक : पार्वती एक गरीब घर की लड़की है जो अपने अंधे माँ, बाप तथा अपने छोटे भाई के सारे काम करती है। उसे उस गंदे माहौल से घिन आने लगती है। घनश्याम उसे प्यार की नजरों से देखता रहता है। पार्वती का मन करता है कि घनश्याम के साथ कहीं दूर निकल जाए। घनश्याम के साथ चलने, शहर भागने के लिए वह को तैयार होती है। लेकिन घरपर आकर उसे अपने अंधे माँ, बाबू तथा अपने भाई लल्लू के देखभाल की चिंता सताती है। वह चाहकर भी घनश्याम के साथ नहीं जाती और घनश्याम से माफी माँगती है। सचमुच देवदास की पारो की तरह वह घनश्याम को पा नहीं सकती।

१२)आवर्त्त : विजी और सुमी दोनों के प्रेम को उनके घर से विरोध था इसलिए अलग होकर वे दोनों अपना अपना संसार शुरु करते है। अनेक सालों बाद विजी सुमी के घर आता है। सुमी को लगता है शायद विजी सिर्फ

उसके लिए आया हैं, लेकिन विजी तो सुमी के पति से अपना टेंडर पास कराने आता है और यह काम वह प्रेयसी सुमी से करवाना चाहता है। अपने प्यार का इस्तेमाल वह अपने बिजनेस के लिए करना चाहता है लेकिन सुमी का नारी मन यह मानने के लिए तैयार नहीं होता।

१३)कगार पर : रंजना एक अजीब व्यावहारिक लड़की है। उसके माँ बाप मरने के बाद, भाभी उसको पाल पोसकर बड़ा करती है। उसे किसी चीज का एहसान पसंद नहीं। बैंक में नौकरी लग जाने पर वह अपने खाने पीने का खर्चा भी भाभी को देना शुरू करती है। उसकी शादी हेमंत के साथ हो जाती है। वह ननंद-सास के साथ रहना नहीं चाहती। बच्चा नही चाहती । हेमंत रंजना के कैल्क्युलेटिव्ह स्वभाव से तंग आ जाता है। एक दिन समुद्र किनारे जब रंजना कगार पर चढ़ती है तो हेमंत खींचकर उसे बचाता है। तभी से रंजना की जिंदगी सही माने में शुरू होती है। वह सास को गाँव से बुलाना चाहती है। बच्चा चाहती है।

१४)सुख : इस कहानी में बुट्टो बुआ रंग से सांवली, छोटी आँखोवाली है जो राजा बाबू की ब्याहता है। राजा बाबू रोज शराब में धुत होकर जुअे के अड्डेपर बैठकर किसी बदनाम गली से निकलते, बुट्टो बुआ को खूब मारते पीटते। एक दिन उन्होंने बुआ को इतना मारा कि उसके सामने के चार दाँत टूट गए। नीचे का होंठ फट गया। राजा बाबू कोठी निलाम कर न जाने कहाँ चले गए। बुट्टो बुआ शहर से कस्बे में आ गई। मुंगौडी पापड बनाने बेचने लगी। कभी उसे सपना आता कि राजा बाबू लौट आए। सीता सावित्री के देश की बुआ को लगता है कि वह इसमें राजा बाबू का कोई दोष नही। वही कम नसिबों वाली है। ऊपर से वह राजा बाबू को धन्यवाद देती है कि उसे दाँत तोड़कर कुरुप बना दिया नहीं तो इज्जत बचाना मुश्कील हो जाता। वह कहती है '' अब राजा बाबू का भी कौन दोष, बुट्टो के भाग ही खराब है, वो कहते

है न रुप की रोए, भाग की खाए ।''[३३] भूतकोठी में अनेक साल अकेली ही रहती है। मरने से भी उसे ड़र लगता है। उसे लगता है जिस हाल में वह रह रहीं है वह मरने से कोई कम तो नहीं। जब जीते जी सुख-चैन नहीं मिला तो मरने से क्या मिलेगा?

१५)निर्वसन :- इस कहानी में राधा एक साधारण सी लड़की है। दसवी पास होने के बाद वह आगे पढ़ नहीं पाती परंतु डान्स सीखना चाहती है, लेकिन माँ उसे धमकाती है और उसका ब्याह किसी लाला से कर देती है जो राधा को बिलकुल भी पसंद नहीं था। नैरेटर को राधा राखी बाँधती आयी है लेकिन मुहल्ले के ड़र से राधा की माँ को राधा का नैरेटर से बातें करना अच्छा नहीं लगता है। शादी के कुछ दिन बाद शराबी, घिनौने जानवर लाला से बचने के लिए राधा अपना घर छोड़कर भाग जाती है। वह राधा से प्रसिद्ध कैबरे डान्सर मोना बन जाती है।

१६)नागपाश :- इस कहानी में छवि और विकास एक दूसरे से प्यार करते है छवि एक सेठ की लड़की थी तो विकास उनके मुनिम का बेटा था। उनके प्यार में ऊँच-नीच भेद का दीवार बनकर खड़ा था। विकास अपने आप को छवि के लायक बनाने के लिए बड़ा पुलिस ऑफिसर बनकर वापस आता है। परंतु यहाँ छवि को अपनी सौतेली माँ की वजह से मेजर अजय वर्मा से ब्याह करना पड़ता है जो उम्र में उससे दस साल बड़े हैं। उनके राकेश-रश्मि दो जुड़वा संतान होती है। मेजर अजय वर्मा चीन-पाकिस्तान युद्ध में शहीद हो जाते है। इधर अपनी बहन को बचाने की खातिर विकास को भी मजबूरन ब्याह करना पड़ता है। लेकिन छवि के प्रति प्यार विकास के मन से कम नहीं हो पाता। वह छवि को किसी भी हाल में स्वीकारने को तैयार है। लेकिन छवि समाज के, बच्चों के, अपने मन के पाश में ऐसी बंधी है कि वह विकास को अपना समर्पण नहीं दे पाती। वे बंधन नागपाश की तरह उसे जखड़ लेते है।

१७) ये दूरियाँ :- इस कहानी में मिस्टर और मिसेज देसाई दिखने में तो 'मेड फॉर इच आदर' लगते है लेकिन उन दोनों में हमेशा अनबन चली रहती है। उनकी इकलौती बच्ची को हमेशा डर रहता है कि कब दोनों का झगड़ा हो जाए। हाय क्लचर्ड फॅमिली में ज्यादा बच्चे पैदा करना जाहिलों का काम माना जाता है। छोटी बच्ची को आया संभालती है क्योंकि अपने बच्ची की देखभाल करने के लिए उन्हें फुरसत नहीं होती। बच्ची अकेलेपन का शिकार हो जाती है। अपना जीवनसाथी चुनते समय भी उस लड़की के सामने अपने माँ-बाप की छवि आ जाती है। उसे ऐसा लगता है शायद वह अपने अकेलेपन से कभी ऊपर नहीं उठ पाएगी।

१८) तपिश के बाद :- इस कहानीं में आनंद और सुमी पति-पत्नी है। आनंद एल.आय.सी. एजंट है तो सुमी बैंक में काम करती है। आनंद को नौकरी करने वाली बीबी तो चाहिए लेकिन वह घर के कामों में कभी भी अपनी पत्नी सुमी की थोड़ी सी भी मदद नहीं करता। अपने खुद के छोटे मोठे काम भी वह स्वयं नहीं करता। सुमी को घर के, बैंक के काम करते करते घड़ी के काँटे की तरह भागना पड़ता है। कुछ गलती हुई तो सुनना पड़ता है, ''क्या समझने लगी है अपने आपको? अपने कमाने का बहुत अभिमान हो गया है। यह मत भूलो कि मैं पल भर में तुम्हे ठुकरा सकता हूँ।''[३४] दोनों में झगड़ा होता है। तंग आकर सुमी घर छोड़कर जाने का निर्णय लेती है। तब टिटू-उनका बेटा माँ से लिपटकर रोने लगता है। आनंद सुमी से माफी माँगते है। सुमी भी वादा करती है कि वह ऐसा कभी नहीं करेगी।

१९)मासूम :- अपर्णा और सौमित्र की मुलाकात दस साल बाद रेल के सफर में होती है। सौमित्र वहीं था जिसने अर्पणा को प्रपोज किया था, लेकिन अपर्णा के स्वीकार का इंतजार किए बिना ही वह विदेश चला गया और वहीं पर किसी भारतीय वंश की लड़की से शादी कर ली थी। अपर्णा को भी देवेश

जैसा अच्छा पति मिल गया था जो उसे बहुत प्यार करता था। जिसके प्यार ने अपर्णा को सौमित्र को भूलाने में मदद की थी। दस साल बाद मुलाकात होने पर अपर्णा मानो सौमित्र से बदला लेना चाहती है और खुद बहुत सुखी है यह कहकर क्या सौमित्र सुखी है? यह टटोलना चाहती है। सौमित्र के दिल में आज भी कहीं अपर्णा की जगह है इसका पता तब चलता है जब अपर्णा का गिरा रुमाल सौमित्र छोटे बच्चे की तरह कोई देख न ले इस मासूमियत से चुपके से उठा लेता है।

१.३.७ औरत और नाते १९७१ में पराग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस कहानीसंग्रह की कहानियाँ इसप्रकार हैं- (१) कुछ भी तो नही (२) नाते (३) प्रेम पत्र (४) भागवान (५) अंतराल (६) अनारकली (७) यशोधरा (८) पथ निर्देश (९) रूप का सन्मान (१०) दुल्हन (११) प्रेमपत्र

प्रेमपत्र, अनारकली, दुल्हन कहानियों की चर्चा दूसरे 'कहानी संग्रह' में की गयी है। अत: उनकी पुनरावृत्ति टालने का प्रयास किया गया है।

१. **कुछ भी तो नही -** अपर्णा और सौमित्र दोनों एकदूसरे से प्यार करते हैं। उनका प्यार सफल नहीं हो पाता। दोनों एक ऐसे मोड पर मिलते है जहाँ से वापस लौटना मुमकिन नहीं इसलिए दोनों कुछ भी तो नहीं की मानसिकता तैयार करते है। जो वास्तव में सच नहीं है।

२. **नाते** - इस कहानी में खून के रिश्तों की पशु की वफादारी से तुलना की गई है। चौधरी घराने की बडी बहू बूढ़ापे में तीसरी मंजिल से गिरती है। उसके पति को उसके गिरने की चिंता नहीं। अपने चुनाव में जीतने की चिंता है। उसके तीन बच्चे मिलकर उसे पागल करार देते है और मामला रफा-दफा होता है। लोगों की सहानुभूति से उसके पति भारी वोटों से जीत जाते है। परंतु घरका वफादार कुत्ता मालकिन के मरने के दिन से खाना पिना छोड देता है और इससे उसकी भी मृत्यु हो जाती है। पति और उसके तीन पुत्र खून के

नाते को अपने ढंग से निभाते है और कुत्ता वफादारी दिखाकर नाते अपने ढंग से निभाता है।

३. **भागवान** - इस कहानी में मजबूर निर्धन गरीब लोगों को अमीरों द्वारा किसतरह छला जाता है इसका वर्णन किया गया है। मजबूर निर्धन कल्लोंपर किए गए छल का वर्णन इस कहानी में किया गया है जिसमें पैसों के बलबूते पर अमीर लोग मजबूर निर्धन औरत को काम पर रख लेते है और उसके बेबसी और मजबूरी का भरपूर फायदा उठाते है यह दिखाया है।

४. **नई कहानी** - इस कहानी में पति, पत्नी और पत्नी की बहन में प्रेम त्रिकोण है। नायिका की बहन अपने बहनोई से प्रेम करने लगती है परंतु अंत में नायिका का प्रेम और विश्वास देखकर बहनोई से प्रेम का नहीं बल्कि भाई का रिश्ता जोड़ लेती है।

५. **अंतराल** - सुधीर बीनी से प्रेम करता हैं, परंतु व्यक्त नहीं कर पाता, बीनी की शादी रवि से हो जाती हैं। लंबे अंतराल के बाद दोनों एक दूसरे से मिलते है। एक निश्चल मित्र की भाँति उसका बर्ताव हैं, परंतु अंदर ही अंदर उसे बीनी को न पा सकने का गम है। इससे वह कुंठित है।

६. **यशोधरा** - इस कहानी में लेखिका ने सिद्धार्थ यानि गौतम बुद्ध की पौराणिक कथा को काव्यात्मक भाषा में लिखकर चेतना के कुछ अंग प्रस्तुत किए है। यशोधरा-सिद्धार्थ की प्रथम भेट का वर्णन काव्यात्मकता लिए हुए हैं।

७. **पथ-निर्देश** - इस कहानी में त्यागमयी नारी रत्ना का चित्रण है जो तुलसी को देह की क्षणभंगुरता समझाती है। तुलसी आगे चलकर तुलसीदास बनकर राम के पावन चरित्र के अमर गायक बन जाते है। लेकिन लेखिका के अनुसार इससे सबसे ज्यादा तुष्टि रत्ना ने पाई होगी।

८. **रूप का सन्मान** - इस कहानी में छत्रपति शिवाजी महाराज का प्रसिद्ध ऐतिहासिक कथानक है जिसमे शिवाजी लावण्यमयी गौहरबानू को माँ कहकर उसे उचित सन्मान से उसके पति के पास लौटा देता है। इस कहानी के

माध्यम से लेखिका ने युवा पीढ़ी को यह संदेश दिया है कि रूप नेत्रों के मोह की वस्तु नहीं है, हृदय की समस्त श्रद्धा का अधिकारी है।

९. **अकिंचन** - कनकलता अनिंद्य लावण्यवती है परंतु चंपकलता असीम कुरुपवती है। कनकलता का पति उसके अनभिषक्त सौदर्यं का पुजारी है। केवल उसका उपभोक्ता है। उसके घर में वह केवल सजी सजाई प्रस्तर प्रतिमा सी किमती वस्तु हैं जिसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए वह उसे मातृत्व सुख से भी वंचित रखता है। दूसरी और चंपकलता का विकलांग पति चंपकलता से असीम प्रेम करता है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि सच्चे प्रेम के लिए सुंदरता का वैभव नहीं चाहिए।

१.४ उपन्यासों का विवरण

दीप्ति खंडेलवाल केवल कहानीकार ही नहीं एक श्रेष्ठ उपन्यासकार भी थी। उन्होंने तीन उपन्यास लिखे - (१) कोहरे (२) प्रिया (३) प्रतिध्वनियाँ

तीनों उपन्यास नारी पीड़ा की गाथा की तरह लगते है। नारी की बिखरी मानसिकता को अभिव्यक्त करते है। उपन्यास पढ़ते समय पाठक उनके पात्रों में समा जाता है। उनके उपन्यास मन को हिला देते है। दीप्ति जी के इन उपन्यासों का संक्षेप में सार इस प्रकार है -

१.४.१ कोहरे :- का प्रथम प्रकाशन १९७७ में हुआ। जिसप्रकार कोहरे में चलते समय अगले कदम स्पष्ट नहीं होते - जैसे कोहरा एक अस्पष्टता, एक अनिश्चितता, एक उलझन का प्रतीक है उसी प्रकार इस उपन्यास की नायिका स्मिता की जिंदगी भी अस्पष्ट, अनिश्चिता, एक उलझन सी है। इस उपन्यास में सुनील और स्मिता का प्रेमविवाह होता है। लेकिन सुनिल बहुत ही अभिमानी, 'इगो' वाला है। स्मिता की भावुकता को वह समझना ही नहीं चाहता। शादी के बाद वह बच्चा नहीं चाहता। लेकिन स्मिता एक सुंदर पुत्र को जन्म देती है। सुनिल स्मिता के प्रसव के बाद ऑफिस के मिस इरा से

संबंध बनाता है। स्मिता का एक मेजर की लड़की होना भी उसे खटकता है। स्मिता सुनील के बर्ताव से तंग आकर मायके चली जाती है। थोड़े दिनों बाद सुनिल स्मिता से डिवोर्स माँगता है। सुनिल उसे भेज हुए पत्र में लिखता है ''जिंदगी एक बार ही मिलती है, घुटकर या घोंटकर क्यों जिया जाए? मुझे न स्वयं मरना मंजूर है न तुम्हे मारना और हमारा साथ-साथ जीना अब इम्पासिबल है, इसलिए क्यों न हम दुश्मनों की तरह साथ रहने की बजाय, दोस्तों की तरह अलग हो जाए।''[३५] लेकिन भावुक स्मिता को इस स्थिती का सामना करते बहुत समय लगता है। स्मिता का भाई निशिथ भी स्मिता जैसी ही हालातों से गुजरता है। स्मिता की माँ रितीरिवाजों को मानने वाली है। वह अपराजिता सी दिखाई देती है। अपने पति द्वारा हुए अत्याचारों से वह हार नहीं जाती तथापि अंत में उसे जीत भी लेती है। स्मिता के पिता मेजर साहब के डॉ. माथुर की पत्नी से तथा अनेक औरतों से संबंध रहे लेकिन अंत में वे अपनी पत्नी के ही पास वापस आते है। अपने पिता, माँ और भाई के कहने के कारण स्मिता अपनी जिंदगी अपने पहले प्रेमी प्रशांत के साथ नये सिरे से शुरू करने को तैयार होती है। यहाँ सुनिल के मत से एक से न बने तो दूसरे का विचार करना अनुचित नहीं है। स्मिता भी यहीं सोचती है प्रशांत से पहले शादी की जाए प्यार तो बाद में भी होता रहेगा। लेखिका दीप्ति खंडेलवाल ने इस उपन्यास में बताया है कि एक औरत का अकेला रहना समाज में मंजूर नहीं होता। समाज से बचने के लिए उसे किसी पुरुष का साथ लेना ही पड़ता है। नारी कितना भी प्रगति क्यों न करे वह सदैव अबला ही रहती है।

१.४.२ प्रिया :- तीन पीढ़ियों की यह कहानी है। 'प्रिया' कहानी की नायिका है। 'सौदामिनी' उसकी माँ है तथा 'रविशंकर' उसके नाना है। बचपन में रविशंकर पर गाँववालों ने माँ को मार डालने का इल्ज़ाम लगाया था।

रविशंकर वहाँ से भाग निकलता है। रविशंकर राधा से प्यार करता है लेकिन अर्थहीन होने के कारण उन दोनों का प्यार होते हुए भी एक धर्मशाला में वे भाई-बहन बनकर रहते हैं । राधा को बेटी होती है और राधा मर जाती है। रविशंकर अपनी बेटी सौदामिनी के साथ शहर आता है, छोटीसी दुकान चलाता है, सौदामिनी को पढ़ाता है। सौदामिनी पढ़ती है, कॉलेज जाती है। कॉलेज में उसकी मुलाकात एक बड़े उद्योगपति यशवंत जी से होती है। यशवंत जी सौदामिनी के साथ ब्याह करने की इच्छा प्रकट करते है। असल में वे उम्र से सौदमिनी से दुगने होते है, उनकी बेटी सौदामिनी के उम्र की है। लेकिन सौदामिनी उनमें अपने जीने का सहारा ढूँढती है। सौदामिनी का ब्याह यशवंत जी से होता है। यशवंत जी हनीमून के लिए सौदामिनी को नैनीताल ले जाते है। वहाँ एक रात यशवंत जी खुद सौदामिनी को किसी दूसरे आदमी के कमरे में अकेले छोड़ देते है और बाहर से ताला लगा लेते है। वह पराया पुरुष सौदामिनी पर बलात्कार करता है। वह धीरे-धीरे विक्षिप्त सी रहने लगती है। अपने स्वार्थ के लिए यशवंत जी ने उसे बाजारू बनाकर रखा है,यह सौदामिनी सहन नहीं करती और अपनी दो बेटियों के साथ वहाँ से भाग निकलती है और अपने पिता रविशकंर के साथ रहती है। स्कूल में टीचर की नौकरी करती है। सौदामिनी की दो बेटियाँ चित्रा और प्रिया है। चित्रा सुरेश के साथ भाग जाती है। प्रिया बहुत ही सुंदर है। कॉलेज में देवदास उसपर मरता है लेकिन प्रिया उसकी नहीं बनती। यशवंत जी प्रिया को जब देखते है तब वे प्रिया की खुबसूरती का फायदा अपना बिझनेस आगे बढ़ाने के लिए करते है। प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राम आहुजा के बेटे अरूण आहुजा से प्रिया की एगेंजमेंट करा देते है। लेकिन अरूण आहुजा प्रिया का नारीत्व रौंधकर उसके पेट में अपना बच्चा छोड़कर युरोप निकल जाता है।

यशवंत जी प्रिया का एबॉर्शन कराने को कहकर दो हजार रूपए भेज देते है। बाद में डॉक्टर मनसिज चौधरी प्रिया के जीवन में आते है, जो प्रिया को उसके अतीत के साथ स्वीकार करने के लिए तैयार होता है। लेकिन वह प्रिया को पाने के लिए पहले उसकी देह को पाने की गलती कर बैठता है। इधर चित्रा एक बेटे के साथ वापस आती है। इस शॉक से नानाजी रविशंकर की मृत्यु होती है। अपनी माँ और बहन के लाख मनाने के बावजूद प्रिया ब्याह करने के लिए तैयार नही होती वह चित्रा से पूछती है, 'कौनसा ब्याह करू- बाबा वाला, माँ वाला या तुम्हारा वाला?''[३६] वह शादी करने की बजाय अकेली ही अपना जीवन बिताना चाहती है।

दीप्ति खंडेलवाल ने बताया है कि नारी की नियति केवल एक चिरंतन प्रश्नचिन्ह है - जिसका उत्तर न कभी मिला है न कभी मिलेगा।

१.४.३ प्रतिध्वनियाँ :- इस उपन्यास में दीप्ति ने आधुनिक अस्थायी प्रेम संबंध को उभारने का प्रयास किया है। इस उपन्यास का नीलकांत माँ बाप का इकलौता पुत्र है। माँ के देहांत के बाद वह हरिश्चंद्र मेहता का दत्तक पुत्र बन जाता है। उसका ब्याह हरिचंद्र मेहता की इकलौती बेटी अचला से संपन्न होता है। शादी से पहले नीलकांत को शुभ्रा से प्यार था। जया अचला की नौकरानी है। वह सुंदर है परंतु बालविधवा है। अचला से असंतुष्ट नीलकांत अपनी बर्बर इच्छा को शांत करने का साधन जया को बनाना चाहता है।

शुभा, अचला और जया से प्रेमसंबंध बनाने के बाद नीलकांत का संबंध मोतीबाई नाम की वैश्या से होता है जिसे वह वेश्या जीवन से मुक्त करना चाहता है पर मोतीबाई वेश्या जीवन छोड़ना नहीं चाहती। अचला का प्रेमसंबंध विनय से है और उसे विनय से बच्चा होने वाला है। यह रहस्य खुलने पर खुद के अनैतिक संबंध होते हुए भी नीलकांत अचला के अनैतिक संबंध सहन नहीं करता, विनय को मार ड़ालना चाहता है। अचला

आत्महत्या करती है। नीलकांत चारों नारियों से प्रेम करता है। उसके जीवन की त्रासदी यह है कि वह चारों में से किसी को भी पूरी तरह पा नहीं सकता।

१.५ लघु उपन्यास - वह तीसरा

'वह तीसरा' दीप्ति का बहुचर्चित लघु उपन्यास हैं। सबसे पहले यह उपन्यास सन १९७२ में कमलेश्वर द्वारा संपादित बहुचर्चित पत्रिका धर्मयुग में छपा था। इस लघु उपन्यास में उच्चशिक्षित पति-पत्नी में अपने अपने 'अहम्' के कारण होने वाले तकरार को लेखिका द्वारा दर्शाया गया है। दोनों में 'अहम्' की मात्रा है उसके कारण रजिता और संदीप एक साल की शादी में ही एक दूसरों को सुख देने की बजाय एक-दूसरे को ठेंस पहुँचाने के बहाने ढूँढते रहते है। उनकी गृहस्थी में 'वह तीसरा' और कोई नही बल्कि 'अहम्' ही है जो उनका सुख-चैन छिन लेता है।

१.६ दीप्ति खंडेलवाल की अन्य रचनाएँ

लेख - मनु की नियति क्या हैं?

दीप्ति खंडेलवाल ने पाक्षिक लेखमाला के अंर्तगत 'मनु की नियति क्या है?' यह लेख धर्मयुग में १९७६ में प्रकाशित हुआ था। इस लेख में लेखिका ने नारी विमर्श का उद्घोष किया है।

संस्मरण - शहरे आबाद, हैदराबाद, हैदराबाद !

नई कहानी में अपने ही शहर हैदराबाद को लेकर वहाँ के तौर-तरिके, पहनावा, बातचीत, सुंदरता की झलक को लेखिका द्वारा संस्मरण के रूप में लिखा गया है।

काव्यात्मक संवाद :- 'एक आधुनिक तोता-मैना संवाद' दीप्ति खंडेलवाल द्वारा लिखा गया यह काव्यात्मक संवाद साप्ताहिक हिंदुस्थान में प्रकाशित हुआ। इसमें पुरुषों की खिल्ली उड़ाते हुए उन पर तीखे और पैने व्यंग किए गए हैं।

निष्कर्षतः दीप्ति खंडेलवाल को नियति ने 'जलना' दिया लेकिन जलते रहना उनको मंजूर नहीं था। वे कुछ देना चाहती थी। उन्होंने कविताएँ, कहानियाँ तथा उपन्यास भी लिखे। नारी जीवन की विडंबनाओं को मूर्त ट्रेजेडी के रूप में उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के सामने रख दिया। कहीं पर तो नारी की इस अवस्था के लिए समाज को ही दीप्ति जी ने कटघरे में खड़ा कर दिया। अपने जीवन के कड़वे सच ने उन्हे कहानीकार बना दिया। अपने कहानीकार रूप से दीप्ति जी को गर्व था। नारी मन के अनेक पहलूओं को दीप्ति के साहित्य ने एक सशक्त वाणी दी है। अतः १९७० से १९८५ तक के छोटे से साहित्यिक कृतित्व के सालों में ही दीप्ति जी ने अपने आपको एक सशक्त और महान लेखिका साबित कर दिया। उनका जीवन पुरूष वर्चस्ववादी समाज में शारीरिक यातनाओं के बीच गुजरा। उन्होंने अपने लेखन में पुरूष प्रवृत्ति पर करारा व्यंग किया है। नारी के अधिकारों के प्रति सजगता दिखाई है। उन्होंने भारतीय नारी अंकित की है जिसका परंपरा में कोई आकर्षण नहीं है। वह सड़े-गले संस्कारों का तिरस्कार करती है। ऐसी प्रतिभावान लेखिका की विडंबनापूर्ण जीवन यात्रा १९८९ में समाप्त हुई परंतु अपनी रचनाओं के माध्यम से वह आज भी दीप्तशलाका जैसी पाठकों के मन में जीवित है और हमेशा रहेंगी !

****

संदर्भ : प्रथम अध्याय -

१) नागरमोजे अजित; राष्ट्रवाणी द्वैमासिक, नवंबर-दिसंबर २०१०, पृ. ४७

२) डॉ. सिंह प्रेम, डॉ. रिम्पी खिल्लन, समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज, पृ. १०८

३) खंडेलवाल दीप्ति, सलीब पर-आत्मरचना, पृ. १३

४) ----------, दो पल की छांह, प्राक्कथन से

५) ----------, सलीब पर - आत्मरचना पृ. १४

६) वही पृ.२३

७) वही पृ.१४

८) वही पृ.१९

९) वही पृ.२४

१०) वेंकटेश्वर एम्, संकल्प-त्रैमासिक २०००, हैदराबाद पृ. २१

११) खंडेलवाल दीप्ति, सलीब पर-आत्मरचना पृ.२३

१२) वही पृ.२३

१३) ----------, प्रतिध्वनियाँ-श्रेय पृ. ९७

१४) ----------,सलीब पर-आत्मरचना, पृ. २२

१५) वही पृ. २५

१६) ----------, सलीब पर - स्वयंवर, पृ.९६

१७) ----------, नारी मन - बेहया, पृ. १३

१८) ----------, कड़वे सच, पृ. ८१

१९) ----------,कड़वे सच - ये भी कोई गीत है, पृ. ८८

२०) ----------,कड़वे सच -विषपायी, पृ. १००

२१) ----------, प्रिया, पृ. १२९

२२) ----------, कड़वे सच, आत्मपरिचय से,पृ.२

२३) खंडेलवाल दीप्ति, कड़वे सच - देह की सीता, पृ. ६३

२४) ----------, वह तीसरा- नाटक, पृ. १०२

२५) ----------, धूप के अहसास से आत्मकथ्य से, पृ.२

२६) ----------, धूप के अहसास-देह से परे पृ. १७

२७) ----------, धूप के अहसास - एक और सीता, पृ. ९०

२८) ----------, सलीब पर- डूबने से पहले, पृ.१११

२९) ----------, नारी मन, दो शब्द से

३०) ----------, नारी मन-बेहया , पृ. १५

३१) ----------,नारी मन-अपराजिता, पृ. १७

३२) ----------,नारी मन- युगपुत्री, पृ. ८६

३३) ----------,नारी मन-सुख, पृ १२१

३४) ----------,नारी मन - तपिश के बाद, पृ. १६६

३५) ----------, कोहरे, पृ. ५२

३६) ----------,प्रिया, पृ. १५१

द्वितीय अध्याय

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी का मनोविज्ञान

* द्वितीय अध्याय *

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी का मनोविज्ञान

२.१ मनोविज्ञान का अर्थ, स्वरुप, परिभाषा तथा पृष्ठभूमि

प्रथम अध्याय के विषयों के आधार पर हम कह सकते है कि समकालीन लेखिका दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य मे हमें पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक विषयों पर लेखन के विषय मिलते है। जिसमें ज्यादातर लेखन नारी समस्याओं पर ही है। उनके साहित्य मे मनोविज्ञान का अपार कोश छिपा हुआ है। हिंदी साहित्य में दीप्ति खंडेलवाल जैसी महान प्रतिभावान लेखिका के साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन नहीं हुआ है और आज कल हम देखते है कि मनोविज्ञान यह विषय प्रत्येक क्षेत्र में समाया हुआ है, जैसे शिक्षा, उद्योग, समाज, व्यक्तित्व, चिकित्सा तथा बाल्यावस्था आदि । अतः दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी मनोविज्ञान का अध्ययन होना अत्यावश्यक है। इस महत्व को ध्यान में रखकर मैंने इस द्वितीय अध्याय में दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी का मनोविज्ञान अध्ययन कर उनके साहित्य में मनोवैज्ञानिक विचार का मार्ग खुला करने का प्रयास किया है ।

समकालीन हिंदी लेखिकाओं ने अपने साहित्य में मनोवैज्ञानिक धरातल पर लिखी कहानियों में व्यक्तियों की मनोवृत्तियों का सूक्ष्म अध्ययन तथा विश्लेषण किया है। नारियों द्वारा लिखित मनोवैज्ञानिक कहानियों मे ज्यादातर नारी मनोवृत्ति का ही चित्रण मिलता है। नारी और पुरुष समाज के दो महत्त्वपूर्ण घटक है। नारी तो पुरुष को जन्म देती है लेकिन समाज के पुरुष यह भूल जाते है कि वे जिसपर अपना वर्चस्व प्राप्त करना चाहते है, वही नारी स्वयं पुरुष की जिदंगी का आधार है। उसकी प्रेरणास्त्रोत है, उसकी जीवनदायिनी है।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नारी का शोषण अनेक तरहों से होता आया है। भारत में स्वतंत्रता के बाद राजा राम मोहन रॉय, महात्मा फुले जैसे समाज सुधारकों ने स्त्री मुक्ति के अभियान चलाए जिससे नारी को अपने आप की पहचान कर सकने में मदद मिली। पढ़ लिख कर वह अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करने लगी। जिस परिवार में उसके बोलने का कोई महत्व नहीं था वहीं उसकी राय महत्वपूर्ण माने जाने लगी। नारी के संदर्भ में बहुत से अच्छे बदलाव आए जैसे शिक्षा का अधिकार, सती प्रथा का बंद होना, विधवा विवाह को मान्यता मिलना आदि । स्त्री नें इस बदलाव का फायदा उठ़ाते हुए यह सिद्ध भी किया है कि औरते भी पुरूषों से कम नही। इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, मदर टेरेसा, प्रतिभाताई पाटील जैसे अनेक स्त्रियों ने भारतीय नारीं की ताकद का मूर्त रूप आज समाज के सामने प्रस्तुत किया है। फिर भी भारतीय समाज के सभी स्तरों पर स्त्री को स्वतंत्र हक,अधिकार, कहाँ प्राप्त हो पाए है? अनेक घरों मे आज भी औरत को अनेक अत्याचार सहन करने पड़ते है। मर मर कर जीना पड़ता है। घुटन, संत्रास, कुंठा तनाव का सामना करना पड़ता है। नारी की इसी मानसिकता को समकालीन साहित्य में अनेक महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया है इसमें दीप्ति खंडेलवाल का साहित्य नारी की मनोविज्ञानिकता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

दीप्ति खंडेलवाल के कहनियों में, उपन्यासों में नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, विश्लेषण करने से पूर्व मनोविज्ञान का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा मनोविज्ञान का वैज्ञानिक स्वरूप तथा मनोविश्लेषण का अर्थ,उसका स्वरूप, मनोविश्लेषण की पृष्ठभूमि आदि बिंदुओं का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है-

२.१.१ मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि -

'मन' को भारतीय प्राचीन ग्रंथों में अनेक रुपों में विश्लेषित किया गया है। श्रीमद्भगवत् गीता के अनुसार हमारे इस देहरूपी रथ में प्राण सवार होते है बुध्दि सारथी है और मन उसका लगाम है और इंद्रिये घोड़े हैं। परंतु हमारा मन बहुत ही चंचल, उच्छृंखल, दुराग्रही तथा अत्यंत बलवान है तथा मन को नियंत्रण में रखना, वायु को नियंत्रित करने से भी अत्यंत कठीन है। 'योग वसिष्ट' में मन को संसार का उत्पादक, अत्यंत बलशाली एवं संकल्प विकल्प करने वाला बताया गया है। और मन को जीत लेनेपर ही हमे शांति एवं कल्याण की प्राप्ति होती, यह बताया गया है **डॉ. जयशंकर प्रसाद** ने 'चित्राधार' में मन की तुलना सरोवर से की है। उनका कथन है, ''जिस प्रकार सरोवर में अनेक लहरे उठा करती है उसी प्रकार मन भी सदैव तरंगायित रहता है, सरोवर की तरंगो में माधुर्य नहीं होता है, मन की तरंगे सुधा का तिरस्कार करती हुई मधुरता से परिपूर्ण रहती है। मन-रूपी सरोवर की तरंगे असीम है जिसमें चित्तरूपी हंस बड़े सुखपूर्वक क्रिड़ा करता रहता है। ''[१] भारतवर्ष में मनु, पातंजलि, गौतम बुद्ध, चाणक्य, चार्वाक, बृहस्पति आदि महान व्यक्तित्वों ने मनोविज्ञान को अपने ग्रंथों में व्यक्त किया है जिससे स्पष्ट होता है कि भारत में प्राचीन काल से ही मनोविज्ञान इस विषय को छुआ गया है जब कि हमें लगता है कि मनोविज्ञान यह विषय सर्वप्रथम पाश्चात्य लोगों ने ही समझा है। प्लेटो, अरस्तू जैसे यूनानी दार्शनिकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए है। प्लेटो ने मस्तिक को मन और मेधा का स्थान बतलाया है। **पिल्सबर्रे** के अनुसार मन अदृश्य है, अस्पष्ट है विवादास्पद एवं अनुमानित है। उसकी स्थिति का पता मनुष्य के व्यवहार से लगता है। सारांश मे मन का अर्थ 'आत्मा' है। धार्मिक लोगों का भी यही विश्वास है

कि शरीर नष्ट हो जाता है लेकिन मन या आत्मा नष्ट नहीं होती। मृत्यु के बाद वह किसी दूसरे के शरीर में प्रवेश करती है।

मन को व्याख्यायित करने के बाद 'मनोविज्ञान' का अर्थ क्या है? यह प्रश्न उठता है। ग्रीक भाषा में **Psyche** यानि आत्मा और **Logos** का अर्थ है विज्ञान **Psyche + logos = Psychology** अतः **Psychology** का शाब्दिक अर्थ है 'आत्मा का विज्ञान' है। 'मनोविज्ञान वह विषय है जो मनुष्य उसके तथा दूसरे मनुष्यों के व्यवहार का अध्ययन करता है। उसे इस बात से अवगत कराता है कि क्यों, कैसे तथा किन परिस्थितियों में वह और दूसरे व्यक्ति एक विशेष प्रकार का व्यवहार करते है। मनोविज्ञान एक ऐसा विषय है जो मानव व्यवहार के संबंध मे मूल प्रश्नों का उत्तर प्रदान करता है। मानव मन का विश्लेषक मनोविज्ञान है तो साहित्य इन्हीं मनोविकारों और अनुभुतियों की रोचक कथा है। **'सिगमंड फ्रायड'** को साहित्य में मनोविज्ञान के प्रवेश का सारा श्रेय दिया जा सकता है। फ्रायड के अनुसार मानव मन और व्यक्तित्व के मूल द्वंदों की अभिव्यक्ति ही साहित्य है।

फ्रायड ने मन की संरचना दो स्तरों पर की है एक है गत्यात्मक पहलू जिसमे इदम,अहम्, तथा परम अहम् का समावेश है । और दूसरा स्थूलरुपरेखीय जिसमें चेतन, अवचेतन तथा अचेतन, मन के प्रकार हैं ।

जुंग के अनुसार साहित्य की निर्मिति वैयक्तिक चेतना की अपेक्षा मिथकीय क्षेत्र से उत्पन्न होती है। मनोविज्ञान ने साहित्यकार के जीवन दर्शन को एक दिशा दी। युंग के अनुसार रचनात्मक ऊर्जा कलाकार की सहज प्रकृति होती है। कृति की रचना और प्रक्रिया के बीच मन में अंर्तद्वंद्व चला करता है। अंर्तद्वंद्व जितना प्रबल होगा, कलाकृति उतनी ही उत्कृष्ट होगी।

डॉ जयश्री के संशोधन के अनुसार, ''साहित्य ने जीवन से प्रेरणा ग्रहण की है। जीवन का विकास मनोविकारों पर आधारित है और मनोविकार का

आधार मनोविज्ञान है। मनोविज्ञान की स्थिति जीवन की अनेकानेक अभिव्यक्तियों में है। अतः मनोविज्ञान और साहित्य में साधन और साध्य का संबंध है। जिसे हम जीवन कहते है वह अधिकांश रुप में हमारे मनोजगत की सूक्ष्मता की वस्तु है।'' [२]

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य का फ्रायड, जुंग, के मतानुसार विचार किया जाए तो दीप्ति के साहित्य में हमें अनेक मनोवैज्ञानिक पहलू मिलते है जैसे मुख्य रुप से मनुष्य की सर्वव्यापक मूल वृत्तियाँ अहम्, काम, भय आदि। दीप्ति के साहित्य में दमन, आत्मपीड़न, परपीड़न, मोह, स्वप्न, लिबिडो (काम) जो मनोवृत्तियाँ फ्रायड ने विश्लेषित की है उनका भी साक्षात्कार होता है । अतः दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य का मनोविज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन होना आवश्यक है इसीलिए मनोविज्ञान का स्वरुप और परिभाषा भी जान लेना अत्यंत आवश्यक है।

२.१.२ मनोविज्ञान का स्वरुप तथा परिभाषा

मनोविज्ञान का स्वरुप, मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अध्ययन करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि १५ वी शताब्दी में मानवतावाद का दौर आरंभ हुआ जिसमें मानव के व्यक्तिगत रुप एवं व्यक्तिगत अधिकारों पर बल दिया गया। मनोविज्ञान के संबंध में १६ वी व १७ वी शताब्दी में स्पिनोजा तथा लॉक जैसे महान दार्शनिकों ने अपने मौलिक विचार व्यक्त किये।

''**जॉन लॉक** ने कहा कि जन्म के समय बालक का मन एक कोरी पटिया के समान होता है। इस पटिया पर अनुभवों का लेख लिखा जाता है। उनके अनुसार मन की संपूर्ण सामग्री अनुभवों की ही देन है।''[३]

आज हम देखते है मनोविज्ञान का क्षेत्र सीमित न रहकर बड़ा ही विस्तृत हो गया है। मनोविज्ञान को वैज्ञानिक रुप देने का श्रेय फ्रायड को

जाता है। १८७९ ई में वुंट ने लिप जिंग में एक मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की। उन्नीसवी शताब्दी में विलियम जेम्स महोदय ने मनोविज्ञान मे क्षेत्र में बड़ा ही सराहनीय कार्य किया और वॉटसन, मैग्डूगल, कोहलर, कोफका, फ्रायड, युंग, एडलर ने मनोविज्ञान के विकास क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में मनोविज्ञान को दर्शन शास्त्र का ही अंग माना जाता था परंतु वर्तमान काल में मनोविज्ञान को वैज्ञानिक रुप मिला।

मनोविज्ञान की परिभाषा

सोलहवी शताब्दी तक मनोविज्ञान 'आत्मा का ज्ञान' (Science of soul) माना जाता था। वर्तमान शताब्दी में श्री चार्ल्स ई स्किनर के अनुसार, ''मनोविज्ञान जीवन की विविध परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रतिक्रियायों अथवा व्यवहार से तात्पर्य प्राणी की सभी प्रकार की प्रतिक्रियाओं, समायोजन, कार्य व्यापारों तथा अनुभवों से है।''[४]

जेम्स ड्रेवर के अनुसार ''मनोविज्ञान वह शुद्ध विज्ञान है जो मानव के उस व्यवहार का अध्ययन करता है जो व्यवहार उसके अन्तर्जगत के मनोभावों का और विचारों की अभिव्यक्ती करता है जिसे हम मानसिक जगत कहते है।'' [५]

फ्रायड मनोविज्ञान में मानव के समस्त कार्य व्यापारों में काम भावना का विशेष महत्व है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के समस्त कार्य व्यापार व्यवहार एवं विचार कामभावना से प्रभावित होते है। उनके अनुसार जीवन के समस्त कार्य काम भावना या लिबिडो के द्वारा ही प्रतिपादित होते है। लिबिडो के संदर्भ में फ्रायड 'इडिपस ग्रंथि' और दूसरी 'इलेक्ट्रा ग्रंथि' का उल्लेख किया है। बालक का माँ से प्रेम और पिता से घृणा ईडिपस ग्रंथि की मूल

वस्तु है। इसके विपरित बालिका में माँ से घृणा और पिता से प्यार 'इलेक्ट्रा ग्रंथि' की मुल वस्तु है।

फ्रायड के अनुसार जीवन शक्ति अथवा 'इरास' के अंतर्गत उन समस्त कार्यव्यापारों एवं शक्तियों को माना है जो सुखद और आनंद प्रद है। जिन शक्तियों के द्वारा प्राण शक्ति विकसित और सबल होती है वे समस्त शक्तियाँ प्राणशक्ती अथवा जीवनशक्ती कही गयी है।

थैन्टास मृत्युवृत्ति में व्यक्ति विद्रोही, अपराधी तथा निराश होकर आत्महत्या तक करने पर उतारू हो जाता है । फ्रायड ने मन के चेतन, अचेतन तथा अवचेतन नैतिक मन (super ego) ये तीन भेद किए ।

एडलर - एडलर ने व्यक्ति के उत्थान एवं पतन में मन की हीन भावना को महत्वपूर्ण माना है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को सर्वोत्तम प्रदर्शित करना चाहता है। व्यक्ति की स्वयं को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शित करने की भावना उसकी हीन भावना की परिचायक है।

जुंग - जुंग के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपना प्रमुख स्थान रखते है। फ्रायड द्वारा वर्णित अचेतन को जुंग ने दो विभागों में विभाजित किया । प्रथम वैयक्तिक अचेतन तथा दूसरा समस्त अचेतन। जुंग का मनोवैज्ञानिक सिद्धांत विचार, भाव, संवेग तथा अंतदर्शन को मन की शक्ति के रुप में प्रसिध्द है। जुंग ने व्यक्ति के आधार पर व्यक्ति का अंतर्मुखी, बहिर्मुखी एवं उभयमुखी कहा है।

मैग्डूगल :- मैग्डूगल के अनुसार बिना मन अथवा अंतकरण के किसी प्रकार का मानवीय व्यवहार संभव नहीं है, अतः व्यवहार का यथेष्ट अध्ययन करने के लिए मन का अध्ययन आवश्यक है उनके अनुसार मनोविज्ञान मानवीय मन का विज्ञान है उस दशा में जिस दशा में वह यथार्थ में स्थित है और क्रियाशील रहता है।

मुक्तिबोध जैसे चिंतनशील सर्जक ने मनोवैज्ञानिकता के महत्व को खुले मन से स्वीकार किया है। उन्होंने मानव जीवन स्त्रोत की मनोवैज्ञानिक तह' में शीर्षक आलेख में लिखा है कि ''यह सच है कि जीवन की कुछ ऐसी गहरी अनुभुतियाँ होती है जो कभी भी प्रकाश में नहीं आ सकती। उन पर व्यवहारिक जगत की कुछ ऐसी बंदिश और कैद होती है कि उनका प्रगटीकरण सामाजिक अशोभनिता की सीमा को छू जाता है। कई सुंदरतम् अनुभूतियाँ विभिन्न नर - नारियों के मन में सुप्त रह जाती है। इन अनुभूतियों के एकत्रीकरण से सर्वोत्तम विश्व साहित्य तैयार हो सकता है।'' [६]

अंत में कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान यानि मन का विज्ञान मनोविज्ञान का जन्म अन्य सभी विज्ञानों की भाँति हमारे आदिम पूर्वजों की जिज्ञासा से हुआ है । उनके मन में जो प्रश्न स्वयं अपने और विशेष कर अपने व्यवहार को लेकर होंगे, उनसे पहले 'मानस दर्शन' और तदुपरांत मनोविज्ञान का जन्म हुआ। यह कहना उचित है कि 'मनोविज्ञान व्यक्ति के स्वभाव, व्यवहार एवं व्यक्ति की अभिव्यक्ति का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान से निगडीत मनोविश्लषण की पृष्ठभूमि भी जान लेना आवश्यक है क्योंकि दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी पात्रों का अध्ययन करने लिए मनोविश्लेषण क्या है? उसकी पृष्ठभूमि जान लेना आवश्यक है।

२.१.३ मनोविश्लेषण की पृष्ठभूमि

आधुनिक मनोविज्ञान ने मन के सूक्ष्म तर स्तर को जानने का प्रयत्न किया है। आज हम देखते है कि मनोविज्ञान के क्षेत्र में आश्यर्चकारक उन्नति हुई है। मनोविश्लेषण को मनोविज्ञान की एक शाखा कहा गया है जिसमें मनोरोगी की मानस व्याधियों का निवारण करने का प्रयत्न किया जाता है। अतः मनोविश्लेषण एक उपचार विधि है जिसमें मनोरागी के आदतों का, विशेषताओं का, उसकी किया पध्दतियों का, स्वप्नों का अध्ययन किया

जाता है और मनोरोगी को उसके सच्चे स्वरूप का ज्ञान करा कर स्वास्थ लाभ करने का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। आधुनिक मनोविश्लेषणात्मक पध्दति का जनक सिगमंड फ्रायड को कहा जाता है। सिगमंड फ्रायड ने अपने परिक्षणों के आधार पर जो सिध्दांत प्रतिपादित किए जिसमें उन्होंने यह निश्चित किया कि मनुष्य की मानसिक बीमारियों की चिकित्सा किसी बाहय उपकरण के द्वारा नहीं की जा सकती। इसका वास्तविक उपचार रोगी की मनःस्थिति को समझने के पश्चात ही हो सकता है।

फ्रायड के अनुसार हमारा मन समुद्र में चलते हुए बर्फ के पहाड़ के समान है। उसके उपर का भाग हम देख और जान सकते है, पर नीचे के भाग का हमें कोई ज्ञान नहीं रहता। पहले ऊपर के भाग को उसने चेतन मन कहा है जो व्यक्ति का हिताहित सोचता है। हमारे सामान्य मन पर चेतन मन का शासन रहता है। दूसरा भाग अचेतन मन है जो चेतन मन की इच्छाओं का विरोध करता है। और तीसरा नैतिक मन जो सभ्यता, संस्कृति और नैतिकता का संरक्षक है।

साधारणतः मनुष्य में विकृतियों का बीज बाल्यावस्था में ही पड़ जाता है। जब व्यक्ति के जीवन की रूकावट, सीमाएँ, व्यक्ति की तीव्र इच्छाएँ, भावनाओं का दमन होता है, वह तनाव महसूस करता है। अपनी आवश्यकताओं, आवेगों और कामनाओं को पूरा करने की चेष्टा में हरेक व्यक्ति को अनेक बार बाधाओं, असफलाताओं और नैराश्य का सामना करना पड़ता है। यहीं तनाव, नैराश्य, कुंठा की अवस्था पैदा करती है। कुठा के कारण उसमें वैमनस्य और क्रोध पैदा होता है। विनाशात्मक और आक्रमण प्रेरणाओं को बल मिलता है और संभव है व्यक्ति अपराधी और समाज विरोधी व्यवहार करने पर उतर आए। कभी कभी कुंठाग्रस्त व्यक्ति पीछे हट जाता है। मनोविश्लेषण में मनोरोगी के मन की सारी अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है।

डॉ. हंसराज भाटिया संशोधन के अनुसार, ''मनोविश्लेषण मनोविज्ञान के अध्ययन की एक महत्वपूर्ण पध्दति है, जो अचेतन मन की गुप्त दमित इच्छाओं को प्रकाश में ले आती है। मनोविश्लेषण का काम है, अचेतन के इर्द गिर्द दमन द्वारा खड़ी की गई दीवारों को गिरा देना और उसके अंदर की सामग्री को चेतन में ले आना। मनोविश्लेषण का लक्ष्य यह है कि मनोरोगी की दमित इच्छाओं, अनुभवों और प्रयत्नों की ओर व्यक्ति का ध्यान आकर्षित हो।''[७] अतः मन को सबल बनाना जिससे मन सभी प्रकार के दबावों को सहन कर सके और उनमें समन्वय स्थापित कर सके। यहीं मनोविश्लेषण पध्दति का ध्येय कहा जा सकता है। मनोविश्लेषण के क्षेत्र में फ्रायड के साथ साथ एडलर तथा युंग ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। एडलर के मतानुसार मनुष्य में कामवासना का रुप इतना प्रबल नहीं होता जितना कि आत्म प्रकाशन का भार ! व्यक्ति किसी भी रूप में अपने को हीन नहीं समझना चाहता। इस भावना को हम 'अहं' भाव के रूप में समझते है। '' प्रत्येक व्यक्ति में उसका अपना एक व्यक्तित्व होता है उसके व्यक्तित्व मे अन्य व्यक्तियों से कुछ विशेषता आवश्य रहती है। अपने इस भाव को प्रकाशित करने की भावना रखता है परंतु बाहय वातावरण को देखते हुए चेतन मन उसके बीच में बाधा उपस्थित करता है । इस भाव के दब जाने पर व्यक्ति में मानसिक रोगों का विकास होता है ।''[८]

युंग ने यह निश्चित किया कि व्यक्ति की सबसे प्रबल वासना समाज में रहने की है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में अपना स्थान प्राप्त किए बिना उसे शांति नहीं मिलती। इसप्रकार हम देखते है कि मनोविश्लेषण तथा मनोविज्ञान का उद्‌देश्य विश्वकल्याणी है जो व्यक्ति की मानसिक शक्तियों जैसे चेतना स्मृति, कल्पना आदि का वैज्ञानिक परीक्षण कर के उनका समुचित विकास करता है।

फ्रायड ने मनोविश्लेषण में विभिन्न मानसिक रचनाओं का परिचय दिया है जैसे-

- **दमन** - यानि मन की भावनाओं पर प्रतिबंध या अंकुश के द्वारा नियंत्रण करने की क्रिया।
- **स्थानांतरण** - जिसमें व्यक्ति लौकिक प्रेम का स्थानांतरण अलौकिक प्रेम में कर के समाज सम्मत कार्य करता है।
- **तादात्मीकरण** - जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आचरण तथा विचारों को अपने श्रध्देय और प्रिय व्यक्ति के समान बनाना चाहता है।
- **औचित्यस्थापन** - किसी कारण की वास्तविक कारण को छिपा लेना और उसके स्थान पर अन्य युक्तियाँ प्रस्तुत करना है ।
- **आरोपन** - अपने आंतरिक दोषों, हीनताओं और इच्छाओं को दूसरों में देखकर व्यक्ति अपनी इच्छा दूसरे पर आरोपित करता है। जैसे दूसरों को घमंडी, स्वार्थी, नीच कहता है।
- **वाग्वैदग्ध्य** - इसमें मनुष्य मन के क्रोध को सुसभ्य एवं सुसंस्कृत भाषा में व्यंग के द्वारा व्यक्त करता है।
- **परपीड़न** - प्रेमपात्र को दुखी कर के स्वयं को सुखी अनुभव करना ही परपीड़न है।
- **आत्मपीड़न** - इसमें प्रेमपात्र स्वयं को दुखी कर के सुख का अनुभव करता है
- **स्वप्न :-** स्वप्न के माध्यम से व्यक्ति अपनी दमित भावनाओं को व्यक्त करके मानसिक स्वास्थ लाभ करता है। फ्रायड स्वप्न को इच्छापूर्ति एवं अचेतन मन के लिए विचारों से प्रभावित मानता है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए उपर वर्णित सभी मानसिक रचनाओं के साथ साथ मानव जीवन में महान

मोड़ उपस्थित करने वाली मनुष्य की मूल वृत्तियाँ जैसे अहम्, काम, भय इन विषयों का आधार बनाया गया है। जिससे उनके साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन परिपूर्ण हो सकता है इसकी मुझे आशा है ।

२.२ दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों में नारी का मनोविज्ञान

मनोविज्ञान तथा मनोविश्लेषण के बारे में अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है कि दीप्ति खंडेलवाल जो अपनी शारीरिक कमजोरी के कारण ज्यादा पढ़ लिख नहीं पायी, परंतु अपने लेखन में उनका मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण एक आश्चर्यकारक बात है। अपनी कहानियों में अनेक बार उन्होंने चेतना के स्तरों का संदर्भ दिया है। नारी जीवन की त्रासदी का वर्णन करते हुए उनके लेखन में अनायास ही अनेक मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषणात्मक पहलुओं का समावेश हुआ है। नारी के संत्रास, नैराश्य, तनाव, कुंठा के अनेकानेक कारण उनकी कहानियों से ज्ञात होते है। उनके साहित्य में निम्नवर्ग, मध्यवर्ग तथा उच्चवर्ग सभी स्तरों की नारी की मनोभावना का दर्शन पाठक को होता है। उनके संपूर्ण साहित्य के पात्र विविध मनोग्रंथियों का रहस्य खोलते है।

डॉ. सुजाता के अनुसार '' मनोविश्लेषण के अनुसार अचेतन, दमन, इड, इगो तथा सुपरइगो के असामंजस्य, असंतुलन आदि व्यक्ति के असामान्य वर्तन के मूल में होते है। मानसिक अस्वस्थता बौध्दिक दुर्बलता और कुंठाएँ ही असामान्यता नहीं लाती, अपितु शारीरिक रुग्णता भी वर्तन को असामान्य बना देती है।'' [९]

दीप्ति खंडेलवाल के 'सलीब पर' कहानीसंग्रह की कहानी 'आत्मरचना' में खुद के बारेमें जो लिखा है इस बात का उदाहरण है। उनकी अनेक कहानियों मे स्त्री की शारीरिक रुग्णता उसके असामान्य वर्तन को वर्णित करती है। दीप्ति खंडेलवाल के संपूर्ण साहित्य में चित्रित नारी पात्रों के मनो-

विश्लेषणात्मक अध्ययन में साधारणतः सभी आधार और सिद्धांत लागू होते है। अतः इसका विस्तार से अध्ययन इस प्रकार है।

दीप्ति खंडेलवाल ने लगभग ७ कहानीसंग्रह लिखे जिनमें करीब ८५ से ९० कहानियाँ है। इन कहानियों के विषय ज्यादातर नारी समस्यापर ही वर्णित है । दीप्ति जी की कहानियाँ नारी की मूर्त ट्रेजडी के रूप में हमारे सामने आती है। नारी के दर्द से दीप्ति जी का तादाम्य इतना गहरा लगता है कि पाठक को यह प्रश्न पड़ जाता है इनमें वर्णित नायिकाएँ कही खुद दीप्ति ही नहीं? खुद दीप्ति जी का यहा मानना है कि कहानी में चेतना का कोई संघर्ष अनिवार्य है । दीप्ति की कहानियाँ नारी मन की व्यथा को बड़ी मार्मिकता से व्यक्त करती है। नारी मन की अव्यक्त दबी घुटी पिपासा को वाणी देने का प्रयास दीप्ति ने अपने साहित्य के माध्यम से किया है । दीप्ति के कहानी साहित्य का मनोविज्ञान दृष्टि से अध्ययन करने पर मनोविज्ञान के विविध पहलु जैसे, काम दमन का परिणाम, महत्वाकांक्षा, परपीड़न, मोह, नैराश्य, कुंठा, पलायन तथा मनुष्य की मूल वृत्तियाँ अहम्, काम, भय इनका साक्षात्कार होता है। अत दीप्ति जी के कहानियों का अध्ययन करने के लिए मैने कहानियों की नायिका के मनोभावों को इनके अंतर्गत विभाजित करने का प्रयास किया है तथा उनका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है। उसी प्रकार दीप्ति खंडेलवाल की कहानी विधा का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हुए यह जान लेना आवश्यक है कहानी साहित्य में सर्वप्रथम मनोविज्ञान का समावेश कैसे हुआ? कहानी का जन्म उसी समय हुआ जब मानव ने बोलना सीखा था। मानव समाज की उप्पत्ति के साथ ही कहानी आरंभ हुई। जीवन के प्रत्येक अंश में कहानी छिपी है। मनुष्य के मस्तिष्क की गुप्त से गुप्त बातें, उसकी उमंग उसकी अभिलाषा तथा रहस्य, ये सभी कहानियो के विषय है।

प्रेमचंद जी जो हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार माने जाते है उन्होंने मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित कहानी को श्रेष्ठ माना है। उनके अनुसार हमारी शंकाओं और चिंताओं की खोज ही कहानी है। प्रेमचंदजी ने ही अपनी कहानियों मे मनुष्य का व्यवहार क्या है? कैसा है? इसकी चर्चा की। तथा जैनेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में मानसिक कुंठाए और स्वप्न मनोविज्ञान को समाविष्ट किया। इलाचंद्र जोशी जी की कहानियाँ तो केस हिस्ट्री ही लगती है। समकालीन नारी मनोवैज्ञानिक कहानियाँ मन्नू भंडारी, ममता कालिया, ऊषा प्रियवंदा, दीप्ति खंडेलवाल जैसे महान लेखिकाओं ने लिखी जिसमें यौन अतृप्ति, काम दमन, माता पिता की परस्पर यौन संबंधो की कटुता और उत्तरदायित्व हीनता से बच्चों में कुंठा ग्रंथि, अहं, काम तथा भय का दर्शन होता है।

डॉ. उपाध्याय ने फ्रायड के सिंद्धांत के विषय में कहा है कि- फ्रायड के अनुसार-''आज का सारा मानव समुदाय न्यूरोटिक मनोविकृत बना है। वह विशेषत: कामभावना संबंधी दमन का शिकार है। इसलिए उसके अंदर बहुत सी ग्रंथियाँ बन गई है। जीवन में जो कुछ क्रिया-व्यापार करता है, वह उन ग्रंथियों से मुक्त होने का प्रयत्न मात्र है।''[१०]

बदलते समय के साथ खुद को बदल लेने पर समय ने मनुष्य को मजबूर कर दिया है। पुराने मूल्य, पुराने रीति रीवाजों को पीछे छोड़कर मनुष्य नई नीतियाँ नए मूल्य अपना रहा है। परंतु इस कार्य में जाने अनजाने मनुष्य कहीं कुछ गलती कर रहा है, किसी को चोट पहुँचा रहा है, नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। यह मनुष्य समझ नहीं रहा है। स्त्रियों ने भी बदलते समय के साथ खुद में बहुत सारे बदलाव लाए अपने आप को स्वावलंबी बनाया। आज की स्त्री हम देखते है कि अपने साथ संपूर्ण परिवार को भी सक्षमता से चला सकती है। स्त्री आत्मनिर्भर हो गई है। लेकिन

अच्छाइयों के साथ बुराइयों का आना भी स्वाभाविक है। स्त्री में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। पवित्रता का खंडन हो रहा है। स्त्री को सबकुछ होने के बावजूद कही कुछ कमी महसूस होती है। इस सबसे अनेक विकृतियाँ सामने आती है। स्त्री पुरुष समभाव से स्त्री मे अहं भाव ज्यादा पनपता दिखाई देता है जिससे संपूर्ण परिवारिक जीवन ही नष्ट भ्रष्ट होता दिखाई देता है। पाश्चात्य संस्कृति को आचरण में लाने के प्रयास में आज की स्त्री अपना खुद का अस्तित्व, खुद का चैन, शांति ये सब खोने की ओर चल पड़ी है ऐसा लगता है। दीप्ति के साहित्य में हमें नारी की इसी मनोभावों का आधुनिक बोध मिलता है। कामकाजी बनने पर भी उसे दोहरी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, नैतिकता को खोकर उसे अपने जीवन का अभाव खलता रहता है पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन सबका मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन इस अध्याय में करने का प्रयास किया गया है।

आधुनिक मनोविज्ञान में सिग्मण्ड फ्रायड को मौलिक विचारक कहा गया है। फ्रायड के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के मन में काम संबंधी भावनाएँ प्रमुख होती है। भय की इच्छा इतनी प्रबल नहीं होती जितनी कामेच्छा तीव्र होती है। परंतु समाज में वह कामेच्छा को प्रगट करने मे संकोच महसूस करता है और कामेच्छा का दमन करता है परंतु काम भाव नष्ट नहीं होते वह अचेतन मन में चले जाते है और वहाँ सक्रिय रहते है। अगर दमित भाव समाज स्वीकृत रूप धारण कर के प्रकट हो जाते है तब व्यक्ति कलाकार, कवि, साहित्यकार, मूर्तिकार, नेता बन जाता है। इन भावों का समुचित विकास न होने पर व्यक्ति मानसिक रोगी हो जाता है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य के पात्र मनोग्रंथियों का रहस्य खोलते है। **डॉ. पद्मा चामले** के

संशोधन के अनुसार, ''जीवन में आया कोई व्यक्ति, स्थिति, घटना, अनुभूति स्मृति संयोगवश मनोग्रंथि में परिवर्तित होती है। ''[११]

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह निर्देशित करता है की उनका मनावैज्ञानिक अभ्यास उनके साहित्य में बहुत गहरी छाप डाले हुआ है। जैसे वे कोई श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक ही हो। दीप्ति जी की कहानियाँ पढने पर लगता है उन्होंने अपने जीवन की त्रासदी को, अपने अनुभवों को अपनी रचनाओं में समाविष्ट किया है। अपने जीवन के अनुभवों को लेखन का कथ्यबिंदु बनाया है। अत: उनके साहित्य की नारी की मनोवृत्तियों का अध्ययन अहम्, काम, भय इन तीन विशेष जीवन मूल्यों के आधार पर किया गया है।

२.२.१ अहम् - हिंदी साहित्य कोश के अनुसार ''दार्शनिक दृष्टिकोण से 'अहम्' शब्द का अर्थ व्यावहारिक, अविद्या से सीमित, अनात्म से एकीकृत आत्मा है जो मैं और मेरे की भावना उत्पन्न करती है। यह अर्थ साहित्य में वेदान्तदर्शन से लिया गया है।'' [१२]

फ्रायड के मनोविज्ञान में कामवृत्ति, संघर्ष, दमन और अवरोध अधिक महत्वपूर्ण मायने रखता है। फ्रायड के अनुसार हर एक व्यक्ति में संघर्ष आरंभ में मन की दो सतहों में होता है। ऊपरी अथवा बाह्य सतह जो इस संपर्क में नहीं आती है। पहली सतह को 'अहम्' की संज्ञा दी गई है और दूसरी सतह को 'इड' की। अहम् के चेतन और अचेतन दोनों पक्ष है। हम कह सकते है कि 'अहम्' मनुष्य के बौध्दिक और व्यावहारिक पक्ष का ही नाम है।

डॉ. सौ मेहरदत्ता पाथरीकर के अनुसार अहम् की आधुनिक व्याख्या यह हो सकती है, ''अहम् यह मनुष्य की वह प्रवृत्ति है जो मनुष्य स्वयं को दूसरे लोगों पर हावी रखना चाहता है सब पर अपना प्रत्यक्ष अधिकार

देखना चाहता है। इससे उसे तृष्टि मिलती है और इस तृष्टि के लिए वह अपने चरित्र को लोगों की दृष्टि में अधिकाधिक उदात्त बनाए रखता है चाहे इसके लिए उसे कितने भी कष्ट क्यों न उठ़ाने पड़े।''[१३] अहम् की प्रवृत्ति मनुष्य की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है। अहम् भाव तब तक बुरा नहीं होता जब तक वह स्वाभिमान के स्तर पर होता है। लेकिन उससे अधिक अहंम घातक सिद्ध होता है । और वह मनुष्य को किसी भी हद तक ले जा सकता है।

ईगो, स्व, अहम् के पर्यायवाची शब्द है। फ्रायड मनोविश्लेषण में कहा गया है कि ईगो 'व्यक्तित्व की वह संस्था है जो तर्क बुध्दि पर आधारित है । इदम् का वह रुप जो यथार्यता से प्रभावित होकर विकसित होता है 'अहम्' है । अहम् की क्रियायें मुख्यतः चेतन स्तर पर पारित होती है । किन्तु अचेतन स्तर पर भी चलती रहती है । ईगो की सबलता व्यक्ति की स्वस्थता का लक्षण कहा गया है । लेकिन अगर ईगो दुर्बल हो जाता है तो चिंता उत्पन्न होती है।

डॉ जयश्री के संशोधन नुसार '' आज की परिस्थिति में परिवेशगत दबावों ने 'व्यक्ति' के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया है। व्यक्ति को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपने आत्मरक्षण का कार्य भी बड़ा कठीन हो गया है अन्तर्बाह्य विरोधों की यह जिंदगी है। मनुष्य अपने अहम् को मार कर ही जी सकता है अतः व्यक्ति अपने, अहम् की अवमानना से कुंठीत होता है।[१४] दीप्ति खंडेलवाल की अनेक कहानियाँ 'अहम्' को चित्रित करती है। कभी नारी का अहम् पुरुष के अहम् से टकराता है तो कभी पुरुष का अहम् नारी पर वर्चस्व प्राप्त करता है। इसका सविस्तर विवेचन किया गया है।

२.२.१.१ क्षितीज - कड़वे सच इस कहानीसंग्रह में से इस कहानी में नायक और नायिका दोनों 'अहम्' भाव का शिकार है। शारीरिक रूप से पास होकर भी इस 'अहम्' के कारण दोनों मानसिक रूप से एक दूसरे से बहुत दूर चले जाते है। शादी के कुछ सालों बाद ही लव्ह मॅरेज करने का पछतावा नायिका महसूस करती है।

नायिका ने मनोविज्ञान मे एम.ए. किया है। मन के हर कोने को पढ़ पाने का विश्वास उसमें है। वह तनाव से बचने के लिए रिलेक्सेशन के हर नुस्खे को आजमाती है लेकिन उसका तनाव दूर नहीं हो पाता। वह सोचती है कि यदि गांठ इतनी उलझ गई है कि खुल नहीं सकती तो वह उसे काट देगी। खतरे की निशानी है कि अहम् सर्वनाश की हद तक जा सकता है। नायिका मनोविज्ञान पढ़ाते समय विद्यार्थियों को समझा रही थी कि पुरुष में अहम् होता है । तब सुधा शर्मा के पूछे गए इस प्रश्न पर चिढ़ती है, ''क्या नारी में अहम् नहीं होता?''[१५] नायिका अहम् भाव नायक में देखती है लेकिन 'अहम्' भाव खुद में भी है यह जानकर चिढजाती है। यह कड़वा सच मानने को उसका मन तैयार नहीं होता। नायिका हिस्टरीकल होती है जब रवि उसकी भावनाएँ समझ नहीं पाते, पहले की तरह नायिका पर ध्यान नहीं केंद्रित करते।

कहानी का नायक 'रवि' अंग्रेजी मे पीएच. डी है। उसके मन में अहम् भाव इतना ज्यादा है कि वह अपनी पत्नी की भावनाओं की जरा भी कद्र नहीं करता। नायिका मनोविज्ञान में पीएच.डी कम्पलीट करने में पति की मदद माँगती है तो वह उसे टालते हुए कहते है 'दैट्स वेरी गुड, डार्लिंग। लेकिन इस वक्त मनोविज्ञान नहीं, एक कप कॉफी चलेंगी।''[१६] नायिका का अहम् आहत होता रहता है। दोनों 'अहम्' के कारण एक दूसरे को संशय की नजर से देखते है। एक दूसरे से कभी संतुष्ट नही हो पाते। शरीर की प्यास

बुझाते है लेकिन मन से एक दूसरे को धरती आकाश की तरह पाते है। क्षितिज के भ्रम को पहचानते है फिर भी उसे पाने के लिए दौड़ते है।

इस कहानीं से साफ होता है कि दीप्ति खंडेलवाल पति पत्नी के बीच के 'अहम्' को रेखांकित करने में सफल हुई है।

मनोविज्ञान की आरोपन, परपीड़न यें मानसिक क्रियाएँ भी इस कहानी से व्यक्त होती है। जैसे आरोपन में रवि नायिका से कहते है, ''आज बहुत खुश हो डार्लिंग, क्या अजीत आया था?''[१७] नायिका भी रवि से कहती है ''तुम भी तो बहुत खुश हो, क्या मिस चौधरी को कार लिफ्ट देने का अवसर मिल गया था?''[१८] परपीड़न के प्रयास में आत्मपीड़न का शिकार हो जाते है ।

२.२.१.२ एक पारो पुरवैया - इस कहानी की नायिका सुधा अपने पति के गणिती स्वभाव उसके 'अहम्' के कारण त्रस्त है। अपने पति होने का अधिकार वे सुधा पर हमेशा जताते रहते है । हर बात पर सुधा को डाँटते है । सुधा की छोटी सी गलती भी सह नहीं सकते है। सुधा अपनी पति की बातों से आहत होती रहती है। सुधा अच्छा गाती है लेकिन उसके पति को लगता है उसके भजन वजन उसका मूड ऑफ कर देते है । सुधा के पति, पति पुरुष का हक माँगते नहीं, वसूल करते है और बदले में सुधा को साड़ियाँ भी लाते है। अपने पति सुरेश के इस कैलक्युलेटिव स्वभाव के कारण सुधा की मानसिकता बिघड़ती रहती है वह नैरेटर से कहती है '' और मैं अर्पित होकर भी समर्पित नहीं हो पाती..... फिर एक पागल प्यास घुमड़ती है मेरे मन में और मैं पागल होकर रह जाती हूँ।''[१९] मनोविज्ञानिक दृष्टि से यहाँ पर सुधा के मनोभावों का अपने पति के 'अहम्' रूपी कैलक्युलेटिव स्वभाव के कारण दमन होता रहता है। उसका मन अपने पहले प्रेमी अमित तथा दूर के देवर विजु में भटकता रहता हैं। अपने मन की प्यास बूझाने के लिए वह विजु का

सहारा लेती है। सुरेश कभी सुधा को मारते तो विजु उन चोटों को अपनी भावनाओं से सेंकने लगता। अपने पति के स्वभाव से कुंठित सुधा कब विजु से एकात्म होती जाती है उसे पता नही चलता। अच्छी पढ़ी लिखी होने के बावजूद, एक लेक्चरर होने के बावजूद भी सुधा की मानसिक अस्वस्थता बढ़ती चली जाती है उसे दौरे पड़ने लगते है। वह छटपटाने लगती, ऐंठने लगती, अचेत हो जाती है। पति के 'अहम्' से आहत सुधा की मानसिकता का वर्णन दीप्ति जी ने बड़ी मार्मिकता से किया है।

२.२.१.३ ये भी कोई गीत है - इसमें नैरेटर एक कवयित्री है जो 'अहम्' का शिकार है । उसका राजेश के साथ प्रेमविवाह होता है । उसे राजेश से प्यार है। राजेश भी उसकी कोई बात नहीं टालते। सारे ऐषोआराम उसके कदमों में लाकर रख देते है। राजेश की माँ व्यंग में राजेश को 'जोरू का गुलाम' कहती है और नैरेटर को 'मायाविनी'! राजेश के ममत्व के अधिकार से उसे गर्व है लेकिन उसका अहम् तब आहत होता है जब राजेश तुलसी के ब्याह के लिए माँ को पाँच सौ रुपए नैरेटर को बिना कुछ बताए मनिऑर्डर कर देते है। उसे लगता है '' इन्ही राजेश के लिए मैंने अपनी लेक्चररशिप छोड़ी अपने अस्तित्व को इनके सांचे में ढाल दिया और ये मांजी के सामने सुर्ख़ बनने के लिए मुझे अपमानित करते है।''[२०]

दूसरी तरफ नैरटेर की मौसी दीपाली के अहम् का शिकार उसके पति इंद्रनाथ है। दीपाली सुंदर है, डॉक्टर है अपना वर उसने खुद चुना है। इंद्रनाथ प्रोफेसर है। लेकिन विवाह के बाद दीपाली को अपने डॉक्टर होने का तथा अपने ज्यादा कमाने का घमंड होता है। वह अपने शादी की सालगिराह के लिए भी अपने पति को ज्यादा समय देना नहीं चाहती। उसके इस अहम् से त्रस्त इंद्रनाथ दमन का शिकार होते रहते है। प्लेट पर प्याला इतने जोर से पटकते है कि प्याला और प्लेट दोनों टूट जाते है। इंद्रनाथ आवेश में कहते है

''तुम मुझे बेवकुफ कह रही हो, दीपाली! इसलिए कि आज तुम हजारों कमाने वाली एक प्रसिद्ध सर्जन हो और मैं मैं सिर्फ पांच सौ कमानेवाला प्रोफेसर''[२१] स्पष्ट है कि दीपाली के 'अहम्' से इंद्रनाथ कितने आहत है। दीपाली खुद को एक पूर्ण नारी समझती है। अपनी संपूर्णता तो अखंड रखना चाहती है। बच्चे नहीं चाहती। इंद्रनाथ के इच्छाओं का दमन होता रहता है। वे शराब पीने लगते है। रात रातभर पीते रहते है। बाद में इंद्रनाथ अपनी एकाकी व्यथा का अंत आत्महत्या कर के करते है। उनमें हीनताग्रंथि उत्पन्न होती है। 'अहम्' के कारण मनुष्य किस तरह अपना और दूसरे का नुकसान करता है, यह स्पष्ट होता है।

२.२.१.४ संधि पत्र - 'वह तीसरा' कहानीसंग्रह में लिखित 'संधि पत्र' इस कहानी में दीप्ति ने बताया है कि रुढ़ी - परंपरा, नैतिकता के मूल्यों को न मानने वाली आधुनिक पीढी में भी दांपत्य जीवन मे 'अहम्' के कारण किसतरह द्वंन्द्व होते रहते है, एक दूसरे के बीच अहम् की टकराहट होती है। सोमा और रोहित स्वतंत्र विचारों वाले आधुनिक पति पत्नी है। परंतु दोनों में 'अहम्' की चुनौती बराबर की है। रोहित ने सोमा को उसकी पूरी आजादी के साथ स्वीकार किया था फिर भी उसे सोमा का ज्यादा सज धजकर ऑफिस जाना अच्छा नहीं लगता था। 'अहम्' के कारण उसके मन में सोमा के प्रति संशय की भावना पैदा हो जाती है। वह अपना मानसिक स्वास्थ्य खो बैठता है। ऑफिस में काम में बहुत सी गलतियाँ कर देता है।

हमारे पुरुषप्रधान संस्कृति मे पुरुष चाहे जितना स्वैराचार करे उसे कोई नहीं टोकता परंतु स्त्री अगर थोडासा मेकप भी ज्यादा करें तो पुरुष उसपर संशय की निगाह से देखता है यह एक कटु सत्य है। रोहित सोमा को भला बुरा कहता है सोमा के 'अहम्' को चोट पहुचाती है। सोमा घर छोड़कर चली जाती है। रोहित आवेश में आकर सोमा पर आरोपन करता है, ''चली

गई, अच्छा हुआ। मुझे उसकी परवाह नहीं है उसमें ईगो भी बहुत था क्या समझती है अपने आपको कि रोहित उसके बिना जी नहीं सकता? रोहित किसी भी सोमा के बिना जी सकता है ..... रोज ऐसी सोमाओं को खरीद सकता है। ''[२२] रोहित अपना मनःस्वास्थ्य खो बैठता है । लेखिका ने दपति में पनपाते 'अहम्' को बखूबी चित्रित किया है।

२.२.१.५ प्रेत - इस कहानी में नीलिमा के सास के अत्याचार के रुप में स्त्री का स्त्री के प्रति ईर्ष्या का मनोभाव दीप्ति जी ने चित्रित किया है। नीलिमा की सास का प्रभाव उसके पति अविनाश पर इतना है कि अविनाश अपने द्वारा या अपनी पत्नी के द्वारा माँ को जरा सी भी चोट देना पसंद नहीं करता। अविनाश से शादी कर पढ़ी लिखी, सुसंस्कारित नीलिमा जब ससुराल आती है तब घर के उस वातावरण से नीलिमा का दम घुटने लगता है। उसकी सास नीलिमा को हमेशा ताने सुनाया करती थी। अविनाश और नीलिमा एकांत में कुछ क्षण भी नहीं बिता पाते थे। अविनाश नीलिमा के पास भी आता तो सास की आवाज गूँज उठती ''अरे बेशरमों, सारा शरम लिहाज घोलकर पी गये। रात काफी नही हो गयी .... अपने अपने संस्कार की बात होवे है, हमारे संस्कार जैसे थे वैसे हम जिये अब बहू जी जैसे संस्कार बाप के घर से लाई है वैसा कर रही है।''[२३]

नीलिमा के सास ने अविनाश की पढ़ाई के लिए जनम भर की पूरी पूँजि लगा दी थी। लेकिन वे चालीस हजार तो उसकी सास ने लोक दिखावे या अपने अहम् की संतुष्टि के लिए खर्च किये थे। अविनाश इसलिए माँ के प्रति बड़ा कृतज्ञ था। लेकिन नीलिमा को उसकी साँस धोबी की धुली साड़ी पहनने पर भी डाँटती थी। नीलिमा कभी अपनी सास को टेक्लम पाउडर का डिब्बा भी माँगती तो उसकी सास उग्रता से कहती, ''सादा जीवन उच्च विचार! बहुजी सीधी सादी रहा करो। हमें तुम्हारा यें चोटी पाटी करना,

पाउडर लगाना जरा भी नहीं सुहाता। अरे हम कोई रंडी पतुरिया हैं जो सिंगार करे और विधाता का दिया इत्ता रुप तो है तुम्हारे"[२४] विशेषकर अपने पति अविनाश से भी वह कुछ माँग नहीं सकती। अपनी सास के इस बर्ताव से नीलिमा में हीनता ग्रंथि निर्माण होती है। उसे सरदर्द होता रहता है। वह अपनी मानसिक स्वास्थ्य खोती है। अपनी माँ को नीलिमा का प्रत्युत्तर देते देख अविनाश नीलिमा को थप्पड भी देता है। नीलिमा अंदर से टूट जाती है । वह अचेत हो जाती है। उसे दौरे पड़ जाते है।

सास की तानों से, 'अहम्' से आहत नीलिमा अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य खो बैठती है। मनोविज्ञानिक दृष्टि से थैन्टास वृत्ति या मृत्यु वृत्ति नीलिमा के मन में आती है। वह अचेत हो जाती है।

२.२.१.६ एक और सीताः- पारिवारिक झगड़े जिसमें पति पत्नी के झगड़े, सास बहू के झगड़े, एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति तिरस्कार भाव इनका असर बूरा होता है। सास के अहम् का शिकार बनकर किसतरह एक दांपत्य जीवन बिखरकर टूट जाता है, इसका हूबहू वर्णन दीप्ति खंडेलवाल ने इस कहानी में किया है। रविकांत और मधु कॉलेज के समय से एक दूसरे से प्यार करते थे। प्यार का बंधन विवाह के बंधन में बदल जाता है। रविकांत ने मधु से कहा था कि वह अपनी माँ की पूजा करता है और वह मधु से भी यहीं अपेक्षित करता था। लेकिन रविकांत की माँ बेवजह मधु से चिढ़ी रहती थी। वह समजती थी की मधु उन्हे दूध की मक्खी समजती है और अगर फेंक सकती है तो निकालकर फेंक भी दे। पुरूषी अहंकार के कारण रविकांत भी समझता है कि मधु उसकी माँ का अपमान कर रही है। सास के कारण मधु ने एम.ए. करना बीच में ही छोड दिया। वह सदैव सास की सेवा में तत्पर रहता थी लेकिन सास थी कि उसकी हर बात का उल्टा मतलब निकलती थी और बेटे रविकांत को फुसलाती थी। तब मधु मन ही मन घुटने

लगती है। उसका मानसिक स्वास्थ बिगडता रहता है। रविकांत की अनपढ़ अशिक्षित माँ मधु के प्रेगनंट होनेपर भी दाई को पेट दिखाने को कहती है तब मधु के अहम् को चोट पहुँचती है वह कहती है।'', मैं अब जेट एज में रहकर बैलगाड़ी पर घिसटने की यातना नहीं भुगत सकती।"[२५] यह कहकर वह मायके चली जाती है। मधु के आगे रविकांत झुकता नहीं। वह उसे रोकने की कोशिश भी नहीं करता। उसका अहम् जीत जाता है, लेकिन उसका दांपत्य जीवन टूट जाता है।

२.२.१.७ अस्वीकारः- धूप के अहसास इस कहानीसंग्रह के इस कहानी मे लेखिका ने अहम् भाव चित्रण यथायोग्य किया है। इस कहानी में पत्नी का अत्यधिक सुंदर होना अतिसाधारण दिखने वाले पति सोमेश के मन में हीनता ग्रंथि निर्माण करता है उसके अहम् को तब ठेंस पहुँचती है, सुहागरात के दिन जब उसके दोस्त कहते है, ''भाई अपना सोमेश गजब का तकदीर वाला है। क्या गजब की बीबी पायी है। दूसरे ने कहा हा भाई हब्शी गुलाम को सब्ज परी मिल गयी।"[२६] तब सोमेश का सांवला मुख काला पड जाता है और वह उठकर चला जाता है। अपना सुंदर होना माधवी के मन में अपराध भाव निर्माण कर देता है। सोमेश के मनमें हीनता ग्रंथि इतनी तेज हो जाती है कि जब भी माधवी सोमेश को समपर्ण देना चाहती है तो वह पीछे हट जाता और कहता कि वह बहुत सुंदर है और वह उसके लायक नहीं। सोमेश का आहत अहम् का दंश इतना ज्यादा होता है कि माधवी की सुंदरता उसके सामने गौण हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक एडलर के अनुसार सब प्रकार के मानसिक रोगों का मूल कारण व्यक्ति में विद्यमान हीनता ग्रंथि है। प्रत्येक व्यक्ति में किसी ना किसी प्रकार की मानसिक कमी पायी जाती है। जिसे पूरी करने की निरंतर चेष्टा की जाती है। आंगिक हीनता की पूर्ति अपने साधारण रूप से हीनता

ग्रंथि पनपती है। एडलर के सिद्धांत को इसी पृष्ठभूमि के रूप में देखा गया है ''मनुष्य में अंर्तद्वन्द्व उसकी ही कोई न्यूनता या हीनता वातावरणगत अवरोध अथवा इच्छाओं के विघटन से भी उत्पन्न होता है।''[२७] उसकी यह कमी माधवी की सुंदरता की अभ्यर्थना कर पूरी करता रहता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दिखने में साधारण होना भी अपने आप में कूढना ही कहलाता है। यह दमन का भाव उत्तेजन होकर अहम् से टकराता है। सोमेश माधवी को मन से कभी स्विकारता नहीं। शारीरिक रूप से एक होने के बावजूद मानसिक रूप से वे बहूत दूर निकल जाते है। दोनों एक दूसरों की भावना ओं को अस्वीकार करते दिखाई देते है और दांपत्यजीवन तनावपूर्ण बना रहता है।

२.२.१.८ अर्थः- 'नारी मन' कहानी संग्रह में प्रस्तुत इस कहानी में स्त्री के अहम् का सुंदर वर्णन किया गया है। कुमुद वीरेंद्र से प्रेम करती थी । लेकिन जब वह बीमार पड़ जाती है तब वीरेंद्र उसे देखने तक नहीं आता अपने अहम् से आहत कुमुद उसे ठुकरा देती है। मध्यवर्गीय कुमुद के लिए उच्चवर्गीय धनी शेठ बिहारीलाल से रिश्ता आता है। मामा मामी के पालने पोसने का ऋण चुकाने के लिए कुमुद मन के विरूद्ध विवाह करती है। लेकिन सेठ जी के प्यार का अर्थ समझ नहीं पाती। वह सोचती है, ''सेठजी ने कुमुद रानी को सोने का पिंजरा दिया है चुगने को हीरे मोती देंगे.... किन्तु वह रंग और गंध नहीं दे सकेंगे जो कुमुद की प्यास थी पुकार थी कामना थी। उसके मन में तो सपनों का राजकुमार वीरेंद्र ही था।"[२८] अहम् से आहत कुमुद अपने से कई ज्यादा उम्र में बड़े सेठ जी को समर्पित नहीं हो पाती। सेठ जी के मृत्यु के बाद कुमुद को अपने अहम् पर पछतावा होता है कि सारे समय वह मानती रही कि उसके निर्मम स्वार्थी अबुध्दिजीवी सेठ प्रेम जैसे शब्द का कोई अर्थ ही नहीं समझते लेकिन वे सदैव कुमुद सुखी रहे

यहीं चाहते थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि कुमुद अहम् भाव से इतनी ग्रसित है कि वह आत्मकेंद्रीत बन जाती है। सेठ जी अपने जीवन में दखलंदाजी करे यह वह सह नहीं सकती और सेठजी की भावनाओं को नहीं समझती। परपीड़न देने के प्रयास में आत्मपीड़न का शिकार हो जाती है।

२.२.१.९ अनारकलीः- इस कहानी में पुरूष का अहम् नारी के अहम् से किस तरह टकराता है यह स्पष्ट होता है। शिप्रा और सुब्रत दोनों कॉलेज में साथ साथ पढते थे। शिप्रा बडे बाप की एकलौती संतान थी, तो सुब्रत मध्यवर्गीय लेकिन गजब का मेधावी था। वह हमेशा कॉलेज में फस्ट आता था। निर्धनता का अभिशाप झेलता सुब्रत अपनी बुध्दि के कारण कॉलेज में सबके स्नेह का पात्र बना था। 'अनारकली' नाटक में शिप्रा सुव्रत ने अनारकली सलीम की भूमिकाएँ निभाई थी। परंतु वास्तव में गरीबी अमीरी की दीवार उनके प्यार में बाधा डाले हुई थी। दोनों ने भी एक दूसरे को न पा सकने के कारण खुदखुशी करने का प्रयास भी किया लेकिन वह असफल रहा। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्यार में असफल दोनों थैन्टास मनोवृत्ति का शिकार होते है, स्वपीड़न करते है। लेकिन बीस साल बाद फिर से एक दूसरे से ऐसे पेश आते है जैसे एक दूसरे के दुश्मन हो। 'अहम्' के कारण बरसों पुराने अपने प्रेमी की गुंडों से पिटवाने की चाहत शिप्रा के मन में होती है और 'सुब्रत' को भी बीस साल पहले की अपनी प्रेमिका किसी बंदरिया से कम नहीं लगती। स्त्री पुरुष के अहम् के टकराहट का वर्णन दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है।

२.२.१.१० दुल्हन :- इस कहानी में 'सुंदरता' के कारण 'अहम्' का शिकार नैरेटर निरुपमा का अहंकार किसी तरह टूट जाता है यह प्रतीत होता है। अपनी सुंदरता का वर्णन निरुपमा ऐसे करती है, ''देव कहते है मैं सुन्दर हूँ बहुत सुंदर! दर्पण उनके कथन की दाद देता है। सच कहूं तो दर्पण में अपनी मोहक छवि को निहारकर स्वयं पर प्यार आ जाता है। सौंदर्य के मुकुट सी

कुनाल राशि, पलकों की रेशमी चिलमन में आंख्र मिचौली खेलते आयत लोचन, खिले गुलाबों का भ्रम जगा देनेवाले गुलाबी कपोल, चांदनी में घुल जानेवाली स्निग्ध शुभ्र, कान्ति, अजन्ता के किसी मोहक चित्र को सजीव करती सी अंग यष्टि देव कहते हैं मैं वास्तव में निरुपमा हूँ मेरा नाम सार्थक है। "[२९] सचमुच ऐसी स्त्री को अपनी सुंदरता का 'अहम्' होना स्वाभाविक है। शहर आनेपर निरुपमा की मुलाकात उनके धोबी इब्राहीम से होती है। इब्राहीम अपनी पत्नी को दुल्हन कहता है। उसके लिए महँगी से महँगी साड़ी ख्रीदता है। उसकी सलामती चाहता है । यह देख्रकर निरुपमा को इब्राहीम के दुल्हन को देख्रने की उत्सुकता बढ़ जाती है। उसे लगता है इब्राहीम उससे इतना प्यार करता है तो उसकी दुल्हन जरुर चाँद का टुकड़ा होगी लेकिन दुल्हन तो '' बेड़ोल, ढला नारी शरीर, काला स्याह रंग ,सौंदर्य के प्रश्न चिन्ह सी भद्दी नाक पर कटाक्ष करती सी तिरछी आँख्रे, लावण्य की हंसी उड़ाते निचले होठों पर रख्रे बड़े बड़े दाँत ऐसी थी।"[३०] निरुपमा को लगता था कि रुप और प्रेम का चोली दामन का साथ होता है लेकिन यह भ्रम दुल्हन को देख्रते ही टूट गया। क्योंकि बदसुरत होने पर भी इब्राहीम उससे बहुत प्यार करता था। निरुपमा का 'अहम्' टूट जाता है। दुल्हन को देख्रकर निरुपमा को गश आने लगता है। यह सत्य है स्त्री के मनोभावों को वर्णन करने में दीप्ति जी सफल हो गई है ।

२.२.१.११ ये दूरियाँ - आधुनिक समाज में स्त्री पुरुष दोनों को काम पर जाना पड़ता है । उनको अपने बच्चो को देने के लिए समय ही नहीं मिलता । उसपर दोनों के 'अहम्' का असर किसतरह घर के बच्चों पर पड़ता है और किस तरह बच्चे अकेलेपन का शिकार हो जाते है इसका वर्णन दीप्ति ने किया है। अंजु के मम्मी पापा हाय कल्चर्ड सोसायटी से है । लेकिन दांपत्य जीवन हमेशा अनबन, मनमुटाव से भरा है। दोनों एक दूसरे के 'अहम्' को ठेंस

पहुँचाने की कोशिश करते रहते है। उनकी बेटी अंजु का हर समय यह डर रहता है कि उसकी मम्मी उसे पूछेगी, ''तू किसके पास रहेगी? मेरे या पापा के?"[३१] इस डर से मुक्त होने के लिए अंजु सदैव पढ़ाई में मनोरंजन में व्यस्त रहने का प्रयत्न करती है लेकिन अकेलेपन का शिकार हो जाती है। अंजु की मानसिकता ऐसी बन जाती है कि वह राकेश और खुद में अपने पापा मम्मी को देखती है। वह हमेशा उदास रहने लगती है। अंजु में हीनता ग्रंथि का विकास होता है। और वह इतनी बढ़ जाती है कि वह कभी भी खत्म न होने वाले अकेलेपन का शिकार हो जाती है और अपना जीवनसाथी चुनने में अपने मन में संभ्रमावस्था महसूस करती है।

एडलर के अनुसार समुचित विकास के लिए सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण योग्य होना चाहिए। हीनता ग्रंथि का विकास बालक के समुचित विकास को अवरूध्द कर देता है। इस कहानी में दीप्ति जी ने बच्चों की मानसिकता पर माँ पिता के अहम का परिणाम बड़ी मार्मिकता से वर्णित किया है।

२.२.१.१२ तपिश के बाद - इस कहानी में सुमी अपने पति आनंद को पुरुषी अहम् को झेलने के लिए विवश दिखाई देती है। पत्नी से पैसे कमाने की आशा रखनेवाला आनंद कभी भी अपनी पत्नी की मदद नहीं करता। घर में और बँक में काम करते करते सुमी को घड़ी की सुई की तरह भागना पड़ता है इसका पति आनंद को कुछ फरक नहीं पड़ता। वे तो समझते है कि घर के सारे कर्तव्य अकेली सुमी के है। सुमी को बैंक से आने में जरा सी देर हो जाती है तो बहुत गुस्सा हो जाता है। सुमी के मन की अस्वस्थता बढ़ती है। दोनों पति पत्नी में जोर का झगड़ा होता है। लेकिन अपने बेटे टीटू को देखकर दोनों सहम जाते है । आनंद में अहम् की मात्रा इतनी ज्यादा है

कि वह सुमी को यह भी धमकाने में भी पीछे नहीं हटता कि वह एक पल में उसे ठुकरा सकता है ।

आज के जमाने में कामकाजी नारी को दोहरे तनाव का किस तरह शिकार होना पड़ता है यह दीप्ति जी ने इस कहानी में बड़े अच्छे ढंग से वर्णित किया है ।

२.२.१.१३ 'एक अदद औरत - दो पल की छांह कहानी संग्रह के इस कहानी में दीप्ति जी ने वर्णन किया है कि मध्य वर्ग की परिवार की स्त्री को किस तरह अपने सास के, पति के 'अहम्' का शिकार होते रहकर कुंठित, हीनता भरा जीवन गुजारने की मजबूरी होती है। दीप्ति जी कहानी की नायिका का परिचय इस तरह कराती है, ''उनका नाम सीता है सीता देवी गोविंदजी उनके पति है, गोविंद प्रसाद व्यास। सारे जीवन क्लार्क से हेड क्लार्क तो नहीं बन सके लेकिन सीता देवी के लिए फौजी बने रहे। 'ऑर्डर इज ऑर्डर।''[३२] इससे पता चलता है कि गोविंद जी किस तरह पुरुष 'अहम्' से पूर्ण है। सीता को गोविंद जी ने बताया था कि घर में उनके माँ की ही चलती है और चलती रहेगी और किसी बात में बोलने का सीता को कोई हक नहीं है। उसकी सास को पोता चाहिए होता है तो वह सीता को धमकी देती है कि अगर अगली बार लड़की हुई तो मायके भेज दी जाएगी। शराबी, रात को पराई औरत के पास जानेवाला गोविंद सीता को शक की निगाह से देखता है। सीता का जीवन अपमान, अवमान सहते सहते कुंठित हो जाता है। उसका मन बुढापे मे चाहने लगता है कि अगला जन्म उसे दूर के देवर श्याम ही पति के रुपमें चाहिए, जो उसके जीवन में दो पल की छांह बनकर आया था। वह अचेत हो जाती है।

निष्कर्ष रूप में दीप्ति जी के कहानियों में अहम् मनोभाव का वर्णन बड़े ही अच्छे ढंग से मिलता है। अहम् मनोग्रंथि से संबंधित पात्रों का चरित्र

चित्रण लेखिका ने अपनी रचनओं में बड़ी सजीवता तथा मार्मिकता से किया है। मनुष्य 'अहम्' से ग्रसित अनेक मानसिक रोगों का शिकार हो सकता है। व्यक्ति आत्मघातक तथा विध्वसंक भी बन सकता है। दीप्ति खंडेलवाल ने बड़ी ही सूक्ष्मता से अहम् भाव का वर्णन मुख्य तथा गौण चरित्रों के आधार पर सफलता से किया है।इस का यह एक कारण भी हो सकता है कि लेखिका खुद घोर 'अहम्' का शिकार रह चुकी हो।

२.२.२ काम - भारतवर्ष के श्रेष्ठमुनी भरतमुनि के अनुसार सबसे पहले 'काम' ही उत्पन्न हुआ। 'काम' को मनो विश्लेषण के जनक फ्रायड ने 'लिबिडो' का नाम दिया है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के समस्त कार्य व्यापार, व्यवहार एवं विचार, काम भावना से प्रभावित होते है और काम भावना ही व्यक्ति के जीवन की प्रमुख भावना है। फ्रायड के अनुसार प्रत्येक सुख देनेवाले कार्य का कारण 'लिबिडो' ही है। लिबिडो द्वारा ही मनुष्य दूसरे मनुष्य से प्रेम, स्नेह, श्रध्दा, वात्सल्य, मैत्री और आत्मीयता के धागों में खुद को बाँध लेता है। वात्सायन का कथन है कि काम के बिना जिंदगी अधूरी है। जीवन की अन्य आवश्यकताओं के समान काम तथा प्रेम भी जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। फ्रायड ने सेक्स को अन्य आवश्यकताओं से अधिक महत्व पूर्ण माना है। दीप्ति खंडेलवाल ने नारी की काम विषयक भावनाओं को दांपत्य की सीमाओं में और उससे बाहर अनैतिक रूप में, दोनों रुपों में रचनात्मक स्तरपर अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। दीप्ति जी ने अपनी कहानियों मे देह धर्म की जैविक आवश्यकता को एक सहज रुप में स्वीकार कर अत्यंत सशक्त सेक्स स्नात कहानियाँ लिखी है। उनकी अनेक कहानियों में काम अतृप्ति का चित्रण प्राप्त होता है। उनका विवरण इस प्रकार है --

२.२.२.१ शेष अशेष - पुरुष की 'काम वासना' से शिकार स्त्री की कुंठित मनोभावना का चित्रण दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है । कहानी की

नायिका शची एक दीन हीन मुंशी पिता की बेटी है। चौदह वर्ष की उम्र में रज्जन नामक गुंडे लड़के की 'कामवासना' का शिकार शची हो जाती है। रज्जन ने अपनी कामवासना को तृप्त करने के लिए एक दोपहर अमराई में शची का बलात्कार किया था । रज्जन की पशुता से शची इतनी आहत हुई कि वह छिप छिपकर रोया करती थी। वास्तविकता में शची को रज्जन का तिरस्कार करना चाहिए था लेकिन उसका मन रज्जन की ही कामना करने लगा। रज्जन शची के जीवन का पहला पुरुष होने के कारण वह शची के मनप्राण में बस गया। वह रज्जन से ब्याह के सपने देखने लगी। जिस रज्जन ने शची की देह को नोंचकर उसके अस्तित्व को ही आहत किया था उसी रज्जन के इर्द गिर्द शची के मन में प्यार का कोमल एहसास मँडराने लगा था। लेकिन गुंडे रज्जन ने उसके प्यार को स्वीकार करने से साफ इन्कार कर दिया। उसका ब्याह चौधरी से हुआ, लेकिन वहाँ भी उसे प्यार की जगह चौधरी के भी 'कामवासना' का शिकार होना पड़ा। माँ न बन पाने के इल्जाम में उसे चौधरी खानदान से दूर अपने मायके जाना पड़ा। शची अपने पिताजी के साथ शहर गई अपनी पढाई पूरी कर उसे कॉलेज में लेक्चररशिप भी मिली। लेकिन उसके मन में काम अतृप्ति ही रही उसने मनु से अनैतिक संबंध प्रस्थापित किए। लेकिन काम अतृप्ति के कारण उसका जीवन सदैव कुंठित रह जाता है।

यह सच है कि काम तृप्ति अगर हो तो मनुष्य सफलता पाता है लेकिन काम अतृप्ति के कारण अपना तथा दूसरे का भी जीवन नष्ट हो सकता है। अगर स्त्री को कामवासना का शिकार होना पड़ा तो उसका सारा जीवन ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है, दीप्ति जी से इस कहानी के माध्यम से बताया है। हम देखते है कि हमारे समाज में कितने ही ऐसे पुरुष है अनैतिकता का आचरण कर मजबूर औरतों का 'रेप' करते है। उसके पीछे स्वैराचार तथा काम अतृप्ति ही महत्वपूर्ण कारण है।

२.२.२.२ देह की सीता :- आधुनिक युग में नैतिकता का हाय कल्चर्ड सोसायटी में कुछ मूल्य नहीं है । काम तृप्ति कें लिए हाय सोसायटी में दोनों पति पत्नी सेक्स को शरीर की माँग मानते है। पति पत्नी एक दूसरों के सुख्रो को माइन्ड नही करते यह आधुनिक विचार दीप्ति जी ने इस कहानी मे वर्णित किया है।

डॉ. शालिनी अपने पति रंजित को पूर्ण रूप से समर्पित है। मेजर रंजित को काम के सिलसिले में हमेशा बाहर रहना पडता है। अपनी गैरहजरी मे डॉ. शालिनी किसी दूसरे आदमी के स्पर्श से अछूती रहे यह वे नही चाहते। लेकिन जब वे आते तो शाालिनी से केवल उसके खूबसुरत शरीर की मांग करते। डॉ. शालिनी भी उन्हे पूर्ण तृप्ति देती थी। बाहर रहने पर दूसरी औरतो से उनके शारीरिक संबंध थे। '' टब की गुनगुनी उष्णता मे बैठी शालिनी को रंजित अपनी उसी उष्णता के कारण याद आते है जो उनके शरीर से शाालिनी के शरीर को मिलती रही है। अन्य पुरूषों की बाहों से मिली उत्तेजना को भी शालिनी ने रंजीत की बाहों मे बंधकर तृप्त किया और इस तृप्ति के लिए रंजीत की कृतज्ञ होती रही। और रंजीत वह भी तो तृप्त होते रहे कृतज्ञ होते रहे। मन की उलझनों से तन के यें समझोते कही अच्छे थे शालिनी और रंजीत को एक दूसरे से कोई शिकायत नहीं थी।"[३३] इससे दीप्ति जी ने स्पष्ट किया है कि 'कल्पर्ड अटीच्युड' इसी को माना जाता है। शालिनी ने शारीरिक नैकट्य के रोमंटिक क्षणों का शरीर के ही स्तर पर स्वीकारने का पाठ अपने पिताजी से बचपन मे ही सीखा था जिनके अपनी स्टेनो के साथ संबंध थे। डॉ. शालिनी भी परपुरूष से अनैतिक संबंध को सहजता से स्वीकार करती है।

स्त्री में कामभाव की इच्छा पुरूषों की तुलना में कही ज्यादा होती है इसलिए अपने पति के गैरहजरी में अपनी काम तृप्ति के लिए मेजर सहाय से शारिरीक संबंध रखती है। डॉ. शालिनी के अनुसार काम तृप्ति बहुत

महत्त्वपूर्ण है उनके वाक्य से पता चलता है कि ''जिंदगी देह के लिए मरने में नहीं देह के लिए जीने में है। "[३४] दीप्ति जी ने कामभाव को बहुत अच्छे ढंग से पाठको के सामने इस कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

२.२.२.३ विषपायी :- इस कहानी मे दीप्ति जी ने काम अतृप्ति से कुंठित विकृत मनोवृति का होमो सेक्युलिटी का शिकार बने लड़के की मनोभावनाओं का दर्शन कराया है। इस लड़के का कॉलेज में रैगिंग होता है। होमोसेक्युएलिटी के सद्मे से वह बाहर निकल नहीं पता और अंत मे आत्महत्या कर लेता है। पहले वह गाँव के एक लड़की के प्रति आकर्षित होता है।

मेडिकल कॉलेज के हॉस्टेल में जब उसने प्रवेश किया, ''एक रात तीन सिनियर लडके उसके पास आए और उसे अपने रूम मे ले गए। एक बढा अबे पाजामा उतार। दो ने उसका एक एक हाथ पकड लिया घुडके अबे सुना नही पाजामा उतार। वह कांपने लगा। कांपती उंगलियों से पाजामे का नाडा नहीं खुल रहा था। उस एक ने नाडा काट दिया। उन दो ने उसे खींचकर बिस्तर पर पटक दिया और एक उस पर चढ़ चुका था। उसके चीखते होठों को दबाये वे उसे दबाए हुए थे वह तडप रहा था। छुटने के लिए संघर्ष कर रहा था और वे एक के बाद एक उसपर झुकते और उठते रहे थे फिर पता नही वह अपने कमरे में कैसे आया या लाया गया।"[३५] उसकी मनोभावना को दीप्ति ने वर्णित किया है किसी भी शरीर सुख को जस्ट फन मान लेने की इस अति मॉडर्न फिलासफी को वह स्वीकार नही कर पाया। स्त्री पुरूष के आदिम संबंध को वह केवल शारिरिक क्रिया नहीं मान पाया। वह सोच रहा था कि यदि किसी नारी का शील हरण किया जाए तो वह प्राण दे सकती है। किन्तु यदि किसी पुरुष का पुरुषत्व रौंदा जाए तो शायद वह पागल हो सकता है और सचमुच वह पागल हो जाता है एक दिन उसने आपना पाजामा उतार फेंकाऔर गालिया बकता हॉस्टल के कम्पांउंड में दौड़ने लगा। उसे घर लाया

गया । कमरे मे बंद कर दिया गया जब तब वह अपने कपड़े उतारकर गालियाँ बकता था। उसने नींद की गोलियाँ खाकर अपना अंत कर दिया। दीप्ति जी ने बड़ी मार्मिकता से वर्णित किया है कि अतृप्त कामवासना किसतरह समाजघातक विकृतियों को जन्म देती है थैन्टास मनोवृत्ति लड़के के मन में निर्माण होती है। निराश हो कर वह आत्महत्या करता है ।

डॉ. मानधने के संशोधनानुसार, ''व्यक्ति की कामवासना का विकास यदि किसी कारण से रूक जाता है और वह पर लिंगी की अपेक्षा स्वलिंगी को ही प्रेम करता है तब स्वरति की भावना से मुक्त नहीं पाता। एक अवस्था की का मुक्ति का जब दूसरी अगली अवस्था में स्थानान्तरीकरण नही होता तब मनुष्य के स्वास्थ में बाधा पडकर विकृतियों की निमिर्ति होती है। स्वलिंगी कामभावना इसी का परिणाम है।''[३६]

२.२.२.४ हव्वा - धूप के अहसास इस कहानी मे दीप्ति जी ने मिस रतिलाल के माध्यमसे बढ़ती उम्र की लड़की के मन में मासिक धर्म, विपरित आकर्षण इत्यादि विषयों को लेकर सफलता से स्त्री मनोविज्ञान का चित्रण किया है। तथा अपने लेखन के माध्यम से नारी जीवन संबंधित कुछ मौलिक प्रश्न समाज के सामने प्रस्तुत किए है। मिस. रतिलाल जब छोटी थी तब उसने अपने विधवा बहन की आत्महत्या देखी थी। पुरुष के कामवासना का शिकार उसकी बहन ने कुएँ मे कूदकर अपनी जान दे दी थी। तब उसके मन में यह प्रश्न उठा था कि इसतरह से हुए नाजायज बच्चे के कारण क्यों स्त्रीपर ही अपवित्रता का दाग लग जाता है? रतिलाल ने उसके भाई को पड़ोस की लाजो के साथ विवस्त्र देखा था, लेकिन उसकी माँ के अनुसार भाई का कोई दोष नहीं क्योंकि वह मर्द है। यें दो घटनाएँ उसे अपने पूरे जीवनभर प्रभावित करती रही। वह नारी शरीर को ही औरत की नियति समझने लगी।

मासिक धर्म आरंभ होने के साथ उसे अपने नारी शरीर का अहसास होने लगा । शरीर के मोहक उभारों के बीच वह भावी जीवन के सपने देखने लगी। लेकिन एक दिन सुजान चाचाने उसे खाटिया पर पटककर रौंद दिया । लेकिन उसे लगा '' यदि सुजान चाचा की जगह तरूण मोहन होता तो शायद अपने उस अनुभव में मुझे वह आनन्द भी आता जो मेरा तरूण तन मन चाहने लगा था।"[३७] नारी शरीर के पहले अनुभव पर उसके मन में प्रश्न आया कि क्या यहीं नारी शरीर की सार्थकता या नियति है ? क्या अंगों के विशेष बनावट के कारण नारी सदा हारती रही है ? माँ की मृत्यु के बाद वह अपने पिता के साथ शहर आती है । वह अंग्रेजी अच्छी सिख लेती है । कामवासना के दमित भाव उसके मन में पुरुष से बदला लेने, प्रतिशोध लेने के विचार प्रकट करते रहते है । अपने इसी नारी देह के बलपर वह अनेक पुरुषों के शरीर से खेलती है । खुद भी शरीर सुख लेती है और पुरुषों को भी शरीर सुख लेने देती है । **हेवलॉक एलिस का कथन है कि** - ''सामान्यत: समाज में परपीड़क व्यक्ति को अस्वरुप या अहितकारी घोषित किया जाता है वही आत्मपीड़ा किसी रुप में असंभव के योग्य समझी नहीं जाती। सम्भवत: इसका यह कारण है कि आत्मपीड़ा का समाज की व्यवस्था पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ता और वह प्राय: व्यक्ति के निजी दायरें में ही सीमित रहती है। परपीड़न के कारण कुछ अत्यंत हिंसात्मक दुराचार हो सकते है।"[३८]

स्पष्ट है कि ईर्ष्या और आत्मग्लानि से भरी मिस रतिलाल के मन मे परपीड़न की वृत्ति दिखाई देती है । लेकिन इस परपीड़न रति के कारण व आत्मपीड़न महसूस करती है । अंत में वह कैन्सर के कारण मर जाती है। उसके मन में आता है ''मैं माँ नहीं बन सकी पत्नी नहीं बन सकी, यह निश्चित है.... मैं औरत भी बन सकी या नहीं आज इसका कोई ठीक ठीक उत्तर मेरे पास नहीं है। "[३९] मानसिक पीड़ा उसे सताती है। दीप्ति जी ने

बताया है कि स्त्री कितनी भी निर्बंधता से जीवन बिताए लेकिन कुछ न कुछ कमी उसे खलती रहती है । काम तृप्ति के बावजूद वह मानसिक अतृप्ति महसूस करती है।

२.२.२.५ **निर्बंध :-** इस कहानी में दीप्ति जी ने तीन पीढियों का वर्णन किया है जिसमें नानी है जो अपने पति के पराई स्त्रियों के पास जाने से कुंठित दिखाई देती है। काम तृप्ति के लिए अपने पति का पराई स्त्रियों के पास जाना उसे पसंद नही था इसलिए वह उनसे झगड़ती भी थी। दूसरी है अनीता की माँ जो अपने पति के दूसरी औरतों से संबंध को सह नहीं सकी और वह पति को छोड़ अपनी बेटी को साथ लेकर माँ के पास रहने लगी। नानी और माँ के अनुभवों को समझनेवाली अनीता स्त्री पुरुष के संबंध को सहज स्वीकार करती है। अपना जीवन उन्मुक्तता से जीना चाहती है उसे लगता है'' क्यों छिपाए अनीता इन मोहक उभारों को ? रूप यौवन प्रकृति की देन है। एक खूबसूरत जिस्म अल्ला मियाँ की कारीगरी का एक खूबसूरत नमुना होता है। इस देन इस नमूने को सही गलत, पाप - पुण्य से जोड़ना महज बेवकूफी है। "[४०] शरीर की प्यास बुझाने के लिए कभी संजय तो मनीष से संबंध रखती है।

स्पष्ट है कि आधुनिक पीढी मे स्वैराचार की तरफ झुकाव बढता जा रहा है। नैतिक मूल्यों को ताक पर लगाने वाली आधुनिक पीढी की नारी का वर्णन दीप्ति जी ने इस कहानी के माध्यम से किया है।

२.२.२.६ **डूबने से पहले :-** इस कहानी 'में शैला कपूर' के माध्यम से दीप्ति जी ने स्वैर आचरण, उन्मुख्र देहसुख्र चाहनेवाली औरतों का वर्णन किया है जो थोडे से सुख्र के लिए अपना सबकुछ दाँव पर लगा देती है । 'शैला कपूर' ने अपनी सुंदरता और नारी अंग के मोहक कोणों के बलपर प्रसिध्द विदेशी फर्म में नौकरी पाई थी। वहाँ के बॉस मेहरोत्रा को समर्पित होती है। बदले में

अपना बैंक बैलन्स भी बढ़ाती है । उसे लगता था कि, ''इस राकेट एज में राकेट के समान उड़ना चाहिए नही की रुढ़िवादी परंपरागत दलदल में फँसकर यौवन व्यर्थ बिताना चाहिए।"[४१] अपनी सुंदरता और अदाओं के कारण ऑफिस में सब उसके दिवाने थे । शरीर की माँग पूरी करने के लिए वह नैतिकता के सब बंधन तोड़ती है । विनोद उससे शादी करना चाहता है लेकिन वह नहीं मानती । अपनी उन्मुक्तता, स्वैराचार को वह बंधन में नहीं बाँधना चाहती, परंतु शादीशुदा अशोक की बातों से पहली बार वह अपनी ही खूबसूरत आँखों से नफरत करने लगती है । कामजनित सेक्स से ऊबकर छटपटाती शैला कपूर आत्मपीड़न का शिकार हो जाती है ।

२.२.२.७ सती :- नारी मन कहानीसंग्रह के इस कहानी में कनका एक गरीब नानी की एकमात्र नातिन थी वह दिखने में बहुत सुंदर थी। उम्र के बढ़ने के साथ उसका रुप और भी निखरता गया। उसकी पंद्रह साल की सुंदरता का वर्णन करते हुए लेखिका ने लिखा है - ''उन्नत वक्ष और पुष्ट नितम्बों के मध्य क्षीण कटि और भी क्षीण लग रही थी .... और सबकुछ बिलकुल नैचरल... ए मिलियन डॉलर फिगर 'विदेशी पर्यटक की दृष्टि लोलुप हो उठी यदि यह सुंदरी एक 'पोज' दे तो अमरीका की 'मॉडल गर्ल्स पानी भरने लगेगी'।"[४२] लेकिन कनका ने उस पर्यटक को छप्पड़ जड़ दी थी। मनोविज्ञानिक दृष्टि से फ्रायड की 'लिबिडो' संबंधो की नियमिका है तो सी.जी युंग की क्षेत्रसीमा मे वह मानव चरित्र के निर्माण का मूलाधार है। कसा हुआ शरीर चौड़े कंधे, पुष्ट नितंब, पिंडलियाँ, टखने, टाँगे आदि कामोत्तेजना के लिए उद्दीपक बन सकते है। दीप्ति जी ने अपनी कहानी में काम प्रेरित अंगो का वर्णन बड़े अच्छे तरीके से किया है।

शहर का बदनाम गुंडा नागन, तीसरी बार जेल से छूटकर कनका के बस्ती में रहने लगा। नागन की हिंस्त्र दृष्टि कनका के अछूते यौवन पर पड़ी

और काम वासना से पीड़ित वह उसे पाने के लिए आतुर हो उठा। एक दोपहर जब बस्ती के सभी लोग मजदूरी करने चले गए तो नागन ने कनका को दबोच लिया। उसका बलात्कार किया। लेकिन कनका का नारी मन नागन से बदला लेने की भावना के बजाय नागन के साथ की ही दुवा करने लगा। अपने शरीर के साथ घिनौनी हरकत करनेवाले नागन से नफरत करने के बजाय उसीसे प्यार करने लगी। उसे जो अच्छा लगता वह बनाकर खिलाया करने लगी। दीप्ति जी ने कामजनित कुण्ठा से व्याप्त कनका के मनोभावना वर्णन इस कहानी में बड़े निराले ढंग से किया है कि नागन के मृत्यु के बाद भी कनका नागन की रूचि की चीजे नागन की बरसी पर पंडित जी को देती रही । मानो एक पतिव्रत धर्म का पालन कर रही हो और सतीत्व की अनोखी मिसाल खड़ी कर गयी। नागन के मृत्यु के पाँच साल बाद वह भी मर गयी ।

२.२.२.८ युग पुत्री :- इस कहानी में रचना कपूर एक रिटायर्ड एकाउन्टेन्ट पिता की पुत्री थी। पिता के लिए रचना का काम करना बड़े मायने रखता था। आर्थिक हीनता रचना की महत्वाकांक्षा बन गयी। अपने शरीर का उपयोग उसने स्टेनो से सेक्रेटरी बनने के लिए किया। तनख्वाह भी बढ गयी। नैतिकता को ताक पर रख कर बॉस को अपना शरीर समर्पित किया। अपनी कामवासना की तृप्ति करने के लिए वह शादी की बंधन में बंधना नहीं चाहती थी। उसने स्वैराचार का अवलंब किया। सुधीर, फीरोज ऐसे पुरूषों से प्रेम के संबंध जोड़कर वह अपने शरीर की काम तृप्ति करती रही। लेकिन इसी वासना से उसे ऊब आने लगती है। उसकी माँ जिसे रचना का व्यवहार पसंद नहीं था, वह माँ उसे असहय लगने लगती है।

दीप्ति जी ने इस कहानी में चित्रित किया है कि किसतरह परिवार की बड़ी जिम्मेदार संतान होने के नाते लड़कियाँ नैतिकता को ताकपर रखकर उँची पोस्ट पाती है। शादी के बंधन में बंधने की बजाय उन्मुक्त कामतृप्ति

करती है। अपनी दमित इच्छाओं को, कामवासना को पूर्ण करने का प्रयास करती है।

२.२.२.९ बेहया :- इस कहानी में अपने शरीर का उपयोग अपने जीवन के बढ़ने खर्च पूरे करने के लिए करने वाली औरत 'चंदा' का हूबहू वर्णन दीप्ति जी ने किया है। चंदा को मुहल्ले के सब 'बेहया' कहते थे। चंदा की कामुक अदाओं का वर्णन दीप्ति जी ने कुछ इस प्रकार किया है - ''वह सुंदर नहीं थी ' इतनी आकर्षक भी नहीं, कि भौंरो की सरलता से आकृष्ट कर सके। भैरों को पटाने के लिए उसे सतत प्रयास करना पड़ता था। यौवन उसमें भरपूर था। उसके श्याम मुख या श्यामल गातपर आंखे टिकें न टिकें उसके उन्नत वक्ष पर अवश्य टिक जाती थी। जिन्हें वह पारदर्शी ब्लाउज में बाजार की बनी सस्ती 'ब्रा' में और उभारकर रखती। आंचल को वक्ष पर संभालती कम, ढरकाती ज्यादा।"[४३] चंदा को सात साल के बाद एक बच्चा होता है तो बढ़ते खर्च के ऐवज में वह खुले आम शहर के बिगड़े रईस घनश्याम की रखैल बन गयी। अपनी कामवासना का उपयोग वेश्यागमन कर के पैसा कमाती है। अनेक पुरुषों को कामतृप्ति देती है। समाज की कामजनित विकृति का वर्णन दीप्ति जी ने बड़ी मार्मिकता से किया है।

२.२.२.१० **देहगंध -** इस कहानी में मध्यवर्गीय 'मनोहर जोशी' का वर्णन किया है जो प्रेम का रिश्ता टूट जाने पर भी अपनी प्रेयसी को भूला नहीं पाता। उसकी शादी तो हो जाती है लेकिन अपनी पत्नी सरला के प्यार को समझ नहीं पाता। मनोहर बहुत सालों बाद प्रेयसी प्रतिमा से मिलता है । प्रतिमा के पती के पास मनोहर किसी काम के सिलसिले में जाता है। प्रतिमा उसे वहाँ मिलती है। अपने पति को शक न हो जाए इसलिए मनोहर से वह अपने प्रेमपत्र लौटाने को कहती है लैकिन काम अतृप्ति से पीड़ित प्रतिमा अपनी पति के गैरहजरी में मनोहर से उसके शरीर नैकट्य की मांग करती

है। तब पहली बार मनोहर को अपनी प्रेयसी गंदी लगती है। और वह अपनी पत्नी सरला के पास लौटकर आता है, उसे प्यार करने लगता है।

२.२.२.११ **आत्मघात** - इस कहानी में दीप्ति जी ने एक तलाकशुदा नारी की मनोभावनाओं का वर्णन किया है। मृणालिनी मोहित नाम की स्त्री का तलाक हुआ है वह अपनी घर छोड़कर वर्किंग वीमेन्स होस्टेल में रहने के लिए आती है। उसकी मुलाकात रुममेट रजनी से होती है। जो दिखने में साँवली है। अपने सावले चेहरे के कारण दमन का शिकार है। अपने साँवले रंग के कारण पुरुष उसकी तरफ आकृष्ट नहीं होंगे इससे बचने ने के लिए पॉइटेंट ब्रा पहनकर अपने वक्ष के उभार और बढ़ाती है। मृणालिनी मोहित अपने पति को भूला नहीं पाती तो रजनी उन्हें समझाती है,''बस बस अब यह मत कहना कि मोहित तुम्हारे अंतिम पुरुष भी होंगे। जहाँ देह सुख का अधिकार स्त्री को भी उतना ही है, जितना पुरुष को अरे मारो गोली मोहित को। तुम फिर जीने की कोशिश करो। अगर मोहित को याद करती रहीं तो मर जाओगी।"[४४] बाद में मृणालिनी मोहित के कामभावना से कुंठित होकर वह मॉडलिंग करने लगती हैं, वह पूरी तरह से बदल जाती है। अपनी अतृप्त काम भावना की तृप्त करने के लिए मील के मालिक के बेटे को अपना समर्पण देती है स्त्री को कामपीपासा किस हद तक ले जाती है मृणालिनी के इस वाक्य से पता चलता है, ''जानती हो आज क्या हुआ जिस मिल के लिए मैं माँडलिंग करती हूँ न उसके मालिक का बेटा तीन साल के बाद अमेरिका से आया है सच ए हैंडसम एण्ड वण्डरफुल फेलो उसने आज मुझे प्रपोज किया है शादी के लिए एण्ड देन ही टुक मी टु बेड। आज जमाने के बाद पुरुष का साथ नसीब हुआ । एण्ड इट वाज सच ए थ्रिल ..... ओह! राजू ..... राजू.... कितनी खुश हूँ मै आज ! लाइफ इज रियली वण्डरफुल नाऊ!"[४५]

दीप्ति जी ने यहाँ पर बताने का प्रयास किया है कि तलाकशुदा नारियों में काम असंतुष्टता के कारण किस तरह नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा हैं।

निष्कर्षत:- यह कहा जा सकता है कि काम भावना को मनोवैज्ञानिक ढंग से दीप्तिजी ने अपनी कहानियों में सफलता से वर्णित किया है। कामजनित कुंठा पुरूष, के कामवासना शिकार होती नारियाँ, काम अतृप्ति से होनेवाली नारी की मनोभावना का वर्णन करने में दीप्ति जी शत प्रतिशत सफल हुई है। यह कहना उचित है कि मनुष्य में कामभावना सदैव रहती है और इसकी तृप्ति होना अत्यावश्यक है नहीं तो कामवासना विकृत रूप लेकर समाज में पनपती है और उसके दुष्परिणाम समाज पर गहरा असर कर सकते है।

२.२.३ भय :-

नालंदा विशाल शब्द सागर 'भय' की व्याख्या इस प्रकार है, ''एक मनोविकार जो आपत्ति या अनिष्ट की आशंका से मन में उत्पन्न होता है।"[४६]

'डर', 'खौफ' भय के समानार्थी शब्द है। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार ''किसी आती हुई आपदा की भावना या दु:ख के कारण साक्षात्कार से जो एक प्रकार का आवेगपूर्ण तथा स्तम्भकारक मनोविकार होता है उसी को 'भय' कहते है।"[४७] 'फोबिया' भय का मनोवैज्ञानिक नाम है।

भय एक ऐसी भावना है जिससे हर कोई किसी न किसी स्थिति में अभिशप्त रहता है। भय अक्सर किसी आती हुई आपदा की भावना से उत्पन्न होता है। भय का स्थायी भाव चिन्ता है।

दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी अनेक कहानियों में भय की मन:स्थिति नारी तथा पुरुष पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत की है। उनका विवरण इसप्रकार है।

२.२.३.१ जहर :- इस कहानी की 'माया', भय नामक ग्रंथि से ग्रसित है। माया का भाई अमर भर जवानी में तपेदिक की बीमारी से मर जाता है। माया रेलवे के एक मामूली क्लार्क हरिहर बाबू की बेटी है। घर के सभी लोगों को अमर की मृत्यु का भय का लगा रहता था। इधर माया की माँ कहती थी कि उसका लाख का बेटा मर गया उसकी जगह बेटी मरती तो अच्छा होता। माया अपने आपको दोषी मानती है कि वह नहीं मरी। माया सोलह साल की हो गयी थी। उसे अपने पिताजी की आर्थिक स्थिति का अंदाजा था। लेकिन माया मरना नहीं जीना चाहती थी। उसे भय था कि वह कहीं अपने पिताजी के लिए एक छाती का पत्थर बन गई है, अर्थात बोझ बन गयी है । यौवन के साथ उसके मन में कामनाएँ जाग रही थी। एक दिन वह मुहल्ले के किसी कम बिरादरी वाले लड़के के साथ भाग जाती है। भय और काममिश्रित भाव, माया को विद्रोही, अपराधिनी बना देते है और वह घर से भाग जाने का अपराध करती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भय की भावना मनुष्य को कोई अनुचित कार्य करने पर मजबूर कर देती है। माया की इसी मनोभावना का वर्णन दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है।

२.२.३.२ रीतते हुए :- 'धूप के अहसास' इस कहानीसंग्रह में दीप्ति जी ने 'भय' की मानसिकता का वर्णन किया है । इस कहानी में सुषमा और रमेश पति पत्नी है । रमेश की शर्त थी कि सुषमा कमाएगी और सुषमा की शर्त थी कि वे बच्चे पैदा नहीं करेंगे । बचपन से अभावों भरा जीवन बिताने हुए उन्हे यह भय था कि अगर बच्चे होंगे तो खर्चे बढ़ेंगे, सुषमा का नौकरी करना मुश्कील हो जाएगा । और उन दोनों के बीच की दूरियाँ भी बढ़ेगी । दोनों एक दूसरे की शर्त का कड़ा से कड़ा पालन करने का प्रयत्न करते है । परंतु जैसे जैसे उनका बैंक-बैंलस बढ़ता जाता है उतनी ही उनके बीच उदासी भी बढ़ जाती है । सुषमा की मनःस्थिति का वर्णन करते हुए दीप्ति जी ने लिखा है, ''रमेश की बड़ी बड़ी आँखो में एक रिक्तता है । उसे इतनी अपरिचित

लगती है कि वह इस अपरिचय में खो जाने के भय से कांपने लगती है। रमेश उसे देख रहा है और उसे लगता है वह उसे ही नहीं किसी को भी नही देखता होता है। आँखो का काम है देखना लेकिन यदि आंखे यह काम छोड़ दे तो उस न देखने के क्षणों को झेलना किसी व्यंग्य को झेलने जैसा कठिन हो जाता है। "[४८] स्पष्ट है कि अभावों को खत्म करते करते दांपत्य जीवन किसी रिक्तता के 'भय' से परेशान है । दांपत्य जीवन में बच्चे के न होने के कारण जीवन खाली-खाली लगने लगता है।

२.२.३.३ मरती हुई गौरेया :- इस कहानी में दीप्ति जी ने कहानी की नायिका का परिचय ही ऐसा दिया जिससे 'भय' की मानसिकता स्पष्टता से दिखाई देती है,''उसे पहले पहले देखा तो बिलकुल लगा कि कोई गौरेया मरती हुई सामने पड गयी हो गौरया से एक विरीहता का बोध होता है न फिर यदि वह मरती हुई तो उस निरीहता में मृत्यु की जड़ता किंचित भ्यावहता के साथ जुड़ जाती है निरीह जड किंचित भयावह ..... ऐसी ही थी वह! "[४९] नैरेटर के ऑफिस में एक लड़की मिस श्यामा काम करती थी। उसमें कुछ भी खास बात नही थी। वह न कभी हँसती थी न उदास होती थी। कोई उसका अपमान भी करता तब भी वह निर्विकार बनी रहती। धूप बारिश का भी उसपर कोई असर नहीं होता है। अपने भाई की मृत्यु की बात भी वह नैरेटर से बड़ी सहजता से करती है जैसे मौत उसके लिए कोई मायने नहीं रखती। लेकिन जब उसे नौकरी से निकाला गया तो एक भय उसके चेहरे पर नजर आया कि वह यह खबर उसकी माँ को कैसे देगी। जीवन के प्रति उदासीनता का भाव श्यामा के मन में था नौकरी छूटनेपर आर्थिक समस्या का भय उसके उदास चेहरे पर नैरेटर को साफ दिखाई दिया।

२.२.३.४ अभिशप्ता :- इस कहानी की नायिका मानो को भय था कि अगर वह शादी कर के दूसरे घर चली जाएगी तो उसके बाद उसके बीमार पिता,

माँ, छोटी बहनों का क्या होगा? वह नहीं चाहती थी कि उन सबको बीच मँझदार में छोड़कर वह अपना संसार बसाएँ। इसलिए वह अपने प्यार का त्याग करती है और खुद को कर्तव्य दक्ष समझ कर मन का समाधान ढूँढती रहती है। लेकिन उसे त्याग की मूर्ति, देवी समझने वाले उसके घरवाले उसके बारे में नहीं सोचते। उसकी मानसिक स्थिति का वर्णन दीप्ति जी ने बड़ी मार्मिकता से किया है। ''मानो जान गई है कि किसी शापग्रस्त वरदायिनी सी वह मंच पर खड़ी रहेगी और जयघोष के साथ उसपर फूल बरसेंगे किंतु कमरे के निबिड़ एकान्त में दो भुजाओं का हार उसे कभी नहीं मिलेगा... कभी नही।"[५०] कर्तव्य विन्मुख होने के डर से बचने के लिए त्याग की मूरत बनी मानो कभी भी न खत्म होनेवाले अकेलेपन का शिकार बन जाती है। माँ की सहानुभुति के स्वर भी उसे असहय लगने लगते है। नींद का अभिनय करती मानो को लगता है कि वह बहुत थक गई है।

२.२.३.५ **स्वयंवर :-** यह एक प्रेमकहानी है जिसमें प्रेमी और प्रेमिका समाज और घरवालों के 'भय' से एक साथ अपनी जान दे देते है। उनका प्यार असफल होकर भी सफल बन जाता है। मोहन एक बड़े बाप का बेटा है। मोहन की शादी एक बड़े घर में तय की गयी है। लेकिन मोहन उसके कॉलेज की लड़की राधा से प्यार करता है, जो गरीब घरी की है। प्यार में वे पागल हो जाते है राधा प्रेग्नंट हो जाती है। फिर भी वह चाहती है कि मोहन अपने पिताजी की बात मान ले और उसके कारण कुछ गलत कदम न उठाएँ, परंतु मोहन को 'भय' है कि उसके पिता राधा को घर में जीने नहीं देंगे और दूसरे घर में समाज जिंदा नहीं रहने देगा और वह अपने प्यार का अपमान भी नहीं सह सकता। इसलिए वह राधा के साथ आत्महत्या करता है। घर परिवार और समाज के भय से दो प्रेमी मरकर हमेशा के लिए एक हो जाते है इसका वर्णन दीप्ति जी ने सफलतापूर्ण किया है।

२.२.३.६ दो पल की छांह :- इस कहानी की नायिका 'भय' मनोग्रंथि की शिकार है । जब वह कॉलेज में थी वो वह 'द गडबड गर्ल' के नाम से जानी जाती थी घर में 'मुसीबत' के नाम से जानी जाती थी। उसका मानना था कि ''जिंदगी नाम ही एक्शन का है शांत तो मुर्दा ही रह सकता है। "[५१] परंतु एक लड़के के प्यार में वह अपना चैन खो बैठती है। उस लड़के के तो अनेक लड़कियों से अफेयर्स थे । वह उसे छोड़कर निकल जाता है। परंतु वह लड़की पागल होकर रह जाती है। गड़बड़ गर्ल की जगह धीरे धीरे मुर्दा होती जाती है। भीड़ से उसे डर लगने लगता है। बहुत अपने लगते चेहरे उसे बहुत पराए लगने लगते है। वह जानबूझकर एकान्त तलाशने लगती है। प्यार में उसे इसतरह धोखा मिलता है कि वह भयावने अकेलेपन का शिकार हो जाती है। उसकी अवस्था का वर्णन करते हुए दीप्ति जी ने लिखा है ''अब वह जानबूझकर एकान्त तलाशती है निर्जन, नीरव, एकांन्त जहाँ स्वयं के निकट केवल वह स्वयं ही हो जहाँ वह अपनी चलती सॉसों को महसूस कर सके.... जहाँ जिंदगी के खो चुके अहसास कुछ पल के लिए उसे वापस मिल जाएँ कि वह फिर मरते रहने के लिए तैयार हो जाए"[५२] प्यार में धोखा मिलने के कारण कोई भी पुरुष उसके संपर्क में आता है तो वह उससे संशय की निगाहों से देखती है । पुरुष जाति पर से उसका भरोसा ही उठ जाता है। आत्मापीड़न का शिकार हो जाती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से संत्रास, एकान्त भय की स्थिति है, सुन्न हो जाने की स्थिति है, अकेलेपन की स्थिति है ऐसा अकेलापन जहाँ भीड़ में होने पर भी व्यक्ति अकेला होता है। इसी भय रुपी संत्रास की शिकार इस कहानी की नायिका है। दीप्ति जी ने उसकी मानसिक अवस्था का चित्रण बड़े अच्छे ढंग से किया है।

२.२.३.७ **चंदा की जोत :-** इस कहानी मे भागवती एक बहुतही मामूली आदमी बनवारी की बीबी है। बनवारी हमेशा दारू के नशे में ही रहता है। भागवती जब अपनी बेटी को जन्म देती है तो बनवारी से नाइन जब बनवारी को अपनी सुंदर सी बेटी को देखने को कहती है तो बनवारी कहता है कि उसकी यह खूबसूरत बेटी उसके बुढ़ापे का सहारा बनेगी। इसी सुंदरता पर उसे पैसे मिलेंगे सुंदर रूप उसकी बेटी उसके लिए दुश्मन हो गया था। बनवारी हमेशा भागवती को मारता पीटता रहता था। दारू के लिए उससे पैसे माँगता था। भागवती बेचारी दूसरों के घर काम कर उसे पैसे देती थी। भागवती जानती थी कि दारू के लिए पैसे न मिले तो बनवारी उसके साथ और उसकी बेटी के साथ कुछ भी कर सकता है। इस भय से एक दिन भागवती अपनी बेटी को अपनी छाती से बांधकर डाकखाने के पिछवाडे वाले पोखर में डूब मरती है वह उसके आत्महत्या कर लेती है। अपने निर्दयी शराबी पति के बर्ताव से उसकी मनोवस्था ऐसी हो जाती है कि आखिर वह अपनी सुंदर बेटी को भी लेकर खुदखुशी करती है। पोस्टमास्टर श्रीकांत के विवाह के प्रस्ताव को भागवती नहीं स्वीकारती क्योंकि उसे लगता है कि बनवारी को छोड़कर किसी दूसरे की नहीं हो सकती। दीप्ति जी ने भागवती के द्वारा भारतीय स्त्री के मनोभाव को पाठकों के सामने प्रस्तुत किए है।

२.२.३.८ पार्वती एक :-नारी मन कहानी संग्रह के इस कहानी में कहानी की नायिका 'पार्वती' 'भय' मनोग्रंथि का शिकार है। पार्वती एक मामूली घर की बेटी है। उसके माँ बाप अंधे है उसका छोटा भाई लल्लू है। दो बड़ी बहनों के विवाह के पश्चात घरकी सारी जिम्मेदारी पार्वती पर ही आ पड़ी है। पार्वती को सबको संभालना पड़ता है। यौवन के आगमन के साथ पार्वती भी गली के घनश्याम से प्यार करने लगती है। घनश्याम पार्वती के सामने गाँव से शहर उसके साथ भाग जाने का प्रस्ताव रखता है। पार्वती को भी ब्याह का बड़ा चाव था। घनश्याम तो उसे प्यार भी दे रहा था। पार्वती ने उसे हाँ कह दिया

परंतु जब वह घर आती है तब अपने माँ बाप छोटे भाई लल्लू को देखकर उसका मन पिघल जाता है। उसे भय लगता है कि वह अगर इनको छोड़कर घनश्याम के साथ भाग चली जाएगी तो इनका ख्याल कौन रखेगा। 'भय' ग्रंथि से उसका मन कमजोर हुए जा रहा था। पार्वती को लग रहा था कि अगर वह चली जाएगी तो उसका भाई सचमुच मर जाएगा। माँ के घुटने में दर्द का क्या इलाज होगा? दूसरे दिन घनश्याम जब आता है तब पार्वती अपनी कर्तव्य विमुख होने के भय से बचने के लिए उसे कहती है कि वह उसके साथ नहीं जा सकती।

'भय' ग्रंथि का शिकार होकर पार्वती अपने उजले भविष्य को ठुकरा देती है। आत्मपीड़न सहने पर मजबूर हो जाती है।

२.२.३.९ सुख - इस कहानी में बुट्टो बुआ के 'भय' मनोग्रंथि का विवरण है। बुट्टो बुआ का ब्याह राजा बाबू से हुआ था। राजा बाबू का दिन सट्टे में और रातें घुंगरुओं की झनकार सुनने में जाती थी। बुट्टो बुवा उनकी पत्नी तो थी लेकिन उसको मार पीट के सिवा वे और कुछ नहीं देते थे। इन्हीं राजा बाबू ने एक बार बुट्टो बुवा को ऐसा धक्का दिया कि उसके उपर के चार दाँत टूट गये थे। राजा बाबू सट्टे में सबकुछ हार गये और घर बुट्टो को छोड़कर भाग गए। बुट्टो बुवा शहर से कस्बे में आ गई। मुंगौडी पापड बेचने लगी। उसकी मानसिक अवस्था ऐसी हो गई थी कि वह भयानक अकेलेपन को सहन कर रही थी। उसे राजा बाबू से कोई शिकायत नहीं थी। वह अपनी नियति को ही कोसती रहती थी। उसे भय था कि उसके अकेलेपन का फायदा उठाकर कोई उसकी इज्जत न ले। लेकिन राजा बाबू ने मार मार कर उसे ऐसा बदसुरत बनाया था कि कोई उसकी और देखता भी नहीं था। वह इसलिए राजा बाबू का शुक्रिया मानती है। वह सोचती थी कि वह कौनसा सुख पानेके लिए जिंदा है मर क्यों नहीं जाती? उसके मनमें अनेक बार आत्महत्या करने का विचार आया। लेकिन बुट्टो बुआ में मरने का भी साहस

नहीं है। उसे मृत्यु से भी भय लगता है। उसकी मनःस्थिति को दीप्ति जी ने वर्णित किया है। ''अब इस जिनगानी में जो कुछ भोगे का था भोग लिया जब जीते जी चैन नहीं मिला तो मरने के बाद ही मिलेगा कौन जाने? "[५३]

बुट्टो बुआ के मन में भय ने ऐसा घर बना लिया है कि उसे मृत्यु से थी डर लगता है। अपनी दुखभरी जिंदगी में मृत्यु के बाद सुख मिलने की आशा भी उसे नहीं है। भय ग्रंथि की यह कहानी मनोवैज्ञानिक धरातल पर खरी उतरती है।

२.२.३.१० **नागपाशः**-आत्मपीडन से भरी कहानी में छवि जड संस्कारो के कारण 'भय' की स्थिति से गुजरती है इसका वर्णन दीप्ति जी ने किया है। अमीर गरीबी की दीवार छवि और विकास के प्यार को सफल नहीं होने देती। विकास उसे इन्तजार करने के लिए कहकर छोड़ जाता है। छवि को अपनी सौतेली माँ के कारण मेजर अजय वर्मा से ब्याह करना पडता है। उसे राकेश और रश्मि दो संतान हो जाते है। मेजर अजय वर्मा चीन पाकिस्तान युध्द में शहीद हो जाते है। छवि का पहला प्यार विकास एस.पी ऑफिसर बनकर उसे स्वीकारने आता है परंतु छवि की मानसिकता समाज, कर्तव्य, धर्म संस्कारो के नाशपाशो में बँधकर रह जाती है। उसे भय लगता है कि उसके बच्चे रश्मि और राकेश विकास को अपने पिता के रूप में स्वीकार करेंगे? और छवि को अपनाकर विकास अपने बेकसूर पत्नी तथा बच्चों के प्रति अन्याय तो नहीं कर रहा है? यें कारण बताकर छवि विकास के प्यार को ठुकराती है। छवि का मानसिक स्वास्थ इतना बिगड़ जाता है कि वह घंटो शॉवर के नीचें ठंडे पानी से खुद को ठंडा करने का प्रयत्न करती है। परंतु महसूस करती है कि उसके अंदर की तपन फिर भी कम नही हो रही। वह इतनी रक्तहीन हो जाती है कि हमेशा बेहोश हो जाती है। वैधव्य, असफल प्रेम, विमाता के जडसंस्कारों के नागपाश उस में हीनता ग्रंथि पैदा करते है

और वह कभी भी खत्म न होने वाले अकेलेपन का शिकार हो जाती है। कुंठित अवस्था में वह अपने आप को शारीरिक पीड़ा देती रहती है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर यह कहानी खरी उतरती है । छवि काम तथा भय मिश्रित मनोग्रंथि से गुजरती है ।

२.२.३.११ कोई जमीन नहीं :-

इस कहानी में स्वरूप और सरला पति पत्नी आर्थिक अभाव के कारण 'भय' मनोग्रंथि का शिकार है । स्वरूप नेहरु हायस्कूल में एक टीचर है । वह इतना भी नहीं कमा पाता कि अपने परिवार के साथ सुख से रह सके । राशन, बिजली, कपडे की समस्या हल करते करते ही उसका सारा जीवन निकल जाता है। आर्थिक अभाव उसके जीवन पर इसतरह छाया हुआ है कि अपनी काम तृप्ति के लिए भी उन्हें सोचविचार करना पड़ता है । इसका वर्णन दीप्ति जी ने इस प्रकार किया है । सरला स्वरूप से कहती है, ''जानती हूँ तुम्हें कई बार बुरा लग चुका है, लेकिन क्या करू?कहीं फिर गड़बड़ हो गई तो ..... । पिछली बार एबार्शन हुआ था, उसी का पैसा डाकटरनी को आज तक नहीं दिया जा सका"[५४] उन्हें भय है कि एक तो आर्थिक अभाव उसपर अगर फिर से कुछ हो गया तो वे बढ़ते परिवार को कैसे सँभाल सकेंगे ? इस भय के कारण अपनी कामेच्छा अतृप्त रखकर दमन का शिकार हो जाते है । आर्थिक अभाव उनमें 'भय' की ग्रंथि निर्माण करता है।

२.२.३.१२ भूख :- आर्थिक अभावसे ग्रसित, गरीबी का शिकार रधिया की 'भय' मनोग्रंथि का विवरण दीप्ति जी ने इस कहानी में किया है। रधिया का पति बिरजू बीमारी के कारण बिस्तर से उठ नहीं सकता। रधिया ने घर की करीबन सभी चीजें बेंचकर छ महीने तक दो वक्त की रोटी का इंतजाम किया है। परंतु उसके बाद एक वक्त की रोटी भी मिल पाना उनके लिए कठीन हो गया था। असहाय्य गरीब रधिया की तरफ कामवासना से देखने

वालों की नजरे कम नहीं थी। उधर बिरजू की हालत बहुत बिगड़ गई थी। तीन दिन से किसी के पेट में अन्न नहीं था। दुर्भाग्य उनका पिछा नहीं छोड़ रहा था। रधिया टूटने लगी थी। वह अपने आप को बेचकर बिरजू, बच्चे और खुद का पेट भरने के लिए मजबूर हो जाती है। उसे भय लगता है अगर पेट की भूख नहीं मिटी तो उसके पति बिरजू के प्राण संकट में आ सकते है। अपने बच्चों की चिंता उसे सताती है। वह किसी भी हालत में अपने पति को मरते नहीं देख सकती। वह पंद्रह रुपये लेकर ड्रायव्हर को अपना समर्पण देती है। पति के मृत्यु का भय उसे अपने आपको बेचने पर मजबूर कर देता है।

'भय' मनोग्रंथि का विवरण अपनी कहानियों में दीप्ति जी ने बड़ी सफलता पूर्वक किया है। यह कहना उचित होगा कि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दीप्ति जी की कहानी रचनाएँ परिपूर्ण है। अपने कहानीकार रूप से दीप्ति जी को गर्व है।

दीप्ति खंडेलवाल ने उन्होंने तीन उपन्यास भी लिखे। तथा 'वह तीसरा' लघुउपन्यास लिखा। उनमे से 'कोहरे' और प्रिया इन उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने का मैने प्रयास किया है। प्रसाद साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन में **एम.एस्. दुधनीकर** का कथन है कि-''फ्रायड एडलर और जुंग के मतानुसार साहित्य निर्मिति के पीछे अचेतन मन की क्रियाएँ काम करती है। इस प्रक्रिया में दमित वासनाएँ, श्रेष्ठता-ग्रंथि और अचेतन मन की प्रवृत्तियाँ कार्यरत रहती है। मनोविश्लेषण की दृष्टि से कला का मुख्य प्रयोजन एक ओर हमारी अतृप्त मूल-वृत्तियों का समाधान करता है तो दूसरी ओर जीनको पूर्ण बनाने की स्वाभाविक इच्छा को पूरी करना भी है, इसलिए फ्रायड और जुंग के विचारों का एक साथ विचार करना आवश्यक है।''[५५] दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में दोनों ही मनोवैज्ञानिकों का विचार एक साथ समाविष्ट है। लेखिका की रचनाओं में

जीवन की अतृप्ति और निर्मिती दोनों विद्यमान है। उनके उपन्यासों में इद्, इगो, सुपरइगो, यौन-विकृति, स्वप्न इत्यादी मनोग्रंथियों से ग्रस्त चरित्रों का चित्रण हुआ है।

२.३. दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासो में नारी का मनोविज्ञान

दीप्ति खंडेलवाल ने तीन उपन्यास और एक लघु उपन्यास लिखा परंतु उसी में उन्होंने साबित कर दिया कि वे एक श्रेष्ठ कहानीकार के साथ साथ श्रेष्ठ उपन्यासकार भी है। नारी समस्या प्रधान उनके 'प्रिया' तथा 'कोहरे' इन उपन्यासों के नारी पात्रों की मानसिक दशा का चित्रण मनोविश्लेषणात्मक मानदंडो को सिध्द करने मे सक्षम है। मनोवैज्ञानिकता की कसोटी पर यें उपन्यास खरे उतरते है।

२.३.१ कोहरे - यह उपन्यास स्त्री पुरुष के टूटते प्रेम संबंधों की गाथा है। उपन्यास में उस वर्ग को उजागार किया है जो शिक्षित है। इस उपन्यास की नायिका 'स्मिता' की कुंठित मानसिकता का वर्णन बड़ी मार्मिकता से किया गया है। 'स्मिता' के पति सुनील अंग्रेजी मे पीएच.डी है। तो स्मिता हिंदी में एम.ए.। दोनों ही पढ़े लिखे सुशिक्षित है। दोनों के 'अहम्' एक दूसरे के अहम से टकराते है। दीप्ति जी ने स्मिता के अहम् को इसप्रकार वर्णित किया है स्मिता सोचती है कि वह अत्यंत सुन्दरी न भी हो उसमें एक विरल आकर्षण है उसके घुंघराले केशों में उसकी काली आँखों की उज्जल दृष्टि में, उसके फुलों जैसे कोमल अंग सौष्ठव में। उसके यौवन में उसके सुरभित नारीत्व में। स्मिता का यही आत्मविश्वास सुनील को अहम् लगने लगाता है। सुनील में भी 'ईगो' की मात्रा स्मिता से बढ़कर थी।

डॉ. मानधने के अनुसार ''आधुनिक युग में बढ़ती हुई बौध्दिकता के फलस्वरुप आत्मविनाश की ओर ले जानेवाले अहम् को समाप्त कर व्यक्ति को सामान्य स्थितियों में जीने की प्रेरणा दी जानी चाहिए।"[५६] यह सच है

परंतु अहम के बीच में आनेपर समझौता भी नहीं हो सकता। स्मिता का अच्छा गाना, एक मेजर की बेटी होना सुनील के ईगो का हर्ट करता था। सुनील का 'अहम्' जब प्रबलतर होना तब स्मिता को लगता जैसे वह किसी अमूर्त परंतु अमानवीय पाश में जकडने लगी है। स्मिता को सुनील के रेशमी पाशों मे बँधना रास नहीं आया। सुनील अपने बच्चे का स्वागत भी बड़ी शुष्कता से करते है। माँ बनी स्मिता से सुनील का मन भर जाता है तो अपनी दमित काम वासना को तृप्त करने के लिए उनकी कोलीग मिस इरा घोष से शारीरिक संबंध रखता है। स्मिता अचेत सी होकर रह जाती है सुनील सहजंता से उस बंधन से छूटने की बात करता है और तलाक का मार्ग अपनाता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में सुनील सेक्स की वासना को पूरा करने के लिए सहजता से पत्नी नहीं तो मिस घोष से संबंध प्रस्थापित करता है ।

जुंग ने व्यक्तित्व को अर्न्तमुखी एवं बहिर्मुखी दो भागों में विभाजित किया है। अंन्तर्मुखी व्यक्तित्व चार प्रकार के होते है - अन्तर्मुखी चिंतनशील, अन्तर्मुखी भावनाशील, अन्तर्मुखी संवेदनशील, अन्तर्मुखी सहजबोध प्रवृत्ती का व्यक्तित्व। बहिर्मुखी व्यक्तित्व के भी चार प्रकार होते है बहिर्मुखी चिंतनशील, बर्हिर्मुखी भावना प्रधान, बहिर्मुखी संवेदनशील, बहुर्मुखी सहजबोध प्रवृत्तिवादी व्यक्तित्व। इनमें से अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के दूसरे प्रकार अन्तर्मुखी भावनाशील व्यक्तित्व उपन्यास की नायिका स्मिता से संबंधित है। इस प्रकार के व्यक्तित्व में भावना तथा संवेगों का आधिक्य रहता है। अर्न्तमुखी व्यक्ति असामाजिक एकान्तप्रिय तथा भावुक होते है। कोहरे की नायिका 'स्मिता' में भी अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की ग्रंथि है। लेखिका ने उसके अन्तर्मुखी व्यक्तित्व को अनेक जगह पर न्याय दिया है। सुनील के तलाक देने पर इस शाप से स्मिता अन्तर्मुखी हो जाती है। सुनील

की बेवफाई ने उसके विश्वास पर पानी फेर दिया है। स्मिता दमन मनोभाव से ग्रस्त नजर आती है। परंतु सत्य को स्वीकार कर जीना भी सिख लेती है।

अपनी अतिसाधारण सहेली पुष्पी से जब स्मिता मिलती है तो उसके सुख की तुलना अपने सुख के साथ करती है तो उसमें हीनता ग्रंथि निर्माण होती है। वह अपने आपको पुष्पी की साधारणता के निकट पराजित पाती है। पुष्पी से मिलने के बाद वह टूट जाती है। पुष्पी के पति का पुष्पी के प्रति प्यार देखकर अपने आप में और भी तपन तथा टूटन महसूस करती है। और अकेली हो जाती है।

लड़की का पिता के प्रति ज्यादा प्यार **'इडिपस ग्रंथी'** का प्रतिक है। इस उपन्यास में स्मिता के आदर्श उसके पिता है जो मेजर है । बचपन से स्मिता उसके सुदर्शन रूप से गर्व करती आ रही थी । तलाक से अभिशप्त स्मिता को उसके पापा हमेशा सहारा देते है उसका मनोधैर्य बढ़ाते है। स्मिता के तलाक के कारण घर में जो वातावरण फैला हुआ था दीप्ति जी ने उसका वर्णन बड़ी मार्मिकता किया है।

स्मिता के माँ को हार्ट अटेक आया था इसलिए उनको स्मिता के तलाक की बात सुनकर कुछ होगा इस डर से उनसे वह बात सबने छिपाई थी, परंतु स्मिता के पापा ही उसे सबकुछ बता देते है। तब भय ग्रंथि से ग्रसित स्मिता के मना की दशा का संवेग दिखता है। अपने और अपने बेटे की भविष्य के बारे में चिंता युक्त भय स्मिता को और ग्रसित करता है। इस परिस्थिति से उबारने के लिए स्मिता अपने पहले प्रेमी प्रशांत से पुर्नविवाह करने की सोचती है ।

दमन की एक और स्थिति होती है जब किसी अंर्तबाधा से जकड़ी हुई प्रेरणा फिर किसी मिलती जुलती परिस्थिति में जगाई जाती है , तो व्यक्ति उसे जान जाता है, उसे पहले अनुभव की प्रेरणा के रूप में पहचान लेता है और उससे संबंधित संवेग अनुभव करता है , पर दमित प्रेरणा यदि समान

स्थिति में फिर से जगाई भी जाए तो व्यक्ति उसे जान या पहचान नहीं सकता । दमित प्रेरणा इच्छा या विचार अचेतन में धकेल दिए जाते है । ठीक स्मिता के साथ ऐसा ही हुआ। '' प्रशान्त भी उस एकान्त का लाभ उठाने से नहीं चुके थे । मैं उनकी आँखो की भाषा पढ़ रही थी... उस भाषा का अर्थ भी समझ रही थी.. उस भाषा के संकेतों में मेरे भविष्य के इंगित थे.... इन दिनों प्रशान्त की आँखो में मैने मेरे प्रति समर्पित या एक याचित, प्रतीक्षित कामना को बार बार स्पष्ट देखा है। "[५७] अंत में मन के अंर्तद्वंद्वों पर विजय पाकर स्मिता प्रशांत के साथ विवाह करने का निश्चय करती है ।

उपन्यास में दूसरा नारी पात्र स्मिता की माँ है जो अपने पति के अहम् की शिकार है। उनके साधारण रूप के कारण उसके पति दूसरी औरत के पास जाते है । इससे कुंठित वह अपना सारा ध्यान पूजा - पाठ, व्रत-उपवास में परिवर्तित करती है । अंत में वह अपनी सहनशीलता, कर्तव्यनिष्ठता के आधार पर अपने पति पर विजय पाने में सफल हो जाती है ।

दीप्ति जी ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री के अस्तित्व के संकट के बोध का एहसास कराया है । स्मिता के द्वारा तलाक शुदा स्त्री के आंतरिक संसार को उद्घाटित किया है । इसे उद्घाटित करने के लिए सम्मोहन, सहशब्द, स्मृत्यावलोकन पुनरावलोकन, चेतना प्रवाह आदि प्रणालियों का सहारा लिया है । बाह्यचित्रण की अपेक्षा आंतरिक दुनिया के हलचल की सूचना अधिक दी है । स्मिता के मन के अचेतन में कुंठाओं, दमित वासनाओं और अतृप्त भावनाओं को सूक्ष्मता से वर्णित किया है। भारतीय समाज में स्त्री के मन में पति की जो धारणा होती है वह तब दूर होती है जब उसे प्यार के बदले में धोखा, अविश्वास प्राप्त होता है। लेखिका ने स्मिता की टूटन को बड़ी सक्षमता से चित्रित किया है । इस उपन्यास से दीप्ति जी ने 'स्मिता' के माध्यम से सारी भारतीय नारी जाति को मानो यह संदेश देना

का प्रयत्न किया है कि एक से न बने तो अपने मन को खंबीर बनाकर दूसरे के बारे में सोचना चाहिए।

२.३.२ प्रिया :- 'प्रिया' उपन्यास में दीप्ति जी ने नारी की बिखरी मानसिकता को बड़ी खूबी के साथ अभिव्यक्त किया है। नारी अपनी नियति से अभिशप्त है। इस उपन्यास में तीन नारियाँ है प्रिया, सौदामिनी और चित्रा 'प्रिया' उपन्यास की नायिका है, 'सौदामिनी' प्रिया की माँ है और चित्रा प्रिया की बहन है। इसमें तीनों की भी लगभग एक ही नियति रही। पुरुष नारी को भोगकर चला जाता है।

इसतरह की नारी को वेश्या की कोटी में नहीं रखा जाता पर वह जिसतरह से बिखरती है उसे लेखिका ने इस उपन्यास में उजागर किया है ।

मनोविज्ञान में मन की प्रकृति, विकृतियों, दशाओं और क्रियाओं का विवेचन किया जाता है । व्यक्ति के अंर्तजगत में अनेक इच्छाएँ, अभिलाषाएँ उठती है । इसमें कई इच्छाएँ अपूर्ण रह जाती है और मनुष्य कुंठित हो जाता है । इस उपन्यास में नायिका प्रिया ऐसी माँ की बेटी है जो समाज में प्रतिष्ठित समझनेवाले नेता यशवंत जी की कामवासना का शिकार है । प्रिया की माँ सौदामिनी से उसके पिता विवाह तो कर लेते है लेकिन उसका इस्तेमाल आगे बढ़ने के लिए सीढ़ी की तरह किया जाता है । जान बूझकर उसे पराये मर्द के कमरे में अकेला छोड देते है। पढ़ी लिखी सौदामिनी पर मानसिक आघात होता है ।वह अपनी दो बेटियों के साथ भाग निकलती है और अपने पिताजी के साथ रहने लगती है परंतु उसके मन के घाव कभी नहीं भरते। हमेशा उसे दौरे पड़ते रहते है, बेहोश होती है ,वह विक्षिप्त होती है।

यशवंत जी के कामवासना का शिकार अनेक स्त्रियाँ थी और उनके नररूपी पशुदेह में स्त्री की भावना को कोई स्थान नहीं था। सौदामिनी प्रिया पर इस कलंक का साया भी नहीं पड़ने देना चाहती। वह अपने आप को मिटाकर भी प्रिया को कुछ अलग बनाना चाहती है । अपनी दमित इच्छाओं

को पूरा करने के लिए सौदामिनी जिस स्कूल में पढ़ती थी उसके स्कूल के प्राध्यापक उसका स्वीकार करने के लिए तैयार थे परंतु उनकी वह इच्छा अधूरी रह जाती है । परंतु सौदामिनी के द्वारा एक कटु सत्य दीप्ति जी ने सामने लाया है । ''हर नारी देह में प्रज्वलित हो उठता यौवन का यह ताप स्वाभाविक एवं निर्दोष ही होता है, प्रकृति की एक मांग देह वह निर्दोष अपराधी हो उठता है । गंगाजल सी पवित्र कुमारियाँ गन्दी नाली में परिवर्तित कर दी जाती है, उनकी देह मन और प्राणों के सौदे होते है ... वे बेची जाती है..... घर आँगन से लेकर कोठों तक अदृश्य कोडे मार मार कर नचवाई जाती हे 'सेक्स' के जिस गुनाह को पुरुष की स्वाभाविक दुर्बलता मानकर भुला दिया जाता है वही गुनाह यदि नारी कर बैठे तो वह कलंकिनी हो उठती है.....अक्षम्य अपराधिनी....। "[५८] ओर सौदामिनी के साथ भी ऐसा ही हुआ ।

फ्रायड द्वारा उद्घोषित 'काम' मनोग्रंथि का विश्लेषण दीप्ति जी ने इस उपन्यास के माध्यम से बड़ी सफलता से किया है । कामवासना से कुंठित सौदामिनी के मानसिक तथा शारीरिक अस्वास्थ का वर्णन लेखिका ने उपन्यास में जहाँ तहाँ किया है। प्रिया बहुतही सुंदर थी। यशवंत जी ने पहली बार उसे देखा तो वे मुग्ध हो गए परंतु उस नर पशु ने अपने बेटी प्रिया के सौंदर्य का इस्तेमाल भी अपने आप को बिझनेस मे आगे बढ़ाने के लिए किया। वे सौदामिनी को कहते है कि उन्होंने प्रिया के लिए योग्य वर ढूँढ लिया है। सौदामिनी दिवास्वप्न देखती है 'मेरी राजकुमारी सी बेटी को कोई राजकुमार ही ले जायेगा सुन नहीं रही है बेटी..... शहनाइयाँ बजने लगी है । और देख नहीं रही है ..... सफेद घोड़े पर सवार वह राजकुमार चल पड़ा है ....। "[५९]

फ्रायड के अनुसार स्वप्न का संबंध बाहय तथा आन्तरिक उद्दिपनों से नहीं बल्कि अचेतन मन से है ।अचेतन मन की इच्छाएँ ही स्वप्न में प्रत्यक्ष होती है । स्वप्न एक ऐसी मानसिक क्रिया है, जिस मे मनुष्य अपने जीवन की जटिल समस्याओं को काल्पनिक रुप से सुलझाने का प्रयत्न करता है। फ्रायड स्वप्न को कामना पूर्ति की एक युक्ति और नींद का संरक्षक मानता है। दीप्ति जी ने इस उपन्यास में 'स्वप्न' मनोग्रंथि का जगह जगह इस्तेमाल किया है। **नारमल एल.मन** के अनुसार ''स्वैरकल्पना स्वप्नों की प्रक्रिया का ही एक रुप है, जिसमें हम कल्पना में ही विविध कार्य करते है । मानवजीवन में वह महत्वपूर्ण कार्य करते है और दैनंदिन जीवन की कुंठाजनक परिस्थितियों में पलायन का एक मार्ग प्रस्तुत करती है। "[६०]

प्रिया के मन में भय ग्रंथि निर्माण उठती है जब वह अपनी माँ की अवस्था देखती है। इसलिए वह माँ जो चाहे वह करने को तैयार होती है। प्रिया अरूणा अहुजा का रिश्ता स्वीकार करती है, परंतु अरूण आहुजा भी अपनी अतृप्त कामवासना को मिटाने के लिए प्रिया से संबंध प्रस्थापित करता है, उसे रौंद डालता है, और उसे धोखा देखकर युरोप चला जाता है । प्रिया के पेट में अपना बच्चा छोड़ जाता है। प्रिया की मानसिकता इतनी बिखर जाती है कि वह अचेत हो जाती है। और कॉलेज के अपने प्रेमी की उसे याद आती है और अचेतन में गुनगुनाते लगती है । परंतु अपने आपको सँभालती प्रिया फिर से जी उठाती है । वह कॉलेज मे लेक्चररशिप करती है।

अगले पुरुष डॉ. मनसिज ठाकूर प्रिया की कुंठित जिंदगी में आते है । मनसिज के पार्श्व मे प्रिया को अपने मन में काम, घुटन तथा भय के मिश्रित भाव महसूस होते । उसे मनसिज के साथ बीतते क्षण जैसे सपने लगते और लगता कहीं सपना फिर टूट न जाएं । मनसिज के बार बार प्रपोज करने पर भी प्रिया का मन भयग्रंथि के कारण उसे स्वीकारने को

तैयार नहीं होता । उसकी मनोवस्था का वर्णन करते हुए दीप्ति जी ने लिखा है, ''प्रिया के चारों ओर काले मेघ थे..... उसकी अन्तहीन जैसी रात्रिके अन्धकार को और भी सघन बनाते मेघ...,. उन घुमडते मेघो के बीच विद्युत की कौंध ही नहीं तड़प को भो झेलती प्रिया किसी सवेरे की प्रतीक्षा कर रही थी जो समय के कदमों से चलकर स्वयं उसके निकट आयेगा उसके स्वयं के कदमों में तो अब कोई शक्ति, कोई विश्वास शेष नहीं था।"[६१]

मनसिज द्वारा भी प्रिया छली जाती है । मनसिज भी उससे शादी से पहले कामसुख लेता है । मनसिज की इस वृत्ति का वर्णन **डॉ देवेन्द शर्मा** के अनुसार इसप्रकार किया जा सकता है ''मानवीय वर्तन के मूल में जो प्रेरणाएँ होती है उनमें काम, प्रेरणा या यौन प्रेरणा मुख्य होती है जिसकी उचित तृप्ति होना आवश्यक है, परंतु माननीय जीवन सामाजिक, नैतिक आदि नियमों सें आबद्ध होने के कारण यौन प्रेरणा की स्वाभाविक संतुष्टि में बाधा उपस्थित हो जाती है, फिर व्यक्ति दमन का शिकार होता है। व्यक्ति वह अन्य वाम मार्ग से तृप्त करने का प्रयत्न करता है । ऐसे में उसका वर्तन विकृत हो वह असामान्य बन जाता है । इस प्रकार से आनंद की प्राप्ति यौन विकृति कहलाती है।"[६२] प्रिया की प्रतिक्षा में मनसिज अपनी दमित भावना ओं को उसके देह को पाकर तृप्त करवा लेता है। प्रिया की मानसिकता इतनी बिखर जाती है कि उसका विवाह के बंधन पर से का विश्वास ही टूट कर रह जाता है । वह शादी करने के बजाय अविवाहित ही रहना चाहती है । आत्मपीड़न तथा अकेलेपन का शिकार होती है।

प्रिया की बहन चित्रा **'हीनताग्रंथि'** की शिकार है । चित्रा प्रिया की बड़ी बहन है । दिखने में वह प्रिया से अति साधारण है । अपना अति साधारण दिखना ही चित्रा के मन में हीनता ग्रंथि निर्माण करती है ।

एडलर के सिद्धांत में हीनता ग्रंथि को महत्व दिया गया है । इसमें कहा गया है कि विद्रोह की भावना के पीछे हीनता ग्रंथि, काम दमन का परिणाम, महत्वकांक्षा आत्मप्रतिष्ठा की भावना प्रेरणा के रूप में काम करती है । चित्रा प्रिया से जलती थी क्योंकि वह उसके जैसी सुंदर नहीं थी। नाना और माँ का प्रिया के लिए ज्यादा प्यार देखकर वह और उद्दंड हो उठती थी ।

चित्रा के मन में यौवन के आने के साथ साथ काम भावना का आगमन होता है । वह गली के साधारण से लड़के सुरेश से छिप छिप मिलती है । चित्रा की कामभावना का वर्णन दीप्ति जी ने किया है '' धीरे धीरे चित्रा काजल की धार तीखी करना सीखती, गई, वेणी चुटीला लगाकर खूब लम्बी बना लेना भी पैसे चुराकर चाट खाना, सिनेमा देखना भी। चित्रा का यौवन मधु सा नहीं मद सा जागा था।"[६३] चित्रा अपनी माँ से जबान लड़ाती थी क्योंकि वह अपने रईस पिता के पास सुख, ऐश्वर्य भोगना चाहती थी । अपनी दमित वासनाओं को पाने के लिए चित्रा रमेश के साथ घर से भाग जाती है, परंतु कुछ ही सालों में उसे भी पुरुष के धोखे का सामना करना पड़ता है । वह अपने दो साल के बेटे के साथ अपनी माँ के पास लौट आती है ।

इस उपन्यास के माध्यम से दीप्ति जी ने नारी शोषण को विषय बनाकर अखिल नारी समाज को पुरूषों से संभालकर रहने की चेतावनी दी है। सौदामिनी, चित्रा जैसी नारियाँ अपनी नियति से हतबद्ध पुरुष के कामवासना का शिकार होती है । ऐसी नारियों को समाजदवारा स्वीकार नहीं किया जाता। संपूर्ण जीवनभर उन्हें कुंठाओं, प्रताड़नाओं, संकटों का सामना करते गुजारना पड़ता है। उनकी जिंदगी मानो उनके लिए अभिशप्त बन जाती है। चक्रव्युह में फँसी अभिमन्यू की तरह उनकी मानसिक

अस्वस्थता का कोई ठिकाना नहीं रहता । सचमुच औरत की नियति को स्वीकार कर यह मानना उचित होगा ''औरत को सोलह साल की पैदा होनी चाहिए और तीस साल की मर जाना चाहिए।"[६४] दीप्ति जी ने अपनी कुशल लेखनी से पुरुष द्वारा किए जाने वाले नारी शोषण के विषय को 'प्रिया' उपन्यास के माध्यम से नारी की अनेक मनोग्रंथिओं का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया है।

२.४ लघु उपन्यास 'वह तीसरा' के नारी का मनोविज्ञान - 'वह तीसरा' दीप्ति जी का बहुचर्चित लघुउपन्यास है। इसके अंर्तगत लेखिका ने पति-पत्नी के बीच पनपते अहम् का वर्णन किया है। नायिका रजिता को अपने अति सुंदर होने का 'अहम्' है। नायक 'संदीप' कुरूप होने पर भी रजिता प्रेम में अंधी होकर संदीप के प्रेम का स्वीकार करती है। संदीप में भी पुरुषत्व का अहम् है। शादी के कुछ दिनों बाद ही दोने में अनबन शुरु हो जाती है। दोनों एकदूसरे को चोट पहुँचाने का कोई भी मौका अपने हाथ से गँवाना नहीं चाहता। साथ साथ रहते हुए भी दोनों के संबंधों में रुखापन आ जाता है। उनके बीच के फाँसले बढ़ जाते है।

संदीप को फिजूल खर्चे करना पसंत नहीं हैं। रजिता के टैक्सी से जाने में उसे ऐतराज है। वह तांगे से जाना पसंद करता है। छोटी छोटी बातों में पैसों का हिसाब करना रजिता को अच्छा नही लगता। घर में कोई नही था न सास थी न ननद थी। फिर भी दोनों में खाने में क्या होगा ऐसी बातों पर अनबन होती है। विवाह के केवल दो महीने बाद ही रजिता को लगता कि कोई 'तीसरा' इन दोनों के बीच स्पष्ट हो उठा है। नीले प्रकाश से नहाए कक्ष में एक ही शय्या पर हमारे शरीर, हमारे धडकते मन, किसी कडवाहट से सिक्त होनें लगे थे। कौन उंडेल गया था वह कड़वाहट? उस नीले प्रकाश के

सम्मोहन को कौन तोड गया था? वही 'तीसरा' न, जो संदीप में और मुझमें एक जैसा प्रबल था हमारा अहं.. हमारा इगो.. हमारा स्वयं से प्यार।"[६५]

नायिका पढ़ी लिखी आधुनिक है। वह अपने अस्तित्व को घास-सा नगण्य नहीं समझती। वह सोचती है कि इस देश में पुरुष ने नारी को धर्म के नामपर अधिकार के नामपर या प्यार के नाम पर सदा सताया है। वह किसी हालत में अपने पति के सामने झुकना नही चाहती। दोनों के बर्ताव में औपचारिकता दिखाई देती है। दोनों एक दूसरे को परपीड़न देने का एक भी मौका हाथ से नही छोड़ना चाहता। परपीड़न देते हुए दोनों ही आत्मपीड़न का शिकार हो जाते है। रजिता अकेलेपन का शिकार होने लगती है। शादी को एक वर्ष पूर्ण होने लगती है। रजिता के अनुसार जिन होठों से वे रस देते थे, उन्ही होठों से विष उगलने लगे थे। रस से विष का वह विद्रूप शायद हर दंपति का सच होता है। शादी के बाद प्यार कम होने लगता है यह रजिता का मानना है। दोनों चाहते है कि वे एक दूसरे को समझने का प्रयास करे। दोनों एक-दूसरे पर आरोपन करते है इससे स्पष्ट होता है- ''संदीप कहता है - ओह रजिता! तुममें बहुत ईगो है'' संदीप अभी भी मुझे समेटे खडे थे। ''और तुममें नही है?' मेरी आसुओं से भीगी दृष्टि वक्र हो उठी। संदीप की बाँहे शिथिल हो गयी। फिर हमारे बीच समय ठहर-गया-मुग्ध होकर नहीं, निर्मम होकर।"[६६]

रजिता संदीप पर ऑफिस के मिस रुबी के साथ कुछ अफेअर्स होने का संशय करती है। जब की सच्चाई वह नहीं होती। दीप्ति खंडेलवाल ने इस लघु उपन्यास के माध्यम से आधुनिक पति-पत्नी के बीच पनपते अहम् का यथार्थ वर्णन किया है। रजिता के मनकी स्थिति, परपीड़न, आरोपन आदि मनोवैज्ञानिक पहलु दीप्ति जी ने सफलता ये स्पष्ट किए है।

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य के नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने बाद यह निष्कर्ष लगाया जा सकता है कि, नारी की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषणात्मक रूप से चित्रण करने में लेखिका ने शत प्रतिशत सफलता पाई है। नारी के संत्रास, घुटना, उपेक्षा, अवहेलना तथा कुंठा को वाणी दी है। मानव की प्रत्येक समस्या का हल ढूँढ़ने में मनोवैज्ञान समर्थ है। मनोविज्ञान मनुष्य के मन की जटिलताओं का अध्ययन वैज्ञानिक रीति से कर के मनुष्य का जीवन अधिक सरल, अधिक सुखमय बनाने का प्रयास करता है और मनोविज्ञान विश्वशांति का प्रेरणास्त्रोत है।

२.५ भारतीय पुरुषों की मानसिकता

नारी मनोविज्ञान के इस अध्याय में भारतीय पुरुषों की मानसिकता का अध्ययन भी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि पुरुषप्रधान इस भारतीय संस्कृति में स्त्री की भूमिका पुरुषों की आवश्यकता नुसार पुरुषों द्वारा ही निश्चित होती आई है । पुराने जमाने में सारी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ पुरुषों पर भी । स्त्री को चुल्हा, चौका, बर्तन, बच्चा इन दायरों में ही रहना पड़ता था, परंतु आधुनिक युग में सुखमय जीवन जीने के लिए पुरुष स्त्री का सहारा लेने लगा जिससे स्त्री को कामकाजी बनकर घर के बाहर जाना पड़ा । घर और बाहर दोनों जगह तनावों का शिकार होते स्त्री को पुरुष के मनमाने स्वभाव का भी शिकार होना पड़ता है । साधारणतः भारतीय पुरुषों की मानसिकता होती है कि नारी जब तक पुरुष की अनुचारिणी है तब तक पुरुष उसे स्वीकार करता है । नारी की कोई इच्छा, कोई भावना पुरूष के लिए महत्व नहीं रखती । अपने अस्तिव, अधिकारों की माँग जब स्त्री करती है तो वह पुरुष के नजरों से गिर जाती है । पुरुषी अहंकार का शिकार हो जाती है । बदले मे उसे असहाय मनस्ताप सहना पड़ता है ।

पुरुषों द्वारा शोषित आज की नारी पुरुष के इसी मानसिकता के प्रति अपना विद्रोह प्रकट करती दिखाई देती है । अपनी खुद की पहचान बनाने के लिए संघर्षरत दिखाई देती है, परंतु जाने अनजाने यह सब करते करते किसी दूसरे पुरुष का सहारा लेने लगती है । संशय की आग में उसका वैवाहिक जीवन बिखर जाता है । नैतिक मूल्यों को दाँव पर लगाकर दोनों पति पत्नी विवाह की पवित्र संस्था का अपमानित कर शारीरिक तथा मानसिक प्यास बुझाने की कोशिश में पराई स्त्री या मर्द से अनैतिक संबंध प्रस्थापित करते दिखाई देते है ।

समकालीन महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से आधुनिकता के शिकार ऐसे नारी पुरुषों के संबंधो में मननुटाव, तलाक, दांपत्य जीवन में असंतोष, नारी की विवशता आदि महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए है। दीप्ति खंडेलवाल ने अपने साहित्य में आधुनिकता का बोध करते हुए पुरुषों की मानसिकता के विविध पहलू पाठकों के सामने लाकर रखे है। जिसका नारी के मन पर ही नहीं नारी के संपूर्ण जीवन पर असर पड़ता दिखाई देता है ।दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों के पुरुषों का वर्गीकरण इसप्रकार किया जा सकता है

२.५.१ दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों के पुरुष

१. **पत्नी की भावनाओं को न समझनेवाला पुरुष** (आत्मकेंद्री) रवि, सुरेश, राजेश, शेखर, संदीप, सोमेश, आनंद

२. **भीरु - परंपरावादी पुरुष** - अविनाश, रविकांत, योगेश

३. **अत्याचारी पुरुष** - गोविंद, बनवारी, कलुआ, राजा बाबू, नागन, रज्जन

४. **अप्रामाणिक पराई औरत के साथ संबंध रखने वाला पुरुष** - मनु, रंजित, रोहित, राजन, गोविंद, राजा बाबू, बनवारी

५. **मध्यवर्गीय आर्थिक अभाव से ग्रसित पुरुष** - महेंद्र, मिस्टर व्यास, जगन, सुवीर, मनोहर जोशी, स्वरुप मिश्रा, विघटन का नायक शंकर पंडित जी, हरिहर बाबू , गुप्ता जी, बाबू जी

६. **समझदार और आदर्श पुरुष** - देवेश, धोबी इब्राहीम

७. **सीढ़ी के रुप में पत्नी का उपयोग करनेवाला पुरुष** - राकेश, राजेंद्र

८. **अमीर पत्नी का गरीब पति** - इंद्रनाथ

९. **विकलांग पुरुष** - लाला बाबू

१. **पत्नी की भावनाओं को न समझनेवाला आत्मकेंद्री पुरुष -** दीप्ति जी कहानियों में 'क्षितिज' कहानी का नायक रवि, 'एक पारो पुरुवैया' कहानी के सुरेश, 'ये भी कोई गीत है' के राजेश, शेखर, 'वह तीसरा' लघु उपन्यास का नायक संदीप 'अस्वीकार' के सोमेश 'तपिश के बाद' के आनंद इ पुरुष पात्रों मे अहम् भाव की अधिकता है । अपने स्वाभिमान के आगे पत्नी की कोमल भावनाओं की उनकी नजरों मे कोई कीमत नही दिखाई देती ।

२. **भीरु परंपरावादी पुरुष :-**

'प्रेत' कहानी का नायक 'अविनाश' 'कायर' के योगेश, एक और सीता के 'रविकांत' इ. पात्र परिवार मे माँ के सर्वाधिकार को मानते हुए अपनी ब्याहता पत्नी के प्रति अन्याय से पेश आते नजर आते है।

३. **अत्याचारी पुरुष :-**

'एक अदद औरत' मे सीता के पति गोविंद, 'प्रेम पत्र' का कलुआ, 'सुख' कहानी की 'बुट्टो बुआ' के पति 'राजा बाबू' , 'सती' कहानी का नागन, 'चंदा की जोत' का बनवारी अपनी पत्नी को मारते पीटने, गालियाँ देते चित्रित किए गए है।

४. **अप्रामाणिक पराई स्त्री के साथ संबंध रखनेवाला पुरुष,** 'शेष अशेष ' का 'मनु', 'देह की सीता' के मेजर रंजित, मेजर सहाय, 'संधिपत्र' के रोहित 'देह से परे' का राजन, 'एक अदद औरत' के गोविंद ,'युगपुत्री' के बॉस, 'सुख' के राजा बाबू 'चंदा की जोत' का 'बनवारी' सभी पात्र अपनी पत्नी के होते हुए भी अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए परायी स्त्रियो के साथ संबंध रखनेवाले पुरुष के रूप में दीप्ति खंडेलवाल ने चित्रित किए है ।

५. **मध्यवर्गीय आर्थिक अभाव से ग्रसित पुरुष** - 'मूल्य' कहानी के शंकर पंडितजी, 'परिणति' के महेंद्र, 'युद्धरत' के मिस्टर व्यास, 'जिजीविषा' का जगन, 'कटु सत्य' का सुवीर, 'जहर' के हरिहर बाबू, 'एक और कब्र' के 'गुप्ता जी', 'धूप के अहसास' का शिरिष, 'अभिशप्ता' के मानो के पिता, 'बीच का आदमी' के जोशी जी 'सलीबपर' के बाबूजी 'देहगंध'के मनोहर जोशी, 'युगपुत्री' के पिताजी इ. सभी पात्र आमदनी अठन्नी खर्चा रुपय्या के शिकार नजर आते है। आर्थिक असमर्थतता से जुड़ी उनकी कुंठितावस्था का वर्णन दीप्ति जी ने बखूबी किया है ।

६. **समझदार और आदर्श पुरुष :-** 'मासूम' के देवेश तथा 'दुल्हन' का धोबी इब्राहीम इ. को लेखिका ने समझदार और आदर्श पति पुरुष के रूप में चित्रित किया है ।

७. **सीढ़ी के रुप मे पत्नी का उपयोग करनेवाला पुरुष** 'जमीन' कहानी में नैरेटर के पति 'राकेश' तथा 'कोशिश' मे कहानी के राजेंद्र इ. पात्र बिझनेस में उन्नति प्राप्ति के लिए नैतिकता को दाँव पर लगाकर अपनी पत्नी का इस्तेमाल सीढ़ी की तरह करते दिखाई देते है ।

८. **'अमीर पत्नी का गरीब पति :-**'ये भी कोई गीत है ' के इंद्रनाथ हजारो कमाने वाली दीपाली के ५०० रुपये कमाने वाले प्रोफेसर पति हे ।

पत्नी के आर्थिक मजबूती के कारण उसके अहम् से ग्रसित इंद्रनाथ की कुंठा का वर्णन दीप्ति जी ने बड़ी मार्मिकता से किया है ।

९. **विकलांग पुरुष :-**'चार दिन और' के लाला बाबू के माध्यम से विकलांग पुरुष की मानसिकता का दीप्ति जी ने बड़े अनोखे ढंग से वर्णित किया है ।

२.५.२ दीप्ति खंडेलवाल के 'उपन्यास' के पुरुष

अप्रमाणिक, पराई स्त्री के पास जानेवाले पुरुष दीप्ति जी के उपन्यासों के पुरुषों की मानसिकता अप्रमाणिक तथा पराई स्त्री के पास जाने की दिखाई देती है। अपने 'अहम्' की रक्षा हेतु ये पुरुष अपनी पत्नी को परपीड़न देकर पराई औरतों से शारीरिक संबंध रखते दिखाई देते है ।

'कोहरे' उपन्यास में 'सुनील' प्रमुख पुरुष पात्र है जिसकी विचित्र मानसिकता के कारण 'स्मिता' को अनेक मानसिक तनावों का सामना करना पड़ता है । स्मिता अनजाने में सुनील को पूछे बिना रेडिओ पर गाती हे तो उसके अहम् को ठेंस पहुँचती है । वह स्मिता को अपने में ही जकड़कर रखना चाहता है । स्मिता की भावनाओं से खेलता है । सुनील की स्वार्थी मानसिकता का यह प्रमाण है सुनील कहता है, ''बस मैं नहीं चाहता कि तुम पब्लिक प्रोगाम दो । यदि गाना है तो सिर्फ मेरे लिए गाओ..... और किसी के लिए नही? "[६७]

अपने 'अहम्' को कायम रखते हुए सुनील उसके कॉलेज की मिस इरा घोष से शारीरिक संबंध रखता है । स्मिता के प्रतिकार करनेपर निर्दयता से स्मिता की भावनाओं को चकनाचुर करके उसे 'तलाक' का रास्ता दिखाता है । अपनी दमित कामवासना की पिपासा पूर्ण करने के लिए मिस घोष से शारीरिक संबंध रखकर स्मिता को परपीड़न का शिकार बनाता है । अपने 'अहम्' की रक्षा हेतु स्मिता पर ही चरित्र हीनता के आरोप लगाता है ।

'कोहरे' उपन्यास में स्मिता के पिता दूसरे पुरुष पात्र है जो अपनी पर्सनॅलिटी के कारण गर्वित है । खुद के आगे अपनी पत्नी श्यामा को कुछ भी नहीं समझते । अपनी पत्नी को गँवार अनपढ़, बदखूरत यें उपमाएँ देकर अपने मित्र डॉ. माथूर की पत्नी मनोरमा से अपनी कामपिपासा को तृप्त करते है अंत मे अपनी पत्नी की सहनशीलता के आगे पराभूत होते है । परपीड़न देने के प्रयास में आत्मपीड़न का शिकार हो जाते है । उपन्यास का तीसरा पुरुष पात्र 'निशिथ' है जो स्मिता का भाई है । अपनी पत्नी से झगड़ा होने पर वह अपने माँ बाप के पास वापस आता है। आत्मपीड़न की अग्नि में खुद को शराब के नशे में डूबो लेता है । परंतु बाद में पुर्नविवाह का मार्ग अपनाता है।

'प्रिया' उपन्यास में 'यशवन्त' जी पुरुष पात्र की मानसिकता का वर्णन दीप्तिजी ने किया है। यशवन्त जी अपनी काम पिपासा को तृप्त करने के लिए अपनी बेटी की उम्र की लड़की से शादी का प्रस्ताव रखने के लिए भी नहीं कतरते। इतना ही नही सौदामिनी को भोगकर उसका इस्तेमाल अपने बिझनेस को आगे बढ़ाने के लिए करते है। अपनी नीच मानसिकता का दर्शन देते हुए अपनी सुंदर बेटी प्रिया का भी इस्तेमाल खुद को आगे बढ़ाने के लिए करते है। अनेक पराई औरतों से शारीरिक संबंध रखते है।

दूसरा पुरुष पात्र प्रिया के नाना 'रविशंकर' है। रविशंकर आर्थिक अभाव तथा शारीरिक असमर्थता के कारण हतबद्ध होत हुए अपनी बेटी तथा अपनी नातिनों पर होते अत्याचार को सिर्फ देखने और सहने के सिवा कुछ नही कर पाते। परंतु जगह जगह अपनी बेटी तथा नातिन प्रिया का मनोधैर्य बढ़ाने की कोशिश करते है।

'प्रतिध्वनियाँ' उपन्यास में नीलकांत पुरुष पात्र है जो अपनी पत्नी अचला के होते हुए शुभ्रा, जया तथा मोतीबाई नामक वेश्या से प्रेमसंबंध

रखता है। परंतु किसी को भी पूरी तरह पा नहीं सकता और आत्मपीड़न का शिकार होता है।

इसप्रकार दीप्ति जी के उपन्यासों में ज्यादातर पुरुषापात्र अप्रमाणिक तथा पराई स्त्री के पास जानेवाले पुरुष के रुप में चित्रित किए है ।

समाहार :-

उपर्युक्त सभी बिंदुओं को देखने के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि दीप्ति खंडेलवाल ने अपने अनुभवों को अपनी मानसिक उथल पुथल को, अपनी रचनाओं को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से परखा है। फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांतो के अनुसार नारी की मानसिक क्रियाएँ जैसे कुंठा, दमन, अहम्, भय, कामभावना, परपीड़न, आत्मपीड़न, हीनता ग्रंथि, इडिपस ग्रंथि, आदि का मनोविश्लेषणात्मक ढंग से विवेचन सफलता से किया है। स्त्री पुरुष अंतर्मन की गहराइयों का बड़ी बारिकी से अध्ययन किया है। नारी की वैयक्तिक समस्याओं को सामाजिक समस्या का रुप देने का प्रयास किया है । दीप्ति जी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर नारी पात्रों का चित्रण करने में शतप्रतिशत सफल रही है । उन्होंने मनोवैज्ञानिक विषयों को अपनी भाव भूमि से निकाल अपनी रचनाओं में उतारकर अपना अलग परिचय दिया है ।

यह भी निश्चित है कि आधुनिक मनोविज्ञान मानवी समस्याओं का हल ढूँढ कर, मानव के जीवन में प्रगति और उन्नयन का महान मोड उपस्थित कर सकता है । तथा आधुनिक मनोविज्ञान संपूर्ण मानव जाति के सर्वांगिण विकास की ओर अग्रेसर है ।

****

संदर्भ- : द्वितीय अध्याय

१) डॉ. प्रसाद जयशंकर, चित्राधार पृ. १४६

२) डॉ. शिंदे जयश्री, मनोविज्ञान के कटघरे में हिंदी कहानी पृ. १०

३) डॉ. माथुर एस.एस, सामान्य मनोविज्ञान पृ. ५

४) वही पृ.७

५) वही पृ. ८

६) मुक्तिबोध 'मानव जीवन स्त्रोत की मनोवैज्ञानिक तह, शीर्षक आलेख से

७) भाटिया हंसराज, असामान्य मनोविज्ञान, पृ. २५२

८) सूरतलाल राम तथा मिश्रा राम गोपाल, साधारण मनोविज्ञान पृ. १८

९) डॉ. सुजाता, हिंदी उपन्यास के असामान्य चरित्र पृ. १७

१०) डॉ. उपाध्याय देवराज, साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन पृ.

११) डॉ. चामले पद्मा, आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता पृ.

१२) डॉ. वर्मा धीरेंद्र, हिंदी साहित्य कोश, पृ. ८६

१३) डॉ. सौ. पाथरीकर मेहरदत्ता, साठोत्तरी हिंदी महिला कथा लेखन में आधुनिकता का बोध पृ. २१

१४) डॉ. शिंदे जयश्री, मनोविज्ञान के कटघरे में हिंदी कहानी पृ. ४४

१५) खंडेलवाल दीप्ति, कडवे सच-क्षितीज, पृ.१२

१६) वही, पृ १४

१७) वही पृ. १६

१८) वही पृ. १६

१९) खंडेलवाल दीप्ति, कड़वे सच-एक पारो पुरवैया पृ. ४७

२०) ----------, कड़वे सच-ये भी कोई गीत है पृ. ७९

२१) वही पृ. ८५

२२) ----------, वह तीसरा-संधिपत्र पृ. ५०

२३) ----------,वह तीसरा-प्रेत पृ.६६

२४) वही पृ. ६८

२५) खंडेलवाल दीप्ति, धूप के अहसास-एक और सीता पृ.९०

२६) ----------,धूप के अहसास-अस्वीकार पृ.३४

२७) डॉ. वेंकटश्वर एम, हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार, पृ. २०२

२८) खंडेलवाल दीप्ति, नारी मन-अर्थ पृ. ४२

२९) ----------, नारी मन-दुल्हन पृ. ७१

३०) वही पृ. ७४

३१) ----------, नारी मन- ये दूरियाँ पृ. १५६

३२) ----------, दो पल की छांह, एक अदद औरत, पृ.२७

३३) ----------, कड़वे सच-देह की सीता, पृ. ६३

३४) वही पृ.६५

३५) ----------, कड़वे सच - विषपायी, पृ ११५

३६) डॉ. मानधने धनराज, हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास पृ. ३०३

३७) खंडेलवाल दीप्ति, धूप के अहसास- हव्वा, पृ.५२

३८) एलिस हेवलॉक; अनुवाद मन्मथ गुप्त, यौन मनोविज्ञान पृ. १८७

३९) खंडेलवाल दीप्ति, धूप के अहसास - हव्वा पृ.५२

४०) ----------,धूप के अहसास - निर्बंध पृ. ९३

४१) ----------,सलीबपर - डूबने से पहले, पृ. १११

४२) ----------, नारी मन - सती, पृ. ७७

४३) ----------, नारी मन - बेहया, पृ १०

४४) ----------, धूप के अहसास-आत्मघात, पृ. ७६

४५) वही पृ. ७९

४६) संपा. नवलजी, नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. १३८६

४७) अनु. वेदालंकार देवेन्द्रकुमार, सिगमंड फ्रायड; फ्रायड मनोविश्लेषण, पृ.४५

४८) खंडेलवाल दीप्ति, धूप के अहसास-रीतते हुए, पृ. ६४

४९) ----------,धूप के अहसास - मरती हुई गौरेया पृ. २७

५०) ----------, सलीब पर-अभिशप्ता, पृ. ७१

५१) ----------, दो पल की छांह, पृ. ९

५२) वही. पृ. ९

५३) ----------, नारी मन-सुख पृ. १२२

५४) ----------, नारी मन - कोई जमीन नहीं पृ. ७६

५५) दुधनीकर एम. एस., प्रसाद साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन, भूमिका से

५६) डॉ. मानधने धनराज , हिंदी के मनोविज्ञानिक उपन्यास, पृ. २७९

५७) खंडेलवाल दीप्ति, कोहरे, पृ. ९४

५८) ----------,प्रिया, पृ. ११३

५९) वही पृ. १२२

६०) मन नारमल एल., अनु शाह आत्माराम, मनोविज्ञान: मानवी समायोजन के मूल सिद्धान्त पृ. १८६

६१) खंडेलवाल दीप्ति, प्रिया पृ.१७४

६२) शमा देवेंद्र, फ्रायड मनोविश्लेषण और साहित्य लोचन पृ. ७२

६३) खंडेलवाल दीप्ति, प्रिया पृ. १७४

६४) संपा. मंत्री गणेश, धर्मयुग नारी विशेषांक मार्च १९९०, आमुख कथा-औरत क्या महज जिस्म है

६५) खंडेलवाल दीप्ति, वह तीसरा, पृ. १७

६६) वही पृ. २५

६७) ----------, कोहरे, पृ. २३

तृतीय अध्याय

दीप्ति खंडेलवाल के नारी पात्रों का अन्तर्द्वंद्व

❊ तृतीय अध्याय ❊

दीप्ति खंडेलवाल के नारी पात्रों का अर्न्तद्वंद्व

३.१ अर्न्तद्वंद्व का स्वरूप

आधुनिक जीवन में व्यक्ति घुटन, कुण्ठा, निराशा, भय, संत्रास, पीड़ा, व्यथा, अकेलापन का शिकार है । सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे सामाजिक बंधनों को स्वीकार कर अपना कार्य करना पड़ता है परंतु कार्य करते वक्त उसका अर्न्तमन सोचता कुछ और है और असल में वह करता कुछ और है। उसके मन में द्वंद्वात्मक स्थिति निर्माण होती है। **डॉ. मंजुला के संशोधनानुसार** ''मानव मन अनेक कठिनाइयों, जटिलताओं, विषमताओं और दुरुहताओं से अनुप्रणित रहता है। मन ही संघर्ष का युद्ध स्थल होता है। उसमें तर्क वितर्क की शक्ति होती है, क्रिया प्रतिक्रिया घात प्रतिघात क्रियाशील रहता है । लेकिन मन की विषमताएँ, असंगतियाँ और जीवन के उतार चढ़ाव कौनसे प्रेरणा स्त्रोत से प्रेरित होते है व निर्देशित है, जो मनुष्य को निरंतर लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्षशील, क्रियाशील बनाए रखते है, शायद प्रेरणास्त्रोत का बिन्दु द्वंद्व ही है, जो मानव मन को निरन्तर आलोडित करता रहता है और लक्ष्य की प्राप्ति अप्राप्ति के प्रयत्न में अग्रसर करता रहता है।"[१]

द्वंद्व शब्द का अंग्रेजी अर्थ **'conflict'** है। बृहत अंग्रेजी हिंदी कोश के अनुसार conflict का अर्थ 'संघर्ष, विरोध, कलह, विसंवाद, विषत्ति, अर्न्तविरोध, झगड़ा, प्रतिद्वंद्विता"[२] इसतरह से दिया गया है।

हर व्यक्ति की कुछ इच्छाएँ , आवश्यकताएँ होती है परंतु व्यक्ति की हर इच्छा पूरी हो, यह असंभव है। अनुकुल परिस्थिति में इच्छाएँ पूरी हो जाती है लेकिन आवश्यकताओं को प्रतिकूल परिस्थिति मिलने पर व्यक्ति

को दमन की स्थिति से गुजरना पड़ता है और जब दमन भी सीमा पार कर जाता है तो व्यक्ति तनाव की स्थिति से गुजरता है और कभी कभी वह विद्रोही व द्‌वंद्‌व बन जाता है। मानव चरित्र की समस्त प्रवृत्तियों
की व्याख्या फ्रायड मनोविश्लेषण के अनुसार चेतन, अवचेतन के संघर्ष के रूप में की जा सकती है।

Dictionary of Education' में Goods के अनुसार "A painful or unhappy state of consciousness resulting from a clash or contest of inchmpatiable desire, aims, drives" "[३]

मनुष्य की सहज प्रवृत्ति होती है वह अपने जीवन में सुख संतोष, शान्ति, आनन्द प्राप्त करे और इन्हे पाने के प्रयत्न मे उसे कभी कभी संघर्ष कलह, दुविधा, द्‌वंद्‌व का सामना करना पड़ता है। द्‌वंद्‌व के लिए दो विरोधी पक्ष अनिवार्य है पर ये दोनों कभी कभी एक ही स्थिति में समा जाते है। यह एकपक्षीय द्‌वंद्‌व के वल एक विचार या भावना मात्र होता है क्योंकि द्‌वंद्‌व केवल भावनाओं में अर्न्तर्निहित होता है। ऐसी स्थिति में प्रत्यक्षतः भले ही दो विराधी तत्व नहीं होते परंतु मन में दो विरोधी विचारोंकी टकराहट होती है इस स्थिति को ही 'अर्न्तद्‌वंद्‌व ' कहा जा सकता है।

A Dictionary of social sciences: Julius Gould William के अनुसार " Conflict may be defined as a struggle over values and claims to scarce status power and resources in which the aims of the opponents are to neutralize injure on eliminate their rivals. "[४]

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से आन्तरिक इच्छाओं, अभिलाषाओं व उपलब्धियों की प्रतिकूलता में संवेगात्मक तनाव से उत्पन्न विरोधी स्थिति द्‌वंद्‌वमयी स्थिति होती है। इस स्थिति में व्यक्ति या तो अपनी इच्छाओं का दमन कर

लेता है या इच्छाओं का दमन असंभव होने पर मन के अंर्तद्वन्द्व का शिकार हो जात है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में अनेक नारी पात्र इस स्थिति से गुजरते दिखाई देते है।

A dictionary of psychology में confilict को " opposition between contradictory impulses or wishes, as rule producing emotional tension, often highly disagrreable, leading, according to psychoanalytic therories, to repression of one of the impulse"[५] से व्याख्यायित किया गया है स्पष्ट है कि द्वन्द्व के लिए दो विरोधी तत्वों का होना आवश्यक है।

३.२ द्‌वंद्‌व के मुख्य रूप

द्‌वंद्‌व के मुख्यतः दो रूप है

१. बाह्यद्‌वंद्‌व २. मनोद्‌वंद्‌व

१. बाह्य द्‌वंद्‌व में व्यक्ति को कभी समाज से विद्रोह करना पड़ता है, कभी परिवार से तो कभी आर्थिक व्यवस्था से । दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी पात्रों का पारिवारिक द्‌वंद्‌व, सामाजिक द्‌वंद्‌व, अस्तित्व संबंधी द्‌वंद्‌व, स्त्री पुरुष के संबंधो में द्वन्द्व के प्रकार नजर आते है।

२. मनोद्‌वंद्‌व - व्यक्ति को जीवन के अनेक मोडों पर तरह तरह के द्वन्द्वो का सामना करना पड़ता है साथ ही वह अपने मन में उठी दो विरोधी भावनाओं के कारण भी संघर्षरत हो उठता है, उसे ही अर्न्तद्‌वंद्‌व या मानसिक द्‌वंद्‌व कहा जा सकता है। व्यक्ति के मन में अनेक विचार, भावनाएँ, इच्छाएँ होती है और उन इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश में वह विवश होता है। अतः व्यक्ति का मन बाहय स्थितियों और अपनी इच्छाओं के मध्य युद्‌ध स्थल बना रहता है। और यही कारण मानसिक द्‌वंद्‌व का है। व्यक्ति का अहम् उसकी इच्छाएँ, महत्वकांक्षाएँ किसी न

किसी रूप में सामाजिक मान्यताओं के आडे आती रहती है जिसके कारण उसके मन में विफलता से अंर्तद्वंद्व पनपने लगता है। व्यक्ति चाहता कुछ और है परंतु करता कुछ और है व्यक्ति का अन्तस द्वंद्वग्रस्त होता है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों की नायिकाएँ इसी मनोद्वंद्व में उलझी दिखाई देती है। कभी वे वैयक्तिक द्वंद्व में उलझी है तो कभी अतृप्त काम संबंधी द्वंद्व में तो कभी हीन भावना उनके मन में अन्तद्वंद्व की स्थिति पैदा करती सी नजर आती है।

३.२.१ बाह्यद्वंद्व

बाहय द्वंद्व के अंतर्गत पारिवारिक द्वंद्व, सामाजिक द्वंद्व, आर्थिक द्वंद्व अस्तित्व सम्बन्धी द्वंद्व, स्त्री पुरुष के सम्बधों में द्वंद्व आते है। उनका संक्षिप्त में विवरण इस प्रकार है।

३.२.१.१ सामाजिक द्वंद्व- व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। व्यक्ति और समाज का अटूट सम्बन्ध होता है। समाज में रहते हुए व्यक्ति परंपराओं को स्वीकारता है परंतु विषम परिस्थितियों में व्यक्ति द्वंद्वरत होता है। समाज और आदर्शों के प्रति विद्रोही हो उठता है। समकालीन कथाकारों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक द्वंद्व और विद्रोह को सही परिप्रेक्ष्य में अंकित किया है। दीप्ति खंडेलवाल के निम्नांकित नारी पात्र सामाजिक द्वंद्वरत दिखाई देते है -'बेहया' की नायिका चंदा ,'भूख' की नायिका रधिया, 'चंदा की जोत' की भागवती अपने ऊपर होने वाले अन्याय के प्रति विद्रोह करती दिख पड़ती है।

३.२.१.२ पारिवारिक द्वंद्व - आधुनिक परिवेश में संयुक्त परिवार का स्थान लघु परिवार ने लिया है। संयुक्त परिवार में दरारे आ गई है पिता पुत्र, माँ बेटी, भाई बहन, भाई - भाई, सम्बन्धों में भावत्मकता नष्ट होती चली जा रही है। यहाँ तक कि पति पत्नी के सम्बन्धों में भी दरारे आते दिख पड़ती है ।दीप्ति जी के कथा साहित्य में पारिवारिक द्वंद्व अनेकानेक रूपों में

उभरा है। पारिवारिक द्वंद्व में व्यक्ति के संबंधों में इतना खोखलापन है कि वे एक दूसरे को केवल सहते रहते है। 'एक अदद औरत' की 'सीता', 'प्रेत' की नायिका 'नीलिमा', 'एक और सीता' की नायिका 'मधु' परिवार में सास के कारण द्वंद्व रत दिखाई देती है। 'वह' कहानी के नायक नायिका 'ये भी कोई गीत है' के 'इंद्रनाथ', 'दीपाली', 'प्रेम पत्र' के 'लाखी कलुआ' इस प्रकार द्वंद्व रत दिखाई देते है।

३.२.१.३ आर्थिक द्वंद्व- आधुनिक परिवेश में औद्योगिकता का शिकार सबसे अधिक मध्यवर्ग में हुआ है। धनाभाव के कारण मध्यवर्ग अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाता। जिससे वह कुण्ठाओं से ग्रसित होता है। आर्थिक विषमता व्यक्ति में निराशा और क्रोध उत्पन्न करती है जिससे व्यक्ति अपने अन्तस् में तो द्वंद्व होता ही है और साथ ही बाहय स्तर पर भी विद्रोही हो जाता है। अर्थ के अभाव में व्यक्ति का जीवन कलह पूर्ण, निराशामय ऊब भरा तथा अशान्त बन जाता है। दीप्ति खंडेलवाल के अनेक कहानियों में मध्यवर्ग की नारी अर्थाभाव से द्वंद्व रत दिखाई देती है जैसे 'विघटन' कहानी के नायक की पत्नी 'विषपायी' कहानी के लड़के की माँ अर्थाभाव के कारण चीखती, चिल्लाती, चिड़चिड़ाती और बच्चों को पीटती हुई नजर आती है।

३.२.१.४ अस्तित्व सम्बन्धी द्वंद्व - समकालीन तथा स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में अनेकानेक जगह व्यक्ति अपने खुद की पहचान के लिए संघर्षशील दिखाई देता है। **डॉ. सुमन मेहरोत्रा के संशोधनानुसार** ''आज के व्यक्ति के लिए धर्म में कोई आस्था नहीं है , सामाजिक मूल्य मिथ्या सिद्ध हो चुके है नैतिकता के प्रति एक विद्रुप भाव है। आज वह केवल अपनी निजता की चेतना और अस्तित्व की पहचान में व्यस्त है। सब ओर से कटकर उसका दायरा संकुचित हो गया है। यही निर्विकार और निरासक्त

स्थिति ही आधुनिक द्वंद्व की आधार शिला है। "[६] यह कहना उचित होगा कि अपने स्वार्थ तथा इगो को सुरक्षित रखने के प्रयास में व्यक्ति अपने अस्तित्व के प्रति सजग रहता है और अपने परिवेश से भी संघर्षरत रहता है। दीप्ति जी के साहित्य में :- तपिश के बाद की सुमी, 'निर्बध' की अनिता, कोहरे उपन्यास की 'स्मिता' इस प्रकार के द्वंद्व में उलझी दिखाई पड़ती है।

३.२.१.५ . राजनैतिक द्वंद्व- आज हम देखते है कि राजनीति ने सारे समाज को जकड़कर रखा है। राजनीति में अनेक नेताओं का स्वार्थ प्रियता, पद लोलतुता और आचरण हीनता का रास्ता दिखाया है। दीप्ति खंडलेवाल की एक कहानी 'अनारकली' मे दो प्रेमी नेता बनने पर किसतरह द्वंद्वरत होते है इसका चित्रण खूबी से किया गया है।

३.१.१.६. स्त्री पुरुष सम्बन्धों में द्वंद्व - बदलते समय के साथ आज की नारी अपने खुद के प्रति सजग है। अपने ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार को वह अब चुपचाप सहन नहीं करती बल्कि उसका तीखा विद्रोह करती है। अतः आज हम देखते है कि आज की नारी पत्नीत्व के बन्धनों के प्रति विद्रोह करती है द्वंद्वरत रहती है। दाम्पत्य जीवन का स्थायीरुप अब टूटता नजर आता है। दीप्ति खंडलेवाल के 'कोहरे' उपन्यास की नायिका इसी प्रकार के द्वंद्व में उलझी दिखाई देती है । 'वह' कहानी के नायक नायिका, 'क्षितीज' कहानी के पति पत्नी इसी प्रकार के द्वंद्व में उलझे हुए दिखाई पड़ते है।

३.२.२ मनोद्वंद्व - इसमें वैयक्तिक द्वंद्व, अतृप्त काम सम्बन्धी द्वंद्व, भ्रम के कारण द्वंद्व, हीन भावना के कारण द्वंद्व आदि विविध प्रकार है।

३.२.२.१ वैयक्तिक द्वंद्व - जब व्यक्ति में अहम् प्रबल होता है तब व्यक्ति अपने स्वार्थ, और स्वतंत्रता के प्रति अधिक सर्तक होता है। वह स्वयं

से ही द्वंद्व रत रहता है। अहं पर जब दूसरे व्यक्ति का आघात पहुँचता है तो वह विद्रोही, द्वंद्वी हो उठता है। 'कोहरे' की नायिका 'स्मिता', 'प्रिया' उपन्यास की 'सौदामिनी' 'प्रिया', 'वह तीसरा' कहानी की 'रजिता', 'क्षितीज' कहानी की नायिका, 'प्यार' कहानी की 'सरोज' इस प्रकार के द्वंद्व से घिरे नजर आते है। यह सभी पात्र अपनी वैयक्तिकता और अहम् के कारण टूटते, बिखरते, गिरते और उठते रहते है।

३.२.२.२ अतृप्त काम सम्बन्धी द्वंद्व - व्यक्ति की कामभावना अगर पूरी न हो तो व्यक्ति संयमित नहीं रह पाता । अपनी कामेच्छा को पूरा करने के लिए वह नैतिकता के बन्धन तोड़ने पर भी उधृत हो उठता है। अपनी अतृप्त काम वासना के कारण वह असंतुलित था द्वन्द्वरत जीवन जीता है। दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों के नारी पात्र जैसे अर्थ की कुमुद युगपुत्री के मिस रचना कपूर शेष अशेष की शची डूबने से पहले की मिस रतिलाल आत्मघात की मृणालिनी देह की सीतर की डॉ. शालिनी कामवासना की अतृप्ति के कारण ही पर पुरुषों के सम्मुख शरीर समर्पण करती दिख पड़ती है।

३.२.२.३ . हीन भावना के कारण द्वंद्व - जिस प्रकार अहं मनुष्य में कुण्ठा निर्माण करता है उसी प्रकार हीन भावना भी मानव व्यक्तित्व को कुंठित करने वाली वृत्ति है। आर्थिक अभाव, कुरूपता प्रेम में अतृप्ति से उत्पन्न हीन भावना, शारीरिक दुर्बलता से व्यक्तित्व के विकास में बाधक बनकर मनुष्य के जीवन को निराशपूर्ण बना देता है। 'अस्वीकार' की नायिका 'माधवी' अपने पति सोमेश के मनके हीनताग्रंथि के कारण अन्तस में द्वंद्वरत रहती है तो 'नाटक' कहानी की नायिका अपने शारीरिक अस्वस्थता के कारण द्वंद्वरत दिखाई देती है।

३.३ दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासों की नारी का अंर्तद्वंद्व

३.३.१ कोहरे की नायिका स्मिता का अंर्तद्वंद्व

विविध विचारों की शृंखला में **डॉ. देवराज उपाध्याय** ने 'कथा साहित्य-मेरी मान्यताएँ' में अपना मत व्यक्त किया है - ''आज के जीवन के भाव-सत्य को अपनी समग्रता में सभी स्तरों और आयामों में व्यापकता और गहनता के दोनों क्षेत्रों में अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास से अधिक समर्थ माध्यम दुसरा नहीं। आज की बौद्धिक उथल-पुथल और भावगत अंर्तद्वंद्व को दैनंदिन जीवन और उसके परिवेश में प्रतिष्ठित करके अंकित करने तथा इन विभिन्न पक्षों के परस्पर संबंध और महत्व को दर्शाने के लिए उपन्यास बडीं ही उपयुक्त विधा है। "[७]

आधुनिक युग में स्त्री पुरुष दोनों ही उच्चशिक्षित होते है। दोनों में भी अति वैयक्तिकता का होना स्वाभाविक है। शिक्षा के कारण अपने अस्तित्व के प्रति स्त्री भी सजग हो उठी है। अपनी इन्डिविजुएलिटी के प्रति आज की स्त्री जागरुक दिखाई देती है। अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए वह द्वंद्वरत भी होती है।

दीप्ति खंडेलवाल ने अपने 'कोहरे' उपन्यास में नायिका स्मिता की आंतरिक ऊहापोह, उसके मन के अंतद्वंद्व का बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। स्मिता का पति सुनील अति वैयक्तिक है वह अपने स्वत्व को बनाए रखने के लिए उसके कॉलेज की मिस इरा घोष को अपने घर में लाकर अनैतिकता का प्रदर्शन करता है सुनिल के अति वैयक्तिकता तथा उन्मुक्तता के कारण पत्नी स्मिता के मन में घुटन, कुण्ठा, तनाव, अपमान का बोध पैदा होता है। उसकी जिंदगी में कोहरे घिर आते है। जिससे उसे सुनील के दिखाए तलाक के रास्ते को मजबूरी से स्वीकार करना पड़ता है।

स्मिता, प्रणय, परिणय और तलाक के बीच में अपने अस्तित्व के प्रति द्वंद्वरत दिखाई देती है। स्मिता शिक्षित है, दिखने में आकर्षण है। उसके पास सुरीला गला है, वह कविताएँ भी रचती है। वह अपने गुणों के साथ

अपनी अस्तित्व भी कायम रखना चाहती है, परंतु अहम् केंद्रीत, सभ्य, सुशिक्षित सुनील स्मिता को सिर्फ अपनी पोजिशन के रूप में देखना चाहता है। स्मिता के व्यक्तित्व को वह अपने रेशमी पाश में बाँध लेना चाहता है। सुनील कहते है, ''लेकिन देखिए । मेरी कबूतरी जी आप कविता लिखेंगी तो सिर्फ मेरे लिए छपने छपाने के लिए नहीं।"[८] सुनील हमेशा स्मिता को अपने अहम् के पाश मे बाँध कर रखना चाहता है परंतु स्मिता को सुनील के पाश बंधन लगने लगते है। सुनील के अधिकारों के बोझ से घुटती स्मिता का नारीत्व, प्रियत्व और पत्नीत्व से अतृप्त खालीपन भरने के लिए मातृत्व की चाह करने लगता है। परंतु सुनील ने उसे भी एहसान मानकर स्मिता को माँ बनने देता है। बेटे के आगमन से दोनों के बीच के फासले घटते नहीं बल्कि और भी बढ़ जाते हैं।

स्मिता अर्न्तद्वंद्व में फँसी सोचती रहती है कि क्यों सुनील हर समय उसपर हावी रहते है? वह खुद भी तो अती सुंदरी भले ही न हो पर आकर्षक तो हैं। यहाँ स्मिता का वैयक्तिक द्वद्व रेखांकित होता है। स्मिता सोचती है, ''केवल सुनील का मात्र सुनील का साथ मुझे एकदम अकेला कर गया था वह मुझे मेरे स्वयं भी तो मिलने नहीं देते थे मेरे स्वयं के जीवन के अहसासों से मेरे निजत्व से।"[९]

सुनील उन्मुक्त व्यक्तित्व का था। वह अपने कॉलेज की मिस इरा घोष से संपर्क बनाता है। सुनील के घर में मिस इरा ज्यादा ही उन्मुक्त होती चली जाती है। इससे स्मिता संकुचित होती है। सुनील स्मिता के दाम्पत्य संबंध में दरार गहरी हो जाती है। सुनील स्मिता से तलाक लेना चाहता है। सुनील अपनी पत्नी स्मिता के अस्तित्व को कुचलना चाहता है परंतु स्मिता सुनील की इस ज्यादती को बर्दाश्त नहीं करती। वह सुनील के सामने झुकती भी नही परंतु उसका मन टूट जाता है। यहाँ उसका वैयक्तिक द्वंद्व दिखाई देता

है। सुनील स्मिता को उसी के घर में इग्नोर कर रहा था यह उसे सहन नही होता और वह बेटे मिकी को लेकर अपने पापा के घर लौट आती है। दीप्ति जी ने इस उपन्यास के माध्यम से यह बताया है कि पुरुष उन्मुक्त रहता है वह बँधकर भी नहीं बँधता जब कि नारी नैसर्गिक रूप से ही बन्धनों में बँधती चली जाती है प्रणय, परिणय और मातृत्व के बंधन उसे जकड़कर रखते है। लेकिन जब बन्धनों का रेशमी पाश घुटन बनने लगता है और अपने अस्तित्व को भी नकराने लगता है तब वह द्वन्द्वरत हो उठती है। सिमी सुनील को छोड़ कर आती तो है परंतु भावुक होने के कारण सुनील को भुला नहीं पाती। वह जानती है कि सुनील के साथ रहना असंभव है परंतु तलाक को सहजता से नहीं ले पाती। वह और भी संवेदनशील हो जाती है। हर स्थिति को सुनील से जोड़कर देखने लगती है। सिमी के मम्मी पापा सिमी, सिमी का भाई निशिथ सब अपने अपने अर्न्तद्वन्द्वो में जी रहे है। यहाँ पर वैयक्तिक द्वंद्व, टूटन तथा विवशता दिखाई देती है। सिमी के लौट आने पर पापा शराब में डूब जाते है तो मम्मी पूजा, व्रत आदि जोरों से करती है। सिमी के मम्मी पापा में कुछ ज्यादा लगाव नहीं था फिरभी पुरानी पीढ़ी पारंपारिक बंधन में जीती रहती है परंतु सिमी सुनील की आधुनिक पीढ़ी पारंपारिक मूल्यों को चुनौती देते हुए दिखाई देते है।

जिंदगी की कड़वी सच्चाइयों को सहते हुए, स्मिता अपने और अपने बेटे मिकी के भविष्य के प्रति चिंतित है क्योंकि सुनील ने मेन्टेनन्स देने की भी नकारा था। सिमी की मम्मी पापी सिमी के लिए चिन्तित होती है। सिमी की मम्मी उस पुराने प्रेमी प्रशांत के बारे में सोचने के लिए कहती है। सिमी अपने पैरो तले ठोस जमीन को सोचती हुई प्रशान्त की आँखो के आमंत्रण और अभ्यर्थना को स्वीकार करती है। यहाँ पर व्यक्ति समाज का द्वंद्व रेखांकित होता है। सिमी सोचती है जीवन बिताने के लिए उसे आर्थिक ठोस

आधार भी चाहिए इसलिए मन के तमाम अर्न्तद्वन्द्वों पर विजय पाकर वह प्रशांत से शादी करने का निर्णय लेती है।

लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से आधुनिकता में जी रहे स्त्री पुरुष के संबंधो के यथार्थ और कटुता को प्रस्तुत किया है। सुशिक्षित युवा पीढ़ी ने पुराने मूल्यों को चुनौती दी है, उन्हें नकारा है। आज की शिक्षित नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत है अपने अस्तित्व को खो देने के डर से मने अंर्त द्‌वंद्‌वों में डूब जाती है। आज के जीवन के कड़वे सच को ही लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसमे वैयक्तिक द्‌वंद्‌व और व्यक्ति समाज का द्‌वंद्‌व समाविष्ट हुआ है।

३.३.२ प्रिया उपन्यास की नायिका प्रिया का अंर्तद्‌वंद्‌व

यह उपन्यास ऐसी नारी वर्ग के बारे में है जो पुरुष के कामवासना से शोषित है। ऐसी औरतें समाज द्वारा वेश्या की कोटी में नहीं रखी जाती परंतु वे स्वयं मन के अंर्तद्‌वंद्‌व से जीवनभर छटापटाती रहती है। प्रिया ऐसे बाप की बेटी है ''जो जीवन के बड़े से बड़े आदर्शो का नाम लेकर अपनी नीच सें नीच घृणित सें घृणित आकांक्षाओं की पूर्ति में लगे रहते है। "[१०] प्रिया के पिता यशवंत जी कहने के लिए तो नेता है परंतु अपनी कामवासना की हवस बुझाने के लिए अनेक स्त्रियों का इस्तेमाल कर चुके है। प्रिया की माँ सौदामिनी भी उन्ही औरतों मे से एक है। यशवंत जी अपनी नीचता की सीमा पार करके सौदामिनी को अपने फायदे के लिए परपुरुष के साथ अकेले छोड़ देते है। सौदामिनी अंर्तद्‌वंद्‌व की स्थिति से गुजरती है। ऐसे नर पशु के साथ जीवन बिताऊँ या उससे दूर चली जाऊँ इसी द्‌वंद्‌व अवस्था पर आखिर विजय पाकर वह बेटी चित्रा को गोद मे लिए और प्रिया को गर्भ में लिए भाग निकलती है। यहाँ पर सौदामिनी का वैयक्तिक द्‌वंद्‌व मुखरित होता है। सौदामिनी के मन के घुटन, संत्रास तथा कुण्ठा को दीप्ति जी ने बड़ी

मार्मिकता से उपन्यास में वर्णित किया है। प्रिया भी अपने पिता की नीचता की शिकार है। प्रिया का सौंदर्य अपूर्व था। उसे देखकर उसके नर पशु पिता उसका इस्तेमाल भी अपने आपको आगे बढ़ाने के लिए करते है, प्रसिध्द उद्योगपति श्रीराम आहुजा के बेटे अरूण आहूजा से प्रिया का विवाह निश्चित करते है। परंतु अरूण आहुजा द्वारा दिए गए तमाम सुखों से प्रिया का मन द्वंद्वरत होता है। उसे लग रहा था, ''जैसे सोने के नहीं कहीं अधिक मूल्य पर रत्नजटित पिंजरे में उसके अस्तित्व को कैद किया जा रहा है अब शायद चुगने को मोती मिलेंगे क्या उन मोतियों को चुगती प्रिया जी पायेगी? साधारण अन्न के दानों की नीले आकाश के विस्तार की या फूलों से लदी टहनी की कल्पना अब व्यर्थ है अब तो रत्नजटित यह पिंजरा और चुगने को मोती ही मिलेंगे यहाँ''"[११] प्रिया अस्तित्वसंबंधी द्वंद्व मुखरित होता है। परंतु अरूण आहुजा प्रिया का कौमार्य रौंदकर उसके पेट में अपना बच्चा छोड़कर विदेश भाग जाता है।

प्रिया का एबॉर्शन किया जाता है। धीरे धीरे उसकी दशा संभलने लगती है। प्रिया के नाना प्रिया की हालत देखकर उसका धीरज बढ़ाते रहते है। प्रिया की हालत का वर्णन लेखिका नें इस प्रकार किया है, ''सारी रात वर्षा से नहाकर प्रकृति में एक निखरी ताजगी थी हवा में ताजा स्पर्श जैसे वह सचमुच एक नया सवेरा था नये आरंभ का आव्हान लिये प्रिया के तन मन के द्वारा खटखटाता था। एक तूफान गुजर चुका था। एक भूकम्प सा विध्वंस के बाद शान्त हो चुका था उस तूफान उस भूकम्प के भग्नावशेषो के बीच खड़ी प्रिया फिर से पैरो तले कोई जमीन तलाश करने लगी थी किन्तु उसके रेशमी पंख क्षत विक्षत थे। क्या ये घाव कभी भरेंगे?''[१२] यहाँ उसका वैयक्तिक द्वंद्व दिखाई देता है। समय के साथ प्रिया की क्या कोई और पोखरू साथ होगा?

द्वंद्वरत स्थिति भी सुधरी। उसने फिर से कॉलेज में पढ़ाना शुरु किया लेकिन उसे अपने पहले प्रेमी देवदास की याद बारबार आती है यहाँ पर लेखिका ने बताने का प्रयास किया है कि नारी अपनी नियति को कभी बदल नहीं सकती। जीवन में तूफानों का सामना कर आखिर उसे आगे बढ़ना ही पड़ता है। जीवन के कटु सत्य का, यथार्थ का सामना करना, प्रिया को बहुत ही कठीन हो गया था। उसी दौरान प्रिया के जीवन में डॉ. मनसिज बहार बनकर आते है। थोड़े दिनों के संपर्क के बाद ही डॉ. मनसिज प्रिया को शादी के लिए प्रपोज करते है। लेकिन यहाँ पर प्रिया का मन फिर से द्वंद्वरत होता है। देवदास, अरुण, मनसिज, प्रिया का माथा चकराने लगता है। वह सोचती है, ''मनसिज की पुष्ट भुजाओं मे प्रिया का कोमल अस्तित्व निश्चित रुप से सुरक्षित रह सकेगा सुरक्षा ही नही सम्मोहन भी है इन पौरुष से भरी भुजाओं में मनसिज चौधरी न देवदास है, न अरुण आहूजा। क्या मनसिज ही प्रिया का अधिकारी पुरुष है? क्या प्रिया को इन बांहो का आमन्त्रण स्वीकार कर लेना चाहिए? किन्तु क्या इन बाहो के पीछे मनसिज के मन का भी आमन्त्रण है, या यह सब फिर एक मरीचिका का भ्रम है? विश्वासों की छलना का कोई नया रुप? नारी के प्रियात्व से पुरुष का फिर कोई निर्मम खेल?''[१३] वह संभम्रावस्था में पड जाती है । क्योंकि वह जानती थी कि पुरुष द्वारा और छली जाना उसके वश की बात नहीं है । यहाँ पर प्रिया का वैयक्तिक द्वंद्व मुखरित होता है।

मनसिज द्वारा भी प्रिया छली जाती है। प्रिया की द्वंद्वात्मक स्थिति को उबारने के लिए सौदामिनी उसे मनसिज से शादी करने की सलाह देती है। मनसिज प्रेम विव्हल होकर प्रिया से उसके स्वीकार की याचना करता है। परंतु प्रिया के मन का द्वंद्व कायम था। उसे कुछ स्पष्ट नहीं हो पा रहा था।

परंतु एक दिन मनसिज प्रिया को अपनी मौसी से मिलाने के बहाने किसी होटल में लेकर जाता है और अपनी कामपीपासा को तृप्त करता है। प्रिया के देह को पाने की कोशिश में सफल होता है, परंतु प्रिया अपने होश खो बैठती है। प्रिया की बहन चित्रा भी पुरुष के धोखे का शिकार बनकर अपनी माँ के पास लौट आती है। अंत में प्रिया अपने अंर्तद्वंदवों पर विजय पाती है और अविवाहित रहने का फैसला ले लेती है।

लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से अपनी नियति से अभिशप्त सौदामिनी, प्रिया, चित्रा जैसी नारी के मानसिक, आंतरिक, द्वंद्वों का विवेचन किया है जिसमें ऐसी नारियाँ चिर अतृप्त, आहत मनोभावनाओं का मूर्तरुप है। और यशवंत जी जैसे अनेक लोग सज्जनता का मुखौटा धारण कर पीछे उन्मुक्त आचरण करते है और अनेक नारियों को आजीवन कुण्ठित अवस्था में अकेले छोड़ देते है प्रायश्चित्त करने के लिए। इस उपन्यास में अस्तित्व संबंधी द्वंद्व तथा वैयक्तिक द्वंद्व का समावेश दिखाई देता है।

३.४ दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों की नारी का अंर्तद्वंद्व

आधुनिक परिवेश में नारी के शिक्षा का वरदान प्राप्त हुआ जिससे नारी ने अपने प्रति होनेवाले अन्याय के विरुध्द तीव्र विद्रोह किया। प्रेम, विवाह तलाक आदि तत्वों पर नारी ने स्वतंत्रता हस्तगत की है। परंतु भारतीय नारी आधुनिकता और पुरातनता इन दो सीमाओं द्वंद्वमयी स्थिति में संघर्ष करती हुई दिख्र पडती है क्योंकि स्वतंत्र विचार रख्रते हुए भी भारतीय नारी संस्कार तथा समाज से आबध्द है। समकालीन महिला साहित्यकारों ने नारी के इस अंर्तद्वंद्व को अपने साहित्य में नारी पात्रों के द्वारा विश्लेषित किया गया है। दीप्ति खंडेलवाल के कहानी साहित्य में अनेक नारी पात्र इस अंर्तद्वद्व स्थिति से गुजरते दिखाई देते है। इसका सविस्तर विवरण करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

३.४.१ अभिशप्ता की 'मानो दी' का अन्तर्द्वंद्व

'अभिशप्ता' कहानी की 'मानो दीप्ति' 'सलीब पर' कहानी संग्रह के इस कहानी की नायिका मानो के मन के अंतर्द्वंद्व को विश्लेषित करते हुए उसकी मनोव्यथा का वर्णन लेखिका ने बड़ी मार्मिकता से किया है। मानो घर की एकमात्र कमाऊ पात्र है। घर की सब से बड़ी लड़की है। पिता का लकवे से ग्रस्त होना फिर मानों का परिवार तथा बहनों की शादी ब्याह की जिम्मेदारी को अपने ऊपर ओढ़ ने से मानो के व्यक्तिगत अरमान आशाएँ, अभिलाषाएँ कहीं दूर दब कर रह जाते है। हर साधारण लड़की की तरह उसके मन में भी शादी करने की चाह थी परंतु परिवार की जिम्मेदारी के आगे सारे अरमानों को कुचल देने के सिवाय उसके पास कोई रास्ता भी नहीं था। मानो के लिए आया इंजिनियर वर का रिश्ता भी वह अपनी बहन के लिए त्यागती है और एक बलिदान के गौरव से तृप्त हो उठती है। कर्तव्य पालन के गौरव से मानो इतना उठ गई थी कि कन्यादान के समय उसने उस इंजीनियर वर के मस्तक पर आशीर्वाद का हाथ एकदम सहज होकर रख दिया था।

तब माँ ने मानो को अपने वक्ष से कसकर भींच लिया था, ''मानो तुझे जनकर मैं धन्य हुई। भला कौन ऐसी लड़की होगी बेटी जो खुशी खुशी इतना त्याग करे।''[१४] इससे यह स्पष्ट होता है कि मानो विचारशील संस्कारीत टीचर है जो पुरोगामी भी है तथा आधुनिक भी। पुरोगामी इसलिए कहा जाएगा कि हर लड़की की, तरह उसने भी अपने वैवाहिक जीवन के सपने सजाये थे अपने प्रेमी प्रशांत को पाने की, अपने जीने का सहज अधिकार की मांग की थी किंतु परिवार की बड़ी तथा कमाऊ लड़की होने के कारण वह अपने मासूम अरमानों को परिवार की खातिर कुचलती जाती है। प्रशांत से शादी की बात वह अपनी माँ के सामने करती भी है परंतु अपने माँ बाप की उसके शादी के प्रति लापरवाही की वजह से वह टूट कर रह जाती है।

एक अव्यक्त छटपटाहट से देर तक कांपती रहती है। वह सोचती है कि वह किसी के लिए केवल मानो नही बन पाएगी वह तो मानो दी है मानो दी ही रहेगी।

अपने भाग्य को कोसते हुए वह अपना अंर्तद्वंद्व प्रकट करती है। वह सोचती है कि उसकी नियति में धूप ही है सुखद चाँदनी नही। यहाँ उसका वैयक्तिक द्वंद्व मुखरित होता है। प्रशांत मानो के जीवन में बहार बनकर आया था परंतु माँ बाप बहनों की जिम्मेदारी की बोझ से मानो इतना दब जाती है कि अपने खुद के जीवन के बारे मे वह केवल सपने ही देखती रहती है परंतु वह किसी की नहीं बन पाती। लेखिका ने एक कड़वा सच यहाँ पर बतलाया है कि हमारे भारतीय समाज में शादी के बाद लड़की के कमाई का पैसा उसके मायके वालों के लिए देना पति कभी भी मंजूर नहीं करता। इसी कारण प्रशांत मानो से ब्याह नहीं करता। मानो का अर्न्तद्वद्व उसकी छटपटाहट समाज के बंधनों के कारण दब जाती है। लेखिका ने आज के पीढ़ी की घरकी कमाऊ लड़की के मन के अंर्तद्वंद्व को इस कहानी में शतप्रतिशत न्याय दिया है ।

३.४.२ युगपुत्री की मिस रचना का अर्न्तद्वन्द्व

युगपुत्री - इस कहानी की नायिका 'मिस रचना' के मन के अंर्तद्वंद्व को विश्लेषित किया गया है। 'मिस रचना' रिटायर्ड अकाउन्टेन्ट बाप की बेटी है जो रूढ़ियों के विवाह के बंधन को स्विकारने के बजाय स्वतंत्र ही रहना चाहती थी। थके हारे पिता के लिए रचना का नौकरी करना महत्वपूर्ण था। यही महत्व रचना के लिए महत्वाकांक्षा बन गया। उसे स्टेनो की नौकरी मिल गई। अपने माता पिता दो बहनों और एक भाई के परिवार को पालने का संतोष रचना को था। वह लाइफ में सैटिल तो होना चाहती थी लेकिन अपनी मन की कामना का सौदा विवाह से करना उसे मंजूर नही था। अपनी कामतृप्ति करने के लिए वह नैतिकता को दाँवपर लगाती है। बॉस

अमरकान्त को अपना समर्पण देती है। परंतु उसका मन द्वन्द्वरत हो जाता है। उसे लगता रहा, ''जैसे कहीं कुछ टूट रहा है या जैसे वह किसी भँवर में डूब रही है और उसके चारो ओर भी भँवर ही भँवर है, किनारा कहीं भी नहीं। उन्माद के क्षणों को काली परछाइयाँ घेरती रहीं किसी पुरुष की अंकशायिनी बनने में क्या यही उबा देनेवाला सुख मिलता है?''[१५] सोचती रचना ने अपने ठंडे होते जिस्म को गर्म करने के लिए पहली बार पी थी । मिस रचना का बॉस अमरकांत की तरह सुधीर, प्रथा फिरोज से भी संबंध होता है। फीरोज को अपना शरीर देते रचना को लगा था कि वह कुछ बिखरेनी लगी है बिखरी जा रही है उसके मन में उस संतुष्टि में जाने कैसी एक मरीचिका सी असंतुष्टी जाग उठी थी बांहो के भँवर में डूबने की कामना के साथ किनारे का एक स्वप्न भी जाग उठा था। यहाँ पर मिस रचना का अतृप्त काम संबंधी द्वन्द्व मुखरित होता है। अपनी कामतृप्ति के लिए वह किसी बंधन को स्वीकार नहीं करना चाहती। जिंदगी को खुली आँखो से देखकर स्वीकार करके रचना उस स्वप्न को फुलिश कहकर झटक देती है। विवाह बंधन से मुक्त उन्मुक्त रह कर भी उसका मन द्वंन्द्वरत रह जाता है।

डॉ. मंजुला के संशोधनानुसार, ''मानव जीवन की शाश्वत प्रवृत्ति का नाम काम है । प्रेम का दूसरा रूप काम तृप्ति है, जिनकी सामाजिक मान्यता व आदर्श स्वीकृति विवाह में मानी गयी है। प्रेम और काम वासना जीवन की ऐसी वृत्तियाँ है, जिनकी अतृप्ति जीवन में कुण्ठा निराशा विसंगति को जन्म देती है। व्यक्ति की अतृप्त इच्छा, कामना उसके व्यक्तित्व में ऐसा तीव्र विद्रोह आक्रोश, द्वन्द्व उद्वेलित कर देती है कि उस में असन्तुलन आ जाता है और अतृप्त इच्छाएँ तृप्ति की कामना में नैतिक अनैतिक का बन्धन तोड़ देती है। ''[१६]

मिस रचना कपूर का पात्र इस कसौटी पर खरा उतरता है । लेखिका ने अतृप्त काम वासना में छटपटाती, द्वंद्वरत मिस रचना का चित्रण बखुबी किया है ।

३.४.३ 'क्षितीज', 'प्यार' आदि कहानियों की नायिकाओं की आंतरिक मर्मज्ञता :-

भारतीय संस्कृति में स्त्री पुरुष के लौकिक एवं आध्यात्मिक सम्बन्ध को दाम्पत्य की संज्ञा दी गई है। पति और पत्नी दाम्पत्य जीवन के अविभाज्य अंग है पति के बिना पत्नी निराश्रित एवं अपूर्ण है और पत्नी के बिना पति एकाकी है। अतः दाम्पत्य जीवन को पारिवारिक जीवन का मूलाधार माना गया है। स्त्री और पुरुष का विवाह ही परिवार की आधार शिला है। पति पत्नी का पारस्पारिक स्नेह एवं प्रेम ही दाम्पत्य जीवन में मृदुल मुस्कान बिखेरता है। दाम्पत्य जीवन का अपना सुख है जो अमिट है, असीम है। परंतु बदलते समय के साथ में समानता, बराबरी, समान अधिकार स्वतंत्रता आदि नये मूल्यों ने दाम्पत्य जीवन में स्त्री पुरुष संबंधों में दरारे पैदा की है। आज की नारी सफल दाम्पत्य जीवन के सेवापरायणता, पतिनिष्ठा, पातिव्रत्य आदि मान्यताओं को नजरंदार करती दिखाई देती है और अपने सुखों को पाने के लिए विद्रोही हो उठती है जो सफल दाम्पत्य जीवन पर प्रश्नचिन्ह्न पैदा करती है।दीप्ति खंडेलवाल की 'क्षितीज', 'प्यार' आदि कहानियों में दाम्पत्य जीवन की असफतलाओं का समग्र एवं सूक्ष्म चित्रण प्राप्त होता है। इन कहानियों की नायिकाएँ स्त्री पुरुष सम्बधों में द्वंद्व तथा अस्तित्व सम्बन्धी द्वंद्व में उलझी दिखाई देती है।

'प्यार' कहानी की 'सरोज' अपने शादी की पहली वर्ष गाँठ मनाने के लिए चाहती थी कि पति प्रथमेश उसके लिए एक दिन कॉलेज से 'लिव्ह' ले और उसके निकट रहे परंतु 'पंक्चुअल' प्रथमेश कॉलेज में उनका इमर्पोटेंन्ट क्लास मिस नहीं करना चाहते वे कॉलेज निकल जाते है । सरोज को इसके

कारण बहुत बुरा लगता है । पढ़ी लिखी लेक्चरर सरोज के प्रबुद्ध नारीत्व के लिए यह चुनौति बन जाता था। जब भी सरोज खिन्न होती तो प्रथमेश उसे सॉरी बोलना तो दूर चुप हो जाते थे। प्रथमेश की चुप्पी सरोज की खिन्नता को आक्रोश बना देती किन्तु फिरभी प्रथमेश चुप रहते । सरोज को ही हमेशा सहज होना पडता था इसका उसे गुस्सा भी आता था। ''प्रथमेश नहीं झुकते तो मैं क्यो झुँकु?''[१७] ऐसा उसे लगता है और वह तनावपूर्ण स्थिति से गुजरती है। यहाँ उसकी मन की स्थिति द्वंद्वरत हो जाती है। दांपत्य जीवन में आधुनिक परिवेश में छोटी छोटी बातों पर किसतरह मनमुटाव होते है इसका चित्रण दीप्ति जी ने इस कहानी में बडी अच्छी तरह से किया है।

'क्षितिज' कहानी में पति पत्नी के पारस्पारिक स्नेह, आत्मीयता समझदारी, सहयोग आदि गुणों के अभाव के कारण पति पत्नी प्रेम विवाहित होकर भी किसतरह द्वंद्वमयी अवस्था से गुजरते है इसका वर्णन लेखिका ने किया है। दोनों अच्छे पढ़े लिखे होने के बावजूद एक दूसरे को सहयोग करना नहीं चाहते। समझदारी के अभाव में पति पत्नी तनावग्रस्त रहते है। **डॉ. पुष्पपाल का** यह वक्तव्य वर्तमानकालीन दाम्पत्य संबन्धो पर प्रकार डालता है '' दाम्पत्य संबंधो की दरार समकालीन जीवन का एक कटु सत्य है। विविध प्रकार और कारणों से आज पति पत्नी के बीच दूरियाँ आ गयी है। विशेषतः शिक्षित और उच्च कही जानेवाले वर्ग की यही नियति बन गयी है किन्तु फिर भी सामाजिकता के भय और सात जन्मों तक निभाई जानेवाले मन के संस्कारवश स्त्री और पुरुष, पति पत्नी इस रिश्ते को ढोये चले जाते है। ''[१८] 'क्षितीज' की नायिका अपने अहं की शिकार है। पति के साथ जीवन बिताने के लिए उसका मन द्वंद्वमयी दिखाई देता है एक पल वह अपने आपसे लडकर भी रवि के निकट सिमटती है रवि की बाँहो में डूबती

है। तो एक पल उसके मन में विचार आते है - ''अच्छा होगा मैं रवि से तलाक ले लूं ऐसे ठंडे संबंध को कैसे निभाया जा सकेगा जो विष बुझी सुइयों सा मुझे चुभता है चुभता रहता है .....जो स्लो पायजनसा धीरे धीरे मेरे रग रेशे में उतरा जा रहा है जो मुझे एक बारगी ही समाप्त नहीं कर देता वरना मेरी जीवन की चेतना को अचेत किये देता है।'' [१९] स्पष्ट है कि वह द्वंद्व मयी अवस्था के कारण तनावपूर्ण जीवन बिताने पर मजबूर दिखाई देती है ।

इसतरह दांम्पत्य जीवन में सेवाभाव आत्मीयता, निष्ठा, विश्वास, समझदारी के अभाव में किसतरह द्वंद्वात्मक स्थितियाँ निर्माण होती रहती है इसका दर्शन लेखिका ने इन कहानियों के माध्यम से किया है।

३.४.४ 'जहर', 'विषपायी', 'सलीबपर' कहानियों के माँ का तथा विघटन की पत्नी का आर्थिक द्वंद्व :-

अर्थभाव के कारण मध्यमवर्गीय परिवार में स्त्री को दो वक्त की रोटी का इंतजाम करते समय हरबार द्वंद्वात्मक स्थितियों से गुजरना पडता है। पति की कम आमदनी में घर के सदस्य तथा बच्चो की इच्छाँ पूरी करना घर की स्त्री को बहुत कठीन हो जाता है। आर्थिक अभाव के कारण उनके दिन की शुरुवात भी चिखते चिल्लाते झनझनाती शुरु हो जाती है। दीप्ति खंडेलवाल की जहर, विषपायी, विघटन आदि कहानियों में अर्थाभाव के कारण घर की स्त्री की टूटन, निरुपायता तथा जीवन मूल्यों की टकराहट का यथार्थ चित्रण मिलता है।

'जहर' कहानी में हरिहर बाबू का बेटा अमर तपेदिक से मर जाता है। अर्थाभाव के कारण हरिहर बाबू उसका इलाज भी नहीं कर सके थे। उन्हें दो बेटियाँ भी थी। अमर की माँ उसके मरने पर अंर्तनाद कर रही थी। छाती पीट रही थी। उनके लिए उनका बेटा, उनकी बूढ़ापे की लाठी ही खत्म हो

चुकी थी इसलिए अपनी ही बेटियों के प्रति उनकी आस्था कम होती है। यह इससे पता चलता है माया की माँ ने छाती पर हथेली पटकी, ''अरे मेरा लाख रुपये का लाल चला गया इन दो में से कोई चली जाती तो एक पत्थर कम हो जाता, लेकिन यें नहीं मरी मेरा बेटा चला गया ''[२०] आर्थिक अभावों के कारण रिश्तों की कडवाहट का चित्रण लेखिका ने इस कहानी में बड़ी यथार्थता से किया है।

स्त्री का महत्वपूर्ण रुप मातृत्व का है। भारतीय संस्कृति में माँ को मातृत्व का मांगलिक रुप, ममता एवं करूणा की मूर्ति माना गया है परंतु आज के अर्थकेन्द्रित समाज मे स्वार्थी भावना के कारण माता-पुत्र अपने भावनात्मक विश्व मे परायापन महसूस करते है। अर्थाभाव के कारण निम्नवर्गीय परिवार में माँ के सामने कठोर बनने के सिवा कोई उपाय नहीं रहता है। हर रोज अपने ही बच्चों को रोटी के लिए भी वह ताने देती है। 'विषपायी' कहानी में छोटा बेटा बडे भाई को हमेशा दूध रोटी पाता देखकर जब माँ से यह इच्छा प्रकट करता है कि एक दिन उसे भी दूध रोटी दे तो माँ अपनेही लडके के प्रति द्वंद्वी हो उठती है और उसे कोसते हुए कहती है, ''चल हट कमबख्त तू दूध रोटी खाकर क्या करेगा? बड़का तो जवान हो गया चार पैसा कमायेगा मरे, तू तो अभी बरसों मेरा हाड खायेगा।''[२१] यहाँ पर लेखिका ने माँ बेटे के निःस्वार्थ प्रेम की पवित्रता पर और उसकी गहराई पर प्रश्नचिन्ह उपस्थित किया है।

आज के व्यावहारिक जगत में बच्चे बड़े होने पर व्यवहारी होकर जायदाद के लिए अपने माँ - बाप के प्रति निर्मम हो उठते है तो माँ-बाप बडे दुखी होते है। 'सलीब पर' कहानी में बिशन, किशन और विनोद के प्रति उनकी माँ इसके कारण द्वंद्वी हो उठती है। जब उनका ही बेटा बिशन जायदाद के लिए कुछ फैसला जल्दी करने के लिए खाना पिना छोड़ देने की

माँ-बाप को धमकी देता है, तब उसकी माँ सुमित्रा चिखती है, और उसे कहती है कि वह उनका खून तो पहले से ही पी रहा है। बाबूजी जब घर छोड़कर तीर्थयात्रा के लिए निकल जाने की बात करते है। तो उनकी पत्नी सुमित्रा रोकर कहती है, कि जीवन पर मेहनत कर के बाबूजी ने ही घर बनवाया, जायदाद जोडी है। ज्यायदाद के लिए झगडते अपने नालायक बेटों को अपने पेट से जनने का उसे अफसोस होता है। बेटों को लड़ते झगड़ते देख बाबूजी जब संन्यास लेना चाहते है तब सुमित्रा उनके लिए चिंतित होती है।

वर्तमान समाज का महत्वपूर्ण भाग अर्थ है। शिक्षित बेरोजगारी और बढ़ती हुई महँगाई के कारण अनेक परिवारों मे पति पत्नी के बीच अनेक बार द्वंद्वात्मक स्थिति पाई जाती है। 'विघटन' कहानी के नायक की पत्नी आर्थिक कमियों के कारण घर में हमेशा तनी भौंहे, क्रुद्ध दृष्टि तथा क्रुद्ध सर्पिणी जैसी फुंकारती रहती है। जब नायक पत्नी से रोज वही दाल रोटी के अलावा कुछ और बनाने को कहता है तो वह चिल्लाते हुए कहती है कि वह क्या उसके हाड बनाए । क्योंकि महँगाई इतनी बढ़ी है कि सब चीजों की कीमते आसमान को छू रही है। स्पष्ट है कि आर्थिक कमी द्वंद्वात्मक स्थिति निर्माण करती है

३.४.५ 'एक अदद औरत', 'प्रेत', 'एक और सीता' कहानियों की नायिका का पारिवारिक द्वंद्व- आधुनिक युग में सास बहू के रिश्ते मे कडवाहट पनपती दिखाई देती है। इसका मुख्य कारण है सास बहू पर अत्याचार करती है। सास बहू के माध्यम से नूतन और पुरातन विचारों एवं संस्कारों का युद्ध होता रहता है। बहू सास के दुर्व्यवहार से पीडित होकर आजीवन उससे आत्मीयता नहीं जोड पाती आज की शिक्षित नारी सास का आधिपत्य मंजूर नही करती और सास के विरुद्ध आवाज उठाती है। दीप्ति खंडेलवाल

की कहानियाँ 'एक अदद औरत', 'प्रेत', 'एक और सीता', में नारी का यही रुप दिख्र पडता है।

'एक और सीता' कहानी के पति पत्नी के बीच झगडे का कारण रविकान्त की माँ है। रविकान्त माँ की पूजा करता है और पूजा के रास्ते में आने वाली हर भावना, हर अधिकार को नकार देता है। अपनी पत्नी मधु की छोटी मोटी इच्छा भी रविकान्त इसलिए पूरी नहीं करता क्योंकि माँ नाराज होगी। अपनी सांस के पुराने खयालो से मधु द्वंद्वी हो उठती है वह सास से वाद प्रतिवाद करती है। सास का कहना है कि सारा झगडा तो इस बात का है कि बहू जी दाई को पेट नही दिखाएगी किसी डॉक्टर के पास जाएगी। सैकडों रुपया बिगाडेगी। सांस के इस आरोप पर, मधु कहती है, ''हां मेरी तबीयत ठीक नही है। और इस तरह तो मैं मर जाऊंगी। मांजी साधु-सन्तों को सैकडों दान देंगी लेकिन खाएंगी खिलांएंगी वनस्पती बनासरी साड़ी पहनाएंगी लेकिन साबुन नही लगाने देंगी, कि खर्च होता है।''[२२] मधु ने प्रतिवाद किया। मधु रविकान्त के घर से चली जाती है क्योंकि वह जीना चाहती है। रवि माँ को पूजा के अधिकार देता हैं लेकिन मधु को जीने का नहीं। मधु अपनी सारी अच्छाइयों के बावजूद सास के कारण हार जाती है।

'प्रेत' कहानी में नीलिमा की सास पुराने संस्कारों वाली थी। अविनाश अपनी माँ के संस्कारों को याद रखता हुआ नीलिमा के प्रति अन्याय कर रहा था। नीलिमा अपनी सास की सेवा करती थी उनकी हर बात मानती थी परंतु नीलिमा की सास उसे टेल्कम पावडर लगाने को भी मना करती थी। जन्माष्टमी के दिन घरके उत्सव मे सिरदर्द के कारण नीलिमा सास के बुलावे पर नही जा पाती तो दूसरे ही क्षण वह सुनती है कि उसकी सास गरज रही थी और बेटे अविनाश से निलिमा के बारे में शिकायत कर रही थी तब नीलिमा से और नही सहा गया। निलिमा कांपती

कांपती उठकर आती है और कहती है कि सास हर बात का गलत अर्थ लेती है सच में उसकी तबीयत ठीक नही थी। सास कहती है, ''ले और सून ये हमका सही गलत समझाय रही है। अरे ये दिन भी देखने को पड़े थे कि बहूजी हमे गलत कहे। सुन रहा हैं न जोरू का गुलाम अरे, हमारा जमाना होता तो बेटा माँ का अपमान करने वाली बहू की जबान खींच लेता''[२३] माँ की यह बात सुनकर अविनाश नीलिमा के मुख पर जोर का थप्पड़ देता है। इस प्रकार सास के कारण पढी लिखी, संस्कारशील होते हुए भी निलिमा को द्वंद्वात्मक हालात से गुजरना पडता है। और अपमान सहन करते रहना पडता है।

'एक अदद औरत' की सीता भी सास के हमेशा के ताने सुनसुनकर एक दिन अपनी सास से कहती है, ''क्यो मांजी, बेटियाँ ही बेटे जननी है या बेटे आकाश से टपकते है? आप न होती तो आपका बेटा भी कहाँ से जनमता? क्या बेटियों और बेटों के पालने मे कोई फर्क होता है। जो आप रात-दिन विद्या और पदमा को कोसा करती है?''[२४] इस प्रकार सास के कारण सीता का जीवन ही संघर्ष पूर्ण बन जाता है। और पूरा जीवन कुंठीत और घुटन से भर जाता है।

३.४.६ 'तपिश के बाद' कहानी के सुमी का अंर्तद्वंद्व

इस कहानी मे लेखिका ने कामकाजी महिलाओं की समस्या पर प्रकाश डाला है। कामकाजी महिला के बारे में यह कहना उचित होगा कि उसे घर और बाहर दोनों के दोहरे संघर्ष के बीच जीना पड़ता है। उसके कर्तव्य तो निरंतर बढ़ते ही जाते हैं, परंतु अधिकारों में वृद्धि नहीं होती। पुरुष उसके साथ पारिवारिक कर्तव्यों का साझा करने के लिए आगे नही आता और साथ ही घर की आर्थिक दशा सुधारने में भी उसकी सहायता चाहता है। बच्चों के सही पालन पोषण से लेकर अपने दफ्तर तक के कामों

को ठीक प्रकार से करने के बीच उसकी सारी ऊर्जा समाप्त हो जाती है। परिवार उसके द्वारा दी जानेवाली आर्थिक सहायता को भी नहीं छोडना चाहता और पारिवारिक कर्तव्यों को भी कम नही करना चाहता। कामकाजी महिला को दोहरी भूमिका निभाते समय कई बार द्वंद्वात्मक स्थिति से गुजरना पडता है। कभी वह मन के अंर्तद्वंद्व में उलझती है तो कभी पारिवारिक द्वंद्व का सामना उसे करना पडता है। सुमी बैंक मे काम करती है लेकिन उसके पति आनंद उसकी घर मे कोई मदत नही करते। सुबह लडके को स्कूल के लिए तैयार करना, उसका टिफिन, पति की मदद उसका खाना बनाना तथा खुद बैंक के लिए तैयार होना यह सब करते करते वह बेचारी थक जाती है। कभी कभी उसका मन द्वंदवी हो उठता है वह सोचती है, ''एक रुटीन बाय को झेलती मैं जब दरवाजे तक आती हूँ तब मन में विचार आता है , घर ही न लौटूं। जीवन के नीरस ढर्रे के बीच कुछ पलों की मिठास के लिए छटपटाता मन विद्राह करने लगता है। न चाहते पर भी मैं सोचने लगती हूँ, आखिर मैं भी कमाती हूँ, फिर इस छटपटाहट का प्रतिकार क्यों न लूं?''[२५] पति से थोड़ा सा प्यार मिलने की उसकी इच्छा पूरी नही हो पाती आपने पति द्वारा इग्नोअर किए जाने पर एक अतृप्ति का दंश लिए वह छटपटाती रहती है। देह सुख के अलावा एक मानसिक सुख की अभिलाषा उसे अपने पति से है लेकिन वह सोचती है कि बार बार ऐसे क्षण आते हैं जब उसका नारी मन समर्पण के फूल लिए पति की और बढ़ता है, टकराकर बिखर जाता है।

अपनी सहेली सविता के उन्मुक्त व्यवहार को देखकर सुमी का मन भी द्वंद्वात्मक होता है, ''आज मैं भी आराम से घर लौटूंगी, आखिर मेरे भी कुछ अधिकार है कटे उड़ते बालों के साथ उड़ती फिरती सविता की तुलना में मुझे अपना बंधा जूडा एक बन्धन सा असहय लगने लगता है। जी

चाहता है कि रास्ते में ही किसी हेअर - ड्रेसर के यहाँ उतर जाऊँ और अपने इन लम्बे केशों का बल्हान काट फेंकू लेकिन केश काट फेंकने से ही क्या होगा? उन बन्धनों का क्या होगा जो मेरे नारी मन की अपनी ही विवशताएँ है। ''[२६]

घर देर से आने पर पति आनंद की सख्त नजरों का सामना उसे करना पडता है। पति से झगड़ा होता है। पतिदेव जबान लड़ने के जुर्म मे तड़ातड़ पीटने लगते है। पति पत्नी के झगडे मे जब लड़का टीटू बीच बचाव करता है तो थोडी देर बाद पति पत्नी को अपनी गलती का अहसास होता है, एक बहुत ही स्वाभाविक स्थिति पर लिखी गई यह एक सुंदर कहानी है। लेखिका ने सुमी के मन के द्वंद्व को बड़ी खूबी से पेश किया है।

३.४.७ 'नाटक' कहानी की नायिका का अंर्तद्वंद्व :-

दाम्पत्य जीवन में पति या पत्नी की रुग्णता विसंवादिता का कारण बनती है। 'नाटक' कहानी की नायिका घुटनों के दर्द के कारण लेकचररशिप छोडकर चार सालों से बिस्तर पर है। पति अपनी रुग्ण पत्नी की सेवा हर समय करता है। फिर भी पत्नी प्रसन्न नही रहती। रुग्णता के कारण उसका मन द्वंद्वी हो उठता है। कभी कभी उसके जी में आता है, पूछे, ''तुम्ही मुझे निभा रहे हो? मैंने तुम्हे' नही निभाया? लेकिन पूछ नही पाती। पूछे भी क्या? जिस विश्वास को वह निभाती रही है वह उसकी कराह में डूबकर रह गया है और उसके जिस घुटनों के दर्द को वह निभाता रहा है, वह इतना स्थूल है कि कोई सूक्ष्म विश्वास या प्यार जैसी सूक्ष्म चीज उसकी तुलना में कुछ नही है, जिन्दगी के ठोस लेन-देन के बीच किसी फूल के लिए - दिखे जाने की बात धीरे धीरे उसे भी निरर्थक लगने लगती है। ''[२७] उसके पति कर्तव्य को प्यार का कर्तव्य बना दिया है और वह कर्तव्य को भी प्यार बनाना चाहती है। उसे अपना रुग्णता भरा जीवन, पति का उसके प्रति

कर्तव्यों का पालन सब एक नाटक सा लगने लगता है। अपने पति के आँखो में शिकायत देखकर वह अपराधिनी हो उठती है, तिलमिलाने लगती है। पति के प्रति द्वंद्वी हो उठती है, इसतरह दोनों पति पत्नी में वाद प्रतिवाद होते रहते है। उसकी रुग्णता से उसके मन में ऐसी हीनता ग्रंथि पैदा की है कि वह अपने आपसे तथा अपने कर्तव्यशील पति से भी द्वंद्वी हो उठती है।

३.४.८ 'अर्थ' कहानी की कुमुद का अंर्तद्वंद्व :-

कुमुद का ब्याह उससे दुगने उम्र के सेठ जी से होता है, यौवन से सम्पन्न कुमुद की कामवासना की पूर्ण तृप्ति करनेवाला पुरुष उसे सेठ जी में नही दिखाई देता, वह यौन असंतुष्टी से मानसिक स्तर पर खोखली हो जाती है। उसका मन विद्रोही हो जाता है सेठ जी उसके सपनों के राजकुमार नहीं थे। ''तीस वर्ष की उसकी कोमल सुंदर देह मे अभी वह आग ठंडी कहाँ हुई थी, जो कुमुद के ही शब्दो में देह की नहीं मन की आग थी जो ठंडी नहीं हुई थी, कुमुद के तन मन को दहकाती रही थी एक प्यास जो बुझी नही थी, कुमुद के प्राणों को चिरकाती रही थी, कुमुद सोचती की सेठजी तो इस आग या इस प्यास का अर्थ भी नही समझ पाए थे।''[२८] यह सच है कि शरीराकर्षण यौन संतुष्टि का अंग है।

शरीराकर्षण की वजह से विवाह के पवित्र अर्थ को भुलाकर पति या पत्नी किसी अन्य के प्रति आकर्षित हो जाता है। यही कारण था कि अपनी कामवासना की तृप्ति करने के लिए कुमुद अपने पति के होते हुए आवेश के दुर्बल क्षणों मे युवा संगीत टयुटर शरद की ओर आकर्षित हो जाती है। पति सेठ जी के टोकने पर वह उनके प्रति द्वंद्वी हो उठती है सेठजी कहते है कि वे उसी क्षण कुमुद को उसके आशिक के साथ सडक पर फेंक सकते हैं। अतृप्त काम संबंधी द्वंद्व कुमुद को नैतिकता की सारी हदे पार

करने पर मजबूर कर देता है। परंतु असल में सेठजी के प्यार का अर्थ कुमुद ही समझ नही पाती है।

३.४.९ 'अनारकली' कहानी की क्षिप्रा का राजनैतिक द्वंद्व :-

भारत देश में ब्रिटिश सरकार को यहाँ से हटाने के लिए हमारे नेताओं ने बडा संघर्ष किया। उनका एकमात्र उद्देश्य था स्वतंत्रता प्राप्ति परंतु जैसे जैसे समय बीतता गया नेताओं की देश के प्रति आस्था कम और स्वार्थ ज्यादा पनपता दिखाई देता है। आज तो हम ऐसा दृश्य देखते है कि आज के अधिकांश नेता लोग झगड़ते है, अपने हित के लिए। अपना स्वार्थ साधने के लिए वे अमानुष कृत्य करने से भी पीछे नही हटते। उन्हे जनता के हित का कोई लेना देना नही होता । समकालीन साहित्यकारों ने उस वक्त के राजनीतिक विषय वस्तु पर भी अपनी लेखनी चलाई जिसमें अनेक राजनेताओं के क्रुर कर्मोको समाज के सामने नंगा किया गया। अनारकली कहानी में अपने यौवन के आशिक सुव्रत से क्षिप्रा मुखर्जी का द्वंद्व लेखिकाने रेखांकित किया है।

अमिरी - गरीबी की दीवार ने क्षिप्रा और सुब्रत को एक दूसरे से अलग कर दिया। क्षिप्रा के पिता उसे लेकर इंग्लैड चले गए। क्षिप्रा बीस साल बाद वापस भारत आती है और राजनीति मे प्रवेश कर कॉग्रेस टिकट पर इलेक्शन के लिए खडी होती है। अपोजिशन में कम्यूनिस्ट पार्टी की तरफ से सुब्रत मुजुमदार खडे थे। अपनी स्वार्थी वृत्ती के कारण क्षिप्रा सुब्रत मुजुमदार को अपना नाम विदड्रा करने के लिए रिक्वेस्ट करने उसके पास जाती है। लेकिन सुब्रत अपना नाम विदड्रा करने को हरगिज तैयार नही होते। दोनों अपना प्रेस्टिज बनाए रखना चाहते है । इस पर क्षिप्रा के मन में सुब्रत को गुडों से पिटवाने के विचार आते है, वह विद्रोही हो उठती है। तो सुव्रत को

अपनी अनारकली प्रेमिका किसी बंदरिया से कम नही नजर आती। दोनों में राजनैतिक द्वंद्व छिड़ जाता है।

३.४.१० 'भूख' कहानी की रधिया का अंर्तद्वंद्व :-

निम्नवर्ग के आर्थिक अभाव की इस कहानी में जीने के लिए आवश्यक चीज 'अन्न' यह गरज भी जब पूरी नही होती, तो अनैतिकता का रास्ता अपनाने पर रधिया मजबूर हो जाती है इसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है। दुर्भाग्य ने रधिया को इतना जकड़ लिया था कि उसका पति मरणासन्न अवस्था में था तब भी रधिया के पास उसे खाने को देने को देने के लिए कुछ नहीं था। उसका पति बिरजू उसे खिचड़ी खिलाने को बार बार कह रह था। वह बेसुध हो गया था। गाँव का दूधवाला भैया, आटे दाल वाला तथा बस का ड्रायवर सब रधिया पर बुरी नजर डाले हुए थे। वे उसके और उसके परिवार की भूख मिटाने की कीमत में उसके शरीर की कीमत मांग रहे थे। बीमार बिरजू जब उसे छिनार कहकर बुलाता है तो रधिया विद्रोही हो उठती है और उसे प्रतिवाद करते हुए कहती है कि उसकी माँ या बहन छिनार होगी, वह नहीं है परंतु असलियत का सामना करते हुए बिरजू की जान बचाने के लिए वह अपने जिस्म का सौदा करती है। उसकी मनोव्यथा का वर्णन लेखिका ने इसप्रकार किया है, ''जो पाप वह करने जा रही थी उसकी कोई छाया उस हिरन सी आँखो में नहीं थीं यदि कुछ था तो एक मिट जाने का संकल्प! लेकिन रधिया न उस पाप को शब्द दे सकती थी न उस संकल्प को। वह तो केवल इतना जानती थी कि उसे बिरजू के प्राण बचाने है। ''[२९]

३.४.११ 'देह की सीता' कहानी की डॉ. शालिनी का अंर्तद्वंद्व

आज के अपने आप को सुसभ्य समझनेवाले समाज में नैतिक मूल्यों की कोई कीमत नहीं रही है। पति पत्नी अपने तन और मन की प्यास बुझाने के लिए अनैतिकता का रास्ता अपनाते है। देह की सीता कहानी के डॉ. शालिनी के पास एक रेप केस आता है। जिसका रेप हुआ था वह लड़की मर जाने की बात कर रही थी क्योंकि उसे लगता था कि उसका सबकुछ तो लूट गया अब वह अपने पति को मुँह दिखाने के काबिल नहीं रही और उसके लायक नहीं रहीं। यह बात सुनकर डॉ. शालिनी उसे मूर्ख कहकर झटक देती है। क्योंकि उसके अनुसार तो जीवन तो देह के लिए जीने का नाम है और जिंदगी देह के लिए मरने में नहीं होती। इसलिए तो अपने पति के होते हुए भी डॉ. शालिनी परपुरुष से शारीरिक संबंध रखती है। परंतु उस लड़की की बातें सुनकर न जाने क्यों डॉ. शालिनी के मन में द्वंद्व छिड़ जाता है। उसके मनमें अपने पति रंजित के विचार आते है जो अंधी नैतिकता को नहीं मानते और उन्होंने डॉ. शालिनी को भी नैतिकता के बेड़ियों में जकड़कर नहीं रखा था। एक ओर अपने कामतृप्ति के लिए अनैतिकता उसे बुरी नहीं लगती फिर भी उस लड़की की बातें सुनकर उसे बहुत दिन पुरानी एक बात याद आती है। जब वह छोटी थी तब डॉ. शालिनी ने उनकी दादी माँ के पूजा घर में लपटों सें घिटी अग्निपरिक्षा देती सीता का चित्र देखा था। उस सीता की आँखों में उन्हे तृप्ति का तेज दिखाई दिया था और दीवार पर टंगी सेक्स के प्रतीक मैरिलिन मनरो का कैलेन्डर देखकर मनरो की आँखो में

भी तृप्ति की चमक दिखाई देती है । उसके मन में नैतिकता और अनैतिकता का द्वंद्व खड़ा होता है।

लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि भारतीय नारी कितनी भी स्वैर आचरण क्यों न करे फिर भी उसके मन में अपने खुद के बर्ताव पर छटपटाहट जरूर होती है। **डॉ. सुमन मेहरोत्रा** के संशोधनानुसार, ''आज के व्यक्ति के लिए धर्म में कोई आस्था नहीं है, सामाजिक मूल्य मिथ्या हो चूके है नैतिकता के प्रति एक विद्रुप भाव है, आज वह केवल अपनी निजता की चेतना और अस्तित्व की पहचान मे व्यस्त हैं।''[३०] यह कथन सार्थक लगता है ।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दीप्ति खंडेलवाल ने अपने कथा साहित्य में नारी जगत को अपनी दृष्टि से अपने शब्दों में अपनी कलम से चित्रित किया है इसलिए उनका समस्त कथा साहित्य हर स्त्री के लिए हृदयस्पर्शी संवेदनापूर्ण, स्वानुभूति से अनुरंजित वास्तविक और स्वाभाविक बना हुआ है । लेखिका ने अपने समय में तत्कालीन परिस्थितीयों से जकड़ी औरतों के जो रूप देखे थे उस उतार चढ़ाव ने उनके मन को आलोड़ित किया। लेखिका की हर एक कहानी नारी मन को स्पर्श करनेवाली है । दाम्पत्यगत दूरियाँ,अपूर्णता, रिक्तता बोध और एकाकीपन से भारत देश के वैवाहित संबंधों को खोखला कर देने की समस्या उनकी कहानियों में अभिव्यक्त हुई है ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय नारी कितनी भी पढ़ी लिखी क्यों न हो वह अपने संस्कारों को भूला नहीं पाती फिर भी आज की नारी अपने प्रति अधिक सजग दिखाई देती है और अपने व्यक्तित्व के विकास के प्रति जागरुक है। उसका जीवन अन्तर्विरोधों और द्वंद्वों से भरपूर है। एक बेहतर जिंदगी जीने और सामाजिक प्रतिष्ठा पाने के लिए वह

कभी परिवार से तो कभी समाज से द्वंद्वरत दिखाई देती है। नैतिक मान्यताओं, सामाजिक परंपराओं के स्वीकार अस्वीकार के मध्य वह उलझी रहती है। लेकिन यह भी सत्य है कि मर्यादा की अपेक्षा नारी से ही की जाती है । दो विरोधी तत्वों कें भँवर मे ंउसका अन्तस छटपटाहट तनाव और मनोद्वद्वंों मे फँसा रहता है । इसी द्वंद्व का अध्ययन दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य से करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

आधुनिक परिवेश में शिक्षित हुई भारतीय नारी परंपराबद्ध विवाह संस्था के प्रति विद्रोह करती है। वह प्रेम, विवाह, तलाक आदि तत्वों पर स्वतंत्रता से अपने मत व्यक्त करती है परंतु भारतीय नारी समाज तथा संस्कारों से इस प्रकार आबद्ध है कि वह अपने को इन से मुक्त नहीं कर सकी इसलिए आधुनिकता और पुरातनता इन सीमाओं में उसके मन में द्वंद्व छिड़ा रहता है। आज का जीवन सहज सरल न होकर विविध स्तरीय कोणों से होकर गुजरता है। स्त्री और पुरष दोनों ही घर बाहर की अनेक समस्याओं, विवशताओं को भोगते चले जाते है। व्यक्ति अपनी बाहय व्यवस्था, प्रतिकुल परिस्थिति और सामाजिक अव्यवस्था के प्रति तो द्वंद्वरत होता ही है पर इससे भी अधिक द्वंद्व उसके अन्तर्मन में चलता रहता है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी के इसी मनोद्वंद्व की शब्दबद्धता अधिक दिखाई देती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति की अपूर्ण इच्छाओं अभिलाषांओं और सामाजिक उपलब्धियों के अस्वीकार के मध्य मनोद्वंद्व उभरता है। वैयक्तिक स्तर पर सामाजिक रूढियों को नकारने में जब व्यक्ति असमर्थ होता है, तभी द्वंद्व की स्थिति आ जाती है। यही द्वंद्व नारी के लिए कर्तव्यपरायणता के आड़े आकर टकराता है इसलिए नारी को अपनी वैयक्तिक रूचि, महत्वाकांक्षा, स्वतंत्रचेतना, अपने अस्तित्व, काम, अतृप्ति, प्रेम में विफलता आदि सभी मानवीय भावनाओं का त्याग करना पड़ता है।

भौतिक साधनों की भले ही लाख समृद्धता हो, किंतु उसका जीवन सहज, सरल, आस्थामय नहीं रह पाता बल्कि समय के साथ वह और भी कठीन, दुखी, अतृप्त, अधिक तनावपूर्ण द्वंद्वमयी तथा संघर्षपूर्ण हो जाता है।

उपर्युक्त कहानियों का अध्ययन करते हुए यही प्रतीत होता है कि लेखिका ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से नारी के जीवन संघर्ष,उसकी मानसिकता और द्वंद्व का अंकन किया है जो समाज की परम्परागत निष्प्राण मान्यताओं, परम्पराओं की अनुपयोगिता को सिद्ध करता है। नारी का विद्रोह धीरे धीरे नवीन मूल्यों की स्थापना करते हुए आंशिक रूप में से ही सही कम अधिक मात्रा मे सफलता की ओर बढ़ता चला जाता है। लेखिका ने अपनी युगसापेक्ष कलाकृति में द्वंद्व जैसे अनिवार्य तत्व का यथायोग्य अंकन किया है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची-तृतीय अध्याय

१) डॉ. गुप्ता मंजुला, हिंदी उपन्यास - समाज और व्यक्ती का द्वंद्व, पृ. ४२

२) संपा. डॉ. बाहरी हरदेव, बृहद अंग्रेजी हिंदी कोश; भाग १, पृ ३७९

3) Jame Brover, A Dictionary of Psychology

४) Dictionary of Education Goods Edition 1959 Pg.121

५) Dictionary of Social Sciences- Julius Gould William, Pg-123

६) डॉ. मेहरोत्रा सुमन, हिंदी कहानियों में द्वंद्व पृ. १३०

७) डॉ. उपाध्याय देवराज, कथा साहित्य- मेरी मान्यताएँ, पृ. १९

८) खंडेलवाल दीप्ति, कोहरे पृ. १९

९) वही पृ. २१

१०) डॉ. भारद्वाज शांती, हिंदी उपन्यास प्रेम और जीवन पृ. २४८

११) खंडेलवाल दीप्ति, प्रिया पृ. १२६

१२) वही पृ. १३०

१३) वही पृ. ६५

१४) खंडेलवाल दीप्ति, सलीब पर-अभिशप्ता, पृ. ६९

१५) ----------, नारी मन- युगपुत्री पृ. ८४

१६) डॉ. गुप्ता मंजुला, हिंदी उपन्यास - समाज और व्यक्ति का द्वंद्व पृ. ५९

१७) खंडेलवाल दीप्ति नारी मन - प्यार पृ.

१८) डॉ. सिंह पुष्पपाल, समकालीन कहानी, रचनामुद्रा पृ. ११५

१९) खंडेलवाल दीप्ति, कड़वे सच-क्षितीज, पृ. १५

२०) ----------, धूप के अहसास पृ.२६

२१) ----------,कड़वे सच - विषपायी, पृ. १०३

२२) ----------,धूप के अहसास-एक और सीता, पृ. ९०

२३) ----------,वह तीसरा - प्रेत, पृ.४६

२४) ----------,दो पल की छांह-एक अदद औरत, पृ. ३४

२५) खंडेलवाल दीप्ति, नारी मन - तपिश के बाद, पृ. १६१

२६) वही पृ. १६२

२७) ----------,वह तीसरा - नाटक पृ. ९९

२८) ----------,नारी मन - अर्थ, पृ. ३८

२९) ----------,वह तीसरा-भूख, पृ.९२

३०) डॉ. मेहरोत्रा सुमन, हिंदी कहानियों में द्वंद्व पृ. १३०

चतुर्थ अध्याय

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी चरित्र का सामाजिक अध्ययन

❊ चतुर्थ अध्याय ❊

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में नारी चरित्र का सामाजिक अध्ययन

४.१ 'समाज' का अर्थ, परिभाषा

समाज में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। समाज मानव के अस्तित्व बनाये रखने का आधार है। मनुष्य समाज से विभक्त नहीं होता वह समाज में पैदा होकर समाज में अपना जीवनयापन करता है। समाज शब्द आज व्यापक रूप में प्रयोग में लाया जाता है। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, भारतीय समाज आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। समाज का दायरा अत्यंत विशाल है। **प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइव्हर तथा पेज के अनुसार,** ''समाज कार्य प्रणालियों और चलनों की अधिकार सत्ता और पारस्पारिक सहायता की,अनेक समूह व श्रेणियों की तथा मानव व्यवहार के नियंत्रण अथवा स्वतंत्रताओं की एक व्यवस्था है। इस निरंतर परिवर्तन शील व जटिल व्यवस्था को हम 'समाज' कहते।"[१] समाज में विभिन्न व्यक्ति निश्चित संबंधों में बाँधे जाते है इसलिए स्वार्थ पारस्पारिक आदान प्रदान, पारस्पारिक जागरूकता आदि सामुहिक व्यवहार तथा सहकार की भावना से किए जाते है। समाज की परिभाषा **हेन्री एम जानसन** के अनुसार इसप्रकार है '' संस्थापित प्रतिमानों द्वारा समूहों के परस्परबद्ध होने की सुसमेकित सी प्रणाली को समाज कहते है"[२] अतः मानव जीवन में समाज का अत्याधिक महत्व है और समाज व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों का एकतरह से तानाबाना ही है। हर एक समाज संस्कृति की दृष्टि से स्वयंपूर्ण होता है। समाज में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को रहन- सहन, खान- पान,आचार - विचार, रुढ़ि परंपरा का हस्तांतरण किया जाता है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज का क्षेत्र सीमित होते हुए भी अत्यंत व्यापक होता है। अंग्रेजी में समाज का समानार्थ सोसायटी (society) शब्द प्रचलित है। हिंदी शब्द सागर मे समाज को ''समूह संघ, गरोह, दल, सभा एक ही स्थान पर रखने वाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करने वाले वे लोग जो मिलकर अपना अलग समूह बनाते है। समुदाय, जैसे शिक्षित समाज, ब्राह्मण समाज। वह संस्था जो बहुत से लोगों ने एक साथ मिलकर किसी विशिष्ट उद्देश की पूर्ति के लिए स्थापित की हो।"[३] सभा जैसे संगीत समाज, साहित्य समाज परिभाषित किया है। पूरा मानव जीवन समाज से जुड़ा हुआ होता है। समाज से जुड़कर ही व्यक्ति अपना विकास करता है।

समाज की रचना व्यक्तियों के समुदाय से होती है। कई व्यक्तियों से एक परिवार बनता है और कई परिवार मिलकर एक समाज का निर्माण होता है। समाज एक ऐसी इकाई है जिसमें व्यक्ति का सम्पूर्ण हित इसके अधीन रहता है। समाज व्यक्ति की संरक्षा, पोषण तथा पुनरुत्पादन में सहायक होता है। समाज मनुष्य को एक निश्चित दिशा भी देता है और एक प्रकार से सीमा के भीतर बाँधे भी रखता है। समाज में जिस प्रकार हमें स्वतंत्रता का लाभ होता है उसी प्रकार बन्धनों को भी निर्धारित करता है। वह हमारे सामने महान आदर्श प्रस्तुत करता है और उस पर चलने की चेतना भी देता है।

Encyclopadia of the social science के अनुसार society may be defined as the total complex of human relation ship in so far as they grow out of action in terms of the meansend relationship intrinsic or symbolic"[४] अर्थात समाज की परिभाषा यह की जा सकती है कि

मानवीय सम्बन्धों की सामूहिकता जैसा कि वह आन्तरिक एवम् प्रतीकारात्मक स्वरुप से साधन साध्य सम्बन्धों में रुपायित होते है ।

समाज नित्य नये रूप धारण करता है। उसमें नित्य नये बदलाव होते रहते है। व्यक्ति स्वयं अपने विचारों, आदर्शों और रीतियों द्वारा समाज व्यवस्था का नियमन करता है किन्तु परिस्थितिनुरुप स्वयंनिर्मित नियमों को तोड़कर नए आदर्शों नीतियों को बनाता भी है । समाज की सामूहिक व्यवस्था का मानव व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति और समाज, दोनों एक दूसरे के पूरक है व्यक्ति के बिना समाज का अस्तित्व नहीं और सामाजिक व्यवस्था की असमर्थता में व्यक्ति का महत्व नहीं।

डॉ. कुंवरपाल सिंह के संशोधनानुसार मार्क्स ने व्यक्ति की परिभाषा देते हुए लिखा है '' व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन सामुदायिक रुप में चाहे प्रकट न हो फिर भी वह सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति और पुष्टि है ।"[५]

समाज में परिवर्तन गतिशीलता का द्योतक है। मानव बुद्धिमान प्राणी होने के नाते उसकी वृत्ति जिज्ञासा मूलक होती है। उसका पुरातनता को छोड़ना और नूतनता को अपनाना स्वाभाविक है। अत: समाज में परंपरागत मूल्यों के प्रति अनास्था तथा नूतन मूल्यो की खोज होती रहती है। भारतीय समाज में भी हमारे पुराने मूल्य टूटते दिखाई देते है और उनकी जगह नवीन आस्थाएँ जन्म लेर ही है। २० वी सदी में भारतीय समाज पर अंग्रेजों के कठोर शासन व्यवस्था का बहुत गहरा असर हुआ। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में दो प्रकार की विचारधाराएँ काम करने लगी।

गांधीवादीविचारधारा और समाजवादी विचारधारा गांधीवाद में सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग था। समाजवाद में साम्यवाद अर्थात

मार्क्सवाद की विचारधारा आती है। मार्क्सवाद एक प्रगतिशील जीवन दर्शन है जो परिवर्तन तो महत्त्वपूर्ण मानता है। मार्क्स समाज में रुढियों, परंपराओं, पुरातन पद्धतियों का विरोध करता है। मार्क्सवाद साहित्य और संस्कृति के मूल में भी समाज एवं वर्ग-संघर्ष को ही स्वीकार करता है। हमारे समाज में निराशा के भंवर में फंसा हुआ व्यक्ति नया मार्ग पाने के लिए व्याकुल था। अत: मार्क्स की समाजवादी विचारधारा ने हमारे समाज और साहित्य को सर्वाधिक प्रभावित किया।

डॉ. सुमित्रा त्यागी के शब्दों में ''भौतिकता द्वन्दात्मकता, विरोधी तत्वों का संघर्ष, वर्ग विहीन समाज की कल्पना गत, परिवर्तन, विकास, प्रगति आर्थिक व सामाजिक साम्य, सर्वहारा वर्ग की क्रांति, प्राचीन के विरोध में नवीन का उदय समाजवाद की स्थापना पूँजी को सार्वजनिक अधिकार की वस्तु बनाता तथा निर्धनता से मानव को छुटकारा दिलाना मार्क्सवादी जीवन-दर्शक के प्रमुख आधार स्तंभ है।"[६]

४.२ साहित्य, समाज और व्यक्ति का परस्पर संबंध

व्यक्ति एक बुध्दीमान विवेकशील और सचेत सामाजिक प्राणी है । वह अपने को समाज के अनुरुप ढालता और अभिव्यक्त करता है । यही अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति साहित्य का रुप धारण करती है । मनुष्य के उत्थान पतन सुख दुख आशा आकांक्षा आदि सम्पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति साहित्य के द्वारा संभव होती है । मनुष्य जो देखता है, अनुभव करता है, सोचता है , समझता है , उसका वर्णन वह साहित्य में करता है । साहित्य समाज का दर्पण है । साहित्य में सामाजिक तत्वों का समन्वय स्वाभाविक है । आदि कवि वाल्मिकि ने भी अपनी 'रामायण' में एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था को चित्रित किया है । आदर्श समाज के विविध पक्षों की विवेचना

करते हुए मानो सिद्ध किया है कि पहले रामायण लिखी गई और फिर रामराज्य का आविर्भाव हुआ । साहित्य मानव जीवन तथा समाज का संस्कार और मनोरंजन करता है।

साहित्य में साहित्यकार समाज की वास्तविकता तथा सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। उसमें रचनाकार होता है। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में ऐसी अनेक सामाजिक समस्याएँ अंकित है जैसे दहेज समस्या, नैतिक मूल्यों का पतन, भ्रष्टाचार आदि। इन समस्याओं का विवेचन विश्लेषण करने से पूर्व भारतीय समाज में प्राचीन परंपरा में और आधुनिकता में नारी का क्या स्थान है इसका संक्षेप में विवरण करने का प्रयास किया गया है।

समाज साहित्य से प्रेरणा लेता है और विकास की ओर अग्रेसर होता है। साहित्य समाज का पथ प्रदर्शक ही नहीं उसका सशक्त प्रेरक भी होता है। साहित्य को समाज की समस्त संवेदनाओं का कोश भी कहा जा सकता है। अतः साहित्य व्यक्ति और समाज दोनों का उध्दारकर्ता है। साहित्यकार भी एक सामाजिक प्राणी ही होता है। वह तात्कालीन समाज की रीति-नीति, धर्म-कर्म व्यवहार, वातावरण से ही अपनी सृष्टि के लिए प्रेरणा ग्रहण करता है। वह प्रभावशाली होता है इसलिए अपनी कला की छाप समाज पर छोड़ता है।

साहित्यकार सामाजिक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता हुआ समाज की चेतना के निर्माण में भी अपना विशेष योगदान देता है। **पी. इन्दिरा शान्ता** के अनुसार '' साहित्य अनेक समस्याओ की अभिव्यक्ति है। आज के इस यंत्र युग में केवल समाज की ही नहीं, बल्कि व्यक्ति की भी अनेक समस्याओं को चित्रण साहित्य में होता है "[७] उनके अनुसार साहित्यकार अपने समस्त संवेदनाओं को साहित्य में उंड़ेल देता है।

साहित्यकार में साधारण व्यक्ति की अपेक्षा अधिक, संवेदनशीलता, सहानुभूति गुणों के कारण साहित्यकार में अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति अधिक प्रबल रहती है। इसतरह हम कह सकते है कि समाज व्यक्ति और साहित्य का संबंध अन्योन्य है।

४.३ भारतीय समाज में नारी का स्थान

मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष नारी जीवन है। इसके बिना मनुष्य का जीवन अपूर्ण ही है। सृष्टि के प्रारंभ से ही नारी और पुरुष की परस्पर पूरकता की अटूट श्रृंखला चली आ रही है। भारत में प्राचीन काल में भारतीय समाज में नारी को अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीयों की दार्शनिक परंपरा भी नारी को प्रकृति रूपा मानती है। वे पुरुष और प्रकृति से संयोग से सृष्टि की उत्पत्ति मानते है। नारी के कारण पुरुष महान बन सकता है। भारतीय समाज के आदर्श स्त्री रुप में पाये जाते है। विद्या का आदर्श सरस्वती में पाया जाता है। धन का आदर्श लक्ष्मी में पाया जाता है। शूरता, पराक्रम का आदर्श माँ-दुर्गा में पाया जाता है।

जयशंकर प्रसाद के अनुसार -

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास-रजत-नग-पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।''[८]

अर्थात् पुरुष के जीवन में आनन्द एवं सुख लाने के लिए नारी के सन्तुलित व्यक्तित्व की आवश्यकता है। पुरुष के जीवन में नारी का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

वैदिक काल में नारी की स्थिति तो अत्यंत संतोषजनक तथा सम्माननीय थी। जीवन के सभी क्षेत्रों में उसे महत्व प्राप्त था। नारी पुरुषों के साथ शास्त्रार्थ करती थी। युद्ध में विजय और शान्ति में सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए नारी का सहयोग आवश्यक समझा जाता था। कोई भी यज्ञ नारी की अनुपस्थिति में पूर्ण नही समझा जाता था। उस समय नारी आदरणीय और पूजनीय समझी जाती थी।

वैदिक काल के पश्चात् भारतीय समाज में नारी के प्रति होने वाला आदर तथा सन्मान की भावना कम होती गई। मध्यकाल में सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियों के कारण समाज में होनेवाला उसका स्वातंत्र्य समाप्त हो गया। उसके अधिकार छिन लिए गए। जीवन की सभी अवस्थाओं में उसकी रक्षा की जिम्मेदारी पुरुषों पर सौंपी गई। यही विचार समाज में रुढ हुआ कि-

''पिता रक्षति कौमार्ये, भ्राता रक्षति यौवने

स्थविरे रक्षन्ति पुत्रा: न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति''[९]

मध्यकाल में नारी की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी थी। उसका अस्तित्व ही मिट गया था। वह घर रुपी बंदीगृह में पुरुषों के हाथ की कठपुतली बना दी गयी थी। नारी की सामाजिक स्थिति हीन हो गयी। स्त्रियों को घरों की चार दीवारी के अंदर बंद करके रखा जाने लगा। घर गृहस्थी का कार्य उनपर थोंप दिया गया। समाज तथा परिवार में भी नारी को पुरुषों की तुलना में हीन समझकर समानाधिकारों से वंचित रखा गया। नारी पुरुष की चिरसंगिनी, अर्धांगिनी होते हुए भी दासी और सेविका जैसी परिभाषाओं से ग्रस्त होती रही । नारी का जीवन नरकतुल्य बना दिया गया।

धीरे धीरे समय बदलता गया। उन्नीसवी तथा बीसवी शताब्दी में नारी जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। अंग्रेजों के आगमन के कारण

राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण भी बदलता गया। नारी के परंपरागत बन्धन धीरे धीरे कमजोर होने लगे। शिक्षा का मार्ग नारी के लिए खुला करने के लिए अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजा राममोहन राय, ज्योतीराव फुले, महर्षि धोंडे केशव कर्वे, महात्मा गांधी आदि राष्ट्रनेता एवं समाज सुधारकों ने नारी सुधार का नया रास्ता दिखाया। शिक्षा के प्रचार से नारी जागृत होने लगी। अपने अस्तित्व के प्रति सचेत बन गई। वह अपने उपर होनेवाले, अत्याचार अन्याय मिटाने के लिए प्रयत्नशील बन गई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारी में कई सुधार हुए। उसे सामाजिक और राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण पद भी प्राप्त हुए। सरकार द्वारा भी नारी वर्ग को आगे बढ़ाने की दिशा में प्रयास किये गए। नारी का खोया हुआ आत्मविश्वास फिर से प्राप्त हुआ और वह स्वावलंबन की ओर बढ़ने लगी।

शिक्षा ने नारी हृदय के अन्दर छिपे विद्रोहाग्नि को प्रज्वलित किया है। वह अपने अधिकारों और हकों के लिए लड़ने लगी। वह समझने लगी है कि वह पुरुषों से किसी भी बात में कम नहीं है। वह पुरुष की दासी नही बल्कि सहयोगिनी है। समाज का बदलता रुप साहित्य में भी दिख पड़ता है। समकालीन साहित्यकारों ने जहाँ तहाँ भारतीय नारी के बदलते सामाजिक रुप के बारे में अपने मतों की अभिव्यक्ति की है। आज हम देखते है कि आर्थिक स्वतंत्रता के लिए स्त्री घर की चारदीवारी को लाँघ कर बाहर आती है । वह प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ रही है । कामकाजी बनकर अपने घर को सँवार रही है ।

भारतीय नारी की समाज में आज की स्थिति **डॉ. रूपा सिंह** के अनुसार इसप्रकार है-'अधिकांश नारियाँ शिक्षित तथा आर्थिक रूपसे स्वतंत्र भी है इसलिए उनकी समस्याएँ सामान्य स्त्री की समस्याओं से अलग है। लेकिन व्यावहारिक स्तरपर यह एकदम स्पषट है कि आर्थिक स्वावलंबन के पश्चात पितृ-सत्तात्मक व्यवस्था में उनकी पहचान नहीं बन पा रही। पुरूष

से आर्थिक रूप से आजाद ये स्त्रियाँ अब भी मानसिक, सामाजिक या नैतिक स्थितियों में पुरुष के बराबर नहीं है। "[१०]

आज का जीवन इतना जटिल और समस्यापूर्ण है। इसका मुख्य कारण हमारे देश में आज आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में विषमताएँ अधिक है। भारत देश में निम्न वर्ग की महिलाएँ तो हमेशा से ही मजदूरी करके अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करती आ रही है। परंतु आज हम देखते है कि उच्च मध्य वर्ग की महिलाएँ भी घर से बाहर निकलकर काम धन्धों में आ रही है। **प्रमीला कपूर** के अनुसार, ''अब नारी को न तो मात्र बच्चा जनने की एक मशीन और न घर की एक दासी ही माना जाता है। उसने एक नया दर्जा, एक नयी सामाजिक महत्ता प्राप्त कर ली है।"[११] अब न केवल आर्थिक रुप से विवश महिलाएँ ही नौकरियाँ करने लगी है बल्कि ऐसी भी महिलाएँ है जो अपने मान सन्मान के साथ साथ अपने परिवार के आय में भी वृद्धि चाहती है। अतः आज समाज में कामकाजी महिलाओं की संख्या अत्याधिक बढ़ती जा रही है।

४.४ नारी की समाजिक समस्याएँ

नारी के संदर्भ में इन्ही सारी अच्छाइयाँ, बदलावों के बावजूद हमारे समाज में आज भी नारी को अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे दहेज समस्या, विधवा विवाह समस्या, अनमोल ब्याह की समस्या, शिक्षा समस्या तलाक की समस्या, वेश्यावृत्ति आदि। दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य में तत्कालीन समाज में की नारी की यें सारी समस्याएँ प्रमुख रुप से हमारे सामने आती है। अंग्रेजों के चुंगुल से छुटने के बाद भारत देश ने स्वतंत्रता की साँसे ली परंतु मोहभंग की स्थिति पैदा हो गयी। भारत देश का हिंदुस्तान और पाकिस्तान इन दो टुकड़ों मे विभाजन हुआ तब सारे भारतीय समाज की आशा और आकांक्षाएँ जो स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ थी सब

निराशा, खेद और आक्रोश में बदल गई। मोहभंग की जो स्थिति सामने आई उसका प्रभाव साठोत्तरी साहित्य में दिखाई देने लगा। साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण साठोत्तरी साहित्य में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पाश्चात्य, अंधानुकरण इन सबका चित्रण होने लगा। दीप्ति खंडेलवाल समकालीन आंदोलन की एक सशक्त रचनाकार रही है। उन्होंने अपने कथासाहित्य में तत्कालीन सामाजिक परिवेश और उस परिवेश की विसंगतियाँ झेलते पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है। इसी परिवेश में नारी की सामाजिक समस्याएँ उनके साहित्य में मुखरित होती है।

''जिस प्रकार नारी के बिना पुरुष में तथा समाज में पूर्णता नही हो सकती उस प्रकार प्राचीन काल से लेकर आज तक के साहित्य, संस्कृति और समाज में नारी पुरुष से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। प्रायः सृष्टि के आरंभ से ही हम देखते है कि मानव जब भी, जीवन के संघर्ष में असफल हुआ है, तब नारियों ने सदैव पुरूषों को सहायता प्रदान कर परिस्थिति को परिवर्तित करने का प्रयास किया है। स्त्री ही पुरुषों को अपना मन, आत्मविश्वास तथा अपनी संवेदना प्रदान कर के सभ्यता के विकास का प्रयत्न करती है। "[१२] दीप्ति खंडेलवाल तथा अन्य समकालीन महिला लेखिकाओं ने स्त्री की अनेक समस्याओं का उद्‌घाटन अपने साहित्य के माध्यम से किया है।

४.४.१ दहेज समस्या :- भारत की अनेक सामाजिक समस्याओं में दहेज प्रथा यह एक महत्वपूर्ण समस्या है। दहेज का प्रचलन विवाह के लिए सबसे बड़ा अभिशाप बन गया है। इसके कारण सामाजिक वातावरण कटु तथा कलुषित होता रहा है। दहेज के कारण पारिवारिक जीवन भी अशान्त बनता जा रहा है। दहेज के कारण विवाह एक सौदे का विषय बन गया है। भारत में दहेज कुप्रथा पहले से ही है परंतु आज आर्थिक समस्या ने उसे और भी विकृत कर दिया है। नारी जाति को दयनीय अवस्था तक पहुँचाने में दहेज

प्रथा की विशेष भूमिका है। आज हमारे समाज में ऐसे बहुत से माता पिता है जो आर्थिक कमजोरी के कारण अपनी कन्याओं के विवाह के लिए उपयुक्त वर जुटाने में असमर्थ है। ऐसी दशा में वे अपनी कन्याओं का विवाह मजबूरन अयोग्य पुरुषों से कर देते है उससे लड़की का जीवन अन्धकार मय हो जाता है।

डॉ. महेन्द्र भटनागर के संशोधनानुसार - 'हिन्दू समाज में वैवाहिक समस्या को सबसे अधिक जटिल बनाया है दहेज प्रथा ने। अनेक सुन्दर सुशिक्षित और सुसंस्कृत लड़कियाँ समुचित दहेज के अभाव में असुन्दर मूर्ख और असंस्कृत लड़कों से ब्याह दी जाती है ।"[१३] दहेज प्रथा का प्रभाव सबसे ज्यादा मध्यवर्ग पर पड़ता है । दिन भर काम पर जुटे रहने पर मध्यवर्ग जैसे तैसे दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाता है । ऐसे में पुत्री के विवाह के लिए अलग कुछ बचाकर रख पाना उनके लिए नामुनकिन हो जाता है । परंतु मध्यवर्ग में मर्यादा बनाये रखने के लिए कर्ज लेकर भी अपनी हैसियत से अधिक कन्या को दहेज देना ही पड़ता है । अगर पिता दहेज न दे पाये तो कन्या को उसका फल ससुराल में भुगतना पड़ता है । सास ससुर के अत्याचार सहन करने पड़ते है । पति के तिरस्कार का शिकार होना पड़ता है । उसके अच्छे गुण भी अवगुण बन जाते है । कभी कभी तो दहेज प्रथा के बड़े भयंकर परिणाम देखने को मिलते है । अपने माता पिता के सिर का बोझ बनने के बजाय अनेक लड़कियाँ दहेज के भय के कारण आत्महत्या करने का रास्ता अपनाती है ।यह प्रथा जब तक समाज में चलती रहेगी तब तक नारी जाति का उध्दार असंभव है ।

दहेज प्रथा ने समाज की अनेक कुप्रथाओं और समस्याओं को जन्म दिया है जैसे वेश्या समस्या, अनमेल विवाह आदि. भारत देश में दहेज प्रथा प्राचीन काल से ही चलती आ रही है। उस समय लड़की के माता पिता विवाह

के समय स्वेच्छा से विविध वस्तुएँ भेंट के रूप मे लड़की के लिए देते थे और वर पक्ष बगैर किसी शिकायत के उस भेंट को खुशी से स्वीकार करता था। परंतु बदलते समय के साथ इसका स्वरूप 'दहेज प्रथा' में हो गया। हर एक लड़की को विवाह के समय उसके ससुरवालों को खुश रखने केलिए लड़की के पिता को दहेज देना बंधनकारक हो गया। परंतु आज इस दहेज प्रथा ने इतना विकृत रूप ले लिया है कि मुँहमागा दहेज लड़की के पिता से न मिलने पर ससुराल वाले लड़की को सताने और जिंदा जलने से भी नहीं डरते। शरीर में फूटे कोड़ की बीमारी की तरह यह ऐसा घातक रोग है जो समाज को शनैः शनैः अपने शिकंजे में जकड़ता ही जा रहा है। सरकार ने दहेज प्रथा के विरोध में कानून बनाए परंतु लड़की को ससुराल में दुख सहने पड़ेंगे इस डर से मायके वाले कोई भी इस प्रथा के विरुध्द अपनी आवाज नहीं उठा पाता।

दीप्ति खंडेलवाल के 'देहगंध' कहानी में मनोहर जोशी की माँ को पिताजी हमेशा मारते पिटते थे । मनोहर को तीन बहने थी । उसके पिताजी समझते थे कि बेटियाँ पैदा होना यानि तबाही होना । वे उसकी माँ को पीटते हुए कहते '' अरे तू क्या लड़का जनती .....? तूने तो तीन तीन बेटियाँ जनकर रख ही दी थी मुझे तबाह करने के लिए । बेटा मेरी किस्मत से हुआ है । अब जरा जवान हो ले कमाने लगे या खूब दहेज लेकर आनेवाली बहू ले आए, तो अपना बुढ़ापा चैन से कटेगा।"[१४] मानो शादी नहीं सौदा हो और लड़की के पितासे दहेज के रूपमें जो पैसे लेंगे वे अपना बुढ़ापा चैन से काटने के लिए इस्तेमाल करेंगे । तीन तीन बेटियों की शादी के लिए इंतजाम करना यानि उनके हिसाब से पूरी तबाही ही थी । दीप्तिजी ने मध्यवर्ग के पिता के मानसिकता का यथार्थ अंकन किया है ।

'बीच का आदमी' इस कहानी में मध्यवर्गीय पिता का रूप दीप्ति ने हमारे सामने रखा है जो जड़ संस्कारों के गुलाम रुढ़ियों में बंधे है। बेटी

की मांग में सिंदूर भरा देखने के लिए बुढ़ापे में भी कितनी भी मेहनत करने के लिए तैयार है। बेटियों का ब्याह एक चिंता का विषय है । उनकी तीन लड़कियाँ थी। दोनों बेटियों की शादी हो चुकी थी उसके खर्च के बोझ तले पहले से जोशी जी साधारण से साधारण जीवन जीते चले आ रहे थे । तीसरी लड़की की शादी का इंतजाम भी कर रहे थे । नैरेटर के शादी के खर्चे के बारे मे पूँछने पर उन्होंने बताया ''सुषमा को अच्छा वर मिला है, तो खर्च करना ही पड़ेगा कुछ रूपया कर्ज भी लिया है किस्तों में चुका दूँगा।''[१५] हमारे समाज में यह समझा जाता है कि लड़की को अगर अच्छा वर चाहिए तो खर्च भी ज्यादा ही करना पड़ता है । इसके लिए चाहे लड़की के पिता को कर्ज ही क्यों न लेना पड़े? साहुकार के आगे अपने घुटने ही क्यों न रगड़ने पड़े? और कर्ज के बोझ तले सारा जीवन मर मर कर ही क्यों न जीना पड़े?

'स्वयंवर' कहानी में राधा और मोहन एक दूसरे से प्यार करते है। परंतु राधा अति साधारण घर की लड़की थी जिसके पिताजी की हैसियत इतनी भी नहीं थी कि मोहन के लिए एक जोड़ी जूते खरीद सके और मोहन लखपति बाप का बेटा था। मोहन के पिता ने मोहन का रिश्ता एक बड़े खानदान से किया था। दहेज के रूप में लड़के के पिता से उन्हे तीन लाख रूपये मिलने वाले थे । परंतु मोहन के तनमन में राधा ही समाई हुई थी। वह जानता था कि राधा के पिता इतना बड़ा दहेज नहीं दे सकते इसलिए उन दोनों का मिलन हो पाना असंभव ही था। हमारे समाज के दहेज प्रथा की मानसिकता के कारण बेचारे राधा और मोहन आत्महत्या कर के ही सदा के लिए एक हो पाते है।

हमारे समाज में 'दहेज प्रथा' ने उच्चवर्ग, मध्यवर्ग ही नहीं बल्की निम्न वर्ग के लोगों को भी अभिशप्त किया है । लेखिका की 'शीर्षकहीन' कहानी ऐसे अनेक निम्न वर्गीय पुरुषों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने

आप में शून्यता का बोध ढूँढते है और विशाल जनसमूह के बीच भी स्वयं को बहुत अधिक अकेला मानते है। कहानी का नायक शायद जिन्दा न रहना उसके वश मे नहीं है इसलिए जी रहा है। परंतु उसका ब्याह भी होता है और दहेज के रूप में दो हजार नकद और तीन हजार का सामान उसे लड़कीवालों की तरफ से मिलता है। नायक के माँ बाप उसी पैसों से अपनी बेटी श्यामा का ब्याह कराते है और चैन की साँस लेते है। माँ बाप कितने भी गरीब क्यों न हो लड़की का ब्याह करने के लिए उनका सुख चैन खो जाता है। लेखिका ने बड़ी मार्मिकता से इसका अंकन किया है। 'सलीबपर' कहानी के बाबूजी स्वतंत्रता आंदोलन में स्वयं को झोंक देना चाहते है परंतु अपनी बच्चों और पत्नी की जिम्मेदारियों का एहसास समझकर वे पीछे हट जाते है। उनके तीन बेटे और एक बेटी है। उनके तीन बेटे जायदाद के लिए बाबूजी से हमेशा झगड़ते रहते है। उन्हे घाघ, फ्रॉड, तथा हिपॉक्रेट की उपामाएँ देते है। बाबूजी अपनी बेटी सुचित्रा का ब्याह एक इंजीनियर से कराते है। दहेज के रूप में सुचित्रा के ससुराल वालों को बीस हजार रूपये देते है। इससे उनके प्रति उनके बेटों की नाराजगी और बढ़ जाती है। भूखे कुत्तों की तरह उनके बेटे जायदाद के लिए लड़ते झगडते देख उन्हे बड़ा दर्द होता है।

इसतरह हम देखते है कि 'दहेज' के कारण संपूर्ण पारिवारिक जीवन ही ध्वस्त हो जाता है और समाज पर भी इसका बूरा असर पड़ता है। हाला की हमारे देश में फिर भी बड़ी बड़ी महँगी चीजे जैसी गाड़ी, बंगला लड़केवालों की तरफ से इसे खुशी से स्वीकार भी किया जाता है। आज भी पढ़ी लिखी गुणवान लडकी को दहेज का शिकार होना ही पड़ता है। परंतु समाज के विकास के लिए 'दहेज प्रथा' की मानसिकता बदलने की बड़ी जरुरत है जिससे हमारे देश की नारी बिना किसी तनाव के अपनी जिंदगी चैन से गुजार सके और अपने परिवार को भी सुखी तथा संतुष्ट बनाए रखे इसीसे हमारे समाज की उन्नति हो सकती है।

४.४.२ तलाक समस्या :- समाज की मूल इकाई परिवार है। आधुनिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का स्थान विभक्त परिवार ने ले लिया है जिसमें पति पत्नी तथा उनके बच्चे इतना ही सीमित परिवार है। परिवार से ही सामाजिक विकास आरंभ हो जाता है। परिवार में व्यक्ति पर होने वाले संस्कार ही उसे सामाजिक विकास के लिए प्रयत्नशील बनाते है । पारिवारिक जीवन का मूलाधार पति पत्नी के संबंधों पर निर्भर करता है। मूलतः दाम्पत्य जीवन की सफलता परस्पर स्नेह तथा सहयोग की भावना से होती है । परंतु पुरुषों के अहम् तथा स्त्री को हीन समझने के कारण स्त्री पुरुष संबंधों में दरारे पड़ जाती है। अनेकानेक कारणों से दाम्पत्य जीवन में कटुता बढ़ती है। सारा जीवन घुट घुट कर जीने की बजाय संबंध विच्छेद द्वारा स्वतंत्र जीवन अपनाने की ओर समाज के अनेक स्त्री पुरुष बढ़ते है। इसप्रकार असुखी वैवाहिक जीवन को सुख मय तथा शान्तिमय बनाने के लिए विवाह विच्छेद की आवश्यकता महसूस होने लगी है।

हमारे भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही विवाह को केवल एक प्रथा न मानकर एक धार्मिक संस्कार माना जाता है। अतः विवाह विच्छेद भारतीय परंपरा के विरूध्द माना जाता है। परंतु बदलते समय के साथ परिस्थितियाँ भी बदलती रहती है। सामाजिक परिस्थितियों के साथ समाज की मान्यताएँ भी बदलती गयी। विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों एवं नारी शिक्षा तथा नारी स्वतंत्रता के कारण - ''युगों से त्रस्त भारतीय नारी जब पुरुष की दासता से मुक्त हुई तो स्वाभाविक था कि उस समाज के प्रति उसके अर्धचेतन मन में घृणा हो जिसने उसे युगों से दासी बनाकर उसका शोषण किया है। अतः आधुनिक युग में शिक्षित भारतीय नारी वैवाहिक संस्था के प्रति विद्रोह के लिए तत्पर हुई। विवाह को उसने पुरुष प्रधान समाज की दासता समझा।"[१६] स्त्री पुरुष समानता के दौर में पति पत्नी

एक दूसरे से सुखमय जीवन बिताने के लिए असमर्थता पाने पर तनावग्रस्त जीवन बिताने की बजाय तलाख की माँग करने लगे। जिससे बड़ा असर उनके बच्चोंपर पड़ने लगा। बच्चों की मानसिकता बिगड़ने लगी। बच्चे अंर्तमुखी बनने लगे । इसका असर समाज पर भी पड़ने लगा। दीप्ति खंडेलवाल के अनेक कहानियों में तथा 'कोहरे' उपन्यास में नारी की इस समस्या का अंकन हुआ है।

भारतीय समाज में पति पत्नी का संबंध शाश्वत और जन्म जन्मान्तर का माना जाता था। किन्तु आज के आधुनिक युग में ये संबंध भी खोखले पड़ते जा रहे है। दीप्ति खंडेलवाल के 'कोहरे' उपन्यास में तथा 'ये दूरियाँ', 'क्षितीज' 'आत्मघात' आदि कहानियों में भी पति पत्नी के संबंध खोखले होते हुए दिखाई देते है। कहीं पति पत्नी के आपसी संबंधो में दूरियों का विस्तार हो रहा है तो एक साथ रहकर भी वे केवल पति पत्नी की विवशता को निभाने के लिए बाधित है। उनके संबंधो में अथाह बेगानापन ही दिखाई पड़ता है ।

पति पत्नी के आपसी संबंधो में जहाँ मधुरता नहीं रह जाती है वहाँ दूरियाँ बढ़ने लगती है। जब पति पत्नी एक दूसरे को समझ नहीं पाते तब भी उनके बीच फासले बढ़ जाते है। लेखिका ने 'कोहरे' उपन्यास में आज के पढ़े लिखे पीढी के बीच के फासले को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। उपन्यास में 'सुमी' और 'सुनिल' प्रेमविवाह के सूत्र में बँधे हैं, किन्तु सुनिल के अति स्वार्थी स्वभाव के कारण सुमी उसके बंधन में रहना मान्य नहीं करती। दोनों में टकराहट बढ़ जाती है। सुनिल स्मिता को नीचा दिखाने के लिए 'मिस इरा' से शारीरिक संबंध बनाता है इससे सुमी अपमानित होती है। सुनिल सुमी को तलाक देने का फैंसला करता है। सुमी अपने लड़के को लेकर मायके चली जाती है। इसतरह यह उपन्यास पति पत्नी के बदलते संबंधों पर बल देता है और नारी की नयी मानसिकता को उजागार करता

है, जो एक सामाजिक समस्या का भी भाग बन जाता है। नारी होने के कारण लेखिका ने एक नारी की संवेदना का अच्छा चित्रण किया है। आज की नारी के सामने - ''अस्मिता का सवाल सर्वप्रमुख है, अपने अस्तित्व को बचाए रखना और अस्मिता की रक्षा करने की ललक में पुरूष का अहं बार-बार उसे अपने आगे नतमस्तक करना चाहता है और टकराता है स्त्री की नवीन चेतना से, फिर टूटते है परिवार, टूटती हैं सामाजिक मान्यताएँ और विवाह जैसी संस्थापर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। "[१७]

हमारे समाज में अब तलाक शुदा परित्यक्ता नारी की समस्या बढ़ती जा रही है। 'यें दूरियाँ' कहानी में अंजु के माता पिता बहुत ज्यादा पढ़े लिखे, सुशिक्षित होने के बावजूद अपने अपने 'इगो' के कारण एक दूसरे से झगड़ते रहते है। आपस में न पटने के कारण एक दूसरे से अलग रहने का भी सोचते है। एक दिन अंजु की माँ अचानक अंजु से पूछती है कि अगर वह अंजु के पापा से दूर चली जाएँगी तो अंजू किसके पास रहेगी, उसके या पापा के । अंजु इस बात को सुनकर रोंने लगती है और अपनी माँ से लिपट जाती है, अपने माता पिता के निरंतर झगड़ों के कारण अंजु की मानसिकता पर गहरा असर पड़ता है और वह अंर्तमुख हो जाती है। इसतरह माता पिता के अलग होने के डर से अंजु की मानसिकता बिगड़ जाती है वह अपना जीवनसाथी चुनते के समय भी अपने माता पिता को खुद में और अपने जीवनसाथी में देखती है और जीवन साथी चुनने में मुश्कीलता महसुस करती है।

'क्षितीज' कहानी के नायक नायिका अपने अपने 'अहम्' से इतने बाधित है कि एक दूसरे को हर्ट करने का मौका नहीं छोड़ते। पति रवि के बर्ताव से परेशान होकर नायिका के मनमें 'तलाक' का रास्ता अपनाने के विचार आते है। वह सोचती है कि दाम्पत्य जीवन के इसतरह के ठंडे

संबंध को निभाया जाना मुश्कील है। रोज रोज की इस परेशानी को समाप्त करने के लिए उसे 'तलाक' का रास्ता अच्छा लगता है। सुशिक्षित अच्छा पढ़ लिख कर भी दाम्पत्य जीवन में तलाक जैसे विचारों का आना एक खतरे की निशानी ही समझनी होगी। पाश्चात्य अंधानुकरण के कारण अनेक पति पत्नी छोटे मोटे झगड़ों को आधार बनाकर 'तलाक' का रास्ता अपना रहे है। थोड़ी सी स्वतंत्रता के बदले में अनेक मुसीबतों का सामना उन्हें करना पड़ता है। उनके साथ उनके बच्चों का भविष्य भी चिंता का विषय बन जाता है। 'तलाक' शुदा नारियाँ अपने जीवनयापन के लिए गलत रास्तों को अपनती है। कामतृप्ति के लिए नैतिकता को दाँव पर लगाती है।

दीप्ति खंडेलवाल की 'आत्मघात' कहानी' की नायिका मृणालिनी अपने पति मोहित से न पटने के कारण उससे 'तलाक' लेती है और वर्किंग वुमेन्स होस्टल में रहने लगती है। परंतु मोहित की यादे उसे सुख से जीने नहीं देती। अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए अपने ही ऑफिस के बॉस को समर्पण देती है जो मृणालिनी को शैयासुख के बाद शादी के लिए प्रप्रोज भी करता है।

इसप्रकार हम देखते है कि पारिवारिक झगड़े, पति पत्नी में असंतोष तलाक समस्या को जन्म देते है ऐसे में पुरूष के साथ साथ नारी का जीवन भी ध्वस्त हो जाता है। परित्यक्ता नारी की समस्या ने आज हमारे समाज में बड़ा उग्र रूप धारण किया है। समाज की उन्नति के लिए यह एक अभिश्राप है। जरूरत है पति पत्नी के आपसी प्रेम सामंजस्य और अपने झगड़ों को आपस में सुलझाने की! जिससे उनके बच्चों का भविष्य भी सँभल सके।

४.४.३ अनमेल ब्याह समस्या :

भारतीय समाज में दहेज प्रथा का परिणाम अनमेल ब्याह में हो जाता था। ऐसे माता - पिता जिनके पास अपनी बेटी की शादी के लिए पर्याप्त

धन नहीं होता था, मजबूर होकर वे अपनी लड़की का ब्याह उससे उम्र में काफी बड़े व्यक्ति से कर देते थे। परंतु इस प्रकार के विवाह से दोनों के मन का मिलन तो कठीन था। इसके कारण दाम्पत्य जीवन असंतोषमय हो जाता था। ऐसे विवाहों में स्त्री का असंतोष बाहर खुल कर व्यक्त नहीं हो पाता वह अन्दर ही अन्दर घुटती रहती थी। उसका पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन कटु बन जाता था। समकालीन साहित्यकारों ने अनमेल ब्याह समस्या का अंकन अपने साहित्य में किया है।

दीप्ति खंडेलवाल एक श्रेष्ठ कथाकार है उनके साहित्य में नारी जीवन संबंधित इस विषय पर भी लेखनी चलायी है। उनके 'अर्थ' कहानी में 'कुमुद' के मामा मामी उसका ब्याह शहर के सबसे धनी सेठ बिहारीलाल से कर देते है। सेठजी पैतांलीस साल के थे और कुमुद केवल चौबीस साल की थी। उनका दाम्पत्य जीवन असंतुष्ट ही रह जाता है 'कुमुद' अपने पति को मन से कभी समर्पित नहीं हो पाती दिल का दौरा पड़ने से सेठजी का देहान्त हो जाता है। 'कुमुद' पूरा जीवन विधवा होकर जीने पर मजबूर हो जाती है।

'निर्वसन' कहानी में राधा एक भोली भाली सीधी साधी लड़की है। लेकिन आर्थिक कमी के कारण उसका ब्याह लाला के साथ किया जाता है। 'लाला' का पहले एक ब्याह हुआ था उसे एक बेटा भी है। लाला शराबी है, रात गए किसी बदनाम गली से निकलता है। वह आदमी कहने के लायक नहीं है, ऐसे आदमी से मॅट्रिक पास हुई राधा का ब्याह किया जाता है। राधा और लाला के उम्र में तीस वर्ष का अंतर है। इस ब्याह से राधा खुश नहीं है। वह अपनी शादी बचाने की कोशिश करती है परंतु एक दिन घर छोड़कर भाग जाती है। उसे बचपन से नृत्य करने की इच्छा थी लेकिन समय के बदलते नियति उसे आर्केस्ट्रा में डान्सर बनने पर मजबूर कर देती है।

'प्रेम - पत्र' कहानी की नायिका लाखी और उसका पति कलुआ दोनों में बीस साल का अंतर है । इसके सिवाय कलुआ शराबी, जुआरी,

ऐय्याश भी है। वह लाखी की हमेशा पिटाई करता रहता है । इस अनमेल ब्याह से लाखी का पूरा जीवन दयनीय, भयभीत और दुखी बनकर रह जाता है ।

'सुख' कहानी में बुट्टो बुआ और उसके पति राजा बाबू की आयु में बीस साल का अंतर है। शराबी, ऐय्याश राजा बाबू बुट्टो बुआ को शादी के दिन से ही मारता पिटता है। लेकिन आठ साल तक वह ऐसे पति के चरणों में पड़ी रहती है। एक दिन सट्टे में सब कुछ हार कर राजा बाबू घर से भाग जाते है। बुट्टो बुआ को अकेले ही दुखभरा जीवन मुंगौडी पापड बेचकर ढोना पड़ता है।

'बेहया' कहानी में चंदा और लाला पनवाड़ी की उम्र में बीस वर्ष का अंतर है। उसके बाप ने चंदा को पनवडी के हाथ बीच दिया था। चंदा विद्रोही बनकर अपने बाप और अपने पति लाला पनवाड़ी को कोसती है। आर्थिक कमजोरी से बचने के लिए 'वेश्या' बन जाती है।

' नागपाश' कहानी की नायिका छवि और मेजर अजय वर्मा के उम्र में दस साल का अंतर है। युद्ध में उनकी मृत्यु के बाद युवा छवि विधवा जीवन की त्रासदी ढोती रहती है

'एक अदद औरत' कहानी में सीता के माता पिता आर्थिक कमी के कारण अपनी चौदह वर्षीय बेटी का ब्याह गोविन्द से कर देते है। गोविन्द के बारे मे वे कहते है '' गोविन्द उम्र में नौ साल बड़े हैं, तो क्या हुआ! और सब तो ठीक ठाक है। मर्द की उम्र नहीं देखी जाती। गोविन्द विधवा माँ के एकलौते है। क्लर्क की नौकरी ही सही, बेकार तो नहीं। हां एक आँख कुछ भेंगी है, तो क्या हुआ? मर्द का रूप नहीं देखा जाता।"[१८] 'सीता के लिए इससे अच्छा वर घर जुटा सकना उसके माता - पिता के लिए असम्भव था। इस अनमेल ब्याह से सीता का सारा जीवन दुखी और कुंठित हो जाता है।

यह कहा जा सकता है कि अनमेल विवाह एक भयंकर सामाजिक समस्या है। इस में नारी का ही शोषण होता है। उम्र में अंतर होने के साथ साथ पति पत्नी के विचारों में भी अंतर पाया जाता है। जिससे दाम्पत्य जीवन पर गहरा असर पड़ता है।

'विषपायी' कहानी में बड़ा भाई १५ वर्ष की कमजोर और मासूम बहन का ब्याह ५० वर्ष के सेठ से तय करता है । पैसे लेकर वह बहन की शादी कर देता है। बहन शादी के बाद आत्महत्या कर लेती है।

निष्कर्षतः अनमेल ब्याह के कारण नारी का जीवन कुंठित होकर रह जाता है। कभी कभी नारी इस तरह के अनमेल ब्याह से विद्रोह करती है, कभी घरसे भाग जाती है तो कभी आत्महत्या कर लेती है।

४.४.४ पारिवारिक समस्या :

व्यक्ति के व्यक्तित्व के समाजीकरण में परिवार का महत्त्व अनन्यसाधारण है। सामाजिक गठन का मूल आधार परिवार संस्था है। परिवार संस्था में अनेक सामाजिक समस्याओं का समाधान मिल सकता है। आधुनिक युग में हम देखते कि आधुनिकता का प्रभाव भारतीय परिवारों पर पड़ रहा है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आवश्यक्ता के कारण बच्चे बड़े होकर अपने परिवार से पृथक रहने लगे है। दीप्ति खडेलवाल के 'आधुनिक' में इसीतरह चौधरी हरि भजन का पुत्र सुधीर आधुनिक होने का दम भरता है। विलायत में पढ़ लिख कर वही विलायती लड़की से शादी करता है और अपने पिता का परिचय 'एन ओल्ड सर्वंट' कहकर अपनी पत्नी से कराता है। इसके आधुनिकता भरे आचरण से उसके माता पिता के मानसिक व्यथा का चित्रण लेखिका ने इस कहानी मे किया है। आज के आधुनिक युग मे परिवार का विघटन और औघोगीकरण के कारण आर्थिक निर्भरता महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। आज सुशिक्षित युवतियाँ भी नौकरी करके अपने परिवार का आधार बनती है।

दीप्ति खंडेलवाल की 'अभिशप्ता' कहानी की मानो दी भी पिता की बीमारी के कारण टीचर की नौकरी कर घर की जिम्मेदारियाँ निभाती है। परंतु खुद अकेलेपन की जिंदगी जीनेपर मजबूर हो जाती है। आधुनिक परिवारो में भी 'अविवाहित युवतियों की समस्या' गंभीररूप धारण कर रही है। आधुनिक समाज में व्यवित के स्वच्छंद विकास के हेतु गृहकलह तथा तनावपूर्ण स्थिति से मुक्ति पाने के लिए परिवार का विघटन हो रहो है। परिवार के सदस्यो में मनमुटाव होते है दीप्ति की कहानी 'सलीब पर' में वाबूजी की जायदाद के लिए उनके तीन बेटे अपने ही पिता पर आरोपन करने की हद तक भी पहुँचते दिखाई देते है।

जिससे उनकी पत्नी सुमित्रा को अपने द्वारा ऐसे बेटे जनने का अफसोस होता है। इसप्रकार दीप्ति खंडेलवाल के कहानी साहित्य में आधुनिक परपरांगत छोटे व संयुक्त सभी प्रकार के परिवार की झलक दिखाई देती है और उनमें चित्रित परिवार किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। इसी प्रकार दीप्ति की कहानियों में उच्चवर्गीय मध्यवर्गीय तथा निम्मवर्गीय परिवार का चित्रण मिलता है। उनकी कहानियों में पारिवारिक जीवन नारी की पारिवारिक समस्याएँ तथा पारिवारिक मर्यादाओं का और मान्यताओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। परिवारों में सास-बहू पति-पत्नी के झगड़े आदि के कारण पारिवारिक जीवन कटू बन जाता है। लेखिका के 'प्रेत' और 'एक और सीता' कहानी में सांस बहु के पारिवारिक झगडों के कारण बहू को कुंठामय जीवन व्यथीत करना पडता है। इन झगड़ों के कारण 'परित्यक्ता जीवन' यह नारी की सामाजिक समस्या बन जाती है और बहु आधुनिकता का नूर पकडकर अन्याय सहने को तैयार नही होती। परिणाम स्वरुप उसका जीवन संघर्षमय बना रहता है।

४.४.५ वेश्या समस्या: प्राचीन काल से भारतीय समाज में वेश्या समस्या तीव्र रूप धारण की हुई है। समाज की अनेक कुप्रथाओं के कारण ग्रस्त नारी

असहाय होकर मजबूरन इस व्यवसाय का स्वीकार करती है। दहेज, प्रथा, वैधव्य आदि के कारण आर्थिक समस्या से गुजरती नारी इस मार्ग को अपनाती है **डॉ.रेवा कुलकर्णी** के संशोधनानुसार, ''प्राचीन काल से भारतीय स्त्री की दुनिया चहारदीवारियों में ही सिमट गई थी। शिक्षा के अभाव के कारण बाह्य दुनिया के स्वरूप को जानने में संघर्षों से टकाराने में वह असमर्थ बनी रही । घर की देहरी से बाहर निकलकर अपनी रक्षा करने के लिए वह असमर्थ ही रही इसी कारण यह वेश्या समस्या और भी दृढ़ होती गई।"[१९] व्यक्तिगत दुर्बलताएँ, समाज की कुप्रथाएँ, पारिवारिक स्थिति आदि से मजबूर होकर नारी वेश्या बनती है। कुछ रूपयों के बदले में अपनी इज्जत बेचती है और पुरूषों की अतृप्त काम वासना को पूरा करती है। परंतु ऐसी नारियों को समाज बड़ी घृणित नजरों से देखता है। उनकी औलाद को भी नाजायज करार दिया जाता है। समाज के उच्च वर्ग के लोग वेश्याओं को विलास तथा सुख सुविधा और मनोरंजन की वस्तु मानते है। बदलते समय के साथ आधुनिक युग में अतिविलास प्रियता के कारण सुशिक्षित अच्छे घरों की लड़कियाँ भी 'कॉल गर्ल्स' के रूप से इस प्रकार का व्यवसाय करती दिखाई देती है। दीप्ति खंडेलवाल की अनेक कहानियों मे पारिवारिक स्थिति तथा अनिर्बंध आचरण की मानसिकता प्रदर्शित करती युवतियाँ नजर आती है। वेश्या समस्या समाज की एक जटिल समस्या है क्योंकि वेश्या संबंध के कारण हमारे समाज में अनेक परिवारों मे असंतोष जन्म देता है। वेश्या संबंध यौन संबंध का ही एक दूसरा रूप है। पुरुष इसी उद्देश से वेश्या के पास पहुँचता है कि उसकी यौन संबंधी शारीरिक आवश्यकता तुष्ट हो जाएँ। स्त्री इसलिए वेश्या वृत्ति धारण करती है कि उसका अपने जीवन में कभी भूल से या मनुष्य के बल प्रयोग से सामाजिक बंधनों, धर्म और संस्कृति की दृष्टि

से शील भ्रष्ट होना पड़ता है । अतः उसे जीवन यापन के लिए वेश्या जीवन के बिना दूसरा पर्याय नहीं होता।

दीप्ति खंडलेवाल के 'बेहया' कहानी में चंदा का ब्याह लालचंद पनवाडी से होता है जो चंदा से उम्र मे बीस साल बड़ा है। चंदा का बाप उसे लाला के हाथ बेच देता है। कहानी में चंदा का विद्रोह जगह जगह व्यक्त होता है। वह दिखने में सुंदर तो नहीं है लेकिन मर्दों को आकर्षित करने के लिए सजती सँवरती है अपने यौनांग दिखने के लिए वैसा लिबास पहनती है। उसे एक लड़का है। चंदा उसे एक अच्छे प्रायमरी स्कूल में भरती करवा देती है। बढ़ते खर्च को देखकर वह खुले आम शहर के बिगड़े रईस घनश्याम की रखैल भी बन जाती। लेकिन उसकी इस स्थिति के लिए वह समाज को ही जिम्मेदार समझती है और ऐसे समाज में 'ईंट का जवाब में पत्थर' से देकर रहना वह अच्छी तरह सीख जाती है।

महज 'कोठे' पर बैठनेवाली नारी को ही वेश्या नहीं कहा जा सकता बल्कि पैसों के बदले में अपने जिस्म का सौदा करने वाली औरत भी वेश्या की ही श्रेणी में आएगी। लेखिका के 'हव्वा' कहानी की मिस रतिलाल बचपन में अपने बहन पर हुए अत्याचार का बदला लेने के लिए अनेक पुरूषों से यौनसंबंध रखती है। कहने को वह एअर इंडिया मे रिसेप्शनिस्ट की नौकरी तो करती है लेकीन लेफ्टिनेंट कोहली से शरीरसंबंध रखती है। कोहली से मिले एक हजार रूपए के चैक को वह अपनी फीस मानती है। उसके बाद अनेक पुरूषों से उसका शरीरसंबंध होता है। चटर्जी, प्रेमनाथ, सुनिल जैसे अनेक पुरूषों से शरीरसंबंध रखकर वह बहुत पैसे भी कमाती है। लेकिन उम्र के छत्तीस वर्ष में ही उसे कैंसर जैसी जानलेवा बिमारी हो जाती है। परंतु पीछे मुडकर देखने पर उसे अपने न पत्नी, न माँ, न औरत बन पाने का अफसोस होता है।

'युगपुत्री' की मिस रचना भी पिता के आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए नौकरी तो करती है लेकिन नौकरी की जगह अपने शरीर का प्रदर्शन करते हुए बॉस अमरकांत, सुधीर, फीरोज ऐसे अनेक लोगों से यौनसंबंध बनाती है। बदले में बॉस अमरकान्त रचना को स्टेनो से सेक्रटरी बनाते है। परंतु ऐसे अनैतिक संबंधों से शारीरिक सुख पाकर भी मानसिक रूप से वह टूट जाती है, बिखर जाती है। इसतरह से दीप्ति खंडेलवाल ने आर्थिक मजबूरी ही इसतरह के संबंधों का मुख्य कारण है यह बताने का प्रयास किया है और आधुनिक वेश्या का रूप समाज के सामने लाने का प्रयास किया है जिसमें नारी की इस अवस्था के लिए कहीं ना कहीं समाज को ही जिम्मेदार ठहराया गया है।

४.४.६ कामकाजी नारी की समस्या : अंग्रेजों के भारत में आगमन के बाद भारत में स्त्री शिक्षा प्रणाली का आरंभ हुआ। जिससे भारतीय नारी शिक्षा प्राप्त कर अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगी। घर की चारदीवारी के बाहर आकर अर्थार्जन करने लगी। घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगी। आज हम देखते है कि कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं रहा है। स्त्री अपनी प्रतिभा के सहारे उच्च शिखर तक पहुँच गयी है, फिर भी पुरूष का उसके प्रति दृष्टिकोण अब भी पुरातन काल की याद दिलाता है।

स्त्री की आर्थिक क्षमताओं का लाभ तो परिवार प्रसन्नता पूर्वक उठाता है किंतु उस से यह आशा भी रखता है कि वह परंपरागत रूप में कमाऊ होने के साथ साथ घरके पत्नी, बहू, माँ के दायित्व का पूर्णत: निर्वाह भी करे। विवाहित कामकाजी नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। घर की और बाहर की दोनों जिम्मेदारियाँ निभाते निभाते वह थक जाती है लेकिन पुरूष को उसे मदद करने की कोई आवश्यकता भी महसूस नहीं होती। बल्कि घरकी और दफ्तर की जिम्मेदारियाँ निभाते उसे घड़ी की सुई

की तरह भागना पडता है। इस अवस्था में मानसिक तौर पर बिखर जाती हैं, टूट जाती है। इसका यथार्थ अंकन दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी 'तपिश के बाद' इस कहानी के द्वारा किया है। सुमी बैंक में नौकरी करती है। पति आनंद उसे काम करने में सहयोग तो नही देता उल्टा खुद के कामों के लिए पत्नी पर निर्भर रहता है। वह अपनी पत्नी पर पुरूष अधिकार जताने की कोशिश करता है। सुमी के मन मे विद्रोह की भावना जागती है और एक दिन झगड़ा होने पर वह घर छोड़कर जाने की बात करती है। अविवाहित कामकाजी नारी की समस्या भी आधुनिक भारतीय समाज में बढ़ रही है घर की बड़ी लड़की होने के कारण पिता की जिम्मेंदारियाँ कम करने के लिए वह नौकरी करती है। खुद के बारे में न सोचकर परिवार के बाकी सब सदस्यों की माँगे पूरी करती रहती है और उसकी शादी की उम्र भी निकल जाती है। 'अभिशप्ता' की मानो दी बूढ़े पिता के बीमारी की वजह से घर की सारी जिम्मेदारियाँ स्वयं निभाती है। टीचर की नौकरी करती है। परंतु एक युवा लड़की के मन में जो अभिलाषाएँ होती है उसे पूरा नहीं कर पाती और कभी भी खत्म न होनेवाले अकेलेपन का शिकार हो जाती है।

'प्यार' तथा 'क्षितीज' कहानी की नायिकाएँ अच्छी पढी लिखी लेक्चरर हैं परंतु घर में वे अपन पति से समानाधिकार की चाह रखते हुए छोटी छोटी बातों पर पतिदेव से झगड़ती है । नाराज रहती है ।अपने पति के अहम् के कारण कुंठित रहती है । इसतरह हम देखते है कि अच्छे पढ़ लिखकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र होनेपर भी एक भारतीय स्त्री खुलेपन की साँसे ले नहीं सकती । कुछ न कुछ कमी उसे खाये जाती है। ज्यादा पढ़ने लिखने से उसके मनमें भी अहंकार भावना बढ़ जाती है। त्याग, सहनशीलता जैसे संस्कार वह धीरे धीरे भूलती जा रही है।

'कगार पर' कहानी की रंजना जैसी प्रैक्टिकल लड़की का चित्रण लेखिका ने हूबहू किया है। रंजना बी-कॉम करके मुहल्ले के बैंक में क्लर्क

की नौकरी करती है। हेमन्त से शादी करती है। लेकिन वह हेमन्त के सामने शर्ते रखती है कि वह सास-ननद के साथ नहीं रहेगी, नोकरी नहीं छोड़ेगी, और बच्चे जल्दी नहीं होने देंगी। व्यावहारिक होने के कारण वह अपने पति हेमन्त से एक एक रूपये का हिसाब पूछती है। हेमन्त रंजना के अति निश्चितता तथा व्यवस्थितता से तंग आता है। वह हिस्टेरिक हो जाता है। फिर भी रंजना बिलकुल शांत रहती है। एक दिन सागर के तटपर घूमते समय हेमन्त उसे मरने से बचा लेता है। रंजना का अहंकार चुरचुर हो जाता है। वह बिल्कुल बदल जाती है। लेखिका ने यह समझाने का प्रयास किया है कि पढ़ लिखने से कामकाजी बनने से नारी में आत्मविश्वास तो आता है परंतु अहम् की मात्रा भी बढ जाती है।

'रीतते हुए' कहानी की सुषमा नौकरी करती है। पति रमेश और वह स्वयं भी इतने व्यवहारिक है कि खर्च बढ़ने के डर से बच्चों को जन्म तक देना नहीं चाहते। उनके संबंध इतने व्यवहारिक और ऊबाऊ हो जाते है कि किसी रिक्तता का अनुभव करने लगते है। आर्थिक स्थिरता के बावजूद उनका दांपत्य जीवन सुखी नही बन पाता।

'देह की सीता' कहानी में शालिनी एक अच्छी डॉक्टर है। परंतु अपनी कामतृप्ति के लिए वह अपने पति के होते हुए उनकी गैरहजरी में मेजर सहाय से शारीरिक संबंध रखती है। पढ़ी लिखी आज की पीढ़ी मे नारी अनैतिक संबंधों को केवल देह के स्तर पर स्वीकारती है। यह कड़वा सच लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से समाज के सामने लाने का प्रयास किया है।

४.४.७ बलात्कारी नारी की जीवन समस्या :-

प्रकृति के नियमानुसार नारी कितना भी सबला होने का प्रयास करे, वह अबला ही रहती है। शक्ती का वरदान प्राप्त पुरूष इस अबला नारी पर अत्याचार करता रहता है। अपनी कामपिसासा को मिटाने के लिए समाज में अनेक नराधम भुखे कुत्तों की तरह औरत की इज्जत को नोच डालते है।

और बेचारी उस बलात्कारी नारी का जीवन नरक बन जाता है। बलात्कारी नारी का शेष जीवन या तो कुण्ठाग्रस्त एवं अभिशापमय हो जाता है या वह अपने आप को समाप्त कर लेती है। दीप्ति खंडेलवाल ने अपने साहित्य में बलात्कारी नारी की मानसिकता तथा उनकी जीवनगाथा बड़ी मार्मिकता से चित्रित की है और समाज से प्रश्न किया है कि क्यों इस बलात्कार का परिणाम एक औरत को ही झेलना पड़ता है? मर्द तो औरतों को भोगकर चले जाते है लेकिन ऐसी औरतो को समाज सुख से जीने भी नहीं देता। औरत का इसमें कुछ भी कसूर न होने पर भी औरत को ही नरकयातना भुगतनी पड़ती है, यह एक चिंता का विषय है।

दीप्ति खंडेलवाल की 'देह की सीता' कहानी में एक चौदह वर्षीय नववधु पर तीन नराधम बलात्कार करते है। एक नारी शरीर को उन बर्बर पुरूष दरिन्दों ने ऐसा नोचा है कि कई टांके लगाने पडे। डॉ. शालिनी के पास रेप केस आया है। डॉ. शालिनी उसका ठीक तरह से इलाज करती है। लेकिन वह वधु थी कि रोये जा रही थी। वह अपने अस्फुट स्वरों में एक ही बात दुहरा रही थी, ''हम मर जाइब.. अब हम आपन ई करिया मुँह केंहू के ना दिखाइब .. अब हम उनके कोनो काम के नाही ... हम मर जाइब .. हम मर जाइब!"[२०] स्पष्ट है कि उस घटना से वधू पर ऐसा असर हुआ कि वह सोचती है कि वह अपने पति के लायक नही रही और वह अब सिर्फ प्राण देने के लायक रह गयी है। हमारे समाज में ऐसा लगता है जैसे सारे नैतिक बंधनों की जिम्मेदारी सिर्फ औरतो पर ही है, पुरूष का उनसे वास्ता नहीं। चूँकि वधु बलात्कार होने पर खुद को ही कसूरवार समजती है, मर जाने की बातें करती है।

'सती' कहानी में पंद्रह वर्षीय निम्नवर्गीय कनका जो दिखने में बड़ी सुंदर है, उसपर नागन नामक गुंडा बलात्कार करता है । उस वक्त नागन

की वज्र-पकड से छूटने के लिए छटपटाती संघर्ष करती कनका मूर्च्छित होकर ही समर्पण करती है। उस मूर्च्छा से होश में आने के बाद कनका केवल मौन हो गई। वह नहीं रोई नही उसने किसीसे कुछ कहा। उसकी नानी और उसमें अभिशप्त मौन मँडराने लगता है। जब नानी ने उसके ब्याह की बात पक्की करने का प्रयास किया तब कनका ने नानी से कहा कि वह नागन के साथ रहेगी, किसी दूसरे से ब्याह नहीं करेगी और सचमुच एक दिन वह नागन पास उसके साथ रहने चली गयी। लेखिका ने कनका के माध्यम से ऐसी नारी का चित्रण किया है जो बलात्कार के विष को पिकर घुट घुट जिने की बजाय निडरता से उसी नराधम को अपना पति मानकर उसी की सेवा करती है और उसके मरने पर भी पंडीत को नागन के पसंद की चीजे दान करती है। एक भारतीय सती सावित्री का आदर्श लेखिका ने कनका के माध्यम से इस कहानी में प्रस्तुत किया है।

'शेष-अशेष' कहानी में शची चौदह वर्ष की थी तब उसपर कस्बे के गुंडे लडके रज्जन ने बलात्कार किया था। लेखिका ने शची की मानसिकता का वर्णन करते हुये कहा है कि एक दीन-हीन मुंशी पिता की बेटी शची इतनी डरी-सी रहती थी कि उस घटना ने उसे स्तब्ध कर दिया। रज्जन की पशुता ने उसे इतना आहत किया था वह छिप-छिपकर रोया करती थी। लेकिन हर भारतीय लडकी की तरह रज्जन जो उसका पहला पुरूष था उसके मन-प्राण में बस गया। वह उसी के सपने देखने लगी। परंतु रज्जन ने उसे स्वीकार करने से साफ इन्कार कर दिया। उसका चौधरी से ब्याह हुआ परंतु वहाँ से भी उसे घृणित होकर घर से बाहर निकाला गया। वह शहर जाकर पढ लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हो गई। परंतु अंत में क्षयरोग से वह छटपटाती मर गयी।

'प्रिया' उपन्यास में प्रिया की माँ 'सौदामिनी' को उसके पति अपना बिझनेस बढ़ाने के स्वार्थी हेतु से सौदामिनी को परपुरूष के कमरे में छोड

देते है। सौदामिनी जैसे तैसे अपने पति के चुंगुल से भागकर अपने पिता के पास रहने लगती है। उसकी लड़की प्रिया का भी राम आहुजा द्वारा बलात्कार ही होता है और उसे धोखा देकर प्रिया के पेट में अपना बच्चा छोड़ कर राम आहुजा विदेश भाग जाता है। एर्बोशन होने के बाद प्रिया मानसिक दृष्ट्या बिखर जाती है। और अंत में आजन्म अविवाहित रहने का निर्णय लेती है। इसका मार्मिक वर्णन लेखिका ने इस उपन्यास में किया है।

४.४.८ विधवा समस्या:- भारतीय समाज में विधवा नारी एक अभिशप्त जीवन जीने पर मजबूर है। हमारी सामाजिक व्यवस्था में विधवा नारी का बडा शोषण होता आ रहा है। विधवा नारी की तरफ हमारा समाज अलग ही दृष्टीकोण से देखना है। आज भी कहीं कहीं तो विधवा नारी का चेहरा देखना भी अच्छा शगुन नहीं माना जाता है। कई राज्यों मे आज भी विधवा स्त्री को उसके बाल काटकर इस तरह विद्रूप किया जाता है कि वह किसी पुरुष के आकर्षण की वस्तु न बन पाए। उसका पेहराव भी अलग सा होता है जिससे उसका करूण रुप दृष्टिगोचर होता है। कहीं सामूहिक, पारिवारिक कार्यक्रमों में आना-जाना उसके लिए मना किया जाता है। किसी मांगलिक कार्य में विधवा का प्रवेश आज भी निषिद्ध माना जाता है।

आधुनिक युग में हम देखते है कि पति के मृत्यु के बाद सती जानेवाली नारी के आदर्श बदल चुके है । विधवा स्त्री आज अपने पसंद का जीना जी सकती है । पति के मृत्यु के बाद पति के ज्यायदाद का हिस्सा भी कानूनन पा सकती है। परंतु संस्कारों की मारी भारतीय विधवा सदा से ही उपेक्षिता और पीड़िता रही है। जड़ संस्कारों में बँधी होने के कारण अपनी यौन तुष्टि भी वह अपनी इच्छा से नहीं कर पाती। भारतीय विधवा अपने आप में एक विराट प्रश्नचिन्ह है। समकालीन कथा साहित्य में विधवा की स्थिति को विविध रूपों में अंकित करने का प्रयास किया गया है। दीप्ति

खंडेलवाल के नागपाश इस कहानी की नायिका 'छवि' विधवा है, उसकी मानसिक स्थिति का अंकन लेखिका ने बड़ी मार्मिकता से किया है।

भारतीय परंपरा में पति के अस्तित्व पर ही नारी का स्थान अवलंबित होने के कारण पति की मृत्यु के बाद नारी का जीवन भयानक हो उठता था। परंतु आज हम देखते है कि समाज में विधवा की समस्या उतनी भयावह नहीं है जितनी स्वतंत्रता पूर्व थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जीवन तेज गति से बदला है और विधवाओं से जुड़ी प्राचीन मान्यताओं के प्रति आस्था कम हुई है । पति की मृत्यु के पश्चात् नारी का संघर्ष एक ओर परिवारिक और दूसरी ओर आर्थिक समस्याओं से होता है।

विधवा का परंपरागत रूप यहीं है कि वह अपने पति की स्मृतियों के सहारे जीवन व्यतीत करे। समाज में विधवा के पुनर्विवाह की अनुमति है किन्तु विधवा का पुर्नविवाह परिवार के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन जाती है । बिना किसी विवशता या आर्थिक कारणों के विधवा को विवाह करना कठिन हो जाता है। नारी के लिए तो व्यक्तिगत धरातल पर यह महत्त्वपूर्ण समस्या बन जाती है। यद्यपि समाज सुधार संबंधी कुछ आंदोलनों ने विधवा नारी का बहुत हद तक रुढियों से मुक्ति दिलवा दी है तथापि पिछडा हुई सभ्यता मे उसे आज भी कुछ रूढियों का शिकार होना पडता है। आज विधवा पति के मृत्यु के पश्चात वंचिता की स्थिति को अभिशाप मानती है। पुर्नविवाह के प्रस्ताव को वह सहज स्वीकार करती है। दीप्ति खंडेलवाल की 'नागपाश' कहानी की छवि विधवा है। उसके पति मेजर अजय वर्मा चीन-पाकिस्तान युद्ध में शहीद हो गए थे। अजय और छवि के बीच जीवन और मृत्यु की दूरियाँ फैल गयी थी। ''अजय की मृत्यु के कारण छवि को जो जिवित मृत्यु झेलनी पड़ रही थी उसके त्रास को झेलती छवि को लगता कि उसके वक्ष में धंसती शब्दहीन, अकारहीन गोलियों की संख्या संख्यातित है।

"[२१] उसका अतीत था कि छवि और विकास एक दूसरे से प्यार करते थे परंतु अमिरी-गरीबी के दीवार ने उन्हे मिलने से रोक दिया था और छवि का विवाह दस साल बडे अजय वर्मा से हुआ था। छवि के विधवा होने पर विकास उसे अपनाना चाहता है परंतु छवि इस लिए इन्कार कर देती है कि क्योंकि विकास शादीशुदा है और उसके दो बच्चे विकास को पिता के रूप में स्वीकार नही करना चाहते। मजवूरियों के नाशपाश नायिका को घेरे रहते है। आर्थिक रूप से निर्भर होने पर भी वैधव्य का जीवन जीते उसे ऐसा लगता है कि पीड़ाएँ उसकी सहचर है, सुख जल्दी बांसी हो जाते है लेकिन घाँव हरे बने रहते है। अपने तन-मन की तपन को ठंडा करने के लिए छवि शावर के नीचे घंटो बैठी रहती थी। एक विधवा की मन की व्यथा को लेखिका ने बडी मार्मिकता से इस प्रकार वर्णित किया है। 'धाय माँ की चीख-पुकार से विवश होकर छवि ने जाडो मे शावर के नीचे बैठना छोड दिया था, फिर भी जब-जब वह अपने को रोक नही पाती थी.. धास माँ की आँख बचाकर शावर के नीचे बैठ जाती थी.. किंतु...बर्फिल पानी से नहाकर थरथर कापती छवि को फिर.. भी लगता कि उसकी शिराओं में तपन वैसी ही है... "[२२] यहाँ पर विधवा का दयनीय रूप सामने आता है। 'कटु सत्य' इस कहानी में भी नायक लेखक सुवीर के मृत्यु के पश्चात विधवा शांता की आर्थिक तथा मानसिक दयनीयता की यथा तथ्य प्रस्तुति लेखिका ने की है ।

इसतरह हम देखते है कि समाज में विधवा समस्या का हल विधवा विवाह से हो सकता है, पर यह बात उतनी आसान नहीं है। नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास ही नारी के विधवा जीवन की कठिनाइयाँ दूर करने में सहायक हो सकता है।

४.४.९ मध्यवर्ग के नारी की आर्थिक समस्या

समाज का ढांचा अर्थ व्यवस्था पर आधारित होता है। भारत देश में अंग्रेजों के कारण औद्योगिकता के परिणाम जनता को भुगतने पड़े। वर्ग संघर्ष बढता गया। वर्ग संघर्ष में अमिर अधिक अमीर होता चला कया तथा गरीब अधिक गरीब और इन स्थितियों मे सबसे अधिक मध्यमवर्ग पिसा। **डॉ. स्वर्णलता** के संशोधनानुसार-''आज की बदलती परिस्थितियों के दम घोटू वाताबरण ने मानव के जीवन में विचित्र बिखराव उत्पन्न कर दिया है। आज जिंदगी की कड़वाहट सबसे अधिक मध्यमवर्गीय व्यक्ति को पीनी पड़ती है, क्योंकि न तो वह उच्च वर्ग का अंग बन सकता है, न अपने अहं के कारण निम्नवर्ग वालों से मिल सकता है। थोथी अहम्यता का जुआ इच्छा रहते अपनी गर्दन से नही निकाल पाता, वैयक्तिक मान्यताएँ जितनी तेजी से बदली सामाजिक प्रतिरोंधो ने उतना ही दबाने की कोशिश की।"[२३]

स्वतंत्रता प्राप्ति में बाद भारतीय समाज के वित्त के आधार पर तीन स्तर बन गए उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग । धन के आधार पर व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सामाजिक स्थिति जानी जाती है। आज के समाज में धन जीवन का महत्त्वपूर्ण तत्व है। मध्यवर्ग समाज का वह वर्ग है जो एक तरफ अपनी इज्जत बनाए रखनेके लिए हरतरह की कठिनाइयों को झेलने के लिए तैयार रहता है, तो दूसरी तरफ इसके पास इतना आर्थिक सामर्थ्य नहीं है कि वह समाज में सम्मान पा सके ।

दीप्ति खंडेलवाल के अनेक कहानियो में मध्य वर्ग की नारी का संत्रास दिखाई देता है। आज की बढ़ती महँगाई ने मध्यवर्ग को इतना पंगु बना दिया है कि वह उसी स्थिति में जीने के लिए मजबूर है । इस परिस्थिति से उबरने के लिए वह प्रयत्न तो करता है, लेकिन जिम्मेदारियों का बोझ

ढ़ोते-ढ़ोते उसका पूरा जीवन व्यतीत हो जाता है । घुटन, संत्रास, भय, अवनति, अकेलापन, संघर्ष, शोषण आदि उसकी निजी समस्याएँ बन गई हैं।

मध्यवर्गीय परिवार में पति की सीमित आय में सारा जुगाड़ पत्नी को बिठाना पड़ता है। इस कठिनाई में पत्नी का दिन चीखते चिल्लाते ही शुरू होता है।

'विषपायी' कहानी की पत्नी अपना और अपने बच्चों का सिर पीटती है। पुराने जर्जर घर में उसे लगता है कि वह नर्क भोग रही है। 'विघटन' कहानी की पत्नी तनी भौंहे, कुद्धा दृष्टि, खिंचे होंठ लिए पति के हर प्रश्न का उत्तर तिरस्कार से देती है। महँगाई और कम आय के कारण रोज मार्रा की जिंदगी से वह खीज उठती है। तो 'शीर्षकहीन' कहानी की पत्नी पति को गेहुँ लाने को कहती है तब, पति के 'कैसे लाऊ' इस प्रश्न का उत्तर वह 'मुझे बेचकर ऐसे देती है'।

इसतरह दीप्ति की कहानियों की मध्यवर्ग की पत्नी की सारी तल्खी, झल्लाहट चिड़चिड़ापन का कारण आर्थिक अभाव है यह स्पष्ट होता है।

मध्यवर्ग के परिवारों में लड़की का जन्म आज भी आधुनिक दृष्टिकोण के बावजूद शापित ही कहा जा सकता है। दीप्ति खंडेलवाल की 'जहर' कहानी भी माया को उसकी माँ दिन रात कोसती रहती है। उसकी शादी करने के लिए उसके माँ बाप के पास पैसा नहीं है। इस हालत में वह मजबूरन गली के कम बिरादरी के लड़के के साथ भाग जाती है। लेखिका ने माया के इस हालत के लिए समाज को ही दोषी ठहराया है।

मध्यवर्ग में परिवार का मुख्य पुरूप जव बीमारी की वजह से घर का बोझ ढ़ोने के लिए असमर्थ हो जाता है तब घर की सारी जिम्मेदारियाँ बड़े बेटे या बेटी पर आ जाती है। 'युगपुत्री' कहानी की मिस रचना कपूर पिता के रिटायर होने पर घर की आर्थिक जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती है परंतु अपनी अतृप्त कामवासना को बुझाने के लिए अनैतिक संबंध बनाती है।

'पार्वती एक' कहानी की पार्वती का ब्याह आर्थिक मजबूरी की वजह से नहीं हो पाता। पहली तीन बेटिंयों के ब्याह के कर्ज से दबे उसके माँ, नन्हा भाई, बूढे बाप की गृहस्थी से तंग आकार वह पड़ोस के लड़के घनश्याम के साथ भागने पर उतारू हो जाती है।

'निर्वसन' कहानी की राधा आगे नृत्य सीखना चाहती है। परंतु आर्थिक कमजोरी के कारण उसकी इस इच्छा का गला माँ के हाथों दबा दिया जाता है । राधा का ब्याह राधा से कई बड़े उम्र के लाला से किया कर दिया जाता है । वह अंत में घर से भाग जाती है और कैबरे डान्सर बन जाती है ।

'अभिशप्ता' की मानो मध्यवर्ग की है । पिता के बीमारी के कारण घर की सारी जिम्मेदारी मानो पर आ जाती है । वह चाहते हुए भी अपने खुद के बारे में नहीं सोच सकती । बहनों का ब्याह तो कर देती है लेकिन खुद बिनब्याही रह जाती है और कभी भी खत्म न होने वाले अकेलेपन का शिकार हो जाती है ।

इसप्रकार दीप्ति खंडेलवाल के कहानी भी मध्यवर्ग की लड़की आर्थिक स्थिती के कारण अनमेल ब्याह, अनैतिकता, अविवाहित अवस्था आदि नयी 'समस्याओं का शिकार हो जाती है ।

४.४.१० निम्न वर्ग की नारी की आर्थिक समस्या

निम्न वर्ग समाज का ऐसा वर्ग है जिसे समाज घृणा करता है, गरीबी, बेरोजगारी, अस्वास्थ्य, रहने की समस्या एक ना अनेक समस्याओं का इस वर्ग को सामना करना पड़ता है। दीप्ति खंडेलवाल के 'भूख', 'चंदा की जोत' कहानियों में इस वर्ग के 'नारी' पात्रों की लाचारी, दरिद्रता और उनसे जुड़े प्रश्नों को अपनी लेखनी से व्यक्त किया है।

'भूख' कहानी की रधिया दूसरों के घर में चौकाबर्तन का काम करती है। उसका पति बिरजु बीमार पडने पर वह उसे बीमारी से बचाने का हर तरह

से प्रयास करती है। वह असीम रूपवती है । उसके रूप के कारण वह जहाँ काम करती है वहाँ का मालिक रधिया पर बुरी नजर डालता है । रधिया तब नौकरी छोड देती है। आर्थिक दुर्दशा के कारण भूख से बेजार अपने पति की जान बचाने के लिए वह ड्रायवर के हाथों अपने आप को बेच देती है । आर्थिक स्थिति उसे अनैतिकता की राह अपनाने पर मजबूर कर देती है ।

'चंदा की जोत' कहानी की भागवती मेहनत मजदूरी करके अपने निखट्टू, शराबी, जुआरी पति का पेट पालती है । इसके बदले में पति से उसे मार और गालियाँ मिलती हैं । श्रीकांत नामक नया पोस्टमास्टर भागवती के सामने अपने पति को त्याग कर उससे ब्याह करने का प्रस्ताव रखता है । जड़संस्कारों में बद्ध भागवती चाहकर भी इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती । वह अपनी दुखभरी जिंदगी से परेशान होकर आखिर अपनी बेटी के साथ आत्महत्या कर लेती है ।

लेखिका ने इन कहानियों के माध्यम से निम्न वर्ग की नारी की लाचारी तथा मजबूरियों को पाठक के सामने प्रस्तुत किया है । अर्थाभाव के कारण न चाहते हुए भी उन्हे आत्महत्या, अनैतिकता जैसे रास्तों को अपनाना पडता है।

४.४.११ नैतिक मूल्यों के पतन की समस्या :-

भारतीय समाज नैतिक मूल्यों पर खड़ा है। हमारे समाज में विवाह के बिना स्त्री-पुरूष का एक-दूसरे के साथ रहना या संबंध रखना अनैतिक माना जाता है। फिर भी समाज में ऐसे अनेक स्त्री-पुरूष हैं जो विवाहित होकर भी ऐसे संबंध स्थापित करते हैं, जिसे अनैतिक संबंध कहा जाता है। भारतीय समाज व्यक्ति को यौन स्वतन्त्रता नहीं देता है। आधुनिकता तथा पाश्चात्य अंधानुकरण के कारण भारतीय नारी परंपराबद्ध वैवाहिक संस्था के प्रति विद्रोह के लिए तत्पर हुई है।

वर्तमान समाज में रिश्तों में एक प्रकार का खोखलापन आ गया है। भावनात्मक निकटता कम होती जा रही है। स्त्रियों को समानता का दर्जा मिलने के कारण उनमें आत्मसम्मान तथा आत्मविश्वास प्रबल हो गया है। नौकरी पेशा तथा व्यवसायिक धरातल पर नारी का सम्पर्क अनेक प्रकार के पुरूपों से होता है जिसके कारण नारी में धीरे-धीरे स्वच्छंदता बढ़ रही है। इसी कारण एक ही व्यक्ति से प्रतिबद्ध न रहकर प्रेम करना तथा उसी से जुड़कर रहने वाली धारणा अब धीरे-धीरे बदलती जा रही है।

अनैतिक संबंधों के कारण विविध है। पति को रूक्ष निरस व्यवहार, निरंतन अपमानित करने की प्रवृत्ती, आर्थिक अभाव, बढ़ती महँगाई, भौतिक आकांक्षाओं की अपूर्णता, लैंगिक समस्या, शारीरिक तौर पर एक दूसरे से असमाधानी होना । इन कारणों से विवाहोत्तर प्रेम को बढावा मिलता है, जिसकी आड़ में अनैतिक संबंध पनपते है । आधुनिकता के बारेमें **डॉ. भगवान दास** का कथन है, ''हर दिशा उनके व्यक्तित्व को खंडित कर रही है। इस खोज में नारी के कई चित्र उभरे है। परंपरागत वर्जनाओं से आधुनिक नारी जैसे जैसे मुक्त हो रही है नवीन समस्याओं का सामना कर रही है, आर्थिक स्वावलंबन और मानसिक स्वतंत्रता के कारण वह अपने जीवन को अच्छा या बुरा बनाने के लिए स्वतंत्र है। "[२४] स्पष्ट है कि आधुनिक नारी अब इस नैतिकता अनैतिकता के बोध से दूर प्रेम की धारणाओं को बदल चुकी है । जिसका कु-प्रभाव भारतीय समाज पर हो रहा है ।

दीप्ति खंडेलवाल के अनेक कहानियों की नायिकाएँ नैतिकता-अनैतिकता के बंधन तोड़कर अपनी आंतरिक आवश्यकताओ तथा निजी जरूरतों को अधिक महत्त्व देती दिखाई देती है ।

'देह की सीता ' कहानी की डॉ. शालिनी हाय कल्चर्ड सोसायटी से है । उसको विचार भी आधुनिक है उसके पति मेजर रंजित जब उसके पास नही होते तो वह मेजर सहाय से शारीरिक संबंध रखकर अपनी कामवासना तृप्त करती है । इस संबंध को वह अनुचित नहीं समझती है क्योंकि इन संबंधो को वह केवल देह के स्तर पर स्वीकारती है। इस संबंध को लेकर उसके मन में कोई भी अपराध भावना नहीं है । लेखिका ने डॉ. शलिनी के विचारों द्वारा यह स्पष्ट किया है कि आधुनिक समाज में नारी अपनी निजी जरूरतों के लिए नैतिकता जैसे सामाजिक मूल्यो को सहजता से झटक देती है।

'जमीन' कहानी की नायिका हाई सोसायटी में रहने वाली कल्चर्ड औरत है । नायिका का पति राकेश अपनी पत्नी को टेंडर पास करवाने के लिए पराए मर्द को खुश करने के लिए कहता है । नैतिक मूल्यों के पतन की चरम सीमा का वर्णन इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने किया है ।

'हव्वा' कहानी की मिस रतिलाल विवाह जैसे सामाजिक तत्त्व को बंधन मानती है । वह विवाह के बंधन का स्वीकार नहीं करना चाहती अपनी कामतृप्ति के लिए उन्मुक्त यौन संबंध रखती है । बचपन के अनुभवों के कारण पुरूषों से बदला लेने के लिए अनेक मर्दों के जीवन से खेलती है । नारी शरीर की पवित्रता तथा मर्यादा इन विषयों में उसे कोई आस्था नहीं है। कोहली, चटर्जी, सुनील, प्रेमनाथ ऐसे अनेक पुरूषों से शारीरिक संबंध रखती है। यौन संबंध से उसे दो बार गर्भधारणा होती है लेकिन किसी बंधन को अस्वीकार करनेवाली मिस रतिलाल किसी मेट्रन की मदद से गर्भ गिरा देती है और बाद में फिरसे दूसरे पुरूषों से संबंध रखती है । सुनील के शादी के प्रस्ताव पर मिस रतिलाल कहती है ''डैम दिस लव, सुनिल! क्यों बंधे हम जब हम वैसे ही एक-दूसरे को पा सकते है। आखिर ऐसी भी क्या कमी है? "[२५] स्पष्ट है कि मिस रतिलाल किसी बंधन स्विकार नहीं करती और

उन्मुक्त संबंध बनाए रखती है। नैतिकता उसके लिए कोई भी मायने नहीं रखती।

'आत्मघात' कहानी की मृणालिनी पति-पत्नी के झगडो से तंग आकर डायवोर्स लेती है। वर्किंग वीमेन्स होस्टेल में रहती है। परंतु बाद में मॉडलिंग द्वारा अपने बॉस को ही अपना शरीर समर्पण करती है अपनी काम अतृप्ति को मिटाती है। इस काहानी की रजनी माथुर जो मृणालिनी की रूममेट है, दो वर्षो से बिना शादी के सुभाष से संबंध रखती है उसके पहले रनवीर से भी संबंध थे। इस तरह से आर्थिक स्वावलंबन के कारण यें औरते नैतिकता को दाँव पर रख कर अपनी कामतृप्ति करती है।

'निर्बंध' कहानी की अनिता हाई कल्चर्ड सोसायटी ये है। उसके पिता के दूसरी औरतो से संबंध को उसकी मम्मी टॉलरेट नही कर सकी और पति को छोड़कर अपनी बच्ची को लेकर वह अपनी माँ के साथ रहने लगती है। नानी और माँ के कटू अनुभवों को समझती अनिता किसी की परवाह किए बिना एक निर्बंध जीवन जीना, पसंद करती है। वह सहजता से मनीष, संजय के साथ यौन संबंध रखती है। संजय को वह अपना समर्पण भी देती है। लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से युवा पीढ़ी की अस्थिर मानसिकता तथा अनिर्बंधता को उजागर किया है।

'डूबने से पहले' कहानी की शैला कपूर विदेशी फर्म मे टायपिस्ट की नौकरी करती है। सिर्फ अपने लिए जीना चाहती है। सफलता पाने के लिए अपने बॉस को समर्पण देती है। बॉस के अतिरिक्त ऑफिस के अन्य लोगों से भी उसके शरीर संबंध है। वह कैबरे डान्सर होना चाहती है जिससे वह और भी उन्मुक्त तथा आरामदाय जीवन जी सके ।

'युगपुत्री' कहानी की मिस रचना, ''लेट अस एन्जॉय लाइफ एंड फॉरगेट द रेस्ट''[२६] इस फिलॉसफी में जीने वाली लड़की है । शादी में

उसका विश्वास नही है । बॉस अमरकांत, सुधीर, फिरोज आदि अनेक पुरूषों से उसके शरीरसंबंध है ।

स्पष्ट है कि आधुनिक युग में नारी ने प्रेम और नैतिकता के आपसी संबंधों में नया दृष्टिकोन अपना लिया है। वर्तमान नारी उन्मुक्त प्रेम में विश्वास करने लगी है और जीवन को सहज रूप में लेती है । विवाह के बंधन में पड़ने के बजाय वह पाशरहित उन्मुक्तता चाहती हैं । नैतिकता अनैतिकता के युद्ध में अनैतिकता को अनुचित नहीं मानती है । फिर भी भारतीय संस्कारों की मारी यें नायिकाएँ अंत में शरीर सुख से ऊब जाती है।

४.४.१२ भ्रष्टाचार की समस्या -

आज हमारे समाज का प्रत्येक क्षेत्र भ्रष्टाचाररूपी राक्षस से घिरा हुआ है। नेता लोग राजनीति में अपने आप को आगे बढ़ाने के लिए किसी भी हद तक पहुँच जाते हैं। दीप्ति खंडेलवाल द्वारा रचित प्रिया उपन्यास में सौदामिनी और प्रिया इसी भ्रष्टाचार का शिकार है। यशवंत जी एक नेता है तथा सौदामिनी जहाँ पढ़ती थी उस स्कूल के ट्रस्टी है। अपनी बेटी की उम्र की सौदामिनी से आर्य समाजी रीति से विवाह किया। यशवंत जी ने एक अनाथ कन्या का उद्धार किया इसी धारणा से वे समाज की दृष्टि में बहुत ऊँचे उठ गए। सौदामिनी को लेकर यशवंत जी नैनीताल गए। सौदामिनी के सुंदरता तथा नारीत्व का फायदा उठाते हुए उन्होंने अपने आपको आगे बढ़ाने के लिए उसका इस्तेमाल सीढ़ी की तरह किया। उसे किसी रियासत के राजा के कक्ष में अकेला छोड़कर यशवंत जी शहर की राजनीति में होती उथल-पुथल में भाग लेने चले गए। उस राजा ने सौदामिनी पर बलात्कार किया। उस हादसे के बाद सौदामिनी को विक्षिप्तता के दौरे पड़ते रहे। यशवन्तजी नामक नेता जो समाज में सिर उठाकर चलता था उसने सौदामिनी की तरह कई औरतो को जन्मभर तिल-तिल मरने के लिए छोड़ दिया था।

सौदामिनी किसी तरह यशवंत जी के चुंगुल से छुटकर अपने पिता के पास वापस लौट आई। उसे यशवंतजी द्वारा दो बेटियाँ हुई। उनमें से प्रिया उसकी छोटी बेटी दिखने में बहुत सुंदर थी। सौदामिनी ने टीचर की नोकरी कर अपनी दो बेटियों को पाला-पोसा प्रिया भी यशवन्तजी नामक राक्षस के भ्रष्टाचार से बच नहीं पायी। यशवन्त जी ने प्रिया का इस्तेमाल भी अपने आप को आगे बढ़ाने के लिए किया। प्रिया का रिश्ता प्रसिद्ध उद्योगपति राम आहुजा के बेटे अरूण आहुजा से निश्चित किया। अरुण आहुजा ने प्रिया को बहला फुसलाकर बिना शादी किए ही उससे शरीर संबंध रखे और उसके पेट में अपना बच्चा छोड़कर युरोप चला गया। यशवंतजी ने पत्र भेजकर प्रिया का एबॉर्शन करवाने के लिए कह दिया। प्रिया की सुंदरता का उपयोग यशवंत जी ने राम आहुजा के साथ मिलकर बड़ी क्लाथ मिल बनवाने के लिए किया। प्रिया के मनपर इन सारे हादसों का यह परिणाम हुआ कि उसने आजन्म कुवारी रहने का निर्णय ले लिया। इस प्रकार दीप्ति खंडेलवाल ने 'प्रिया' उपन्यास के माध्यम से समाज में राजनेताओं के द्वारा निम्नवर्ग तथा मध्यवर्ग की नारी पर होनेवाले भ्रष्टाचार का पर्दा फाश किया है और यह भी दिखाया है कि समाज में बड़ा स्थान पाने के लिए नेता लोग नारी का जीवन किस तरह ध्वस्त कर देते है। लेखिका ने ऐसी आहत नारी के भविष्य के बारे में समाज को ही प्रश्न किया है। ऐसी औरते एक पुरुष के भ्रष्टाचार कारण सारा जीवन कुंठित अवस्था में जीने के लिए मजबूर हो जाती है यह भी समाज के सामने लाया है।

दीप्ति खंडेलवाल ने तत्कालीन समाज में जिन विसंगतियों को देखा, उनपर अपनी लेखनी से प्रहार किया । एक समस्या अनेक समस्याओं की जन्मदात्री है जैसे दहेज समस्या के कारण अनमेल ब्याह की समस्या, अनैतिकता की समस्या, अविवाहित नारी की समस्याएँ आदि अनेक समस्याएँ जन्म देती है इसकी ओर लेखिका ने अपनी कहानी

साहित्य के माध्यम से पाठकों का ध्यान खिंचा है। उसी प्रकार मध्यवर्ग के संत्रास, कुंठा, आर्थिक स्थिति का मुख्य कारण सीमित आय और असिमीत परिवार है यह भी बताया है। अगर आर्थिक स्थिति को सुधारना है तो कुटुंब नियोजन की आवश्यकता को भी लेखिकाने पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। मध्यम वर्ग और निम्नवर्ग के नारी की अनैतिकता के पीछे आर्थिक कमी ही मुख्य कारण है इसकी ओर भी निर्देश किया है । नारी पात्रों के माध्यम से अनेक नारियों की समस्याओं को वाणी है ।

समाज की महत्वपूर्ण इकाई परिवार है और आधुनिक समाज के विभक्त कुटुंब व्यवस्था में पति - पत्नी बीच के तनाव, घुटन, संत्रास, कुंठा को अपनी अनेक कहानियो मे व्यक्त किया है और नारी के अतिमहत्वाकांक्षा, वैयक्तिकता तथा अहंभाव के कारण किसतरह परिवार टूटते है यह चित्रित किया है और इस वजह से बच्चों की मानसिकता पर होने वाले बूरे असर को भी पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है और नारी को एक तरह से अपने परिवार को बचाने के लिए सतर्क भी किया है।

समाज की बुरी प्रथाएँ जैसे- दहेज प्रथा के निर्माण होने वाली समस्याओं को सूचित किया है। साथ ही आधुनिकता की आड़ लेकर उन्मुक्त जीवन जीने की माँग करनेवाली नारी की विचारों को अस्वीकार करते हुए इन नारियों में किसी खालीपन तथा अपराध बोध तथा ऊब के अहसास को दिखाया है। बलात्कारी नारी की समस्या को अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त कर भारतीय स्त्री के सतीत्व को ऊजागर किया है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से अनेक सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है और इस प्रयास में शतप्रतिशत सफलता पाई है।

स्पष्ट है कि वर्तमान स्थिति में नारी की पारिवारिक, सामाजिक स्थिति कुछ अंशो में प्रश्नचिन्ह बरकरार रखती है। विवाहपूर्व तथा विवाहोत्तर

वातावरण में अंतर, पति-पत्नी के बीच यौन संबंध, पति-पत्नी के घर के बाहर यौन संबंधो से उत्पन्न तनाव, कुंठा, द्वंद्व, आक्रोश, तलाक की समस्या, अपेक्षाओं की पूर्ति में अंतर, अहम् वृत्ति का बढाव आदि के कारणों से नारी के पत्नी रूप में परिवर्तन आया। सब तरफ से स्वतंत्र होते हुए भी पुरूष के अहं के कारण नारी के हिस्से में कुंठितावस्था आयी। सामाजिक स्थिति नारी के लिए विकास की और बढ़ा रही है। शिष्या के कारण स्त्री को सामाजिक क्षेत्र के हर विभाग में पुरुषों के साथ समान रूप से अधिकारी पद ग्रहण करने का अधिकार मिला। आज हम देखते है कि समाज का कोई भी ऐसे श्रेष्ठ पद नही है जहाँ स्त्री ने अपने आप को सिद्ध करके नहीं दिखाया है। समानता के अधिकार के बल पर कहीं स्थानों पर तो स्त्री पुरूषों से भी आगे निकल चुकी है, स्त्री के लिए यह एक गर्व की बात है।

****

संदर्भ - : चतुर्थ अध्याय

१) मैकाइवर एवं चार्लस् एच. पेज - हिंदी अनुवाद जी विश्वेश्वरय्या, समाज, पृ. ५

२) जॉन्सन हैरी एम., समाजशास्त्र- एक विधिवत विवेचन, पृ. १४५

३) सं. दास श्यामसुंदर, हिंदी शब्दसागर, दसवां भाग

४) Ed. Seligman and Johnson, Encyclopedia of social Sciences. Pg २३१

५) डॉ. सिंह कुवरपाल, हिंदी उपन्यास - सामाजिक चेतना, पृ. १७

६) डॉ. त्यागी सुमित्रा, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में जीवनदर्शन. पृ. ९२

७) शांता पी. इन्दिरा, मालती जोशी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ.२०

८) डॉ. प्रसाद जयशंकर, कामायनी, पृ. १०५

९) डॉ. कुलकर्णी रेवा, हिंदी के सामान्य उपन्यासो में नारी मनुस्मृति से उधृत पृ. ४५

१०) डॉ. सिंह रूपा, मधुमति मई २०१२ महिला लेखन की चुनौतिया पृ. २२

११) कपूर प्रेमीला, मधुमति २०१२ पृ. १३

१२) एस् विजया, विवरण पत्रिका हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद मालती जोशी की कहानियों में नारी पृ. १८

१३) डॉ. भटनागर महेंद्र, प्रेमचंद-समस्यामूलक उपन्यासकार, पृ. १७१

१४) खंडेलवाल दीप्ति, दो पल की छांह देहगंध पृ. ५६

१५) ----------,सलीब पर बीच का आदमी पृ. १२९

१६) डॉ. जोशी चंडीप्रकाश, हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विवेचन, पृ. ३३५

१७) डॉ. दास भगवान, नई कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत और प्रयोग पृ.

१८) खंडेलवाल दीप्ति, दो पल की छांह - एक अदद औरत, पृ. २९

१९) डॉ. कुलकर्णी रेवा, हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी पृ.

२०) खंडेलवाल दीप्ति, कडवे सच-देह की सीता, पृ. ५९

२१) ----------, नारी मन- नागपाश, पृ १४१

२२) वही पृ. १४०

२३) डॉ. स्वर्णलता, हिंदी उपन्यास : साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि पृ. ७६

२४) डॉ. दास भगवान, नई कहानी की संवेदनशीलता, सिद्धांत और प्रयोग पृ. २०३

२५) खंडेलवाल दीप्ति, धूप के अहसास - हव्वा, पृ. ४९

२६) ----------, नारी मन, युगपुत्री, पृ. ८३

पंचम अध्याय

दीप्ति खंडेलवाल के रचनाओं का कथ्य एवं शिल्प

❊ पंचम अध्याय ❊

दीप्ति खंडेलवाल के रचनाओं का कथ्य एवं शिल्प

५.१ कथ्य एवं शिल्प का स्वरूप

समस्त प्राणी जगत में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो अपनी देखी या सुनी बातों को वाणी द्वारा प्रकट करता है । रचनाकार इससे आगे जाकर इन विचारों एवं कल्पनाओं को विविध माध्यम जैसे कविता, कहानी, उपन्यास आदि द्वारा शब्दबद्ध करता है। साहित्य लेखन के द्वारा लेखक अपनी अनुभूति की वेदना रूपी संवेदना दूसरों तक पहुँचाने की शक्ति रखता है। उपन्यास और कहानी कथा साहित्य के दो अंग है जिसके माध्यम से लेखक जनशक्ति जोड़ने का सफल प्रयास करता है। अतः उपन्यास और कहानी की सशक्तता जिन तत्वों पर आधारित है, उसका अध्ययन आवश्यक है। संशोधन का विषय ''दीप्ति खंडलेवाल के समग्र साहित्य में नारी चरित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन है। '' लेखिका एक सफल कहानीकार तथा उपन्यासकार है। किसी भी रचना का सफल होना उसके उद्देश्य के साथ साथ ठोस, कथावस्तु का होना होता है, जो कि कथा का आंतरिक भाग होता है तथा रचनाकार किस तरह शब्दो, अलंकारों, मुहावरों, अलंकारों से सजाता है जिससे उसका बाहयांग अर्थात शिल्प निखरता है। इन सबके सुयोग्य मेल से ही कोई रचना पाठकों को मंत्रमुग्ध करने में सफल होती है।

दीप्ति खंडेलवाल की रचनाओं का कथ्य एवं शिल्प भी एक अध्ययनशील विषय है, जिस पर भविष्य में अलग से संशोधन किया जा सकता है। उनकी रचनाएँ ज्यादातर नारी की समस्याओं का खुला खुला चित्रण है। जिसमें भारतीय संस्कृति की छाप सुस्पष्ट दिखाई देती है । उनकी उपन्यासों तथा कहानियों की कथावस्तु इतनी मजबूत है कि शिल्प के

सुयोग्य मेल से वे रचनाएँ पाठक के दिल को लुभाती है और पढ़नेवाला उससे अनायास ही समरस हो जाता है ।

दीप्ति खंडेलवाल की रचनाओं के कथ्य और शिल्प का अध्ययन करने से पूर्व देख सकते है कि कथ्य एवं शिल्प का हिंदी उपन्यास तथा कहानीकारों ने किस तरह उपयोग किया है, जो रचनाएँ सफल होने का कारण बनती है।

डॉ. शशिभूषण सिंहल का कथन है कि '' उपन्यासकार देखे सुने जीवन को अपनी व्यक्ति सामर्थ्य के अनुसार समझता है, उसकी जीवन सम्बन्धी धारणा, उसकी रचना की मूलदृष्टि होती है। दृष्टि उपन्यास का कथ्य है और कथ्य को जीवन चित्र में परिणित करने की विधि उपन्यास का शिल्प है।"[१]

साहित्य में शिल्प विशेषतः कथ्य पर निर्भर रहता है और कथ्य के अनुरुप ही कलाकार अपनी समस्त निपुणता को दॉव पर लगाकर शिल्प रुपी शरीर बनाता है । साहित्यकार अपने विचारों को भाषा के सहारे ही किसी दृष्य का, पात्रों के व्यवहार का अथवा उनके वार्तालाप का शब्दचित्र प्रस्तुत करके अपनी रचना सामग्री को सुशोभित करता है । शिल्प के लिए अंग्रजी में 'टेकनिक' शब्द का प्रयोग किया जाता है । शिल्प का पर्याय अंग्रेजी 'क्राफ्ट' शब्द है जिसका अर्थ 'रचना कौशल' है । अंग्रेजी 'क्राफ्ट' शब्द ही वास्तव में 'शिल्प' का पर्याय है । दोनों शब्दों के अर्थ में पर्यायी समानता है । यह कहना उचित होगा कि किसी भी कृति की सुंदरता निर्माता के कुशलता पर आधारित होती है । साहित्य में शिल्प का संबंध निर्माण कौशल्य से है । प्रत्येक साहित्यकार सफल अभिव्यक्ति का सदैव प्रयास करता है । प्रबल से प्रबल कथ्य होने पर भी शिल्प की अनुपस्थिति में वह रचना अर्थहीन हो जाती है ।

डॉ. सत्यपाल चुघ के अनुसार, ''शिल्प विधि अंग्रेजी के 'टेकनीक' शब्द का हिंदी रुप है। इसका तात्पर्य रचना पद्धति से है। रचना पध्दतियाँ कभी स्थिर नहीं रहीं। रचयिताओं की अनुभूतियों ने अपने अभिव्यक्ति प्रयत्न में अनेक साहित्य कला रुपों को जन्म दिया है और एक एक रुप के भीतर भी भिन्न भिन्न रचना पध्दतियों का आश्रय लिया जाता रहा है।"[२]

संस्कृत साहित्य में शिल्प का प्रयोग अनेक रुपों में मिलता है । शिल्प शब्द का प्रयोग मानव जीवन से संबधित रहा है । जैसे कौशलपूर्ण कार्य के लिए तथा अन्य कलाओं के लिए आदि । इससे यह कहा जा सकता है कि 'शिल्प' शब्द का मूल अर्थ किसी भी रचना के कौशल्य से है फिर वह जीवनोपयोगी कला हो या ललित कलाएँ हो । शिल्प में रचना के आरंभ से अंत तक कौशल्यपूर्ण बनावट की प्रक्रिया होती है ।

रचनाकार **डॉ प्रदीपकुमार शर्मा** के अनुसार, ''शिल्प विधि या शिल्प विधान का संबंध वस्तुतः उपन्यास के सृजन पक्ष से है। उपन्यासकार के मस्तिष्क में समाज की सच्चाइयाँ आदमी के हालात और परिवेश के यथार्थ संग्रंहित होते रहते हैं। इसका वर्णन करने के लिए उसके मन में भावों को उद्वेलन होता है। वह इन संग्रंहित भावों अथवा भाववस्तु को कैनवास पर उतारना चाहता है और जिस ढंग से जिस प्रक्रिया से उसे उतारा गया है वही उसका शिल्प विधान है।"[३] स्वातंत्र्योत्तर काल सन साठ के काल में कहानी तथा उपन्यास का कथ्य अपनी मजबूत पकड़ के साथ उभरकर आया। उस काल की सामाजिक, राजनीतिक तथा परिवारिक परिस्थितियों ने मानव को स्व केंद्रित कर दिया था, जिससे आम आदमी ने जो झेला है भोगा है जिस सामाजिक परिवेश से वह गुजरा है , उसीसे संबधित कथ्य साहित्य में उतरकर आया है । आधुनिक साहित्यकारों ने आदर्श की बजाय यथार्थता पर ज्यादा जोर दिया है । मनुष्य के स्व में झाँककर मनुष्य के अस्तित्व को

महत्व दिया है । यथार्थपरक कहानियाँ समाज के नग्न रूप को कठोरता को निर्ममता का, परंपरागत मूल्यों को उध्वस्त कर नवीन जीवन के दृष्टिकोण को अपनाने वाली दिख्र पड़ती है । उदा. स्त्री पुरुष संबध। इन संबंधो में पड़ती दरार, बिख्रराव, संयुक्त परिवार का विघटन, स्त्री-पुरुष काम संबंध, जीवन की व्यथा, महँगाई की समस्या, संबंधों का खोख्रलापन, अर्थ वैषम्यता, जीवन में अकेलापन नए मूल्यों का स्वागत, पुराने मूल्यों को चुनौती देना रिश्तों के बीच बढ़ती अरुचि स्व की पहचान के लिए लड़ता व्यक्ति,संत्रास, कुंठा, घुटन और अंर्तद्वंद्व को व्यक्त करता, कथ्य पकड़ कर कहानीकारों ने आम पाठक की नब्ज को सफलता से पकड़ा है ।

साधारणतः कथ्यगत प्रवृत्तियों में मूल्य और मान्यताओं में परिवर्तन, यथार्थ के प्रति नया रूख्र, संबंधो में बदलाव, दाम्पत्य संबंधो की दूरियों की स्वीकृति, विद्रोही भाषा, विदेशी विचारों और व्यवहार का प्रभाव, वैयक्तिक चेतना का प्रकाशन, स्वच्छंद संबंधो का स्वीकार, महानगरीय जीवन बोध मध्यवर्ग और आम आदमी को केंद्रबिंदु बनाता, परिवेश के प्रति जागरुकता आदि प्रवृतियाँ दिख्राई देती है।

शिल्प के सहारे लेख्रक अपनी मनोवांछित बात पाठकों तक पहुँचता है और भाव विशेष को सुव्यस्थित एवं निश्चित स्वरुप प्रदान करने के लिए उपकरण विधा का प्रयोग करता है। शिल्प का महत्व स्पष्ट करते हुए

डॉ.धर्मध्वज त्रिपाठी कहते है '' शिल्प के माध्यम से किसी लक्ष्य की पूर्ति की जाती है। यह लक्ष्य रचना सृष्टि की प्रक्रिया से संबधित होता है। भौतिक जीवन में यह लक्ष्य किसी वस्तु अथवा मनोवांछित तत्व प्राप्ति से संबंध रख्रता है और कला के क्षेत्र में इस लक्ष्य से अभिप्राय है संपूर्ण भावभिव्यक्ति का प्रकार अथवा ढंग।

दीप्ति खंडेलवाल को अपने कहानीकार के व्यक्तित्व पर ही गर्व है। उन्होंने उपन्यासों की रचना भी की है। उनके ' कथ्य ' के विषय में कहा जा

सकता है कि उनके उपन्यास के कथा के केंद्र में घटनाएँ सामाजिक समस्या को वैयक्तिक अन्तश्चेतना को चित्रित करती है। वे मनुष्य की बाहरी जीवन की अपेक्षा अन्तर्जगत की गुत्थियों को सुलझाती नजर आती है। लेखिका की दृष्टि से मनुष्य की बाहय परिस्थितियाँ उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी उनका मानसिक जगत। मनुष्य का आंतरिक यथार्थ बाहरी यथार्थ से अधिक वजनदार होता है। उनके पात्र अपने अव्यक्त और उलझे हुए मानसिक संसार में भटकते नजर आते है। लेखिका कथा पात्र के बर्हिलोक का चित्रण करने की अपेक्षा पात्र के आत्मविश्लेषण पर अपना अधिक ध्यान केंद्रित करती हुई उसकी मानसिक परतों को खोलती है। मनुष्य के अंतर्मन के परस्पर विरोधी विचारों संघर्ष, तनाव, कुंठा, चिंता आशंका आदि को उन्होंने अपने साहित्य में अभिव्यक्ति दी है। अतः दीप्ति खंडेलवाल का कथानक सूक्ष्म, व्यंजनाप्रधान और आंतरिक संसार को अभिव्यक्त करनेवाला दिखाई देता है। इस प्रकार के उपन्यास और कथा साहित्य के कथ्य का आरंभ, चाहे अंत से प्रारंभ करे या बीच से इस प्रकार के कथानक में घटनाएँ निमित्त मात्र होती है, पात्रों के मानसिक संसार में इन घटनाओं से इतनी सूक्ष्म रेखाएँ खींची जाती है जिनका प्रकाशन करने से कथा के अंत तक उत्सुकता और रोचकता बनी रहती है। लेखिका ने अपने कथ्य को साकार करने के लिए पात्रों की संख्या सीमित रखी है, जिससे प्रत्येक मुख्य तथा गौण पात्रों के अंर्तद्वंद्व को, दमित वासना की कामेच्छा को, स्वप्न को, सुप्त अचेतन प्रसंग स्थितियों, कुंठाओं, ग्रंथियों का निरुपण कर सकी है। मनोविश्लेषणात्मक संभावनाओं के आधार पर भाव व्यवस्था का मार्मिक विश्लेषण उनकी रचनाओं की रोचकता बढ़ाता है ।

कथानक कथा साहित्य का मूल आधार है । कथानक के लिए अन्य शब्द प्रचलित है '' कथानक, विषयवस्तु, इतिवृत्त, कथा, वृत्त, वस्तु

आदि।"[५] कथाकार कथानक का चयन वस्तु जगत से करता है । वह सामाजिक प्राणी है इसलिए अपने अनुभवों के आधार पर ईमानदारी से कथानक को रुपायित करता है । कथा साहित्य के सृजन के लिए रचनाकार को अधिक से अधिक मौलिकता से काम लेना पड़ता है । लेखिका के साहित्य में कथानक के दो प्रकार मिलते है एक तो सरल कथानक जिस में एक ही कथा सीधे सादे ढंग से कही जाती है । और दूसरा गुंफित कथानक जिसमें दो या दो से अधिक कथाएँ होती है जो अपना अलग अस्तित्व रखती है । जब रचनाकार कथानक को अपने अनुभव के सहारे गहराई से प्रस्तुत करता है तभी वह कथानक सफल होता है । दीप्ति खंडेलवाल के कथानक के कथ्य की यही विशेषता नजर आती है ।

५.२ 'दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों का कथ्य एवं शिल्प'

दीप्ति खंडेलवाल की ज्यादातर कहानियाँ मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग की स्थितियों को उजागर करती है। उन्होंने अपनी कहानियों मे मध्यवर्गीय परिवार तथा समाज की विद्रुपताओं और कमजोरियों को व्यक्त किया है। हर एक कहानी में जीवन की अनुभूति व्यक्त हुई है। दीप्ति खंडेलवाल की कथा लेखन शैली ऐसी है कि उनकी हर रचना अपने आप में एक अलग विशेषता लिए हुए है। स्वयं लेखिका ने कला, कथ्य, शिल्प के बारे में कहा है, ''कला के संदर्भ में किसी पश्चिमी कलाविद का यह कथन उसकी कला चेतना पर अंकित होकर रह गया है सेब के चित्रण में सेब के चित्रण के साथ कुछ और भी होना चाहिए यही कुछ और कला है । इस कथन में वह अपना लेखकीय अनुभव और जोड़ देती है यही 'कुछ और' तो वह कुछ है जो संवेदनाओं के माध्यम से कला की सृष्टि करता है । वस्तु की प्रमाणिकता और शिल्प के सौष्ठव को यही कुछ और जीवन्तता व्यापकता और अर्थ देता है ।

संवेदनाओं की तादाम्य में परिणति जितनी तीव्र और व्यापक होगी, रचना उतनी ही सार्थक होगी।"[६]

लेखिका की कहानियों का कथारंभ रोचकता पूर्ण होता है। कथा पढ़ने के लिए शुरूआत करने पर पाठक के मन में उत्सुकता रहती है कि कहानी में आगे क्या होता है। लेखिका कहानी का आरंभ कभी दृश्यात्मक करती है तो कभी आसपास के वातावरण के चित्रण से करती है जिससे असली कथ्य तक पहुँचना आसान हो जाता है। लेखिका ने हर कहानी का आरंभ अलग अलग तरीके से किया है। कहीं भी पुनरावृत्ति नहीं दिखाई देती। कभी कथारंभ मुख्य पात्र की दिनचर्या से होता है तो कभी पात्रों के परिचय से होता है । कभी कथारंभ पात्रों के संवाद से होता है तो कभी कहानी का अंतिम भाग कथारंभ में होता है। कभी कथारंभ काव्यात्मक होता है तो कभी गंभीर होता है।

स्पष्ट है कि लेखिका का सशक्त कथ्य, शिल्प के आधारभूत समीकरण के द्वारा कथा योजना को विकसित करता है इसी कारण उनकी हर रचना पठनीय, प्रशंसनीय तथा चिरस्मरणीय हो जाती है। उनकी हर कहानी गद्य की कसौटी पर खरी उतरती है।

५.२.१ कथारंभ - कथारंभ में लेखिका ने अनेक प्रकार अपनाएँ है नाटकीय शिल्प, विश्लेषणात्मक शिल्प, दृश्यात्मक शिल्पविधि, प्रतीकात्मक शिल्प विधि। कुछ कहानियों का कथारंभ उदा: के रूप में प्रस्तुत है।

आवर्त - कहानी में कथारंभ के लिए नाटयमय पध्दती का प्रयोग हुआ है - ''कॉल बेल सुनकर दरवाजा खोलते ही में सुखद आश्चर्य से अवाक रह जाती हूँ तराशी हुई मूछों के नीचे अपनी तराशी हुई मुस्कान लिए विजी ही तो है, बिलकुल विजी.. एकदम विजी.. ओह! मुझे अवाक देखकर विजी हंस पड़ता है... निन्तात परिचित हँसी के खनखनाते स्वर इतने वर्षों के अंतराल

के बाद भी कितने अपने लगते है। "[७] इसप्रकार लेखिका ने नाट्यमय दृष्टि से जिज्ञासा जागृत करनेवाला दृश्य लिखकर उत्सुकता बढ़ाई है ।

'मोह' कहानी का आरंभ लेखिका ने दृश्यात्मक पदधति से किया है जिससे पाठक की उत्सुकता बढ़ जाती है ।

''होश खोने की मेरी उम्र नहीं रही फिर भी लगता है जैसे सुदीप आफिस चले गये है मैं कोच धंसी उन क्षणों को जी रही हूँ जिनका जी पाना सच होते होते झूठ लगने लगता है जाने से पहले सुदीप मुझे बाँह में घेरकर उस खिड़की के पास ले जाते है जिसपर रेशमी गुलाबों के फूलदार परदे लगे है इन सदाबहार फूलों की छाया में वे मुझपर झुकते है और एक चुम्बन उनके होठों से मेरे होठों पर आ टिकता है.. फिर लगता है कहीं कुछ गड़ रहा है.. उह मैं भी क्या व्यर्थ की कल्पना करती रहती हूँ .. कुछ भी तो नहीं गड़ रहा.. सब ठीक है "[८]

कथारंभ ही वह परिच्छेद होता है, जिससे पाठक लेखक के कहने का अंदाज निकालने का प्रयास करता है । लेखक पहले परिच्छेद में कथ्य का बीज बो देता है अथवा घटना के उपक्रम की बस एक झलक भर दिखा देता है और उस घटना का अंत नहीं करता । जैसे 'झोंका' कहानी में पति पत्नी के संबंधों में आया हुआ ठहराव, सपाटता, स्थिरता दर्शाने के लिए ड्राइंगारूम में लगे खिड़कियों तथा दरवाजों के परदों से किया है -

''आज इतवार है, शाम के चार बज रहे हैं, यानी कि आधा दिन बीत चुका है । बाकी आधा भी बीत जाएगा या बिता दिया जाएगा सोचती वह खिड़की पर आ खडी होती है । खिड़की पर जालीदार रंग के परदे है ये हल्के और गहरे नीले रंग प्रतिभा को आकाश के हल्के और गहरे, प्रतिपल बदलते रंगों का आभास कराते है। दो दरवाजों और दो खिड़कियों के बावजूद प्रतिभा का यहाँ दम घुटने का अहसास होता रहता है और परदों के रंग के

अतिरिक्त कहीं कोई रंग नहीं होता । "[९] इसप्रकार कथारंभ में ही नायिका की जीवन के प्रति उदासीनता दिख पडती है ।

'पार्वती एक' कहानी का कथारंभ लेखिका ने आसपास के परिवेश पर्यावरण से किया है जिससे प्रतित होता है कि प्रेम के दहलीज पर खड़ी पार्वती को सबकुछ अच्छा लगने लगता है-

''जेठ की दोपहरी सांय सांय कर रही थी । निरभ्र नीले आसमान से धूप बरस रही थी और इस चिलचिलाती धूप में एक तपता सन्नाटा धरती से आसमान तक फैला हुआ था । तिनको को दॉतों से चबाती पार्वती छत पर खड़ी आसमान को देखे जा रही थी । आसमास के टूटे फूटे घरों की छतें सूनी थी भला ऐसी चिलचिलाती दोपहरी में छत पर आता भी कौन? लेकिन पार्वती को वह तपता सन्नाटा वह चिलचिलाती धूप कुछ अच्छी लग रही थी । पार्वती को वह चील भी अच्छी लगी।"[१०]

'मरती हुई गौरेया' कहानी का कथारंभ लेखिका ने प्रश्नचिन्ह से किया है । कहानी के मिस श्यामा का व्यक्तित्व इससे स्पष्ट होता है -

''कभी कोई गौरेया मरती हुई, किसी पेड़ की शाखाओं में अटकी हुई देखी है ? उसे पहले पहल देखा तो बिल्कुल लगा कोई गौरेया मरती हुई सामने पड़ गयी है ।"[११]

जैसी की मरती हुई गौरेया मिस श्यामा का प्रतीक है। इसप्रकार प्रतीकात्मक शैली का उपयोग लेखिका ने यहाँ पर किया है।

'सती' कहानी में नायिका के सुंदरता का विश्लेषण लेखिका ने कथारंभ में किया है जिससे कनका की सुंदरता उसकी आँखे पाठकों के सामने आती है ''यदि कवि दृष्टि से नामकरण किया जाता तो भी यह विवाद का विषय होता कि उसका नाम चम्पकलता रखा जाय या मृगनयनी। खिले चम्पा के फूल सा रंग और चकित मृगी सी आँखें। घने अत्यंत काले केशों

की सुनहरी आभा और सुनहरी लगती और उस सुनहरी आभा की पृष्ठभूमि में गहरी काली आँखे और भी अधिक काली"[१२]

इसप्रकार हम देखते है कि दीप्ति खंडेलवाल की हर कहानी का कथारंभ रोचक, नाविन्यपूर्ण है। कहीं भी पुनरावृत्ति दिखाई नहीं देती। लेखिका का सशक्त कथ्य, शिल्प के आधारभूत समीकरण के द्वारा कथा योजना को विकसित करता है। कथारंभ के साथ ही लेखिका कथा विकास की ओर भी विशेष ध्यान देती हुई कथा को उद्देश्य की ओर बिना किसी तोड़ मरोड़, अधूरेपन के और ले जाती है ।

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियाँ इतनी यथार्थ से जुड़ी हुई है कि पाठक उस त्रासदी को भोगता हुआ स्वयं उसका रस आस्वादक बनकर प्रत्येक चरित्र के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो उठता है। उनकी लेखनी से जीवन की कोई भी समस्या, कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है। नारी में आधुनिकता और पुरातनता का द्वंद्व, नौकरी पेशा नारी की समाज मे बदलती हुई स्थिति, सेक्स संबंधी नूतन भावबोध, रिश्तों पर बढ़ता हुआ अर्थतंत्र का दबाव, खंडीत होते नाते रिश्ते, बदलते नैतिक मूल्य, युवा आक्रोश, छात्रों में अनुशासनहीनता, शिक्षित बेरोजगारों की भयंकर समस्या, योग्यता तथा प्रतिभा की खुली अवमानता तथा उससे उत्पन्न क्षोभ की स्थिति, भ्रष्ट नोकरशाही, अर्थाभाव के भयावह और त्रासद परिणाम, निराशा, व्यथा, क्रोध, महानगरीय तथा औद्योगिक बस्तियों की समस्याएँ राजनीति और समाज में बढ़ता भ्रष्टाचार आदि जीवन की लगभग सारी स्थितियों का सूक्ष्म अंकन दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में हुआ है ।

कथासाहित्य में कथावस्तु की सफलता के लिए कहानी में संक्षिप्तता, मौलिकता, रोचकता, क्रमबद्धता, विश्वसनीयता, उत्सुकता, शिल्पगत नवीनता आदि गुणों का होना अवाश्यक है। लेखिका की कहानियाँ इन सभी

कसौटियों पर खरी उतरती है। उनकी अनुभूतियों में संपादन है और विचारों में निर्णयात्मकता है। जीवन की गहराई है ।

कथारंभ के साथ साथ कथावस्तु के मध्य की विशेषता होती है। कथावस्तु का मध्य कथारंभ और कथा के अंत की बीच की कड़ी होती है । डॉ. गोरक्ष थोरात के संशेधनानुसार - ''कथावस्तु का मध्य मुख्यतः कथावस्तु का प्रसार करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है । इसका महत्व इसलिए भी होता है उसे अंत की ओर ले जाता है । सैध्दान्तिक दृष्टिकोण से कहानी की कथावस्तु के मध्यभाग के मध्य की यह विशेषता होती है कि वह उसके प्रारंभ और अंत में संतुलन बनाए रखता है ।

५.२.२ कथा विकास

कथा का विकास करते हुए लेखिका यह खबरदारी रखती है कि कहीं कथा फैलने न पाएँ । उदाहरण के तौर पर 'अभिशप्ता' कहानी में 'मानो' के मन की घुटन जगह जगह दिखाई देती है इसी घुटन के सहारे लेखिका कथा को आगे बढ़ाती हुई कहानी के समापन की और बढ़ने का संकेत भी देती है। उदाहरणार्थ अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाते हुए खुद अपने बहनों का ब्याह करा देती है। परंतु मानो के मन के हालात लेखिका ने इसप्रकार बयान किए है। ''मानो जान गई है कि किसी शापग्रस्त वरदायिनी सी मंच पर खड़ी रहेंगी किन्तु कमरें के निबिड़ एकान्त में दो भुजाओं को हार उसे कभी नही मिलेगा कभी नही।"[१३]

'ये दूरियाँ' कहानी में अंजु अपने मम्मी पापा के झगड़ों से तंग आती है उसे हमेशा डर लगा रहता है कि इन झगड़ों की वजह से कहीं एक दिन मम्मी पापा एक दूसरे से दूर तो नही हो जाएँगे। बचपन से लेकर घर के इसी वातावरण के कारण अंजु की मानसिकता ऐसी हो गयी है कि उस डर से मुक्त रहने के लिए वह सदा व्यस्त रहती है कभी पढ़ाई में तो कभी मनोरंजन

में! घर की दीवारें यानि मम्मी डैडी आज तक झगड़े लेकिन अलग नहीं हुए लेकिन अंजु के मन में दीवारें खिंच गई है और वह उनमें बंद हो गई है। उसे लगता है कि उसका भावी जीवनसाथी कोई प्रिन्स चार्मिंग भी उन दीवारों को लांघकर नहीं आ सकेगा। इस तरह के कल्पित विचारों से लेखिका कथा विकास करती है।

स्पष्ट है कि दीप्ति खंडेलवाल अपनी कहानियों का शिल्प बाँधने में सिद्धहस्त हुई है। उनकी कथा विकास की शैली में भी कथारंभ की तरह विशेषता दिखाई देती है। कहीं यह कथाविकास नायिका के मानसिक उलझन को दर्शाता है तो, कही लेखिका कथा नायिका की मन:स्थिति की तुलना बाहय परिवेश से करवा कर कथा को आगे बढ़ाती है। कहीं पूर्वदीप्ति में नायक अथवा नायिका की अतीत की जिंदगी का वर्णन कथा विकास में सहायता पहुँचाता है, तो कभी लेखिका आज की स्थिति से अतीत की तुलना कर के कथा-विकास को उद्देशपूर्ति को ओर बढ़ाती है। कभी-कभी कथासूत्र को आगे बढ़ाने में किसी नए पात्र का प्रवेश भी पाठकों में उत्सुकता बढ़ाता है, क्योंकि उस पात्र के द्वारा संकेतात्मक पद्धति से आनेवाली या घटित होनेवाली घटनाओं का अंदाजा लग जाता है, तो कहीं प्रतिकात्मक ढंग से भी दीप्ति जी ने अपने कहानियों में कथाविकास की शैली अपनायी हुई दिखती है।

५.२.२ संयोग तत्व:

कहानीकार अथवा उपन्यासकार संयोगतत्व का प्रयोग अपने कथ्य में केवल रोचकता लाने के लिए करते है। व्यक्ति के जीवन में संयोग होते ही है, इसे साधारण भाषा में तकदीर का लेखा कहा जाता है। जीती जागती जिंदगी में ऐसे संयोग बन जाते है, परंतु किस्से कहानियों में प्रेमी युगलों को मिलाने के लिए लेखक अनेक प्रकार से रोचक ढंग से नए-नए बहाने ढूँढकर प्रेमी-युगल की पहली भेंट का संयोग तय करता है जिससे कथा किस मोड पर आगे बढेगी, इससे पाठक में रोचकता निर्माण होती है।

उत्कृष्ट कथाकार की यह विशेषता होती है कि वह अपनी कथायात्रा में पाठकों को हल्के हल्के झूलाता रहे, कभी हल्का सा मानसिक प्रसादपूर्ण धक्का देता है, तो कहीं उलझन भरे प्रश्न छोड़ते चलता है, फिर धीरे धीरे वही उत्सुकता कभी अचानक तो कभी संयोग से कथा विकास करते हुए नायक-नायिका, सहायक नायक-नायिका पात्र उन्हें मिल जाते है और अच्छे खासे शांत जीवन में उथल-पुथल मचती है तथा कहानी घटित होती है। यह संयोग कथा के चलते किसी भी स्थान पर होता है। कभी यह कथारंभ तो कभी कथा के अंत में भी होता है।

'निर्वसन' कहानी के अंत में नैरेटर प्रसिद्ध कैबरे डान्सर मोना का इन्टरव्यू लेने जाता है। संयोग से नाचते हुए कैबरे डान्सर मोना नैरेटर के पास आकर 'भैया' शब्द कहती है तब नैरेटर चौंक सा जाता है। मोना दूसरी कोई और लड़की नहीं थी बल्कि नैरेटर के बचपन की सहेली थी। उसने नैरेटर को राखी भी बाँधी थी। अपने जानवर जैसे पति के घर से वह भाग गयी थी जिसे बचपन में नृत्य करने का बड़ा शौक था। सब लोगों ने समझा था कि उसने शायद आत्महत्या कर ली होगी लेकिन दो साल बाद वह नैरैटर से प्रसिद्ध कैबरे डान्सर के रूप में मिलती है। इस संयोग से नैरेटर आश्चर्यचकित हो जाता है। लेखिका ने इस कहानी में राधा की हालत बताने के लिए संयोगतत्त्व का उपयोग किया है जिससे सुधी पाठक समझ जाते है कि किसप्रकार बचपन से नृत्य की चाह रखनेवाली गरीब लड़की का रूपांतरण जिस्म की नुमाइश करनेवाली कैबरे डान्सर में होता हैं।

'आवर्त्त' कहानी के आरंभ में ही विजी और सुमी संयोग से मिलते है। विजी और सुमी एक दूसरे से प्यार करते थे लेकिन घरवालों के विरोध के कारण उन दोनों का ब्याह नहीं हो पाता। अनेक सालों बाद विजी को देखकर सुमी आश्चर्यचकित हो जाती है और उससे भी बड़ा आश्चर्य उसे तब होता है जब विजी सुमी को अपने पति से टेंडर पास करवाने के लिए कहता है। सुमी

को लगता था कि विजी सिर्फ उसे मिलने आया है, लेकिन सुमी का उपयोग विजी अपना बिझनेस बढ़ाने के लिए करना चाहता है यह देखकर सुमी को बड़ा दुख होता है। इस तरह से संयोगतत्व का उपयोग कर लेखिका ने अपनी प्रेमिका के प्रति पुरूष मानसिकता एक अच्छा नमुना पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

'मासूम' कहानी में नायिका अपर्णा रेल सफर कर रही होती है तभी संयोगवश कोई जल्दी से दरवाजा खोलकर उसके कम्पार्टमेंट में आ जाता है। उसे देखकर अपर्णा चौंक जाती है वह आदमी दूसरा कोई नही बल्कि सौमित्र था जिसने दस साल पहले अपर्णा को प्रपोज किया था लेकिन अपर्णा के स्वीकार का इंतजार किए बिना ही वह विदेश चला गया था और वही पर किसी भारतीय वंश की लड़की से शादी कर ली थी परंतु अपर्णा को भी देवेश जैसा अच्छा पति मिल गया था। जिसके प्यार ने अपर्णा को सौमित्र को भूलाने में मदद की थी। संयोगवश दस साल बाद जब दोनों एक-दूसरे से मिलते है तो अपर्णा सौमित्र के दिल में आज भी कही अपर्णा की जगह है, इसका पता अपर्णा को चलता है जब अपर्णा का गिरा रूमाल सौमित्र छोटे बच्चे की तरह कोई न देख ले इस मासूमियत से चुपके से उठा लेता है।

'देहगंध' कहानी के आरंभ में ही मनोहर जोशी अपनी प्रेमिका से संयोग वश मिलता है। उसकी प्रेमिका की शादी माँ-बाप द्वारा चुने कमाऊ लडके से होती है। अनेक दिनों बाद प्रतिमा के दिल की मक्कारी उसे तब समझ में आती है जब वह प्रेमिका अपने पति के गैरहजरी में मनोहर से शरीरसुख चाहती है। इस संयोग के कारण अच्छी बात भी हो जाती है कि मनोहर अपनी पत्नी सरला को सच्चे दिल से चाहने लगता है और उसे अपनी प्रेमिका का दर्जा देता है। इसतरह संयोगतत्व का उपयोग कर लेखिका ने अतीत भूलाकर किस तरह एक दांपत्य जीवन सँवरा है यह दर्शाया है।

५.२.४ फैंटसी - दीप्ति खंडेलवाल ने अपने कहानियों में तथा उपन्यासों में फैटंसी शिल्प का प्रयोग कम अधिक मात्रा में किया है। फैंटंसी का अर्थ जो वास्तविक जीवन में घटित नहीं होता, परंतु व्यक्ति के मन में उस बात की इच्छा बनी रहती है, ऐसी इच्छा को वह अपने कल्पना लोक में घटित होते देखते है। मनुष्य जिसे हकीकत में न पा सके उसे स्वप्न के माध्यम से पूर्ण होता देखता है। इसे मनोवैज्ञानिक भाषा में फैंटसी कहा जाता है।

'सुख' कहानी में बुट्टो बुआ को उसके पति ने कहीं का न छोड़ा था। खुद सट्टे में सबकुछ हारकर भाग गया था और बेचारी बुट्टो बुआ को सारा जीवन अकेली, कष्ट ढोते, मुंगौडी, पापड बेचकर गुजारा करना पड़ रहा था। वह अपने आप को बोझ समझती थी और जिंदा लाश की तरह जी रही थी फिर भी उसकी इस हालत के लिए वह खुद को जिम्मेदार ठहराती है और पति राजाबाबू कभी तो वापस उसे मिलने आएंगे ऐसे सपने देखती है। आँख फड़कने को वह अच्छा शगुन मानती है वह कल्पना करती है ''अगर सच्चाई राजा बाबू आ जावे तो..! "[१५] वह मन ही मन खुश हो जाती है परंतु वह सब उसका सपना ही रह जाता है जो कभी सत्य नहीं हो पाता।

'पार्वती एक' कहानी में निम्न वर्ग की लड़की पार्वती जो दिखने में साधारण है लेकिन उसे घर में अंधी माँ, छोटा भाई लल्लू तथा बूढ़े बाप का खयाल रखना पडता है। तीन बेटियों के ब्याह के कर्ज से दबा बाबू उसका ब्याह नहीं कर पा रहा था । तभी गाँव के घनश्याम के साथ उसे प्यार हो जाता है और घनश्याम के साथ मुंबई भाग जाने को वह तैयार होती है। वह सपना देखती है, ''उसके एक बगल में बिछाने पर लल्लू सोया है और दूसरी बगल में घनश्याम आ लेटा है और उसके लरजते-सिहरते शरीर को बांहों में भर ले रहा है। वह बंबई की रंग-बिरंगी, महकती चमकती दुनिया में घनश्याम के साथ घूम रही है। "[१५] परंतु वह सपना सपना ही रह जाता है।

इसप्रकार दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में फैंटसी का उपयोग दिखाई देता है जो कहानी में योग्य जगहपर आने से कथा-विकास की सूसुत्रता बँधी रहती है।

५.३ दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों की भाषा

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा साहित्य की कला सामग्री है। भाषा के बिना साहित्य निष्प्राण है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे सदा विचार-विनिमय की आवश्यकता पड़ती है। इस विचार विनिमय को ''भाषा'' के द्वारा समाज तक पहुँचाने का सबसे सुलभ माध्यम साहित्य ही है। ''भाषा'' शब्द संस्कृत की ''भाष्'' धातु से बना है, जिसका अर्थ है 'बोलना' या 'कहना'। अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाय।"[१६] एक अच्छी भाषा वही होती है जिसमें संवेदना को वहन करने की क्षमता होती है। लेखिका के उपन्यास और कहानी साहित्य की भाषा, पात्र, कथानक और विषय के अनुरूप है। उनके कथा साहित्य उच्च मध्यवर्ग, निम्नवर्ग के नगरीय-महानगरीय स्त्री-पुरूषों का यथास्थान समावेश हुआ है। जिससे पढ़े लिखे नौकरीपेशा पात्रों की भाषा में अंग्रेजी का प्रयोग होना सहज है। उनके कहानियों की भाषा में वह संवेदनशीलता है, जो पात्र के अंर्तबाह्य का उद्‌घाटन बडी कुशलता से करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य की भाषा अत्यंत आकर्षक, सक्षम और प्रभावपूर्ण है। जन सामान्य की व्यथा जन सामान्य तक पहुँचाने के लिए जन सामान्य की बोलचाल की भाषा लेखिका ने अपने साहित्य में अपनाई है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में समाज का स्पंदन ध्वनिते होता है। भाषा सजीव और सहज है। उनके साहित्य की भाषा में घरेलु परिवेश और संबंधों के आत्मीय परिवेश को अत्यंत सफलता से चित्रित किया गया है। आज की गहरी, जटील आंतरिक संवेदना और द्‌वंद्‌वात्मक अनुभवों को संप्रेषित करने

के लिए जिसप्रकार की भाषा की जरूरत है, वह उनके पास है। भाषा में माहौल और पात्रों के अनुरूप समाज में प्रचलित सभी देशी-विदेशी शब्द, तत्सम, तद्भव, फारसी, अरबी शब्दों का प्रयोग किया है। यथासमय मुहावरों, प्रतीकों तथा बिंबो का प्रयोग किया गया है। शब्द-युग्म तथा विलोमार्थी शब्दों का प्रयोग भी लेखिका ने यथायोग्य रूप से किया है। इनका सविस्तर विवरण नूतन शब्द प्रयोग के अंर्तगत किया गया है।

५.३.१ नूतन शब्द-प्रयोग

५.३.१.१ शब्द युग्म: अपनी भाषा को विशिष्ट पहचान देने के लिए दीप्ति खंडेलवाल ने शब्द-युग्म का प्रयोग अनेक जगहों पर किया है। यह एक और विशेषता लिए हुए है कि इनमें अधिकतर शब्द नारी जीवन से जुड़े हुए है जैसे-

- फूट-फूटकर रोम-रोम सुनने-सुनाने
- थप-थपाती आर-पार आगे-पीछे
- निखरा-निखरा स्वागत-सत्कार जीती-जागती
- मारता-पीटता तिल-तिल हाड-मास
- मार-मार पल-पल अलग-अलग
- रात-दिन खण्ड-खण्ड तन-मन
- दबी-दबी लुटे-पिटे बीच-बीच
- घुटी-घुटी शत-प्रतिशत सुध-बुध
- नन्हें-नन्हें दमकती-महकती टूट-टूट
- हाथ-पैर आँसू-हँसी जल्दी-जल्दी
- खाया-पिया दुख-सुख साफ-साफ
- बार-बार राधा-कृष्ण धीरे-धीरे

- उगता-ढलता
- किताब-कापी
- पेन्सिल-स्याही
- तन-मन
- भीतर-बाहर
- चुभती-बेधती
- खासते-खासते
- आँख-मिचौली
- मम्मी-पापा
- निकलते-निकलते
- बजा-बजाकर
- झंझट-बखेडे
- दाना-पानी
- चीखने-चिल्लाने
- थर-थर
- छीना-झपटी
- नोचने-काटने
- चलते-चलते
- भूखी-प्यासी
- जब-तब
- अंधेरे-उजाले

तडप-तडप
टिक्-टिक्
कभी-कभी
गड्ड-मड्ड
हँसती-मुसकुराती
साफ-साफ
करते-करते
साफ-सुथरा
साथ-साथ
पियार-वियार
लेन-देन
सोचने-समझने
मोती-मानिक
आकार-प्रकार
हाथ-पैर
निरखता-परखता
अच्छी-खासी
पास-पडोस
रोती-धोती
सबेरे-सबेरे
पंडित-पंडितानी

छूट-छूटकर
हरी-हरी
नौकर-चाकर
आमने-सामने
हिलाया-डुलाया
दुबली-पतली
मल-मलकर
सीता-सावित्री
लम्बे-लम्बे
सांवली-सलोनी
नाक-नक्श
चोर-पुलिस
बीवी-बच्चे
चाय-वाय
राम-राम
पति-पत्नी
नहा-धोकर
अंग-अंग
नस-नस
खडे-खडे
गाली-गलौज

- घिसी-पीटी
- सरदी-गरमी
- मर-खप
- रोम-रोम
- दीया-बाती
- धो-पोंछ
- हल्की-हल्की
- काका-काकी
- मोटी-फोटी
- पोर-पोर
- मेंहदी-महावर
- चिट्ठी-पत्री
- सूनी-सूनी
- उघड-उघड
- मांछी-भात
- लोग-बाग
- रोते-कलपते
- सुनहरे-रूपहले
- बूँद-बूँद
- अपनी-अपनी
- साथ-साथ

पूजा-पाठ
लगी-बंधी
व्रत-उपवास
चौका-चूल्हा
बंधा-बंधाया
क्षमा-याचना
नंगे-धड़ंगे
बडका-छुटका
गिरते-गिरते
थोडी-बहुत
डरते-डरते
बांध-बांध
ऐरे-गैरे
मोटी-झोटी
सांय-सायं
पढती-सुनती
टूंटे-फूटे
गली-मोहल्ले
मरते-मरते
दान-पुण्य
धर्म-कर्म

त्राहि-त्राहि
चीख़-पुकार
पैंट-शर्ट
ऊबड-खाबड
ठंडी-ठंडी
बिखरे-बिखरे
गज-गज
सरम-लिहाज
पाप-पुण्य
चमकने-बुझने
आते-जाते
इधर-उधर
चौकते-चौकते
फटी-फटी
लुंज-पुंज
कुर्ता-पाजामा
सिमटा-सिकुडा
आटे-दाल
बोटी-बोटी
तार-तार
मरता-खपता

- नोंक-झोक चोटी-पाटी भीनी-भीनी
- हिसाब-किताब अंग-प्रत्यंग सरकता-सरकता
- क्षत-विक्षत टेढी-बेढंगी खीच-तानकर
- कमा-कमाकर कोना-कोना पास-पास
- सिसक-सिसककर धुली-धुली जीर्ण-शीर्ण
- फटी-पुरानी चुल्हे-चकले कांप-कांप
- काले-कलूटे जनम-जनम लहू-लुहान
- सज-संवरकर दाल-साग शुरू-शुरू में
- बाप-दादा खिलाती-पिलाती नोच-खसोट
- घर-द्वार भर-भरकर कुत्ते-बिल्लीयों की
- गड़ा-गड़ाकर हांफ-हांफकर चुन-चुनकर
- दप्-दप् जन्म-जन्मांतर चौधरी-चौंधराइन
- कौंध-कौंध भोली-भाली खुशी-खुशी
- कभी-कभी पीने-पिलाने मुड-मूड़
- ठीक-ठीक गोरी-गोरी भैया-भाभी
- बार-बार कंकड-पत्थर जड-संस्कार
- धरती-आकाश कांव-कांव टीचर-फटीचर
- सौ-सौ नपे-तुले घुल-मिल
- खडे-खडे भरा-पूरा चहल-पहल
- तहस-नहस टुकुर-टुकुर डील-डौल

५.३.१.२ तत्सम शब्दों का प्रयोग

दीप्ति जी ने अपने कथा-साहित्य में भावों की सबल अभिव्यक्ती हेतु तत्सम शब्दों का सार्थक प्रयोग किया है। इन शब्दों के प्रयोग से भाषा में सुंदरता और प्रभावात्मकता आयी है।

- क्षितिज
- मुग्ध
- मुक्त
- प्रकृति
- शुभ्रवर्णा
- प्राप्ति
- पवित्रता
- दुर्गति
- परिणति
- नग्न
- स्नेह
- निरभ्र
- विक्षिप्त
- क्रुध्द
- रक्त-रंजित
- अंतिम
- प्राय:
- वक्ष
- दग्ध
- स्पर्श
- दर्पण
- सर्वस्व
- कन्या
- संसार
- श्वसुर
- तृप्ति
- उन्नत
- शय्या
- मातृत्व
- स्पन्दन
- स्निग्ध
- संस्कार
- हृदय
- वृद्धा
- ग्रीवा
- उज्ज्वल
- रत्नजटित
- क्रम
- रात्रि
- प्रहर
- भ्रम
- चुम्बन
- स्वयं
- पश्चात्
- कर्णफूल
- सुसंस्कृत
- भद्र
- सभ्य
- स्वर
- वधू
- बिंदू
- सौंदर्य
- भक्ति
- मातृभूमि
- मृत्युदंड
- तन्द्रा
- आत्महत्या
- आश्चर्य
- कर्तव्य
- व्रत
- कण्ठ
- प्रभु
- निर्मम
- वस्त्र
- स्वप्न
- दीर्घ
- सौरभ
- कंचन
- तृष्टि
- आलिंगन
- मृदु
- स्वादिष्ट

- चरित्र नयन उज्ज्वल कंठहार
- प्रेमपत्र सप्ताह अहं प्रज्वलित
- अग्नि तीव्र परिणय पुत्र
- प्रथम ज्वर गृहीणी दंत-पंक्ति
- श्रेणि अश्रुधार शास्त्रीय संगीत संतुष्ट
- उत्तीर्ण वर्षा अस्तित्व मृगी
- प्रसन्न वक्ष जन्म घृणा
- नितान्त सन्मुख उष्ण सप्ताह
- दरिद्र कर्कश रूद्ध भुजा
- सर्प प्रतिध्वनि कृष्ण विहंग
- पुरस्कृत स्वागत आत्म तमसोमा ज्योतिर्गमय
- सूक्ष्म अंजुलि दृष्टि चरित्र
- नीर निर्झर उद्वेग प्राण
- समर्पण स्वर्ग नृत्य
- मुद्रा नेपथ्य नूपुर

५.३.१.२ तद्भव शब्दों का प्रयोग

कथा-साहित्य में सहजता और स्वाभाविकता लाने के लिए लेखिका ने पात्रों के अनुरुप तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। यथा

- बिटौनी इत्ता चाँद सलज्ज
- निस्पंद अनावृत्त निर्वसन सर्वांग
- लगवाय कित्ती जित्ते पतुरिया

• दोस्तन	अशिरबाद	बिया	परनाम
• सामत	पिरेम-पत्तर	बडका	मोहटरिया
• जिनगानी	इसक	मरद	लहास
• बरसन	कुलच्छनी	अऊर	इहां
• पारबती	जुर	सउंप	परभू
• जमराज	छमा	लछमी	दुसमन
• हाथ	जिनावर	छिमा	डूबाया
• सुन्नर	डिरेवर	खायबे	पियार
• घर	हाथ	गाँव	मूरख
• भगवान	तोहार	दूध	खेत
• ब्याह	काम	घी	धरम
• जनम	करम	बुदबुदाना	परान
• कौनो	गुब्बारा	कंकड	छाँह
• खटिया	अँधेरा	बेसरमी	रोवत
• पिरावत	मंगाइन	लेवत	सरम-लिहाज
• सन्तन	सुनहली	वरत	आतमा
• परआतमा	किशन	अरथ	टूटन
• अधरम	दरद	शारदीया	टहनी

देशी शब्दों का प्रयोग-जैसे ढिवरी, गंडेरी, कलाकंद, धंदा, गटागट, गड़गड़ाहट, ओखली, सांकल, डंड़ी, खुजाना,दुल्लड, मत्था आदि.

विदेशी शब्दों का प्रयोग जैसे अंग्रेजी, फारसी अरबी शब्दों का, प्रयोग

५.३.१.३ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य में पति-पत्नी, स्त्री-पुरूष संबंध दर्शाते पात्र सुशिक्षित होने के कारण अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। जिससे भाषा में स्वाभाविकता आ गई है जैसे-

उधर देखो, 'दिवाकर एण्ड मिस रीता। दे फार्म ए हैंडसम कपल!' आशिष ने इशारा किया ।

वे फुसफुसा रहे थे, लैट इट बी, मि. प्रभाकर! इट इज नो यूज।''

मैंने अपने आपसे कहा-हियर यू आर माई गर्ल, कांग्रेचुलेशन्स!

इण्टरव्यू में एक प्रश्न था 'डू यू बिलीव इन टैबूज?

लाईफ इज टु बी लिव्ह, नॉट टु बी टैबूड' मैंने उत्तर दिया था।

यू आर राइट, लेफ्टिनेंट ! मैं सिगरेट सुलगाकर हंसी थी।

'व्हाट ए ब्यूटी!'

एण्ड व्हाट ए फिगर, वोन्ट यू से दैट टू?'

मेट्रन ने कहा-'यू मस्ट स्टॉप दिस, मिस!'

स्टॉप व्हाट, स्टॉप गैंटिंग इनवाल्ड आर गैटिंग कॉट?''

'इट लुक्स सो ऑकवर्ड, नसरीन कह रही थी

'लाइफ इज रियली वण्डरफुल नाऊ!'

'आई कीप नो इनहिबिशन्स'

'अनबॉर्न टुमारो एण्ड डेड येस्टरडे व्हाई फ्रेट एबाऊट देम इफ टुडे बी स्वीट'

ममी हैज गॉट ब्यूटीफुल सेट ऑफ टीथ।

'ही हैड अफेअर्स विद अदर वीमेन एण्ड आइ कुडंट टॉलरेट इट।'

'डोन्ट आस्क सिली क्वशचन्स, बीहेव योरसेल्फ!

वी आर प्राइड दैट वी हैव एचीव्ड समथिंग ।

लैटस गो टु सम मूवी टु डे, यू आर सो सैड!

'वुड यू माइन्ड हैविंग दिस सॉरी ऑन माई बिहाफ, डॉक्टर?'

'लिंकन ने कहा था डिमोक्रेसी मीन्स गवर्नमेंट ऑफ द पीपल फॉर दी पीपल, बाय द पीपल...'

'दीज इंडियन गर्ल्स आर जस्ट फुलिश!'

'आइ एम जस्ट एन आर्डिनरी गर्ल विथ एवरिथिंग जस्ट आर्डिनरी एराउण्ड मी!'

'आई एम सॉरी मिस सुनीता, रिअली सॉरी टु नो सच सैड फैक्टस एबाउट यू!'

'ऑल राईट। एट फाइव पी.एम टुडे।'

'लेट अस एनजॉय लाइफ एंड फॉरगेट द रेस्ट...।

'मे आई कम इन मैडम।'

'मे आई टेक माई सीट मैडम'

'लैट हर लर्न टु एक्सेप्ट नेकेड फैक्टस'

'व्हाइट मेक्स यू ग्लोरियस।'

'ऐंड ऑल दैट्स बेस्ट ऑफ डार्क ऐंड ब्राइट मीट इन हर ऑसपेक्ट ऐंड हर आइज!'

'रियली सिमी यू आर वण्डरफूल!'

'आई एम सॉरी, शी इज नॉट वैल टुडे.. या वी हैव टु गो नाऊ'

'सिमी यू आर समथिंग रेअर! यू मस्ट मेन्टेन इट..'

'वोंट यू एडमायर माई ऑनेस्टी? कम आन लेट अस सेलिब्रेट द लास्ट नाइट लाइक फ्रेण्डस..

'पास्ट इज पास्ट, नाऊ यू मस्ट थिंक एबाऊट योर फ्यूचर। यू आर स्टिल वेरी यंग सिमी, विद ए होल लाइफ एहेड ऑफ यू!'

'नाऊ बी प्रेक्टिकल सिमी । डोण्ट लूज द ओकेजन।'

'विश, यू ए हैप्पी टाइम टुगेदर।'

'लेट द बैण्ड प्ले नाउ, एण्ड यू आल कैन ग्रीट द कपल वेलकम।'

'व्हाट इज द काम्लेक्स विद यू?'

'लेट अस गेट मैरीड नाउ'

'वैल, टेक योर ओन टाइम डियर

- स्वीट कनफेशन मेकअप प्रेसक्रिपशन्स
- कैंसर किण्डरगार्टन बेड लव मैरिज
- मिस इनविजीलेटर्स शावर डिसकोथिक
- स्केल फॉर्टि परसेंट सैटिल नेक्सट संडे
- स्वेटर यूनिवर्सिटी रोमांस ईजी-चेयर
- अटेंडेंस ओ माई गॉड कॉमेडी रिलेक्सेशन
- डयूटी मॉर्निंग शो मॉडलिंग बैडमिंटन
- मीटिंग प्रोफेसर हैंडसम टॉन्सिल्स
- लीडर एअर होस्टेस प्रपोज ऑक्सफर्ड
- फायर टाइपरायइटर ज्वाइन थीसिस
- फाइल बस-स्टॉप वेस्ट डॉक्टरेट
- साइन सिनियर पोएम आर्टिकल
- थैंक्स रिसेप्शनिस्ट पोएट्री ओब्लाइज
- हैलो ऑपरेशन परफेक्ट टेन्शन
- ट्रेजेडी अनरोमांटिक नाइटी वैल्यूज
- डॉक्टर सीलिंग फैन लाइटर इंसल्टेड फील
- कैम्ब्रिज मैगनीफिशेन्ट ब्रेनी सैनेटोरियम
- मॉडर्न पॉइन्टेड ब्यूटी ड्राइंग-रूम
- सूसाइड टेलीफोन एक्सचेंज टीचर्स कैलक्युलेटीव

- मेट्रन
- फॉरेनर
- फ्लाइट
- फ्लैड
- ब्रेस्ट
- टॉप्स
- सेट
- वार्डरोब
- पास-बुक
- फ्रिज
- कैंटीन
- फर्निचर
- एचीव्ह
- टैक्सी
- ड्रिंक्स
- कैबरे डान्सर
- माइन्ड
- परफ्यूम
- टॉनिक
- कटलेट
- रिपोर्टर
- पर्सनेलिटी
- एक्सप्लेन
- ब्रिलियंट
- फिलॉसफी
- ड्रेसिंग टेबल
- गुडमार्निंग
- सुपरसोनिक प्लेन
- हाऊ लवली
- डैम इट
- स्टेथस्कोप
- डिबेट
- स्टेनो
- डेंजर
- एलर्जी
- ब्यूटीफूल
- बर्थडे
- कंटेस्ट
- रूटीन
- मैनेजर
- स्टेशन
- प्लेटफार्म
- ऐक्शन
- कॉलेज
- यू चीट
- यू बिच
- फैशन
- टाइपिस्ट
- स्टैंडर्ड
- फंक्शन
- कॉलबेल
- डार्लिंग
- कॉम्प्लीमेंटस्
- एकाउन्टेन्ट
- स्वीट ड्रिम्स
- एडमायरर्स
- क्वालिफिकेशन
- ट्वेन्टी-एट
- ईवनिंग
- एल्सव्हेअर
- फेवरिट
- इन्सटालमेन्ट
- सैटिस्फचर्ल
- टिपटॉप
- एन्शोरेंस एजंट
- एन्टीसेप्टिक सोप
- कल्चर्ड एटीच्यूड
- लेक्चररशिप
- डिस्पेन्सरी
- एपार्टमेंट
- साइकाएट्रिस्ट
- एक्साइटेड
- फस्ट पोजीशन
- डिप्लोमा
- होम साइन्स
- टेल्कम पाऊडर
- एबार्शन
- वेडिंग नाइट
- इन्डिविजुएलिटी
- ड्रिस्ट्रिक्ट-बस
- रास्कल
- मेनटिनेन्स
- ब्रेकफास्ट
- फोर फीट नथिंग

- केमिस्ट्री चैम्पियन कल्चर्ड
- डिस्टिंक्शन डिस्टर्ब हिस्टीरिया पॉलिश्ड
- कन्सल्ट ईगो ट्रेक्बिलाइजर्स सोफिस्टिकेटेड
- वेलकम सरप्राइज एकनॉर्मल फारवर्ड
- इम्पॉर्टेन्ट स्टाफ कैलेंडर रिमैरिज
- सॉरी टाइल्स स्केलेटन एनालिसिस
- स्टेज बाथरूम डिश्वीफाइड नेक्स्ट
- टच रजिस्टर प्रिन्स चार्मिंग डिबेट
- विदड्रा ट्राजिस्टर सेंटिमेंटल फूल्स होमवर्क
- म्यूजिक टेलीविजन सैडविचेज ट्रेन्किलाइजर
- स्लो-पाइजन कन्विन्स जॉइन एंगेजमेंट

५.३.१.४ फारसी शब्दों का प्रयोग

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में आसमान, लड़ाई, तूफान, उदासी, दावत, तहखाना, कम्बख़्त, शौक, शर्म, दस्तक जैसे फारसी शब्दों का भी इस्तेमाल किया गया है।

५.३.१.५ अरबी शब्दों का प्रयोग जैसे-

- अखबार औरत तलाक ऐलान
- हवस इंतजार तकलीफ हरगिज
- अक्सर कोशिश तसल्ली कमजोर
- हवेली शहीद शहनाई सीने में
- खयाल तरक्की शिकायत होश
- इम्तीहान किराया तनख्वाह कसाई

५.३.१.६ मुहावरों का प्रयोग

साहित्य में भाषा के लालित्य और समृद्धि के लिए मुहावरों और कहावतों का विशिष्ट योगदान होता है। दीप्ति जी ने अपनी कहानियों में मुहावरों का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है जिससे उनकी अभिव्यक्ति सशक्त बन गई है। इन छोटे छोटे मुहावरों की वजह से भाषा का रूप निखर गया है जैसे-

- ईंट का जवाब पत्थर से देना
- जोरू का गुलाम होना
- दाँत पीसना
- दम घुटना
- मुग्ध हो जाना
- करवटे बदलना
- पंख फडफडाते रह जाना
- सीना पीटना
- खरी-खोटी सुनाना
- कचूमर निकाल देना
- अंगूठा दिखाना
- तूल देना
- चूड़ियाँ पहनना
- दिमाग ठिकाने रहना

विविध देशी विदेशी शब्दों के साथ साथ दीप्ति जी ने अपनी भाषा में विविध अलंकारों का जैसे श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि का प्रयोग भाषा की सुंदरता बढ़ाने केह लिए किया हैं। उसीप्रकार उनकी भाषा में चित्रात्मकता पर्याप्त मात्रा में मिलती है। दीप्ति जी ने अनेक जगह प्रतीक योजना तथा बिबों का प्रयोग किया है। ध्वन्यात्मक शब्दों को लेखिका ने प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा में वैविध्य दिख पड़ता है जैसे गालियों से युक्त भाषा, सूक्ति से युक्त भाषा, नारे घोषणा से युक्त भाषा राजभाषा आदि। इन सब के प्रयोग से उनकी भाषा परिपूर्ण हो गई है।

यह कहना उचित होगा कि लेखिका को जीवन दृष्टि की गहनता विरासत में मिली है। अत: पारिवारिक रहन-सहन की अभिजात्यता उनकी

रचनाओं की नारी पात्रों में दिखती है। उनकी कहानियों के नारियों की मानसिकता के आधारपर उनके रहन-सहन का वर्णन विश्लेषित करने के लिए् लेखिका ने साडियों के प्रकार विविध गहनों के प्रकार अपनी कहानियों मे इस्तेमाल कर प्रत्येक रचना चिरस्मरणीय तथा पठनीय बनायी है।

५.३.१.७ साडियों के प्रकार

दीप्ति खंडेलवाल का साहित्य नारी मन की मनोगाथा है। अतः उनके साहित्य में नारी से संबधित सभी चीजों का संदर्भ आया है। अनेक साड़ियों के प्रकार उनके साहित्य की भाषा में दिख पड़ते है जैसे-

१. पिंक शिफान साड़ी
२. वायल की साड़ी
३. सिंथेटिक साड़ी
४. मैली साड़ी
५. घाघरा-ओढ़णी
६. टेम्पल साड़ी जिसे चौड़ा कोन्ट्रास जरी बॉर्डर है
७. चौडी जरी-बॉर्डर की साड़ी
८. जरी की साड़ी
९. जयपुरी चुनरी की साड़ी
१०. लाल चौडे बॉर्डर की कश्मीरी सिल्क की सफेद साड़ी
११. साफ साड़ी
१२. सितारे जड़ी, गोटे-किनारीवाली, चमकीली लाल साड़ी
१३. शोख रंगों की सस्ती साड़ियाँ
१४. सफेद साड़ी
१५. कलरफुल साड़ियाँ
१६. कांजीवरम साड़ी
१७. बंगाल की जरी बॉर्डर की तांत की साड़ियाँ

१८. गुलाबी बनारसी साड़ी

१९. रेशमी साड़ी

२०. गुलाबी रंग की चौड़े काले बॉर्डर की साड़ी

२१. छापे की महीन कपड़े की साड़ी

२२. नीले फूलों वाली जारजेट की साड़ी

२३. गुलाबी सिल्क की साड़ी

२४. किमती खादी सिल्क की साड़ी

२५. गहरी बैंजनी साड़ी

२६. गुलाबी रंग की निभिदर्शना साड़ी

२७. नीले रंग की साड़ी

२८. फीरोजी टेम्पल साड़ी

२९. उन्नाबी रंग की साड़ी

३०. 'ग्रे' कलर की मटमैली सी साड़ी

३१. नारंगी फॉरेन नॉयलॉन की साड़ी

३२. हल्की गुलाबी लखनऊ चिकन की साड़ी

३३. सफेद हैण्डलूम की साड़ी

३४. लाल चौडे बॉर्डर की सफेद हाफ-सिल्क की साड़ी

३५. उन्नाबी-लाल, सितारों जड़ी साड़ी

३६. क्रिमसन रेड साड़ी

३७. नीली जार्जेट की बैक ग्राऊन्ड़ पर सागर की फेनिल लहरों की ड़िजाइन की साड़ी

३८. गोटा लगी बदरंग साड़ी

३९. गुलाबी रंग की भारी बनारसी साड़ी

साड़ियों की तरह हर नारी की पसंद की चीज गहने होते हैं। दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी कहानियों में तरह-तरह के गहनों के प्रकार समाविष्ट

किए है जो एक नारी सुलभ भावना के प्रतीक है जैसे - नेकलेस, टॉप्स रिंग, मोतियों की माला, मोती के टॉप्स, नाकपर झूलती नथ, चांदी के झांझन, जड़ाऊ झुमके, ब्रेसलेट, कर्णफूल, जडाऊ जेवर, मोती-माणिक के गुलाबगढ़े कुंदन का कंठहार, जिप्सी रिंग्स, लॉकेट आदि ।

५.४ दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों की भाषा शैली

दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों के प्रत्येक शब्द परिवारिक तथा सामाजिक मूल्यों को दर्शाते है। सामाजिक कहानियों में सामाजिकता का स्वर प्रमुख होता है वे समाज में व्याप्त अंधविश्वास, अनाचर, रूढ़िवादिता आदि का पर्दाफाश करती है। उनकी कहानी के पात्र समाज के किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। लेखिका की कहानियाँ वैयक्तिक मूल्यों को समष्टिगत मूल्यों में समाविष्ट कर जीवन-साहित्य में प्रतिबिंबित हुई है। उनकी सामाजिक एवं पारिवारिक कहानियाँ जीवन के अनेक पक्षों से जुड़ी है। लेखिका के साहित्य में स्थान-स्थान पर बौद्धिक विवेचन, भाषात्मक वर्णन, संवेदना, परिवेश, पात्रों की मानसिकता को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त हुआ है। एक नारी होने के नाते सामाजिक तथा वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बदलते-बिगड़ते, सँवरते अनेक रूपों से वे पूर्णतया अभिज्ञ है। उनकी कहानियों की नायिकांओं में प्रेम, त्याग, विद्रोह, समर्पण के भारतीय गुणों के साथ साथ पाश्चात्य अधानुकरण से आयी स्वेच्छाचारी वृत्ति भी दिख पड़ती है।

सन साठ की सभी महिला लेखिकाओं ने अपनी लेखनी से नारी के स्थान को और भी गरिमा प्रदान की है। भाषा का निस्सिम ज्ञान, शब्दभंडार के अलावा मौलिक ज्ञानसंपदा उनकी रचनाओं में चूल्हे चौके के बरतनों से लेकर, साड़ियों के चयन, भारतीय गहनों का गहन ज्ञान, उनकी रूचि और पर्यावरण के बदलते ऋतुओं को अपनी रचनाओं का हिस्सा बनाया है। ज्ञान की पिपासा को बूझाने की उत्सुकता के खातिर दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन करते-करते इस बात की भी

रूचि जागृत हुई है, कि क्यों न उनकी इन्ही विशेषताओं का अलग से अध्याय में संकलन किया जाए, परंतु सीमाओं को ध्यान में रखते हुए इसी अध्याय को संक्षिप्त में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। लेखिका में भाषा सौष्ठव का परिचय देते हुए शब्द-युग, बिंब प्रतीक, अलंकार, तत्सम, तद्भव, देशी, अरबी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग कर अपनी रचनाओं का भाषिक सौंदर्य बढ़ाया है। इसी के साथ दीप्ति खंडेलवाल का साज-शृंगार के प्रति रूचि तथा चुनाव, रंगों का मेल-मिलाप, पारंपारिक गहनों से लेकर आधुनिक फैशन के गहने तथा कपड़ों से मेल खाती लिपस्टिक का चुनाव, पेड़, पौधे, फूलों के प्रकार इन सभी के संकलन से ज्ञात होता है कि, लेखिका की जीवन दर्शन के प्रति आस्थावान-दृष्टि तथा सौदर्य -दृष्टि कितनी गहन है। इन सभी का विवरण नूतन शब्द प्रयोग में किया गया है। दीप्ति खंडेलवाल ने हिंदी साहित्य में जो अपना भाषिक योगदान दिया है वह अवर्णनीय है। उनके साहित्य की भाषा शैली का अध्ययन करते समय निम्नलिखीत तथ्य उभर कर आते है।

भाषा की शैली अगर उत्तम हो तो वह स्वयं बहुत लंबे समय तक पाठक के मस्तिष्क में घर करके रह सकती है। साहित्य ही वह साधन है, जो मनुष्य की अन्तशक्तियों और भावात्मक चेतना को झँझोड़ता है, ठोस चिंतन करवाता है और जीवन की गति बदलने की उसमें क्षमता होती है। उससे अतीत न सही पर वर्तमान और भविष्य की सोच बदलने की प्रेरणा एवं शक्ति मिलती है। युग परिवर्तन तथा आर्थिक विकास के साथ उसकी बुनियादी सोच भी बदलती है। साहित्यकार लेखन की किसी भी विधा के माध्यम से अपने विचारों को कलापूर्ण ढंग से पाठक तक पहुँचाता है। दीप्ति जी के साहित्य की भाषा शैली की यही विशेषता है।

वर्तमान कहानी तथा पूर्ववर्ती कहानी की भाषा में हम आज पर्याप्त अंतर देखते है। आदर्शवादी कहानियों का स्थान अब यथार्थवादी कहानियों ने

लिया है। सन साठ की समकालीन लेखिकाओं ने कथ्य की आंतरिक माँग के अनुसार सरल और सहज भाषा का आधार लेकर सफल रचनाएँ की है। लेखिका ने अपनी रचनाओं में कहानी-कला की समस्त शैलियों का प्रयोग किया है।

५.४.१ वर्णनात्मक शैली-

इस शैली में कथन के माध्यम से कहानी में प्रवाहात्मकता और गतिमानता लायी जाती है जो भाषिक सौंदर्य में और भी वृद्धि करती है। दीप्ति खंडेलवाल के 'जहर', 'मूल्य', 'परिणति', 'युद्धरत', 'मरती हुई गौरया' आदि कहानियों में वर्णनात्मक शैली का उत्कृष्ट उदाहरण दिखाई देता है।

जैसे मूल्य कहानी में - 'सवेरा होता है, तो आंगन में पड़े जूठे बर्तनों पर कौवे कांव-कांव करने लगते है। भगवती उठती है। चिड़चिड़ाती-चिल्लाती बर्तन मांजती है, नहाती-धोती चाय बनाती है और जीवन का प्रतिदिन का क्रम चलने लगता है। इस क्रम को निभाते पंडितजी थक गये है। अब वह क्रम को नहीं निभाते, शायद क्रम ही उन्हें निभाये जा रहा है।"[१७]

इसप्रकार स्पष्ट होता है कि लेखिका वर्णनात्मक शैली में सिद्धहस्त है।

५.४.२ संवादात्मक शैली

कथावस्तु का सबसे सबल घटक संवाद होते हैं। नाटक अथवा रंगमंच शाखा में जितना महत्त्व संवाद का होता है, उतना ही महत्त्व कहानी में भी संवादात्मकता का होता है। इससे कथा अधिक रोचक हो जाती है। लेखिका अपनी कहानियों में छोटे-छोटे संवादों द्वारा रोचकता लाती है जिससे कहानी पढ़ने की गति भी बढ़ती है तथा अंत क्या होगा इसकी उत्कंठा बढ़ जाती है। लेखिका ने अपनी अनेक कहानियों में संवादात्मक शैली का पर्यात प्रयोग किया है, जिससे उनकी कहानियाँ चिरस्मरणीय होकर बहुत देर तक पाठक के मनोमस्तिष्क में घर कर जाती है। उदा: जैसे देह से परे कहानी में -

माधुरी कहती, ''मेरी तबियत ठीक नहीं है, दवा ला दो मैं जेब से रूपये फेंक देता, 'खुद ले आओं!''

''माधुरी सज-संवरकर सामने आती 'आज किसे रिझाने जा रही हो?'' मैं व्यंग करता।

माधुरी गोद के शिशु को मेरी गोद में देती ''हटाओ इसे, गन्दा कर देगा,'' मैं चीख पड़ता ।

''तुम बदल गए हो!'' माधुरी रोकर कहती ।

''बदलना समय का नियम है, '' मैं सीना तानकर कहता[१८]

५.४.३ आत्मकथात्मक शैली

प्रस्तुत शैली में कथाकार स्वयं पात्र का रूप धारण कर निवेदन का काम करने लगते है। वह पाठक को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करते है। इसका वर्णन प्रथम पुरूष के रूप में होता है। लेखिका ने अनेक कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का इस्तेमाल किया है। 'जमीन', 'बीच का आदमी', 'सलीब पर,' 'शीर्षकहीन', 'मोह', 'आधुनिक', 'अभिशप्ता', 'मासूम','कैद' आदि कहानियों में आत्मकथात्मक शैली का यथोचित उपयोग हुआ है।

उदा:- मासूम कहानी में-

''मेरी सहेली उस स्टेशन पर उतर गई थी। अब मैं अकेली थी। मुझे भी दो स्टेशन बाद उतरना था। प्लेटफार्म पर बड़ी चहल-पहल थी। डिब्बे में उस शोर को सुनती उस भीड को देखती हुई मैं दार्शनिक हो उठी थी। यह ट्रेन का सफर मुझे अक्सर गंभीर बना जाता है, लगता है यह जिंदगी भी तो एक सफर है''।"[१९]

५.४.४ काव्यात्मक शैली

कभी कभी संवेदना उत्पत्ति के लिए कथाकार अपनी कहानी की भाषा को काव्यात्मक बनाने का प्रयास करते है। इसे गद्यकाव्य बनाने का प्रयास

कहते है। संपूर्ण कहानी में कहीं कहीं काव्यात्मक पंक्तियाँ कहानी की रोचकता बढ़ाने में सहायक होती है। लेखिका ने भी अपनी रचनाओं में काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया है 'अर्थ', 'ये भी कोई गीत है', 'विषपायी' आदि कहानियों में काव्यात्मक शैली दिखायी देती है।

उदा. आओ एक चुम्बन हम दूरियाँ समेट ले
बाहों के बंधन में आसमान भेंट ले
गंध दे हवाओं को, रंग दे दिशाओं को।
जीवन के शब्दों को जीने के अर्थ दे।"[२०]

५.४.५ व्यंगात्मक शैली

कभी-कभी सत्य का साक्षात्कार कराने के लिए व्यंग का आधार लेना आवश्यक होता है। व्यंगात्मक भाषा सीधे दिल पर चोट करती है। कभी इसका सकारात्मक परिणाम यह होता है कि मनुष्य अपनी कमजोरियों के प्रति सजग होता है और उसे कम करने का प्रयास करता है। लेखिका ने समाज और जीवन से संबधित विविध पहलुओं पर तीखा प्रहार करने हेतु व्यंगात्मक शैली का प्रयोग किया है। उनके कुछ व्यंग हृदय को चुमने वाले है तो कुछ गहराई में पीड़ा उत्पन्न करने के साथ होठों पर हास्य भी उत्पन्न करते है। यह व्यंग कभी व्यक्तिगत होता है तो कभी सामाजिक भी! मनुष्य को कभी गहरी चोट पहुँचाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है तो सामाजिक रूप में इसका प्रयोग कर मनुष्य को उसकी दुर्बलता से सचेत किया जाता है। परिवारों में इसका प्रयोग विसंगति बढ़ाता है, कभी रिश्तों में दूरियाँ लाता है, कभी शाब्दिक प्रताड़ना से घर टूटते है। लेखिका ने व्यंगात्मक शैली का प्रयोग 'कटु सत्य,' 'परिणति,' 'विघटन,' 'युद्धरत,' 'शीर्षकहीन' आदि कहानियों में किया है। परिणति कहानी में - महेंद्र फिर एक फीकी हंसी हसा ''आजकल तो मौत मिल सकती है, नौकरी नही मिलती "[२१]

५.४.६ पूर्वदीप्ति शैली

इसे फ्लैश बैक भी कहा जा सकता है। इस शैली में रचनाकार अतीत की घटनाओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर किसी विगत घटना सूत्र से जोड़ देता है और कथानक को गतिशील बनाता है। लेखिका ने अपनी रचनाओं में अनेक जगह पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है-

उदा. 'अभिशप्ता' कहानी में मानो को चार वर्ष पहले की याद आती है-

''चार वर्ष पूर्व प्रशान्त को अपनी उन बड़ी-बड़ी आँखो में भरती मानो को लगा था। वह भी अपने जीने का सहज अधिकार माँग रही है। इस मानवीय माँग और उसकी अपेक्षित तृप्ति के सपने देखती मानो उन स्पंदनो से भर गई थी, जो उसके तन-मन में फूल बनकर खिले उठे थे। मानो को लगता था उसकी सांसे महक उठी है, ऐसी गंध से, जिसके बिना किसी नारी का अस्तित्व सार्थक नही होता वे फूल वह गंध! मानो उस गन्ध में बेसुध होती इसके पूर्व ही वह गन्ध उससे छिन ली गई थी ।"[२२]

५.४.७ पत्र शैली-

पत्र-शैली के माध्यम से कहानी की विकास गति बढ़ती है। पत्र कहानी के बीच-बीच में कथोपकथन की भूमिका भी निभाते है। पात्र ही इसे आगे बढाते है। दीप्ति खंडेलवाल ने पत्रात्मक शैली का अंशत: उपयोग अपनी कहानियों में किया है जैसे 'देह से परे' कहानी में तथा 'प्रेमपत्र' कहानी में जैसे प्रेमपत्र कहानी में वार्डन पत्र पढ़ रही थी और लाखी बेहोशी में सुन रही थी या सुनकर बेहोश हुई जा रही थी, इसका निर्णय करना कठिन था। ''लाखी भौजी को देवर रमेसुर का राम-राम, पा लगी। आगे हम यहाँ राजी खुशी है आपकी राजी खुशी नेक चाहते है। आगे भौजी हमें आपकी बहुत याद आता है। आप को देखकर माँ की याद बहुत आय गई और यह बात भी मनवा मा बार-बार उठी कि बियाह होवे तो आप जैसी मिले।.. कल्लू दादा से

तो उस दिन भेंट हो नही सकी। आप ही उनसे कहिएगा और हम तो अपनी बात आप पर छोड़ रहे हैं और आपको हम कभी नाही भूल सकत हैं और बड़का छुटका के प्यार, कल्लू दादा के परनाम और इस पते पर चिट्ठी दिजिएगा। "[२३]

५.४.८ विश्लेषणात्मक शैली

इसके अंतर्गत सूक्ष्म अंर्तजगत की अभिव्यक्ति, स्वाभाविकता से हो जाती है। मनोविज्ञान से संबधित कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया जाता है। इसमें एक ही चरित्र प्रधान होता है। जैसे 'पार्वती एक' कहानी में ''तिनकों को दांतों से कुतरकर थूकती पार्वती ने अपने आप को गौर से देखा। याद आया हथेली भर के गोल शीशे में आजकल जब वह अपने को देखती है तो देखते ही रह जाती है। उसे लगता है जैसे उसका सावला रंग निखर आया है, और निखर रहा है उसकी आँखे बड़ी-बड़ी लगने लगी है, उसके होठ मोठे-मोठे होने लगे है। कल का घनश्याम उसे जाने कैसी निगाहों से देख रहा था कि वह शरमा गई थी।"[२४]

इससे यह स्पष्ट होता है कि दीप्ति खंडेलवाल की लगभग सभी कहानियों में उपर्युक्त सभी शैलियों का वर्णन स्थान-स्थान पर दृष्टिगत होता है, जिससे कहानी के पठन में रोचकता बढती जाती है।

५.५ कहानियों के शीर्षक

दीप्ति खंडेलवाल ने अपने कहानियों के शीर्षक युगानुरूप सामान्य बोलचाल प्रबुद्ध तथा उच्च मध्यवर्गीय पाठकों की रूचि के अनुसार रखे गए है। उनके कहानियों के शीर्षक उस कहानी के तथ्य को विश्लेषित करने में समर्थ रहे है। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों के शीर्षक स्पष्टता, विषयानुकुलता, लघुता, आकर्षकता, अर्थपूर्णता, नवीनता, प्रतीकात्मकता, भाव प्रधानता आदि गुणों से युक्त है। उनके शीर्षकों की विशेषता यह है कि वे

अपने में समाविष्ट है। कहानी के सार को व्यक्त करनेवाले है। पाठकों की उत्सुकता जागृत करनेवाले है। 'मूल्य', 'कायर', 'बीच का आदमी', 'एक और सीता' शीर्षक स्पष्टता दर्शाते हैं, जिससे शीर्षक को पढ़ते ही पाठक को विषय के बारे में पता चलता है। 'क्षितिज', 'परिणति', 'युद्धरत', 'ये भी कोई गीत है', 'निर्बंध', 'धूप के अहसास' आदि शीर्षक विषयानुकूलता दर्शाते है। 'झोंका', 'हव्वा', 'वह', 'भूख', 'प्रेत', 'जहर' आदि लघुता दर्शाते है। 'विषपायी', 'देह से परे', 'युगपुत्री', 'अभिशप्ता' ये शीर्षक अपने आप में नविनता दर्शाते है। 'युद्धरत', 'परिणति', 'बीच का आदमी' प्रतिकात्मक है। नारी मन को अंकित करनेवाली कहानियों के शीर्षक भाव-प्रधान है जैसे 'मोह', 'हव्वा', 'सुख', 'ये दूरियाँ', 'तपिश के बाद' 'आवर्त्त' लेखिका के कहानियों के शीर्षक विचार प्रधान है। जो उनके बौद्धिकता के परिचायक है। कही कही पर तो ऐसे पात्र लेखिका को नजर आते है उन पर लिखी कहानी उसके जैसे कई लोगों की कहानी लगती है तब लेखिका के मन में यह प्रश्न आता है कि इसे कहानी को क्या शीर्षक दिया जाए अत: लेखिका कहानी को 'शीर्षकहीन' यही शीर्षक देती है।

५.६ कहानियों के उद्देश्य-

किसी भी लेखक की कोई भी रचना निरूद्देश्य नही होती। दीप्ति खंडेलवाल के कहानियों के उद्देश्य मूलत: सामाजिक और मनोवैज्ञानिक है। चरित्रों के विश्लेषण द्वारा वे मानव चरित्रों की सूक्ष्म ग्रंथियों को उद्‌घाटित करती है। उनकी कहानियों के पात्र समाज के अनेक वर्गों के लोगों का प्रतिनिधित्व करते है। जैसे 'जमीन' का फूला का पति, 'कोशिश' का करिमबख्श, 'वह तीसरा' का वह आदि। लेखिका की ज्यादातर कहानियाँ स्त्री-चरित्र पर हैं। नारी का चरित्र चित्रण दीप्ति खंडेलवाल ने बड़ी कुशलता से किया है। वे नारी पात्र यथार्थ परक हैं। उनके नारी पात्र रूढ़ी परंपरा को नकारते हुए स्वतंत्र अस्तित्व की माँग करने वाले है। यौनभावना, काम

संबध, दाम्पत्य जीवन आदि के संबंध में नारी पात्रों को दृष्टिकोण बदलता नजर आता है। काम संबधो को लेकर नई नैतिकता का निर्माण उनके नारी पात्रों में नजर आता है। आजकी नारी पति की अनुगमिनी बनने के बजाय सहचारिणी बनकर स्वतंत्र अस्तित्व बनाने की चाह रखने वाली है। भारतीय पुरुष मानसिकता से उनके नारी पात्र अनेक जगहो पर छटपटाते, अंर्तद्वन्दों से गुजरते नजर आते है। शिक्षा का आधार लेकर वेह आगे बढ़ना चाहती है परंतु पुरुष मानसिकता के कारण स्थूल स्तर पर निरंतर हार रही है और सूक्ष्म स्तर पर निरंतर मर रही हैं। कुछ नारी पात्र आदर्श की बलिवेदी पर खुद को बलि चढाती है, तो सती की कनका सतीत्व की अनोखी मिसाल है। लेखिका ने नारी के अंर्तमन का बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि लेखिका जीवनबोध की जीवनबोध की कहानीकार है। उनकी कहानियों में जो युग-सत्य उद्‌घाटित हुआ है जो हमारे समाज में आज भी मौजूद है। अत: उनकी कहानियों के उद्देश्य सामाजिक और मनोवैज्ञानिक है। नयी पीढ़ी का निर्बंध आचरण भी लेखिका द्वारा चित्रित किया गया है जो समाज के लिए एक खतरे की निशानी का द्योतक है।

५.७ दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासो का कथ्य एवं शिल्प

दीप्ति खंडेलवाल ने अपने पंद्रह वर्ष के लघु कृतित्व के काल में केवल तीन उपन्यास तथा एक लघु उपन्यास लिखा। इसका महत्वपूर्ण कारण यह हो सकता है कि उपन्यास लेखन के लिए जो प्रदीर्घ काल लगता है उस संयम का अभाव उनमें था। लेखिका स्वभाव से मूड़ी थी। लेखन उनपर जुनून की तरह सँवार होता था। उनकी कहानी एक ही सीटींग का परिणाम थी, लेकिन उनके उपन्यास मौलिकता की दृष्टि से तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सफल माने जा सकते है।

'कोहरे' उपन्यास के कथ्य ने पति-पत्नी के बीच पलने वाले अहम् कितना भयंकर रुप धारण कर लेता है इसका यथायोग्य चित्रण किया है।

सुनील और सुमी अच्छे पढ़े लिखे होने के बावजूद दोनों के अहम् एक दूसरे से टकराते रहते है जिसमें सुनील की पुरूष वृत्ति बेफिक्र रहकर दूसरा रिश्ता स्वीकारती है। सीमी को संसार बिखरते देखकर सँभलने में वक्त लगता है, लेकिन जीने के लिए ठोस आधार का विचार कर अंत में सुमी भी दूसरा विवाह करने के लिए तैयार होती है। इस उपन्यास का कथ्य आजकल के सुशिक्षित पढ़े-लिखे दाम्प्त्यों को अहंकार का त्याग करने की सलाह देने की कोशिश करता है जिससे रिश्ता टूटने से बच सके और बच्चों का भविष्य न बिगड़े। सुमी के माध्यम से नारी मन का सूक्ष्म विश्लेषण लेखिका ने इस उपन्यास में किया है।

प्रिया उपन्यास के कथ्य में लेखिका ने नारी मन की सूक्ष्म भांवनाओं को मार्मिकता से वर्णित किया है। इस उपन्यास मे चार प्रेम कथाएँ गुंफित की गई है एक नाना की, दूसरी सौदामिनी की, प्रिया की तथा चित्रा की जिसमें सौदामिनी प्रिया, चित्रा, की प्रेमकथा विकृत संबधों को दर्शाती है। सौदामिनी के साथ यशवंत जी, जो स्कूल के ट्रस्टी थे आर्यसमाजी पद्धति से विवाह करते है। हनीमून के समय यशवंत जी सौदामिनी को बांह से घेरे समझा रहे थे - ''देखो सौदामिनी मैंने तुम जैसी पढ़ी-लिखी समझदार लड़की से इसलिए विवाह किया है कि तुम जीवन के हर क्षेत्र में मेरी संगिनी हो सको.. आज कुछ विशेष अतिथि आयेंगे, जो बहुत काम के व्यक्ति है उनके स्वागत-सत्कार का विशेष ध्यान रखना.. नख से शिख तक भरपूर श्रृंगार करना.. आज की रात विशेष रात है।''[२५]

यशवंत जी सौदामिनी के पति पुरुष थे। वे ही सौदामिनी का इस्तेमाल राजनीति में खुद को आगे बढ़ाने के लिए करते है। जिस कक्ष में मोति का कंठा पहने नशे से डूबी आँखे लिये किसी रियासत का राजा सा बैठा था उसी कक्ष में यशवंत जी खुद सौदामिनी को अकेली छोड़कर बाहर से दरवाजा बंद

कर चले जाते है। उस पुरुष द्वारा सौदामिनी पर बलात्कार होता है। यशवंत जी सौदामिनी को उसी हालत में छोड़कर शहर चले जाते है।

'प्रिया' पर भी प्रसिद्ध उद्योगपति राम आहुजा के बेटे,'अरुण आहुजा' द्वारा बलात्कार होता है। यशवंत जी अपनी बेटी का इस्तेमाल भी खुद को आगे बढ़ाने के लिए करते है। अरुण आहुजा द्वारा प्रिया प्रेगनन्ट होती है। अरुणा आहुजा उसे धोखा देकर विदेश भाग जाता है तब यशवंत जी पत्र में लिखते है'' मुझे अफसोस है, अरुण दगाबाज निकला। वह योरोप जा चुका है। सुना, वह वहाँ पहले ही एक अमरीकी लड़की से शादी कर चुका है, एक बच्चा भी है। प्रिया का एबॉर्शन करवा देना.. एक अपने ही तबके का कोई घर-वर ढूँढ़ कर प्रिया का ब्याह कर दो.. बस, अब और तंग मत करना।"[२६] इसतरह सौदामिनी, प्रिया तथा चित्रा का समाज के पुरूष द्वारा किए गए अत्याचारों का पर्दा फाश हुआ है। ऐसी नारियाँ समाज मे जगह जगह पाई जाती है जो पुरूष के शोषण का जिम्मा अपने ऊपर लेकर सारा जीवन नरक के समान गुजार देती है। पढ़ लिखकर किसी तरह अपने पैरों पर खड़ी हो जाती है लेकिन मन के दंद्वात्मक हालतों से गुजरती रहती है।

प्रतिध्वनियाँ एक चरित्रप्रधान उपन्यास है जिसमें पाँच नारियों की शोषण की कथा है। उपन्यास का नायक नीलकांत की माँ गंगा, पति के अत्याचार चुपचाप सहन करती है। बाद में कुएँ में कुदकर वह आत्महत्या कर लेती है। नीलकांत स्वाभिमानी, सादगी एवं गंभीरता की प्रतिमूर्ति शुभा से प्यार करने लगता है लेकिन उसकी शादी अर्चना से होती है जो वास्तव में विनय से प्रेम करती है। यह बात सुहागरात को अपने पति से स्पष्ट कर देती है कि विनय से उसे सच्चा प्यार हैं। प्रेमी से विछोह असह्य होकर वह आत्महत्या कर लेती है। बाद में नीलकांत नौकरानी जया तथा वैश्या मोतीबाई से भी संबध रखता है। लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम में

नारी जीवन की विडंबना को चित्रित किया है। लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि आज की बदलती परिस्थिति में पूराने मूल्य टूट रहे है, नए मूल्य स्थापित हो रहे है। लेकिन नवीनता हमेशा स्वागतशील नहीं होती। अति आधुनिकता के चक्कर में व्यक्ति टूटकर कभी-कभी अपनी पहचान भी खो बैठता है। ' प्रतिध्वनियाँ ' में इस टूटन और बिखराव का चित्रण किया है।

'वह तीसरा' लघु उपन्यास के कथ्य में पति-पत्नी के बीच पनपते अहम् का वर्णन किया गया है। दांपत्य जीवन एक दूसरे के प्रेम विश्वास के अभाव में रुखा लगने लगता है, नारी और पुरूष के अहम् की टकराहट में दोनों में से कोई भी झुकने का तैयार नहीं होता। दोनों अजनबी की तरह जीवन बिताते है। रिश्तों की ऊब इस लघु उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने चित्रित की है।

उपन्यासों के शिल्प में लेखिका ने कहानियों की तरह जगह जगह आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, प्रतीकात्मक, पूर्वदीप्ति आदि शैलियों का सहजता से उपयोग किया है। कोहरे उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का उपयोग किया है।

जैसे- उपन्यास की नायिका सिमी सोचती है -

''मैंने एक मनोविज्ञान का यह कथन भी पढा था कि पुरुष स्त्री का प्रथम प्रेमी होना चाहता है, उसी प्रकार स्त्री पुरुष की अंतिम प्रेयसी।"[२७] 'प्रिया' उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली, वर्णनात्मक शैली का उपयोग किया गया है। 'वह तीसरा' में आत्मकथात्मक शैली का उपयोग दिखाई देता है।

'वह तीसरा' लघु उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली

इससे स्पष्ट होता है - वह तीसरा की रजिता सोचती है ''चेतना के धरातल पर.. मैं बार बार सोचती हूँ - आरंभ में शायद हम सूक्ष्म से स्थूल की

ओर आते हैं, तब शायद हम यथार्थ के कटु और कुरूप को पहचानते भी नही होते किन्तु तिलिस्म टूटता है हम इतने स्थूल हो उठते है कि सूक्ष्मता की सांसे घुट जाती हैं। प्रेम भावना के सिंहासन से उतरकर लेन-देन का सौदा करने लगता है और यथार्थ का कटु और कुरूप इतना निकट आ खड़ा होता है कि उसे झुठलाना असंभव हो जाता है।''"[२८]

इससे भी स्पष्ट होता है - रजिता सोचती है -

''वैसे तो अपनी-अपनी देह में मैं और संदीप एक-दूसरे के सम्मुख चुनौती बने खड़े होते है। अपने-अपने अहं के विषधरों को दूध पिलाते तनिक-सा छेड़े जानेपर डंस लेने के लिए सन्नद्ध, जरा-सा चोट खाने पर उलटकर वार करने के लिए प्रतिबद्ध। हम शायद एक-दूसरे को नही, अपने-आपको ही प्यार करते होते है।''"[२९]

'प्रिया' उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली -

प्रिया के नाना प्रिया को अपनी जीवन कहानी सुनाते है -

'अरे ले प्रिया, सबसे प्रमुख - उसे क्या कहते हैं तेरी अंग्रेजी भाषा में इम्पोर्टेट - बात तो मैं बताना ही भूल गया। उस दिन धर्मशाला के मैनेजर ने जो जबरदस्त पिटाई करवाई थी तो रवि का एक हाथ, हां बेटी, यही बायां हाथ, कन्धे के जोड़ से टूट गया था.. फिर 'शक्ति-भर' प्रयास करने पर भी जुड नहीं सका.. रवि से उसकी डोंग और बासुरी गंवाकर रवि ने राधा को पा लिया था और उसे वह सौदा घाटे का नहीं लगा था।"[३०]

उपन्यासों की भाषा का रूप दीप्ति जी ने उपन्यास के वातावरण के अनुसार रचा। भाषा प्रभावमय तथा प्रवाहमय है। जगह जगह पर गंभीर तथा परिकृत भाषा का उपयोग किया है। उपन्यास के देश काल वातावरण के अनुसार ग्रामीण, विलायती, देशज, तत्सम, तद्भव तथा अंग्रेजी भाषा का प्रयोग यथायोग्य किया है। अनेक जगहों पर काव्यात्मक भाषा का उपयोग

किया जाता है। उपन्यास की भाषा में बिंबात्मक्तता, चित्रात्मकता, नवीनता का यथायोग्य उपयोग हुआ है। यह कहना उचित होगा की एक सफल उपन्यास के लिए जिसप्रकार के शिल्प की जरूरत होती है वे सभी गुण लेखिका के उपन्यास में नजर आते हैं।

५.८ उपन्यासों का उद्देश्य

दीप्ति खंडेलवाल ने उपन्यासों के माध्यम से नारी मन के विविध कोणों को उद्‌घाटित किया है। पुरूष चरित्रों की अपेक्षा नारी पात्रों के माध्यम से समकालीन जिंदगी तथा संक्रमण-शीलता को उजागर किया है। उन्होंने व्यक्ति के मानस को संवेदना के स्तरपर सिद्ध किया है। आधुनिक संवेदनाओं को समकालीन संदर्भो के अनुकुल व्यक्तिवादि स्तरपर उभारने के लिए उन्होने मनोवैज्ञानिक सामग्रियों का उपयोग किया है। उनके उपन्यासों के पात्रों में मनोविश्लेषण का वातावरण संप्रेषित होता है। मानसिक गुत्थियों को सुलझाने के लिए तनाव, आकर्षण, विद्रोह, वासना समर्पण को आधुनिक दृष्टिबोध से चित्रित किया है। 'वह तीसरा' लघु उपन्यास की नारी अहम् से ग्रस्त है। उसका अत्यधिक तनना ही उसकी समस्या है। दोनों के बीच और कोई नहीं बल्कि दोनों का अहम् ही है यह बताने का प्रयास किया है।

'प्रिया' उपन्यास की प्रिया अपने सुंदर दिखने के करण पुरुष द्वारा शोषित होती है केवल देह बन जाती है सौदामिनी भी पुरुष द्वारा शोषित है। परंतु वह संघर्षो से जूझने वाली मनस्विनी है जो आत्मनिर्भर होकर जीवन नए सिरे से शुरू करती है। चित्रा उस नारी का प्रतीक है जो पुरूष के बहकावे में आकर अपने सर्वस्व को तिलांजली देती है। प्रतिध्वनियाँ 'उपन्यास' सफेदपोश व्यक्ति के रूप में मक्कार, स्वार्थी और अहंकारी पुरूष का पर्दाफाश करता है जो खुद तो पैसों के लिए बिक कर खरीदा हुआ दामाद बन जाता है परंतु अपनी कमजोरी को लेकर उसे आत्मग्लानि नहीं है। उसकी जिंदगी में चार नारियाँ आती है जिनका वह शोषण ही करता है। 'कोहरे' उपन्यास में विदेशी

प्रभाव से घर से भाग जाने वाले युवक के प्रतिनिधी के रूप में निशिथ है। जो गोरी मेम से शादी कर के अपने बूढ़े माँ-बाप की परवाह न करते हुए विदेश जा बसता है। निशिथ के रूप में आज की युवा मानसिकता का दर्शन कराया है। 'प्रिया' उपन्यास में धोखा और फरेब के जाल में फँसकर प्रेम में अँधी होकर घर से भाग जानेवाली लड़कियों का प्रतिनिधित्व करने वाली चित्रा लेखिका ने दर्शायी है। लेखिका के कथा साहित्य के कथ्य एवं शिल्प का अध्ययन करने के पश्चात यह प्रतित होता है कि समाज के विविध आयामों को लेखिका ने अपनी रचनाओं में समेटा है उसे वाणी दी है। उनकी रचनाएँ अधिकांशत: यथार्थ घटनाओं पर आधारित है। उन्होने अपने आसपास की घटनाओं और जीवननुभूति को अपनी रचनाओं में इतनी सहज और सरल भाषा में पिरोया है कि पाठक पढ़ने के लिए प्रेरित होता है। भाषा की स्वाभाविकता और सरलता को बड़ी चतुराई से अपनी रचनाओं में कायम रखा है।

दीप्ति खंडेलवाल ने विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए रचनाओं का सृजन किया है। रचनाकार का व्यक्तित्व उसकी कृति को किसी न किसी स्तर पर प्रभावित करता है। लेखिका की रचनाओं में मौलिकता के समावेश ने शिल्प को अधिक निखारा है। नए विषय, नवीन रचना सामग्री और रचना-विधियाँ आदि के कारण लेखिका के रचनाओं में पात्रों के भावानुरूप वातावरण के सृजन में कुशलता दिखाई देती है। उनकी रचनाओं का आत्मा उनकी रचनाओं के कथ्य को कहा जा सकता है। लेखिका ने अपनी रचनाओं में वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, विश्लेषणात्मक, पूर्वदीप्ति, पत्रात्मक आदि विभिन्न शैलियों का सहज स्वाभाविक प्रयोग किया है। उनके उपन्यास और कहानी की भाषा-शैली निर्विवाद रूप से प्रशासंनीय है। लेखिका की कथा भाषा में आलंकारिकता, बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता, मुहावरे, शेरो-शायरी, तत्सम, तद्भव शब्द, आंचलिक शब्द

तथा अंग्रेजी आदि भाषागत रूपों की झलक लक्षित होती है। इस प्रकार हमें दीप्ति खंडेलवाल के भाषा के बहुआयामी रुपों के दर्शन होते हैं।

****

संदर्भ - : पंचम अध्याय

१) डॉ. सिंहल शशिभूषण, हिंदी उपन्यास - यात्रा गाथा, पृ. ३२

२) डॉ. चुघ सत्यपाल, प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि, पृ. १

३) डॉ. वर्मा प्रदीपकुमार, हिंदी उपन्यासें का शिल्प विधान, पृ.

४) डॉ. त्रिपाठी धर्मध्वज, प्रेमचंद कथा साहित्य, समीक्षा और मूल्यांकन, पृ. २१७

५) श्रीमती पंत बासंती, हिंदी उपन्यास रचना विधान और युग बोध पृ. २८

६) खंडेलवाल दीप्ति,सलीब पर- आत्मरचना, पृ. २०

७) ----------, नारी मन- आवर्त्त पृ.९९

८) ----------, वह तीसरा- मोह, पृ ५४

९) ----------, धूप के अहसास - रीतते हुए, पृ ६४

१०) ----------, नारी मन-पार्वती एक, पृ. १९०

११) ----------, धूप के अहसास - मरती हुई गौरेया, पृ. २७

१२) ----------, नारी मन-सती, पृ. ७६

१३) ----------, सलीब पर- अभिशप्ता, पृ.७१

१४) ----------, नारी मन-सुख, पृ १२१

१५) ----------, नारी मन-पार्वती एक पृ.

१६) डॉ. तिवारी भोलेनाथ, भाषा विज्ञान, पृ.

१७) खंडेलवाल दीप्ति, कड़वे सच-मूल्य, पृ. १९

१८) ----------, धूप के अहसास - देह से परे पृ. १४

१९) ----------, नारी मन - मासूम, पृ. १६८

२०) ----------, कड़वे सच - ये भी कोई गीत है, पृ. ७५

२१) ----------, कड़वे सच - परिणती, पृ. ५४

२२) ----------, सलीब पर - अभिशप्ता, पृ. ६८

२३) ----------, नारी मन- प्रेमपत्र, पृ.६५

२४) ----------, नारी मन - पार्वती एक, पृ. ९०

२५) खंडेलवाल दीप्ति, प्रिया, पृ. ११६

२६) ----------, प्रिया, पृ. १२९

२७) ----------, कोहरे, पृ ११

२८) ----------, वह तीसरा, पृ. १०

२९) ----------, वह तीसरा, पृ. ११

३०) ----------, प्रिया, पृ. ८७

षष्ठ अध्याय

उपसंहार

❊ षष्ठ अध्याय ❊

उपसंहार

दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक दृष्टि से अध्ययन करते हुए अनेक तथ्यों का उद्‌घाटन हुआ है । दीप्ति खंडेलवाल का साहित्यिक योगदान साठोत्तरी कहानी तथा उपन्यास साहित्य के लिए एक अमूल्य देन है। हमारे समाज में स्त्री-स्वतंत्रता की बातें, नारी-सुधार आंदोलन तथा शिक्षा से आयी नारी की जागृती के कारण नारी के प्रति दृष्टिकोण में अमूलाग्र परिवर्तन दिखायी देता है। दीप्ति जी ने भी समाज में नारी की स्थिति के प्रति नवीन दृष्टिकोण अपनाकार साहित्य रचा है। लेखिका का मूल स्वर कवि का था परंतु जीवन के कटु सत्य ने उनकी लेखनी को कल्पना के कोमल आकाश से उतारकर यथार्थ की कांटों से भरी धरती पर ला खड़ा कर दिया था। कवि की कोमल भावनाएँ मर कर उसका रूप यथार्थ की कटु और कुरूप चित्रों की कहानियों ने ले लिया। जीवन यथार्थ का अद्‌भुत विश्लेषण उनकी विशेषता है। इसी यथार्थ का अद्‌भुत विश्लेषण उनकी विशेषता है। इसी यथार्थ के आधार पर उन्होने जीवन और जगत् की कड़वी-मिठी घटनाओं को किसी न किसी पात्र के माध्यम से अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। दाम्पत्य संबंधो की दरार दीप्ति जी की अनेक कहानियों का मूल कथ्य रहा है। उनके लेखन में संवेदनशीलता और कलात्मकता को आंच देती हुई एक प्रखर सामाजिक दृष्टि है जो तत्कालीन समाज को यथार्थ के पास ले जाती है। दीप्ति खंडेलवाल का रचनाकाल केवल पंद्रह से सोलह वर्ष का रहा। बचपन से ही वे चिररूग्णा रही, जिससे उनका सारा जीवन कुंठित तथा निराशामय रहा। वे समाज को और भी कुछ देना चाहती थी परंतु नियति के हाथों मजबूर थी। शारीरिक रूग्णता उन्हे मनोरूग्णता की हालत पर भी ले गई । उनका स्वभाव मूड़ी हो गया ।

दाम्पत्य जीवन में वे घोर अहम् का शिकार हुई इसीलिए उनकी अनेक कहानियों में नायिकाएँ 'अहम्' भाव से ग्रस्त दिखाई देती है। दीप्ति खंडेलवाल की लेखन-यात्रा को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि लेखन उनके मन पर जुनून की तरह सँवार था और उसी जुनून में वे जो लिखती वह एक असमान्य रचना बन जाती थी। उनके व्यक्तीगत जीवन की झाँक उनके लेखन में मिलती है। लेखिका ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तीत्व के प्रवृत्ति का बहुत बड़ा प्रभाव समाजपर पड़ता है। उनकी अनेक कहानियों में नारी स्वतंत्रता का सूर मिलता है। उन्होने समाज में फैले हुए स्त्री धारणा के प्रति दुष्यम स्थान को शब्दांकित कर समाज के सम्मुख रखा है। उनके न कहानी की नारी आधुनिक रूप में घर की चारदीवारी में बंधे रहने की अपेक्षा उन्मुक्त प्रांगण में विहार करती है और परिणामों से कभी वे चिंतीत ही नहीं होती तो कभी अकेलेपन का शिकार होती हैं । दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि पाठक सहजता से कहानी में व्यक्त स्थितियों का साक्षात्कार करता हुआ मानवीय त्रासदी का आस्वादक होता है। पाठक कहानी की प्रत्येक स्थिति को भोगता हुआ पात्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो उठता है। लेखिका को जीवन के सत्य की सही पहचान है और स्थितियों का कुशल संयोजन कर वे आज के वस्तुवादी जगत् के लिए एक अच्छी चुनौती देती है। दीप्ति जी ने मानवीय संबंधों की सूक्ष्मतम अनुभूतियों को अपनी रचनाओं में इसतरह उतारा है कि वे सही माने में पाठक के मन के अर्न्ततम के तारों को झनाझना देती है ।

लेखिका ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवन के अनेक अछूते बिंदुओं को छूने का प्रयास किया है। उनकी कहानियों की नायिकाएँ जीवन के हर एक मोड़ पर पुरूष के बराबर का स्थान प्राप्त करना चाहती है। वह नारी की अस्मिता को जगाकर उसे इतना सामर्थ्यशाली बना देती है जो

निर्भरता की प्रवृत्ति का त्याग कर आत्मनिर्भर बनना चाहती है तथा प्राप्त परिस्थितियों से एकाकी संघर्ष भी करती है जैसे 'कोहरे' तथा 'प्रिया' उपन्यासों की नायिकाएँ करती है। उनका साहित्य नारी विडंबना की गाथा अवश्य रहा है, किंतु उन्होंने स्त्री पुरूषों से संबधित विविध समस्याओं और संघर्षों को प्रस्तुत किया है। जहाँ स्त्री, स्त्री और पुरुषों के समन्वित अत्याचारों से शोषित है जैसे 'एक अदद औरत,' 'एक और सीता' तथा 'प्रेत' की नायिकाएँ हैं उसी प्रकार पुरुष भी आर्थिक दबावों के तहत मजबूर है जैसे युद्धरत जिजीविषा के नायक हैं । दीप्ति खंडेलवाल ने दांपत्य जीवन के सूक्ष्म संदर्भों को विश्लेषित किया है। आज के मनुष्य की बढ़ती वैयक्तिकता, मानवीय रिश्तों में पारस्पारिक संबंधों की मूल्यहीनता लेखिका की चेतना को इतना झकझोरती है कि वह पाठकों को वर्तमान युग की महाविकराल राक्षसी प्रवृत्तियों से परिचित कराती है। लेखिका आज की बुद्धिमान और कुशाग्र युवा पीढ़ी को इन स्थितियों से अवगत कराते हुए उन्हें सचेत भी कराती हैं । वे नगरीय-महानगरीय भयावहता, नवयुवकों में बढ़ती बेरोजगारी, भ्रष्टाचार की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है। इस विदुषी लेखिका ने आज के जनजीवन की सम-विषम प्रवृत्तियों और जिंदगी की सामान्य सी बात को भी बड़ी सहजता से अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है।

दीप्ति खंडेलवाल के समग्र कथा साहित्य के नारी का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन करने के लिए मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित किया है। संपूर्ण शोध अध्ययन के निष्कर्षरूप में जो महत्त्वपूर्ण बाते स्पष्ट होती है, वे निम्नानुसार हैं -

दीप्ति खंडेलवाल सप्तम दशक की प्रतिभासंपन्न कथाकार हैं। हिंदी साहित्य जगत की यह श्रेष्ठ रचनाकार अभूतपूर्व प्रतिभा की धनी रही। बचपन से ही उनके मन पर अपने पिता द्वारा दी गई सत्यं शिव सुंदरम् की प्रेरणा रहीं, परंतु छोटी उम्र ही वे अनेक रोगों की शिकार रहीं जिससे उनका पूरा

जीवन कुंठित तथा दर्दभरा रहा, जिससे मानसिक तौरपर भी रूग्णावस्था में रही। परंतु जिंदगी भर रोते रहने के बजाय रूग्णावस्था में ही उनके मन में लेखन का जन्म हुआ और उन्होंने प्रथमत: २०० से अधिक कविताएँ लिखी उनमे से कुछ प्रकाशित भी हुई परंतु अनेक कविताएँ अप्रकाशित ही रहीं। जीवन के मोड़ों पर कटु सत्य का सामना करते हुए वे कवयित्री से कथाकार बन गई और उन्होंने सात कहानी संग्रह तथा दो उपन्यास और एक लघुउपन्यास रचे उसका विवरण प्रथम अध्याय में किया गया है। इस रचनात्मक कार्य को आगे बढ़ाने में उनके पति के महत्त्वपूर्ण योगदान को भी स्वीकार करती है। दीप्ति खंडेलवाल का बाह्य व्यक्तित्व जितना साधारण था, उतना ही उनकी प्रतिभा, चिंतन और मनन असाधारण था।

दीप्ति खंडेलवाल की रचनाएँ इस बात की साक्षी है, की उन्होंने अपने गूढ चिंतन, अप्रतिम पांडित्य एवं विलक्षण प्रतिभा के बल पर अपनी रचनाओं को समृद्ध किया है। 'कोहरे' उपन्यास के माध्यम से आधुनिक दाम्पत्य जीवन में पड़ती हुई दरारे तथा परित्यक्ता नारी की समस्या ओं को प्रस्तुत किया है। 'प्रिया' उपन्यास में पुरूषों द्वारा शोषित नारी की मानसिकता को उजागर किया है तथा 'वह तीसरा' लघु उपन्यास के माध्यम से पति-पत्नी के अहम् को दाम्पत्य जीवन की दरार के रूप में प्रस्तुत किया है। अपनी कहानियों के माध्यम से लेखिका ने पारिवारिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक राजकीय आदि अनेक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है।

दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य में फ्रायडीयन मनोविश्लेषणात्मक चिंतन भरपूर मात्रा में है। उन्होंने नैतिक मान्यताएँ लाँघकर उच्छृंखल स्वतंत्रता की कामना और काम-वासना की स्वछन्द प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है । उनकी कहानियों की नायिकाएँ रुढ़ी परंपरा को न मानते हुए स्वच्छन्द जीवन जीती है इसके लिए उनके मन में कोई अपराध भाव नहीं है जैसे 'निर्बन्ध' की अनीता 'युगपुत्री' की रचना। लेखिका ने यह दिखाने का

प्रयास किया है कि आज की युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों के प्रति कोई भी आस्था नहीं रही हैं । दीप्ति खंडेलवाल ने यह भी बखूबी बताया है कि मनुष्य का 'स्व' अधिक महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। मनुष्य अधिक आत्मकेंद्री बनता जा रहा है।

दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य में मनोविश्लेषणात्मक अनेक तथ्य उभर कर आते है। उनकी रचनाएँ स्वच्छन्द-प्रेम , विवाह-पूर्व प्रेम, विवाहोत्तर प्रेम, दाम्पत्य-प्रेम, दमित या कुंठित प्रेम असह्य प्रेम, प्रेम में त्रिकोणात्मक स्थिति को चित्रित करती है, जिसमें आदर्श, अहं, कुण्ठा, निराशा प्रतिबिंबित हुए हैं। उनकी रचनाओं में आधुनिक मनोविज्ञान, सौंदर्य बोध और सम्पूर्णता का पुट मिलता है। विवाह का स्वरूप और उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। इन सबसे उनका चेतन अचेतन-मन संबंधी दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है।

दीप्ति खंडेलवाल द्वारा दृष्ट पात्रों के व्यक्तित्व की विशेषताओं को उनके बाह्य तथा आन्तरिक आचरण की विधियों, उनकी सफलताओं और विफलताओं उनकी मनोग्रंथियों और बाध्यताओं का सम्यक विश्लेषण फ्रायडीयन सिद्धान्तों की सहायता से किया गया है, जिससे मन के गुह्य प्रदेशों को समझने में सहायता मिलती है। अत: हम कह सकते हैं कि दीप्ति खंडेलवाल का साहित्य मनोविश्लेषणात्मक मानदंडों पर खरा उतरने में सफल रहा है। उनके साहित्य के पात्रों की मानसिकता को फ्रायडीयन पद्धति के आधारपर अध्ययन कर के उनकी दुर्बलता अथवा विचारों के कारणों तक पहुँचने का प्रयास किया गया है। यह मात्र अध्ययन की दृष्टि से नहीं बल्कि स्वस्थ-मानसिक संतुलन के लिए भी आवश्यक है। साहित्य की धारा मानस ऊर्जा स्त्रोतों से आरंभ होती है। दीप्ति खंडेलवाल की साहित्यिक पृष्ठभूमि के मूल में अत्यंत संवेदनशील चेतना उतर आयी है। तथा लेखिका की रचनाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वे मनोविज्ञान की कुशल चितेरी है और

श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक भी है। उसी प्रकार दीप्ति खंडेलवाल ने अनेक कहानियों का अंत पाठकों पर छोड़ दिया है। उन्होंने किसी भी मान्यता को स्पष्ट रूप से स्वीकृत या तिरस्कृत नहीं किया है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पात्रों के चरित्र-चित्रण की बारह प्रणालियाँ स्वीकार की गयी है, जो बहिरंग और अंतरग अर्न्तद्वंद्व, बाधकता, संमोहन आदि के रूप में सामने आयी है। मनोविज्ञानवेत्ता, फ्रायड, एडलर, जुंग आदि प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों के आधार पर दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य की नारियों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट हुआ है कि उनके द्वारा रचित नारी पात्र अहम्, काम, भय, परपीडन, आत्मपीडन इ. मनोग्रंथियों को साकार करती है। उनका कथा-साहित्य हर स्त्री के लिए हृदयस्पर्शी, संवेदनापूर्ण तथा स्वाभाविक बना हुआ है। उनके स्त्री पात्र अर्न्तविरोधों और द्वन्द्वों से भरे हुए है, नैतिक मान्यताओं, सामाजिक परंपरा के स्वीकार अस्वीकार के बीच व उलझी हुई है। दो विरोधी तत्वों के बीच उसका मन छटपटाहट, तनाव और मनो द्वंद्वों मे फँसा रहता है। लेखिका ने यह भी बताया है कि भौतिक साधनों की समृद्धता के बावजूद आज की स्त्री का जीवन और भी कठिन, दुखी, अतृप्त, अधिक तनावपूर्ण द्वंद्वमयी तथा संघर्षमय हो जाता है। लेखिका ने अपने कथासाहित्य के माध्यम से नारी के संघर्ष, उसकी मानसिकता और अर्न्तद्वंद्व का अंकन किया है जो समाज की परम्परागत निष्प्राण मान्यताओं, परम्पराओं की अनुपयोगिता को सिद्ध करता है । लेखिका ने अपनी युगसापेक्ष कलाकृति में 'द्वंद्व' जैसे अनिवार्य तत्व का अंकन सफलता से किया है।

दीप्ति खंडेलवाल समकालीन हिंदी साहित्य की एक सशक्त रचनाकार रही है। उन्होंने तत्कालीन सामाजिक परिवेश और उसकी विसंगतियों का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं के पात्रों के माध्यम से किया है। हमारे भारत देश में स्वातंत्र्योत्तर समाज को मोहभंग की स्थिति से गुजरना पड़ा। समाज

की आशा, आकांक्षाएँ जो स्वतंत्रता के बाद होनी चाहिए थी वे सब खेद और दुख में बदल गई। साहित्य समाज का दर्पण होने के कारण साठोत्तरी साहित्य में भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पाश्चात्य अंधानुकरण और उन विसंगतियों को झेलता समाज चित्रित होने लगा । इस युग के रचनाकारों ने समाज की विसंगतियों की उपलब्धियों का ज्यों का त्यों यथार्थ समाज के सामने रख दिया। दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में वे सभी समस्याएँ समग्रता से चित्रित हुई है जो पच्चीस वर्ष पहले थी और आज भी है। दीप्ति जी ने मध्यवर्गीय आदमी को आर्थिक अभावों के संघर्ष और सामाजिक अव्यवस्था के घेरे में कहीं जूझते तो कहीं टूटते हुए चित्रित किया है।

इस शोधप्रबंध में दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन किया गया है। उनके साहित्य के नारी के सामाजिक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उन्होंने तत्कालीन समाज के नारी की हर समस्या को अपने पात्रों के माध्यम से समाज के सामने लाया है। हमारे समाज में नारी को दयनीय अवस्था तक पहुँचाने वाली अनेक समस्याएँ जैसे दहेज समस्या, वेश्या समस्या, विधवा समस्या, परित्यक्ता नारी की समस्या आदि अनेक समस्याओं का उद्‌घाटन किया है। नारी की इस दशा के लिए समाज को ही जिम्मेदार ठहराया है। दहेज प्रथा के कुपरिणाम जैसे अनमेल ब्याह, लड़की का घर से भाग जाना, आत्महत्य करना, अविवाहित रहना अथवा अनैतिकता को अपनाना आदि को 'स्वयंवर', 'जहर', 'अभिशप्ता' आदि कहानियों के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। आधुनिक सुशिक्षित समाज में सुशिक्षित उच्चशिक्षित पति-पत्नी में विचारों के अनमेल से तलाक समस्या बड़े पैमाने पर उभरकर आने लगी है। 'कोहरे' उपन्यास के माध्यम से तलाक की समस्या को सामने लाया है। तथा तलाक समस्या के कारण निर्माण होने वाले यौनसंबंधों की अतृप्ति बच्चों की बिगड़ती मानसिकता, अनैतिकता और स्त्री का झुकाव आदि

अनेक सामाजिक समस्याओं का पर्दा फाश किया है। अनमेल ब्याह की समस्या के कारण नारी का बदलता रुप 'निर्वसन', 'बेहया' कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। नारी की पारिवारिक समस्याओं का रूपांतरण कभी तलाक समस्या में कभी परित्यक्ता जीवन में होता है तो कभी कुंठामय जीवन बिताना होता है यह लेखिका ने 'एक अदद औरत', 'प्रेत', 'एक और सीता' आदि कहानियों के माध्यम से उजागर किया है। समाज को सब से निचले स्तर पर पहुँचाने वाले वेश्या समस्या को लेखिका ने अपने अनेक कहानियों में वाणी दी है। दहेज प्रथा, वैधव्य, आर्थिक समस्या आदि अनेक कारणों से वेश्या व्यवसाय को अपनाने वाली स्त्री की मानसिकता का खुला चित्रण 'बेहया', 'हव्वा', 'युगपुत्री' आदि कहानियों के माध्यम से समाज के सामने किया है। तो दूसरी ओर कामकाजी नारी की समस्याओं का वर्णन 'तपिश के बाद' कहानी के माध्यम से किया है।

अपनी हवस बुझाने के लिए नारी पर अत्याचार करने वाले पुरूष रूपी राक्षस से बलात्कारी नारी की जीवन समस्या ने आज के समाज में अपना सिर ऊपर उठाया है। इस समस्या को लेखिका ने चालीस साल पहले ही महसूस किया है। अपनी 'सती', 'देह की सीता', 'शेष अशेष' आदि कहानियों में ऐसी नारी की मानसिकता को लेखिका ने समाज के सामने उघेड़ा है और इसके लिए समाज को ही जैसे कटघरे में खड़ा कर उसपर अपनी लेखनी से प्रहार किया है। नारी की इस दुर्दशा को समुचे समाज को ही दोषी ठहराया है। नारी जीवन में महत्त्वपूर्ण मोड़ निर्माण करने वाली विधवा समस्यापर भी 'नागपाश' कहानी के माध्यम से अपनी लेखनी चलाई है और विधवा समस्या से उठाने वाले काम-अतृप्ति, कुंठामय जीवन, आर्थिक पराधीनता आदि समस्याओं को भी सामने लाया है ।

मध्यवर्ग तथा निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक समस्या को समाज के सामने लाते हुए बेरोजगारी, भ्रष्टाचार असीमित परिवार आदि कारणों की

मीमांसा की है। अर्थिक समस्या से जूझती नारी की घुटन, संत्रास, भय, अवनिति, अकेलापन, संघर्ष, शोषण आदि समस्यों का भी यथार्थ पूर्ण विवरण किया है। मध्यवर्ग नारी 'विषपायी', 'विघटन' कहानियों में चिखती चिल्लाती, बच्चों को पीटती चिड़चिड़ाती चित्रीत की है। नारी के नैतिक मूल्यों के पतन के समस्या को लेखिका ने 'देह की सीता', जमीन', 'हव्वा', 'आत्मघात', 'निर्बंध' की नायिकाओं के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। आज की नारी नैतिकता-अनैतिकता के बंधन तोड़कर अपनी आंतरिक आवश्यकताओं तथा निजी जरूरतों को अधिक महत्त्व देने लगी है यह भी आज के समाज को लेखिका ने बताने का प्रयास किया है। नारी की हर सामाजिक समस्या को उजागर करने के प्रयास में लेखिका ने शत प्रतिशत सफलता पाई है। आधुनिक समाज में संपूर्ण क्षेत्रों में पुरूष के समान अधिकारों की माँग करने वाली नारी व्यावहारिक रूप से आज भी शोषित है इसका मुख्य कारण नारी की शारीरिक तथा मानसिक दुर्बलता हो सकती है इस विचार को लेखिका ने समाज के सामने लाया है । सामाजिक विडंबनाओं का मूल कारण अर्थ बताया है। अर्थ ही सभी मानवी समस्याओं का केंद्रबिंदू है। इसके न होने पर व्यक्ति में जीवन-मूल्य की समस्या पैदा होती है यह दर्शाया किया है। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दीप्ति खंडेलवाल सप्तम दशक की एक ऐसी सामाजिक कहानीकार है जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को स्वतंत्र निरपेक्ष दृष्टि से देखा और अपनी अनुभूतियों के आधार पर अपनी रचनाओं में भर दिया ।

दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य का कथ्य एवं शिल्प का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि लेखिका ने कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, शीर्षक और उद्देश्य आदि शिल्प उपादानों को केंद्र में रखा है और अपनी अनुभूतियों और मनोभावों को कलात्मक रूप दिया है। लेखिका ने अपने कथा साहित्य में कथानक का चुनाव यथार्थ की भूमि पर किया है जिससे

पाठकों को वह रचना विषय अपने आस-पास का ही लगने लगता है। अनुकूलता, स्वाभाविकता, मौलिकता, सजीवता और सहृदयता से जहाँ एक ओर रचनाओं की संरचना कलात्मक स्तर पर सिद्ध हुई है, वहीं दूसरी ओर उनका आकर्षण और प्रभाव भी बढ़ा है। लेखिका ने अपने कथा-साहित्य में रोचकता तथा जीवंतता प्रदान करने के लिए संवादात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पत्रात्मक शैली आदि शैलीयों का यथायोग्य उपयोग किया है। लेखिका ने अपनी सहज,सरल, रोचक और प्रवाहमयी भाषा से पाठकों को अपने विषयवस्तु से बाँध लिया है। उनकी भाषा में आलंकारिकता, चित्रात्मकता, प्रतीकात्मकाता, काव्यात्मकता का प्रयोग उल्लेखनीय है। मुहावरे, शेर, तत्सम, तद्भव, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू भाषा के यथास्थान प्रयोग से भाषा प्रकटपूर्ण और प्रभावोत्पादक बनी है।

दीप्ति खंडेलवाल का रचनाकाल सीमित होते हुए भी उन्होंने घर-परिवार, विवाह, दाम्पत्य, प्रेम, तलाक, पुर्नविवाह, स्त्री-पुरूष संबधों की मधुर-कटु अनुभूतियाँ, दमित कुंठित स्त्री में छटपटाहट, व्यक्तित्व निर्माण, एक अस्मिता की खोज की ललक,समानता,सम्मान की आकांक्षा आदि मानवीय व्यवहार के महत्वपूर्ण पक्षों को अपने साहित्य में उद्घाटित किया है। आधुनिक जीवन के कटु सत्य को उनकी रचनाएँ तीक्ष्णता से मुखरित करती है।

निष्कर्ष :-

- दीप्ति खंडेलवाल के समग्र कथा साहित्य के चरित्र नारी का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि दीप्ति खंडेलवाल एक कुशल मनोविश्लेषक तथा श्रेष्ठ सामाजिक रचनाकार थी जो नियतिद्वारा गुमनामी के अंधेरे में फँसी रही ।

- उनके लेखन में संवेदनशीलता और कलात्मकता को आंच देती हुई प्रखर सामाजिक दृष्टि है जो तत्कालीन तथा आज के समाज को यथार्थ के पास ले जाती है।
- दीप्ति खंडेलवाल के कथा साहित्य में फ्रायडियन मनो-विश्लेषणात्मक चिंतन भरपूर मात्रा में मिलता है। नारी के चेतन अचेतन मन संबंधी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। नारी के बाह्य तथा आन्तरिक आचरण की विधियों तथा विविध मनोग्रंथियों का सम्यक् विश्लेषण मिलता है । उनकी सहायतासे नारी की मानसिक समस्याओं को सुलझाया जा सकता है।
- दीप्ति खंडेलवाल द्वारा रचित नारी पात्र अहम्, भय, काम, परपीडन तथा आत्मपीड़न आदि मनोग्रंथियों को सफलता से साकार करती है।
- दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी युगसापेक्ष कलाकृति में 'अर्न्तद्वन्द्व' जैसे अनिवार्य तत्त्व का अंकन किया है जो नारी के संघर्ष तथा समाज की परंपरागत निष्प्राण मान्यताओं परंपराओं की अनुपयोगिता को सिद्ध करता है ।
- दीप्ति खंडेलवाल ने परंपरागत तथा आधुनिक कामकाजी नारी जीवन के दोहरे संघर्ष को चित्रित किया है जो मन के अंर्तद्वंद्वों के साथ पुरूष द्वारा तथा दूसरी नारी द्वारा उपेक्षित एवं शोषित है।
- दीप्ति खंडेलवाल का साहित्य नारी विडंबना की गाथा है जो नारी की अनेक सामाजिक समस्याओं का दस्तावेज है। उनके द्वारा प्रस्तुत नारी समस्याओं का अध्ययन कर नारी जीवन के सुधार के कार्य में मदत हो सकती है।
- दीप्ति खंडेलवाल ने नारी के अनमेल ब्याह समस्या, दहेज समस्या, वेश्या समस्या, विधवा समस्या, परित्यक्ता नारी की समस्या, बलात्कारी नारी

की जीवन समस्या आदि अनेक समस्याओं के लिए समाज को ही जिम्मेदार ठहराया है ।

- दीप्ति खंडेलवाल ने आधुनिक दाम्पत्य जीवन में पनपते अहम् को मुख्य रूप से दर्शाया है और वर्तमान आधुनिक स्त्री-पुरूषों को आगाह मी किया है कि'अहम्'किस तरह परिवार के नष्ट-भ्रष्ट होने के लिए कारण बनता है।
- आधुनिक नारी के स्वतंत्र अस्तित्व तथा पहचान की आवश्यकता दीप्ति खंडेलवाल के साहित्य द्वारा अभिव्यक्त हुई है।
- दीप्ति खंडेलवाल ने अपनी संस्कृति को छोड़कर पश्चिमी देशों की संस्कृति का अंधानुकरण करनेवाले युवा पीढ़ी के नैतिक मूल्यों के पतन को दिखाते हुए समाज को एकतरह से जागृत करने का प्रयास किया है।
- दीप्ति खंडेलवाल का साहित्य हमारे भारतीय समाज को पथदर्शक बनाने का हक्दार है। दीप्ति खंडेलवाल मरकर भी अपनी रचनाओं के माध्यम से पाठकों के हृदय में हमेशा जिवीत है और रहेंगी।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि दीप्ति खंडेलवाल समग्र रूप से अपने साहित्य में एक क्रांतिकारी लेखकीय दृष्टिकोण से सामने आती है। दीप्ति खंडेलवाल की कृतियों में प्रगल्भ बुद्धिमत्ता, प्रतिभासंपन्नता तथा आधुनिकता का खुले आम दर्शन होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में दीप्ति खंडेलवाल के समग्र साहित्य के नारीचारित्र का मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। समग्र साहित्य के नारी का मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सक मूल्यांकन किया गया है। उनका साहित्य स्त्री-पुरूष और युवकों को सोचने समझने के लिए विवश ही नही करता अपितु नई दिशा की ओर प्रेरित भी करता है। यही उनके साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) उपन्यास

१. खंडेलवाल दीप्ति, **'कोहरे',** राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली प्रथम संस्करण १९७७

२. ----------; **प्रिया**, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७८

३. ----------; **प्रतिध्वनियाँ**, राजपाल एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, नई दिल्ली प्रथम संस्करण १९७४

ब) कहानी संग्रह

४. ----------; **कड़वे सच**, पराग प्रकाशन, दिल्ली ३२, प्रथम संस्करण १९७५

५. ----------; **वह तीसरा,** राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली प्रथम संस्करण १९७६

६. ----------; **धूप के अहसास,** पराग प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण १९७६

७. ----------; **सलीब पर,** राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७७

८. ----------; **दो पल की छांह,** राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७८

९. ----------; **नारी मन,** राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७९

१०. ----------; **औरत और नाते,** पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७१

क) आधुनिक ग्रंथ

१. डॉ. उपाध्याय देवराज, **कथा साहित्य मेरी मान्यताएँ,** सौभाग्य प्रकाशन; प्रथम संस्करण १९७५

२. डॉ. उपाध्याय देवराज, **साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन,** साहित्य भवन, इलाहबाद, प्रथम संस्करण १९६६

३. एलिस हेवलॉक, अनु मन्मथ गुप्त, **यौन मनोविज्ञान**, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, पाँचवा संस्करण १९७५

४. डॉ. कुलकर्णी रेवा; **हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी,** चंद्रलोक प्रकाशन प्रथम संस्करण १९९४

५. डॉ. गुप्ता मंजुला; **हिंदी उपन्यास समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व**; सूर्य प्रकाशन; दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८६

६. डॉ. चामले पद्मा; **आधुनिक हिंदी कहानियों में युवा मानसिकता**, समता प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण १९९६

७. डॉ. चुघ सत्यपाल; **'प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि'**, इकाई प्रकाशन इलाहबाद संस्करण १९६८

८. डॉ. जोशी चंडीप्रकाश, **हिंदी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विवेचन**, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण १९६२

९. जॉन्सन्स हैन्री एम.; योगेल अटल **समाजशास्त्र एक विधिवत विवेचन**, कल्याणी पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण १९७०

१०. डॉ. त्यागी सुमित्रा, **स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में जीवन दर्शन**, साहित्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९७८

११. डॉ. तिवारी भोलानाथ, **भाषा विज्ञान**, किताब महल, प्रथम संस्करण १९९१

१२. डॉ. दास भगवान, **नई कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत और प्रयोग,** ग्रंथम; कानपुर प्रथम संस्करण १९७५

१३. दुधनीकर एम.एस**, प्रसाद साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन**, अलका प्रकाशन; कानपुर, प्रथम संस्करण १९७९

१४. श्रीमती पंत बसंती, **हिंदी उपन्यास रचना विधान और युग बोध**, पंचशील प्रकाशन, जयपुर सं. १९७३

१५. डॉ. सौ. पाथरीकर मेहरदत्ता, **साठोत्तरी हिंदी कथा लेखन में आधुनिकता का बोध**, शैलजा प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण १९८०

१६. प्रसाद जयशंकर, **कामायनी**, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी तृतीय संस्करण १९७७

१७. प्रसाद जयशंकर -**चित्राधार**, भारती भंडार, इलाहबाद, चौथा संस्करण १९७४

१८. फ्रायड सिगमंड ; देवेंद्रकुमार वेदालंकार **फ्रायड मनोविश्लेषण**, राजपाल एण्ड सन्स; दिल्ली प्रथम संस्करण १९६०

१९. भटनागर महेंद्र, **प्रेमचंद- एक समस्या मूलक उपन्यासकार,**हिंदी प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९८३

२०. डॉ. भारद्वाज शान्ति; हिंदी उपन्यास, प्रेम और जीवन, सुशील प्रकाशन; प्रथम संस्करण १९६९

२१. भाटिया हंसराज; **आसामान्य मनोविज्ञान**, राजकमल प्रकाशन; दिल्ली, प्रथम संस्करण १९५६

२२. मन नारमल एन. अनुआत्माराम शाह; **मनोविज्ञान; मानवी समायोजन के मूल सिद्धान्त**, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९६१

२३. डॉ.मानधने धनराज, **हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास,** ग्रंथम; कानपुर प्रथम संस्करण १९७१

२४. डॉ. माथुर एस.एस; **सामान्य मनोविज्ञान**, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, द्वितीय संस्करण १९६६

२५. मुक्तिबोध, **मानव जीवन स्त्रोत की मनोवैज्ञानिक तह**, शीर्षक आलेख, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९६५

२६. डॉ. मेहरोत्रा सुमन; **हिंदी कहानियों में द्वन्द्व**, आर्य बुक डेपो, प्रथम संस्करण १९७५

२७. मैकइवर एवं चार्लस; अनु.जी विश्वेश्वरय्या, '**समाज**' रतन प्रकाशन मंदिर तृतीय संस्करण १९७७

२८. डॉ. वेंकटेश्वर एम; **हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार,** अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण १९९८

२९. शर्मा देवेंद्रनाथ ; **फ्रायड मनोविश्लेषण और साहित्यलोचन,** भारतीय भवन, पटना, प्रथम संस्करण १९६९

३०. शर्मा प्रदीपकुमार, **हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान,** अक्षय प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण १९९०

३१. शान्ता पी. इंदिरा, **मालती जोशी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना,** मिलिंद प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९९१

३२. डॉ. शिंदे जयश्री , **मनोविज्ञान के कटहारे में हिंदी कहानी**, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण १९९९

३३. डॉ.सिंह कुवरपाल, **हिंदी उपन्यास सामाजिक चेतना**, पांडुरंग प्रकाशन, प्रथम संस्करण १९७६

३४. डॉ. सिंह प्रेम, डॉ. रिम्पी खिल्लन, '**समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज;** श्री नटराज प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८८

३५. डॉ. सिंह पुष्पपाल, **समकालीन कहानी - रचनामुद्रा**, हरियाणा साहित्य आकादमी संस्करण १९८७

३६. डॉ. सिंहल शशिभूषण, **हिंदी उपन्यास-यात्रा गाथा,** कैलाश सदन, प्रथम संस्करण १९९०

३७. डॉ. सुजाता; **हिंदी उपन्यास के असामन्य चरित्र,** चंपालाल प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण १९८३

३८. सूरतलाल राम तथा मिश्रा राम गोपाल; **साधारण मनोविज्ञान**, गर्ग ब्रदर्स इलाहबाद, प्रथम संस्करण १९५२

३९. डॉ. स्वर्णलता; **स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि,** विव;क पब्लिकेशन हाऊस, प्रथम संस्करण १९७५

४०. डॉ. त्रिपाठी धर्मध्वज; **प्रेमचंद कथा साहित्य** : समीक्षा और मुल्यांकन; प्रेम प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण १९९३

ड) कोश

१) **हिंदी साहित्य कोश;** संपा. धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी संस्करण २०००

२) **नालंदा विशाल शब्द सागर;** संपा. नवलजी, आदर्श बुक डेपो, संस्करण २०००

३) **बृहत अंग्रेजी- हिंदी कोश;** डॉ हरदेव बाहरी, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण १९६९

४) **हिंदी शब्द सागर**; संपा. श्यामसुंदर दास, दसवां भाग, नागरी प्रचारणी सभा

इ) English

1. **A Dictionary of psychology**, James Brover Pengun Book U.K.
2. **Dictionary of social sciences,** Julius Gould William 1963

3. **Dictionary of Education**, Goods Edition, 1953
4. **Encyclopaedia of social sciences**, Ed. Soligman and Johnson, Vol 34.

फ) पत्रिकाएँ

१. धर्मयुग; नारी विशेषांक, संपा गणेश मंत्री, मार्च १९९०
२. मधुमति, रुपासिंह, मई २०१२
३. राष्ट्रवाणी, द्वैमासिक पत्रिका, संपा, सु.मो. शाह, नवंबर-दिसंबर २०१०
४. संकल्प त्रैमासिक पत्रिका, संपा-एम् वेंकटेश्वर हैदराबाद, २०००
५. विवरण पत्रिका, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, दिसंबर २०१२
६. साप्ताहिक हिंदुस्तान १९७२-७८

****